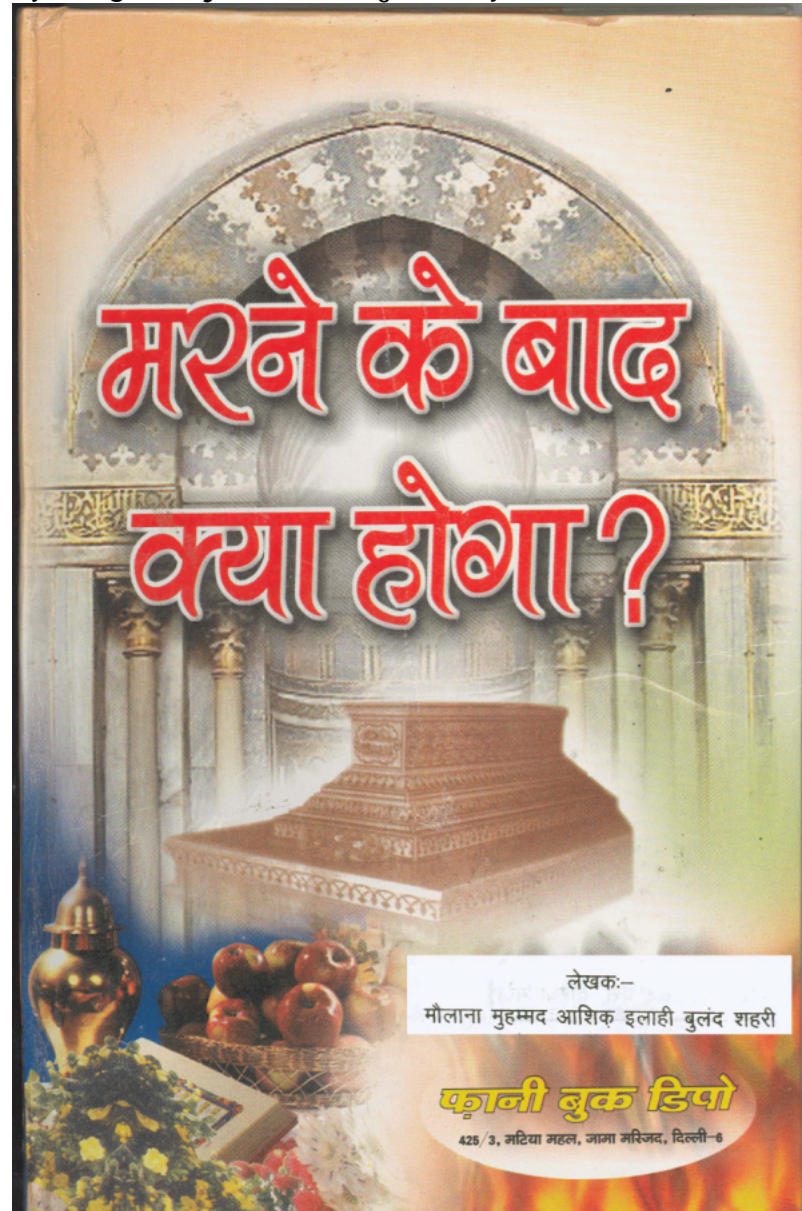


Hindi book "marne ke baad kiya hoga ?" ejust dskn D;k glosk ? : By: Maulana Muhammad Aashique ilahi buland shehri



e-book by : umarkairanvi@gmail.com
islaminhindi.blogspot.com

يَوْمَ يَقْرَأُ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّيهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ

जिस दिन कि भागे मर्द अपने भाई से और अपनी मां और अपने बाप से और अपनी साथ वाली और अपने बेटों से

मरने के बाद क्या होगा?

जिस में बर्ज़ख़(क़ब्र) अहले क़ब्र दोज़ख़ अहले दोज़ख़
क़ियामत हिसाब-किताब शफ़ाअत और आराफ़ वालों के
पुरे हालात कुरआन व हदीस की रोशनी में बयान किए
गए हैं आख़िर में जन्नत और जन्नत वालों नेमतें पुरी
तफ़सील से बयान की गई हैं

लेखक:-

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलंद शहरी

फ़ानी बुक डिपो

425 / 3, चंदू मार्केट, मटिया गल्ल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन: 23242427, 55393969 (मोबाइल) 9312272836 (पर) 25702389

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :-

अनवार अहमद
फ़ानी बुक डिपो
425/3 उर्दु मार्किट मटिया महल,
जामा मस्जिद दिल्ली-6

मुल्य

नाम किताब:-

मरने के बाद क्या होगा?

प्रिंटर्स नाहिद ऑफसेट प्रेस, दरिया गंज

विषय-सूची

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या?

कहाँ?

अपनी बात

११

अह्मदाले बर्ख (१७-५०)

१. मोमिन का रुत्बा, मौत के वक्त और मौत के बाद	१७
२. काफ़िर की ज़िल्लत	१६
३. मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान	२१
४. क़ब्र में मोमिन का बे-खौफ़ होना	२२
५. मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जाना	२३
६. बर्ख़ वालों का मोमिन से पूछना	२४
७. बर्ख़ वालों पर ज़िदों के अमल पेश होते हैं	२६
८. क़ब्र का मोमिन को देवाना	२६
९. ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना	२७
१०. सदका ज़ारिया और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से इस्तफ़ार	२८
११. मोमिन को ग़लकुल मौत का सलाम	२६
१२. मोमिन का दुनिया में रहने से इन्कार करना	२६
१३. शहीदों से अल्लाह का खिताब	३०
१४. शहादत की तक्लीफ़	३१
१५. क़ब्र के अज़ाब की तपसीलात	३२
१६. क़ब्र में अज़ाब देने वाले अज़दहे	३३
१७. क़ब्र में अज़ाब की वज़ह से मय्यत का चीखना	३३
१८. चुगली करना और पेशाब से न वचना	३६
१९. कुछ खास कामों पर खास अज़ाब	३६
२०. ज़मीन का मय्यत से बात करना	३६
२१. क़ब्र के अज़ाब से बचे रहने वाले	४०
२२. मूर: मुल्क पढ़ने वाला	४०
२३. पेट के मर्ज में मरने वाला	४१
२४. जुमे की रात या जुमे के दिन मरने वाला	४२
२५. रमज़ान में मरने वाला	४२

मरने के बाद क्या होगा ?

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या ?

कहां ?

२६. जो मरीज होकर मरे	४२
२७. मुजाहिद और शहीद	४२
२८. एक शस्त्र को जमीन ने कुबूल न किया	४३
२९. बर्जख से सुबह-शाम जन्नत या दोजख का पेश होना	४४
३०. आहजरत सल्ल० पर उम्मत के आमांल पेश किए जाते हैं	४५
३१. रौजा-ए-मुतहहरा के पास दरूद व सलाम	४५
३२. नवियों की बर्जखी ज़िदगी	४६
३३. उहद के कुछ शहीदों के जिस्म	४६

हालाते जहन्नम (५१-१००)

३४. अपनी वात	५४
३५. दोजख की गहराई	५५
३६. दोजख की दीवारें	५५
३७. दोजख के दरवाजे	५६
३८. दोजख की आग और अवेरी	५६
३९. दोजख के अज़ाब का अंदाज़ा	५७
४०. दोजख की सांस	५७
४१. दोजख का ईंधन	५८
४२. दोजख के तम्बके	६६
४३. दोजख की एक खास गरदन	६१
४४. आग के स्तूनों में बंद कर दिए जाएंगे	६१
४५. दोजख पर मुकर्रर फ़रिस्तों की तायदाद	६२
४६. दोजख का गैज़ व गज़ब	६२
४७. दोजख की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिस्ते	६५
४८. दोजख के सांप और बिच्छू	६५
४९. दोजख में मौत न आएगी और अज़ाब हल्का न होगा	६६
५०. दोजख की आवाज़ 'हल मिम मजीद'	६७
५१. सब करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी	६७
५२. दोजखियों का खाना-पीना	६८
५३. ज़रीअ यानी आग के कांटे	६८
५४. गिस्लीन (घावों का धोवन)	६८
५५. ज़क्कूम (सेंड)	६८
५६. गरसाक़	७०

मरने के बाद क्या होगा ?

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या ?

कहां ?

५७. माइन कल मुहिल (कीट)	७०
५८. माइन सदीद (पीप का पानी)	७१
५९. हमीमुन (खोलता हुआ पानी)	७१
६०. तआमुन जी गिस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)	७१
६१. अज़ाब के अलग-अलग तरीक़े	७३
६२. अलग-अलग सज़ाएं	७४
६३. समूद (आग का एक पहाड़)	७७
६४. सिलसिला (बहुत लंबी-जंजीर)	७८
६५. तौक़	७८
६६. गंधक के कपड़े	७९
६७. दोजख के दारोगों के ताने	८०
६८. दोजखियों के हालात	८१
६९. दोजख में जाने वालों की तायदाद	८१
७०. दोजख में ज्यादा औरतें होंगी	८२
७१. दोजखियों की बद-सूरती	८३
७२. पुले सिरात से गुज़र कर दोजख में गिरना,	८५
७३. दाखिले की सूरत	८७
७४. दोजख वालों से शैतान का खिताब	८६
७५. गुमराह करने वालों पर दोजखियों का गुस्सा	८०
७६. दोजखियों की चीख-पुकार	८२
७७. जन्नतियों का हंसना	८४
७८. सीचने की वात	८५
७९. खात्मा	८८
८०. आखिरी वात	८६

मैदाने हशर (१०१-२४६)

८१. क्रियामत किन लोगों पर कायम होगी ?	११६
८२. क्रियामत की तारीख की खबर नहीं दी गयी	११८
८३. क्रियायत अचानक आ जाएगी	११६
८४. सूर और सूर का फूँक जाना	१२०
८५. कायनात का बिखर जाना	१२३
८६. पहाड़ों का हल	१२३
८७. आसमान व ज़मीन	१२५

मरने के बाद क्या होगा ?

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या ?	कहां ?
८८. चांद, सूरज, सितारे	१२६
८९. इंसानों का क़ब्रों से निकलना	१३१
९०. काफ़िरो की आंखें नीली होंगी	१३४
९१. दुनिया में कितने दिन रहे ?	१३५
९२. क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी	१३७
९३. चेहरों पर खुशी और उदासी	१३९
९४. मट्हर में पसीने की मुसीबत	१४१
९५. हर के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें	१४२
९६. ज़कात न देने वाला	१४५
९७. क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखे	१४७
९८. दुनिया में दोबारा आने की दस्वस्ति	१५४
९९. लीडरों की बेज़ारी	१५७
१००. हर के मैदान में प्यारे नबी सल्ल० के बुलन्द मतंवे का जुहर	१५८
१०१. उम्मतों मुहम्मदिया की पहचान	१६२
१०२. हीजे कौसर	१६३
१०३. हज़रत मुहम्मद सल्ल० के हीजे की खूबियां	१६४
१०४. सबसे पहले हीजे पर पहुँचने वाले	१६५
१०५. हीजे कौसर से हटाये जाने वाले	१६६
१०६. अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जाएंगे	१६८
१०७. नेमतों का हाल	१७०
१०८. फ़रिश्तों से खिताब	१७५
१०९. फ़रिश्तों का जवाब	१७६
११०. मुश्रिकों का इंकार	१८०
१११. जिन की पूजा करते थे, वे भी इंकारी होंगे	१८०
११२. हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान	१८२
११३. नमाज़ का हिसाब और नपलों का फ़ायदा	१८४
११४. बे-हिसाब जन्नत में जाने वाले	१८५
११५. सख्त हिसाब	१८६
११६. मोमिन पर अल्लाह का ख़ास करम	१८७
११७. किसी पर जुल्म न होगा	१८८
११८. वन्दों के हक़	१८९
११९. क़ियामत के दिन सबसे बड़ा ग़रीब	१९०
१२०. जानवरों के फ़ैसले	१९१

मरने के बाद क्या होगा ?

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या ?	कहां ?
१२१. मालिकों और गुलामों का इंसफ़	१९३
१२२. ज़िन्नो से खिताब	१९५
१२३. जुर्म न मानने पर गवाहियां	१९७
१२४. ज़मीन की गवाही	१९८
१२५. आमांलनामे	१९८
१२६. आमांलनामों की तक्सीम	२००
१२७. आमांलनामों के मिलने पर	२०१
१२८. अमल का वज़न	२०३
१२९. एक वन्दे के अमल का वज़न	२०५
१३०. सबसे ज़्यादा वज़नी अमल	२०६
१३१. काफ़िरो की नेकियां बे-वज़न होंगी	२०७
१३२. अल्लाह की रहमत से बरक़े जाएंगे	२१०
१३३. हर एक शमिन्दा होगा	२११
१३४. शफ़ाअत	२१२
१३५. तंबीह	२१६
१३६. मोमिनों की शफ़ाअत	२१६
१३७. मुजाहिद की शफ़ाअत	२१७
१३८. ना-बालिग़ बच्चों की शफ़ाअत	२१८
१३९. कुरआन के हाफ़िज़ की शफ़ाअत	२१९
१४०. रोज़ा और कुरआन की शफ़ाअत	२२०
१४१. तजल्ली-ए-साक़, पुल सिरात, तक्सीम नूर	२२०
१४२. नूर की तक्सीम	२२१
१४३. साक़ की तजल्ली	२२४
१४४. प्यारे नबी जन्नत खुलवाएंगे	२३०
१४५. जन्नत व दोज़ख़ में ग़िरोह-ग़िरोह जाएंगे	२३०
१४६. दोज़ख़ियों की आपस में एक दूसरे पर लानत	२३२
१४७. दोज़ख़ियों की अनोखी हैरत	२३३
१४८. अपने मानने वालों के सामने ज़नान की शफ़ाई	२३३
१४९. मानदार जन्नत में जाने से अटके रहेंगे	२३५
१५०. दोज़ख़ में अक्सर अड़ें और मानदार जाएंगे	२३६
१५१. दोज़ख़ और जन्नत दिखायी जाएंगी	२३८
१५२. दोज़ख़ में जाने वालों का अन्दाज़ा	२३९
१५३. क़ियामत के दिन की लम्बाई	२४०

मरने के बाद क्या होगा ?

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या?

कहां?

१५४ आराफ़ वाले

२४२

खुदा की जन्नत (२४७-३४२)

१५५. जन्नत किस चीज़ से बनी है?

२५१

१५६. जन्नत का फैलाव

२५१

१५७. जन्नत के दरवाज़े

२५२

१५८. जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों की दो जमाअतें

२५५

१५८. दाखिले के बाद मुबारकबादी

२५९

१६०. जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज

२६०

१६१. जन्नतियों का पहला नाश्ता

२६१

१६२. जन्नतियों का जिस्म और ख़ूबसूरती

२६३

१६३. जन्नतियों की तन्दुरुस्ती और जवानी

२६५

१६४. जन्नतियों की उम्रें

२६६

१६५. जन्नतियों के बाग़ और पेड़

२६६

१६६. जन्नत के फल और मेवे

२७०

१६७. जन्नत में खेती

२७५

१६८. जन्नत की लहरें

२७५

१६९. नहरे कौसर

२७७

१७०. जन्नत के चश्मे

२७८

१७१. जन्नत में पीने की चीज़ें

२७९

१७२. जन्नत के परिन्दे

२८२

१७३. जन्नती पूरी इज़्ज़त से खाएं-पिएंगे

२८२

१७४. जन्नतियों के बर्तन

२८४

१७५. जन्नत की शराब से नशा न होगा

२८५

१७६. जन्नतियों की सवारियां.

२८७

१७७. जन्नतियों की आपस में मुहब्बत

२८७

१७८. जन्नतियों की दिल्लगी

२८९

१७९. जन्नतियों का कपड़ा-गहना

२८९

१८०. जन्नतियों के ताज

२९२

१८१. जन्नतियों के बिछौने

२९३

१८२. जन्नतियों के तख़्त

२९४

१८३. विल्दान और गिल्मान

२९६

१८४. जन्नत में पाकीज़ा बीबियां

२९८

मरने के बाद क्या होगा ?

मरने के बाद क्या होगा ?

क्या?

कहां?

१८५. जन्नती बीबियों की खूबसूरती और दूसरी बातें

२९६

१८६. हरे ईन

३०२

१८७. जन्नत में हरे का तराना

३०५

१८८. मर्दों के लिए बहुत सी बीबियां

३०५

१८९. मर्दाना कूबत

३०६

१९०. जन्नत का बाज़ार

३०८

१९१. जन्नत की सबसे बड़ी नेमत

३११

१९२. गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख़ से निकलना

३१३

१९३. जन्नत में सबसे आखिर में जाने वाला

३१६

१९४. जन्नत में हमेशा रहेंगे

३२१

१९५. जन्नत में वह सब कुछ होगा, जिसकी चाह होगी

३२३

१९६. जन्नती न जन्नत से निकाले जायेंगे

३२३

१९७. अल्लाह की तरफ़ से रज़ामन्दी का एलान

३२४

१९८. जन्नत के दर्जे

३२५

१९९. जन्नत के बालाखाने

३२७

२००. जन्नत के खेमे और कुब्बे

३२८

२०१. जन्नत का मौसम

३२९

२०२. जन्नत में आराम ही आराम है

३३१

२०३. जन्नतियों की मजलसें

३३२

२०४. तहीयतुहुम फ़्रीहा सलाम

३३४

२०५. जन्नत की नेमतों को दुनिया में नहीं समझा जा सकता

३३५

२०६. जन्नत की खुशबू

३३७

२०७. क्या कोई जन्नत के लिए तैयारी करने वाला है ?

३३७

तजरीद

सहीह बुखारी शरीफ

चुरस्तिलख

इमामुल मुहद्दीसीन हुज्जतुल इस्लाम
हजरत अल्लामा शेख मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी रह०

अनुबावक

कौसर यजदानी नक्वी एम. ए.

फानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन 23242427, 55383889 (मोबाईल) 9312272836, (फै) 25762389

विषय-सूची

क्या?

कहां?

- | | |
|--|----|
| १. मोमिन का रुत्बा, मौत के वक़्त और मौत के बाद | १७ |
| २. काफ़िर की ज़िल्लत | १६ |
| ३. मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान | २१ |
| ४. क़ब्र में मोमिन का बेखौफ़ होना | २२ |
| ५. मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जाना | २३ |
| ६. बर्ज़ख़ वालों का मोमिन से पूछना | २५ |
| ७. बर्ज़ख़ वालों पर ज़िदों के अमल पेश होते हैं | २६ |
| ८. क़ब्र का मोमिन को दबाना | २६ |
| ९. ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना | २७ |
| १०. सदक़ा ज़ारिया और औलाद वगैरह की तरफ़ से इस्तरफ़ार | २८ |
| ११. मोमिन को मलकुल मौत का सलाम | २६ |
| १२. मोमिन का दुनिया में रहने से इंकार करना | २६ |
| १३. शहीदों से अल्लाह का खिताब | ३० |
| १४. शहादत की तकलीफ़ | ३१ |
| १५. क़ब्र के अज़ाब की तप़सीलात | ३२ |
| १६. क़ब्र में अज़ाब देने वाले अज़दहे | ३३ |
| १७. चुगली करना और पेशाब से न बचना | ३६ |
| १८. कुछ खास कामों पर खास अज़ाब | ३६ |
| १९. ज़मीन का मय्यत से बात करना | ३६ |
| २०. क़ब्र के अज़ाब से बचे रहने वाले | ४० |
| २१. पेट के मर्ज़ में मरने वाला | ४१ |
| २२. जुमे की रात या जुमे के दिन मरने वाला | ४२ |
| २३. रमज़ान में मरने वाला | ४२ |
| २४. मुजाहिद और शहीद | ४२ |
| २५. एक शख्स को ज़मीन ने कुबूल न किया | ४३ |
| २६. बर्ज़ख़ से सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख़ का पेश होना | ४४ |
| २७. आहज़रत सल्ल० पर उम्मत के आमाल पेश किए जाते हैं | ४५ |
| २८. नवियों की बर्ज़ख़ी ज़िदगी | ४६ |
| २९. उहद के कुछ शहीदों के ज़िम्म | ४६ |

अपनी बात

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिरंहमानिरंहीम०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَعَلٰى اٰلِهِ وَصَحْبِهِ هَذَا الَّذِيْنَ
الْمُتِّينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ يَلْحَاقِنِ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

अल्हम्दु लिस्ल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला खैरि खल्किही सय्यिदिना मुहम्मदिन सय्यिदिल मुसलीन व अला आलिही व सत्बिही हुदातिहीनिल मतीनि व मन तबि अ हुम बिअहसानिन इला योमिहीनि०

हजरत मुहम्मद सल्ल० की हदीसों को पढ़ने से साफ़ मालूम होता है कि मरने वाले को देखने में हम भले ही मुर्दा समझते हैं, लेकिन सच तो यह है कि वह ज़िंदा होता है। यह दूसरी बात है कि उसकी ज़िंदगी हमारी इस ज़िंदगी से बिल्कुल अलग होती है।

प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया है कि मुर्दे की हड्डी तोड़ना ऐसा ही है, जैसे ज़िंदगी में उस की हड्डी तोड़ी जाए। एक बार प्यारे नबी सल्ल० ने हजरत अब्र विन हज़म रज़ि० को एक क़ब्र से तक्रिया लगाये हुए बैठे देखा, तो फ़रमाया कि इस क़ब्र वाले को तक्लीफ़ न दो।

जब इंसान मर जाता है, तो इस दुनिया से निकल कर बर्जख़ की दुनिया में चला जाता है, चाहे अभी उसे क़ब्र में भी न रखा जाए या आग़ में भी न जलाया जाये। उसमें समझ होती है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जब मुर्दा (चारपाई वगैरह) पर रख दिया जाता है और उसके बाद क़ब्रस्तान ले जाने के लिए लोग उसे उठाते हैं तो अगर वह नेक था तो कहता है कि मुझे जल्द ले चलो और अगर वह नेक न था

तो घर वालों से कहता है कि हाय मेरी बर्बादी! मुझे वहां ले जाते हो ? (फिर फ़रमाया) कि इंसान के सिवा हर चीज़ उस की आवाज़ सुनती है। अगर इंसान उस की आवाज़ सुन ले तो ज़रूर बेहोश हो जाये।

मौत के बाद से क्रियामत कायम होने तक हर आदमी पर जो ज़माना गुज़रता है, उस को बर्जख़ कहा जाता है। बर्जख़ का मतलब है पर्दा और आड़। चूंकि यह ज़माना दुनिया और आखिरत के दमियान एक आड़ होता है, इसलिए उसे बर्जख़ कहते हैं।

चूंकि आप इंसान अपने मुर्दों को दफ़न किया करते हैं, इस लिए हदीसों में बर्जख़ के आराम या अज़ाब के बारे में क़ब्र ही के लपज़ (शब्द) आते हैं। इस का यह मतलब नहीं कि जिन इंसानों को आग़ में जला दिया जाता है या पानी में बहा दिए जाते हैं, वे बर्जख़ में ज़िंदा नहीं रहते। सच तो यह है कि अज़ाब व सवाब का ताल्लुक रूह से है और यह बात भी याद रहे कि अल्लाह तआला जले हुए ज़रों (कणों) को भी जमा करके अज़ाब व सवाब देने की ताक़त रखता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि (पहले ज़माने में) एक आदमी ने बहुत ज्यादा गुनाह किये। जब वह मरने लगा तो उसने अपने बेटों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊं, तो मुझे जला देना और मेरी राख़ को आधी धरती में बिखेर देना और आधी समुद्र में बहा देना। यह वसीयत करके उसने कहा कि अगर खुदा मुझ पर कादिर हो गया और उसने इसके वावजूद भी मुझे ज़िंदा कर लिया तो मुझे ज़रूर ही ज़बरदस्त अज़ाब देगा जो (मेरे अलावा) सारी दुनिया में और किसी को न देगा। जब वह मर गया तो उसके बेटों ने ऐसा ही किया, जैसा कि उस ने वसीयत की थी, फिर अल्लाह तआला ने समुद्र को हुक्म दिया कि इस आदमी के जिस्म के सारे ज़रों को जमा कर दो। समुद्र ने अपने अंदर के सारे ज़रों को जमा कर दिया और इसी तरह धरती को भी हुक्म दिया। उसने भी उस आदमी के जिस्म के सारे ज़रों को जमा कर दिया। सारे ज़रें जमा फ़रमा कर अल्लाह तआला ने उसे ज़िंदा फ़रमा दिया। फिर उस से फ़रमाया कि तू ने ऐसी वसीयत क्यों की ? उसने अर्ज़ किया, ऐ मेरे पालनहार ! तेरे डर से मैं ने ऐसा किया और आप ख़ूब जानते हैं। इस पर अल्लाह तआला ने उसे बरख़ दिया।

हदीस शरीफ़ की रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि मोमिन बंदे बर्जख़ में एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं और इस दुनिया से जाने वाले से यह भी पूछते हैं कि फ़लां का क्या हाल है और किस हालत में है।

हजरत सईद बिन जुबैर रह० फरमाते हैं कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्जख में उस की आत्मा उस का इस तरह स्वागत करती है जैसे दुनिया में किसी बाहर से आने वाले का स्वागत किया जाता है। और हजरत साबित बनानी रह० फरमाते थे कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्जख की दुनिया में उसके रिश्तेदार-नातेदार, जो पहले मर चुके हैं, उसे घेर लेते हैं और वे आपस में मिल कर उस खुशी से भी ज्यादा खुश होते हैं जो दुनिया में किसी बाहर से आने वाले से मिल कर होती है।^१

हजरत क़ैस बिन कबीसा रज़ि० फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया कि जो आदमी ईमान वाला नहीं होता, उसे मुर्दों से बात-चीत करने की इजाजत नहीं दी जाती। किसी ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या मुर्दें बात-चीत भी करते हैं ? फरमाया, हां एक और दूसरे से मुलाकात भी करते हैं।^२

हजरत आइशा रज़ि० फरमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया कि जो आदमी अपने (मुसलमान) भाई की (क़ब्र की) ज़ियारत (दर्शन) करता है और उनके पास बैठता है, तो वह क़ब्र वाला उसके सलाम का जवाब देता है और उससे मानूस (परिचित) होता है, यहां तक कि ज़ियारत करने वाला उठकर चला जाता है।^३

हजरत उम्मे बिशर रज़ि० फरमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से मैंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या मुर्दें आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं ? आपने फरमाया, तेरा भला हो ! रूढ़े मुतमइन्ना (वह रूढ़ जिसे इत्मीनान हासिल हो) जन्नत में हरे परिंदों की शक्ल में होती है। (अब तू खुद समझ ले) कि परिंदे अगर आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं तो रूढ़ें भी आपस में एक दूसरे को पहचानती हैं।^४

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ि० रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया कि जो आदमी कुरआन मजीद पढ़ना शुरू करे और पूरा किये बिना ही मर जाए तो क़ब्र में एक फ़रिश्ता उसे कुरआन शरीफ पढ़ाता है, चूंकि वह अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा कि उसे पूरा कुरआन मजीद हिफ़्ज़ (याद) होगा।^५

जो लोग भले कामों में जीवन बिताते हैं और वे मरने के बाद की ज़िदगी का यकीन रखते हैं, इस दुनिया में उन का मन नहीं लगता

१. इब्ने अबिदुन्या २. इब्ने हब्बान ३. इब्ने अबिदुन्या,

४. इब्ने साद, ५. शौक़े बतन,

और मौत को यहां की ज़िदगी के मुकाबले में बढ़ावा देते हैं। और जो लोग यहां की ज़िदगी को बुराइयों में गुज़ारते हैं, वे मौत से घबराते हैं। सुलैमान बिन अब्दुल् मलिक ने अबू हाज़िम रह० से पूछा कि यह बताइए कि हम मौत से क्यों घबराते हैं ? उन्होंने फरमाया, इसलिए घबराते हो कि तुमने दुनिया को आबाद और आखिरत को बर्बाद किया है, इस लिए आबादी से वीराने में जाना पसन्द नहीं करते। सुलैमान ने कहा, सही है, आप सच कहते हैं।

जिस आदमी को क़ब्र की ज़िदगी का यकीन हो और अपने अच्छे कामों के बदले वहां अच्छे हाल में रहने की उम्मीद हो और यह समझता हो कि इस दुनिया के दोस्त-साथी-रिश्तेदारों को छोड़कर चला जाऊंगा तो बर्जख में रिश्तेदार और जान-पहचान वाले मिल जाएंगे तो फिर मौत से क्यों घबराये और इस ज़िदगी को बर्जख की ज़िदगी पर क्यों बढ़ावा दे ? अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया—

يُحِبُّ الْإِنْسَانُ الْحَيَاةَ وَالْمَوْتَ خَيْرٌ لِّنَفْسِهِ

युहिब्बुल इंसानुल हया त वल मौतु खैरल्लि नफ़िसही

'इंसान ज़िदगी को प्यारा रखता है, हालांकि मौत उसके लिए बेहतर है (शर्त यह कि वह ईमान वाला हो और उसके काम अच्छे हों)।'

कुछ रिवायतों में यह भी है कि प्यारे नबी सल्ल० ने मौत को मोमिन का तोहफ़ा बताया है और यह भी फरमाया कि इंसान मौत को नापसंदीदा समझता है, हालांकि मौत फ़िल्लों से बेहतर है कि जितनी जल्दी मौत आ जाएगी, उतनी ही जल्दी दुनिया के फ़िल्लों से बच जायेगा।^१

हजरत अनस रज़ि० फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया कि इंसान के दुनिया से इतिहास करने की मिसाल ऐसी है, जैसे वच्चा मां के पेट की तंगी और अंधेरे से निकल कर दुनिया के आराम व राहत में आ जाता है।^२ मतलब यह कि मोमिन के लिए मौत बड़ी अच्छी चीज़ है, वस शर्त यह है कि नेक अमल करने वाला हो और उस ने अपने और अल्लाह के दमियान मामला ठीक रखा हो। जो बंदे नेक कामों में ज़िदगी गुज़ारते हैं, वे मौत को इस ज़िदगी पर बढ़ावा देते हैं और यहां मुसीबतों और परेशानियों से निकल कर जल्द से जल्द अम्न व अमान और राहत व चैन वाली हमेशा की ज़िदगी में जाना चाहते हैं।

हजरत अबूहुरैरह रज़ि० ने एक बार किसी से पूछा कि कहां जा

१. मिस्कात, २. अहमद, ३. हकीम तिमिज़ी,

रहे हो ? उन्होंने जवाब दिया कि बाज़ार का इरादा है। फ़रमाया, हो सके तो मेरे लिए मौत खरीदते लाना। मतलब यह था कि हमें इस दुनिया में रहना पसंद नहीं है। अगर, कीमत से भी मौत मिले तो खरीद लें।

हज़रत खालिद बिन मादान रज़ि० फ़रमाते थे कि अगर कोई आदमी यह कहे कि जो आदमी सबसे पहले फ़लां चीज़ छू ले तो वह उसी वक़्त मर जाएगा, तो मुझ से पहले कोई भी उस चीज़ को नहीं छू सकता। हां, अगर मुझ से ज्यादा कोई दौड़ सकता हो और मुझ से पहले पहुंच जाए तो और बात है।^१

اللَّهُمَّ حَبِّبِ الْمَوْتَ إِلَيَّ وَإِلَى مَنْ يَعْلَمُ أَنَّ سَيِّدَنَا
مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ،

अल्लाहुम्म हब्बिबिल मौ त इलय्य व इला मंय्यअलमु अन्न सय्यि-
दना मुहम्मदन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अब्दु क व रसूलु क
शुरू की इन बातों के बाद अब बर्जख के हालात लिखना शुरू
करते हैं।

والله ولي التوفيق وهو خير عون وخير رفيق.

वल्लाहु वलीयुत्तौफ़ीक़ि व हु व खैर औनिन व खैर रफ़ीक़िन

अह्वाल बर्जख मोमिन का रुत्बा, मौत के वक़्त और मौत के बाद

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दिन हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ एक अंसारी के जनाज़े में कब्रस्तान गये। जब कब्र तक पहुंचे तो देखा कि कब्र नहीं बनायी जा सकी है, इस वजह से नबी सल्ल० बैठ गये और हम भी आपके आस-पास (अदब के साथ) इस तरह बैठ गये कि जैसे हमारे सरो पर परिदे बैठे हैं।^१

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी, जिससे जमीन कुरेद रहे थे (जैसे कोई दुखी आदमी किया करता है।) आप ने मुबारक सर उठा कर फ़रमाया कि कब्र के अज़ाब से पनाह मांगो। दो या तीन बार यही फ़रमाया, फिर फ़रमाया कि बेशक जब मोमिन वंदा दुनिया से जाने और आखिरत का रुख करने को होता है, तो उसकी तरफ़ आसमान से फ़रिश्ते आते हैं, जिनके सफ़ेद चेहरे सूरज की तरह रोशन होते हैं। उनके साथ जन्नती कफ़न होता है और जन्नत की खुशबू होती है। ये फ़रिश्ते इतने होते हैं कि जहां तक उसकी नज़र पहुंचे, वहां तक बैठ जाते हैं। फिर (हज़रत) मलकुल मौत (मौत का फ़रिश्ता) अलैहिस्सलाम तबरीक़ लाते हैं, यहां तक कि उस के पास बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं कि ए पाक रूह! अल्लाह की मफ़िरत और उसकी रज़ामंदी की तरफ़ निकल कर चल। चुनांचे उसकी रूह इस तरह

१. यानी इस तरह खामोश, दम साधे बैठ गये जैसे कि हम में हरकत ही नहीं रही। परिदा बे-हरकत चीज़ों पर बैठता है। सहाबा किराम रज़ि० की यह हालत हदीस पाक सुनने के वक़्त ऐसी ही होती थी।

आसानी से निकल आती है जैसे मशकीजा (छोटी मशक) 'में से (पानी का) कतरा बहता हुआ बाहर आ जाता है। तो उसे हज़रत मलकुल मोत अलैहिस्सलाम ले लेते हैं। उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते (जो दूर तक बैठे होते हैं) पल भर भी उनके हाथ में नहीं छोड़ते, यहां तक कि उसे लेकर उसी कफ़न और खुश्वू में रख कर आसमान की तरफ़ चल देते हैं। इस खुश्वू के बारे में इश्राफ़ फ़रमाया कि ज़मीन पर जो कभी अच्छी से अच्छी खुश्वू मुश्क की पायी गयी है, उस जैसी वह खुश्वू होती है।

फिर फ़रमाया कि उस रूह को लेकर फ़रिश्ते (आसमान की तरफ़) चढ़ने लगते हैं और फ़रिश्ते की जिस टोली पर भी इनका गुज़र होता है, वह कहते हैं कि यह कौन पाक रूह है, वह उसका अच्छे से अच्छे नाम लेकर जवाब देते हैं, जिससे दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़लां का बेटा फ़लां है। इसी तरह पहले आसमान तक पहुंचते हैं और आसमान का दरवाज़ा खोलते हैं। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वे इस रूह को लेकर ऊपर चले जाते हैं, यहां तक कि सातवें आसमान पर पहुंच जाते हैं, हर आसमान के क़रीबी फ़रिश्ते दूसरे आसमान तक उसे विदा करते हैं। जब सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे को 'इत्लीयीन की किताब' (नेकों के दफ़्तर) में रख दो और उसे ज़मीन पर वापस ले जाओ, क्योंकि मैंने इंसान को ज़मीन ही से पैदा किया है, और उसी में उसको लौटा दूंगा और उसी से उनको दोबारा निकाल लूंगा। चुनांचे उसकी रूह उसके जिस्म में वापस कर दी जाती है। इसके बाद दो फ़रिश्ते उसके पास आते हैं, जो आकर उसे बिठाते हैं और उस से सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है। वह जवाब देता है, मेरा रब अल्लाह है। फिर उस से पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है, मेरा दीन इस्लाम है। फिर उससे पूछते हैं कि यह कौन साहब हैं, जो तुम्हारे अन्दर भेजे गये? वह कहता है कि वह अल्लाह के रज़ूल हैं (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। फिर उससे दर्याफ़्त करते हैं कि तेरा अमल क्या है? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी, सो उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की। इसके बाद एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) आसमान से आवाज़ देता है (जो अल्लाह का मुनादी होता है) कि मेरे बन्दे ने सच कहा, सो उसके लिए जन्नत के बिछीने बिछा दो और उसको जन्नत के कपड़े पहना दो और उसके लिए जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो, चुनांचे जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है, जिसके ज़रिये जन्नत का आराम और खुश्वू भीतर आती

रहती है और उसकी क़ब्र इतनी फैला दी जाती है कि जहां तक उसकी नज़र पहुंचे।

इसके बाद बहुत ही खूबसूरत चेहरे वाला, बेहतरीन कपड़ों वाला, (और) पाक खुश्वू वाला एक आदमी उसके पास आ कर कहता है कि खुशी की चीज़ों की खुशख़बरी सुन ले। यह तेरा वह दिन है जिसका तुम से वायदा किया जाता था, वह कहता है तुम कौन हो? तुम्हारा चेहरा सच में चेहरा कहने के क़ाबिल है और इस क़ाबिल है कि अच्छी ख़बर लाए, वह कहता है कि मैं तेरा भला अमल हू।

इसके बाद वह (खुशी में) कहता है कि ऐ रब ! क्रियामत कायम फ़रमा। ऐ रब ! क्रियामत फ़रमा, ताकि मैं अपने बाल-बच्चों और माल में पहुंच जाऊं।

काफ़िर की ज़िल्लत

और बिला शुबहा जब काफ़िर बन्दा दुनिया से जाने और आखिरत का रख करने को होता है तो स्याह चेहरों वाले फ़रिश्ते आसमान से उसके पास आते हैं, जिनके साथ टाट होते हैं और उसके पास इतनी दूर तक बैठ जाते हैं जहां तक उसकी नज़र पहुंचाती है। फिर मलकुल मोत तशरीफ़ लाते हैं, यहां तक कि उसके सर के पास बैठ जाते हैं, फिर कहते हैं कि ऐ खबीस (दुष्ट) जान, अल्लाह की नाराज़ी की तरफ़ निकल। मलकुल मोत का यह हुक्म सुनकर रूह उसके जिस्म में इधर उधर भागी फिरती है, इसलिए मलकुल मोत उसकी रूह को जिस्म से इस तरह निकालते हैं कि जैसे बोटियां भूने की सीख भोगे हुए ऊन से साफ़ की जाती हैं (यानी काफ़िर की रूह को जिस्म से ज़बरदस्ती इस तरह निकालते हैं जैसे भोगा हुआ ऊन कांटेदार सीख पर लिपटा हुआ हो और उसको जोर से खींचा जाए) फिर उसकी रूह को मलकुल मोत (अपने हाथ में) ले लेते हैं और उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते पल भर कने के बराबर भी उनके पास नहीं छोड़ते, यहां तक कि फ़ौरन उससे लेकर उसको टाटों में लपेट देते हैं (जो उनके पास होते हैं) और उन टाटों में ऐसी बदबू आती है जैसी कभी किसी बहुत ज़्यादा सड़ी हुई मुर्दा लाश से घरती पर बदबू फूटी हो। वे फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं। और

१. इसमें जन्नत को हरे और जन्नत की नेमतें मुराद हैं (मिर्कात)

फरिश्तों के जिस गिरोहे पर भी पहुंचते हैं, वे कहते हैं कि यह कौन खबीस रूह है ? वे उसका बुरे से बुरा वह नाम लेकर कहते हैं, जिससे वह दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़लां का बेटा फ़लां है, यहां तक कि वे उसे लेकर पहले आसमान तक पहुंचते हैं और दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं, मगर उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाता है, जैसा कि अल्लाह ज़ल्ल शानुह ने फ़रमाया है—

لَا تَنْفَعُهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَلَدُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ (سورة اعراف)

ला तुफ्तहु लहुम अब्वाःबुस्माई व ला यदखुलू नन जन्न त हत्ता यलि जल ज मलु फ़ी सम्मिल खियाति०

—सूरः आराफ़

‘उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएंगे, और न वे कभी जन्नत में दाखिल होंगे, जब तक ऊंट मुई के नाके में न चला जाए (और ऊंट मुई के नाके में जा नहीं सकता इसलिए वे भी जन्नत में नहीं जा सकते।)’

फिर अल्लाह तआला फरमाते हैं कि इसको सिज्जीन की किताब (बुरों आमांल नामे के दफ़्तर) में लिख दो, जो सबसे नीची ज़मीन में है। चुनांचे उसकी रूह (वहां से) फेंक दी जाती है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी—

وَمَنْ يَشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ السَّيْلُ فِي مَكَانٍ سَحِينٍ (سورة حج)

व मय्युशिरक फ़ क अन्नभा खरं थिनस्समाइ फ़ तख्त फ़हुत्तेर अब तह्वी बिहिरीं ह फ़ी मकानिन सहीक०

—सूरः हज

‘और जो आदमी अल्लाह के साथ शिकं करता है, गोया वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चिड़ियों ने उसकी बोटियां नोच लीं या हवा ने उसको बहुत दूर की जगह में ले जाकर फेंक दिया।’

फिर उसकी रूह उसके जिस्म में लौटा दी जाती है और उसके पास दो फरिश्ते आते हैं और उसे बिठा कर पूछते हैं कि तेरा रब कौन है ? वह कहता है, हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है ? वह कहता है, हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि यह आदमी कौन है, जो तुम्हारे अन्दर भेजे गये ? वह कहता है, हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं। जब यह सवाल व जवाब हो चुकते हैं तो आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है कि हमने शठ

कहा।’ इसके नीचे आग बिछा दो और इसके लिए दोख़ का दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दोख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और दोख़ की गर्मी और गर्म लू आती रहती है और कब्र उस पर तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां भिचकर आपस में इधर की उधर चली जाती हैं और उसके पास एक आदमी आता है जो बद-सूरत और बुरे कपड़े पहने हुए होता है। उसके जिस्म से बुरी बदबू आती है। वह आदमी उससे कहता है कि मुसीबत की खबर सुन ले। यह वह दिन है जिसका तुझ से वायदा किया जाता था। वह कहता है, तू कौन है ? सब में, तेरी शक्ल ऐसी है कि तू बुरी खबर सुनाये। वह कहता है कि मैं तेरा बुरा अमल हूं। यह सुनकर वह (इस डर से कि मैं क्रियामत में यहां से ज्यादा अज़ाब में गिरपतार हूंगा) यों कहता है कि ऐ रब क्रियामत कायम न कर।’

एक रिवायत में है कि जब मोमिन की रूह निकलती है तो आसमान व ज़मीन के बीच का हर फरिश्ता और वे सब फरिश्ते जो आसमान में हैं, सब के सब उस पर रहमत भेजते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसकी रूह को हमारी तरफ ले कर चढ़ाया जाय और काफ़िर के बारे में फ़रमाया कि उसकी जान रगों समेत निकाली जाती है और आसमान व ज़मीन के बीच का हर फरिश्ता और वे सब फरिश्ते जो आसमान में हैं, सब के सब उस पर लानत भेजते हैं और उस के लिए आसमान के दरवाज़ बंद कर दिए जाते हैं और हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसकी रूह को हमारी तरफ से लेकर न चढ़ाया जाए।’

मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मोमिन को क़ब्र में दाखिल

१. यानी इसको अपने रब की खबर है, लेकिन यह उसको मानता न था और जिस दिन (धर्म) पर था उसे भी जानता है और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के नबी होने को भी जानता है, लेकिन अज़ाब से बचने के लिए अपने को अनजाना जाहिर कर रहा है।

२. मिश्कात शरीफ़, ३. मिश्कात,

कर दिया जाता है तो उसको ऐसा मालूम होता है, जैसे सूरज छिप रहा हो, तो जब उसकी रूह लौटायी जाती है, तो आँखें मलता हुआ उठ कर बैठता है और (फ़रिश्तों से) कहता है कि मुझे छोड़ दो, मैं नमाज़ पढ़ता हूँ।^१

मुल्ला अली क़ारी लिखते हैं कि गोया वह उस वक़्त अपने आप को दुनिया में ही समझता है कि सवाल व ज़वाब को रहने दो, मुझे फ़ज़्र अदा करने दो, वक़्त ख़त्म हुआ जा रहा है, मेरी नमाज़ जाती रहेगी।

फिर लिखते हैं कि यह बात वही कहेगा जो दुनिया में नमाज़ का पाबंद था और उसको हर वक़्त नमाज़ का ख़याल लगा रहता था।

इससे बे-नमाज़ियों को सबक हासिल करना चाहिए और अपने हाल का इससे अन्दाज़ा लगायें और इस बात को ख़ूब सोचें कि जब अचानक सवाल होगा तो कौसी परेशानी होगी।

क़ब्र में मोमिन का बे-खौफ़ होना और उसके सामने जन्नत पेश होना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि बे-शुबहा मुर्दा अपनी क़ब्र में पहुँच कर बे-खौफ़ और इत्मीनान के साथ बैठता है, फिर उस से सवाल किया जाता है कि (तू दुनिया में) किस दीन में था? वह ज़वाब देता है कि मैं इस्लाम में था। फिर उस से सवाल होता है कि (तेरे अक़ीदे में) यह कौन है, (जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये)? वह ज़वाब देता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो हमारे पास अल्लाह के पास से खुले-खुले भोज़े लेकर आये, तो हमने उनकी तस्दीक़ की। फिर उससे पूछा जाता है कि क्या तूने अल्लाह को देखा है? वह ज़वाब देता है कि (दुनिया में) कोई आदमी अल्लाह को नहीं देख सकता (फिर मैं कैसे देख लेता?)

फिर उसके सामने दोज़ख़ की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है (जिस के ज़रिए) वह दोज़ख़ को देखता है कि आग के अंगारे आपस में एक दूसरे को खाये जाते हैं। (जब वह दोज़ख़ का मंज़र देख लेता

१. इन्ने माज़ा,

है) तो उससे कहते हैं कि देख, अल्लाह ने तुझ किस मुसीबत से बचाया? फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है (जिस के ज़रिए) वह जन्नत की रौनक और जन्नत की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि यह (जन्नत) तेरा ठिकाना है, तू यक़ीन ही पर ज़िदा रहा और यक़ीन ही पर तुझे मौत आयी और यक़ीन ही पर तू क़ियामत के दिन (क़ब्र से) उठेगा, इनशाअल्लाह तआला (अगर अल्लाह ने चाहा)।

फिर फ़रमाया कि ना-फ़र्मान आदमी डरा और घबराया हुआ अपनी क़ब्र में बैठता है। उससे सवाल होता है कि तू दुनिया में किस दीन में था? वह ज़वाब देता है कि मुझे पता नहीं। फिर उससे (हुज़ूर सल्ल० के बारे में) सवाल होता है कि (तेरे अक़ीदे में) ये कौन हैं? वह कहता है कि इस बारे में मैंने वही कहा जो और लोगों ने कहा। फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है, जिसके ज़रिए वह उसकी रौनक और उसके अंदर की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि देख, (तूने खुदा की नाफ़रमानी की) खुदा ने तुझ किस नेमाज़ से महकूम किया। फिर उसके सामने दोज़ख़ की तरफ़ एक रोशनदान खोला जाता है जिस के ज़रिए वह दोज़ख़ को देख लेता है कि आग के अंगारे एक दूसरे को खाये जाते हैं, फिर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है। तू शक़ ही पर ज़िदा रहा और शक़ ही पर तुझे मौत आयी। और अगर अल्लाह ने चाहा तो क़ियामत को भी इसी शक़ पर उठेगा।^१

मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जा और मुनाफ़िक़ व काफ़िर को ज़मीन का भींचना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मय्यत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनका

१. मियकात

रंग स्याह और आंखें नीजी होती हैं, जिन में से एक को मुन्किर दूसरे को नकीर कहा जाता है। वे दोनों उससे पूछते हैं कि तू क्या कहता है उन साहब के बारे में (जो तुम्हारी तरफ भेजे गये ?) वह अगर मोमिन है तो जवाब देता है कि वह अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (जिसकी इबादत की जाए) नहीं और बे-शुबहा मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। यह सुन कर वे दोनों कहते हैं कि हम तो जानते थे कि तू ऐसा ही जवाब देगा। फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ वर्ग चौड़ी कर दी जाती है, फिर रोशन कर दी जाती है। फिर उससे कह दिया जाता है कि (अब तू) सो जा। वह कहता है कि मैं तो अपने घर वालों को (अपना हाल) बताने के लिए जाता हूँ। वे कहते हैं कि (यहां आकर जाने का कानून नहीं है!) तू सो जा जैसा कि दुल्हन सो जाती है, जिसे उसके शौहर के सिवा कोई नहीं उठा सकता। (चुनांचे वह आराम से क़ब्र में रहता है) यहां तक कि अल्लाह उसे क्रियामत के दिन उस जगह से उठायेगा।

और अगर मरने वाला मुनाफ़िक़ (या काफ़िर) होता है तो वह मुन्किर-नकीर को जवाब देता है कि मैं ने जो लोगों को कहते सुना, वही कहा (इस से ज्यादा मैं नहीं जानता) वे दोनों कहते हैं कि हम तो खूब जानते थे कि तू ऐसा ही जवाब देगा। फिर ज़मीन से कहा जाता है कि उसको भींच दे। चुनांचे ज़मीन उसको भींच देती है, जिससे उसकी पस-लियां इधर की उधर चली जाती हैं। फिर वह क़ब्र के अंदर अज़ाब में रहता है, यहां तक कि (क्रियामत को) खुदा ही उसे वहां से उठायेगा।^१

इन हदीसों से माज़ूम हुआ कि ईमान वाले बर्जख़ की दुनिया में इल्मीनान से होंगे और उनके होश व हवास सही रहेंगे, यहां तक कि उन को नमाज़ का ध्यान होगा और फ़रिस्तों के सवाल का जवाब देने में बेखौफ़ होंगे और जब अपना अच्छा हाल देख लेंगे तो घर वालों को खुश-खबरी देने के लिए फ़रिस्तों से कहेंगे कि 'मैं अभी नहीं सोता। घर वालों को खबर करने जाता हूँ।' और बहुत ज्यादा खुशी में अपना भला अंजाम देख कर फ़ौरन ही क्रियायत कायम होने का सवाल करेंगे, ताकि जल्द से जल्द जन्नत में पहुंचें। जिस पर अल्लाह का करम हो, उसके होश व हवास वाक़ी रहते हैं और उससे अल्लाह जल्द शानुह सही जवाब दिलाते हैं, जैसा कि सूर: इब्राहीम में फ़रमाया—

१. तिमिज़ी शरीफ़,

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

युसब्वितुल्लाहुल्लजी न आमनू बिल क़ौलि त्साबिति फ़िलहयाति-दुन्या व फ़िल आखिरति०

‘ईमान वालों को अल्लाह इस पक्की बात यानी (कलमा तयबा) से दुनिया व आखिरत में मज़बूत रखता है।’

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ उमर! उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जबकि लोग तुम को क़ब्र में रख कर और मिट्टी डाल कर चले आएंगे, फिर तुम्हारे पास क़ब्र के मुम्तहिन (इम्तिहान लेने वाले) आएंगे, जिन की आवाज़ सख़्त गरज की तरह होगी और जिनकी आंखें नज़र उचक लेने वाली बिजली की तरह होंगी, सो वे तुम को हिला डालेंगे और तुम से हाकिमों जैसी बात-चीत करेंगे, बताओ उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस वक़्त हमारी अक़ल हमारे साथ होगी? आप ने इश़ाद फ़रमाया, हां इसी तरह तुम्हारी अक़लें तुम्हारे पास होंगी, जैसी आज हैं! यह सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया कि बस तो मैं निमट लूंगा।^१

बर्जख़ वालों का मोमिन से पूछना कि फ़लां का क्या हाल है?

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब फ़रिस्ते मोमिन की रूह को लेकर (उन) मोमिनों की रूहों के पास ले जाते हैं (जो पहले से जा चुके हैं) तो वे रूहें उसके पहुंचने पर ऐसी खुश होती हैं कि (इस दुनिया में) तुम भी अपने किसी ग़ायब के आने पर इतना खुश नहीं होते। फिर उससे पूछते हैं कि फ़लां का क्या हाल है? फ़लां का क्या हाल है? फिर वे (खुद ही आपस में) कहते

१. तवरानी बग़ैरह, शौक़े बतन के हवाले से,

हैं कि अच्छा अभी ठहरो, फिर पूछ लेना, छोड़ दो ज़रा आराम करने दो, चूँकि दुनिया के ग़म में मुब्तला था। फिर (वह बताने लगता है कि प्लां इस तरह है, प्लां इस तरह है और) वह किसी शख्स के बारे में कहता है, जो उससे पहले मर चुका था कि वह तो मर गया, क्या तुम्हारे पास नहीं आया ? यह सुन कर वे कहते हैं कि (जब वह दुनिया से आ गया और हमारे पास नहीं आया तो) ज़रूर उसको दोज़ख में पहुँचा दिया गया।^१

बर्ज़ख वालों पर ज़िन्दों के अमल पेश होते हैं

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि बिलाशुबहा तुम्हारे अमल तुम्हारे रिस्ते-दारों और खानदान वालों के सामने पेश किये जाते हैं, जो आखिरत में पहुँच चुके हैं, अगर तुम्हारा अमल नेक हो, तो वे खुश होते हैं और खुदा-वन्द करीम से दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह ! यह आप का फ़ज़ल और रहमत है, सो आप अपनी नेमत इस पर पूरी फ़रमा दीजिए और इसी पर इस को मौत दीजिए और अगर बुरा अमल उन के सामने पेश होता है तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह ! इस के दिल में नेकी डाल दे जो तेरी रिज़ा (खुशी) और तेरे कुर्वों की वजह बन जाए।^२

क़ब्र का मोमिन को दबाना ऐसा होता है जैसे मां बेटे का सर दबाती है

हज़रत सईद इब्नुल मुसय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! जब से आप ने मुन्किर-नकीर की (डरावनी) आवाज़ और क़ब्र के भींचने का ज़िक्र फ़रमाया है, उस वक़्त से मुझे किसी चीज़ से तसल्ली नहीं होती है (और दिल की परेशानी दूर नहीं होती)। आपने इशार्द फ़रमाया कि ऐ आइशा ! मुन्किर-नकीर की आवाज़ मोमिन के कानों में ऐसी होगी जैसे (एक सुरीली आवाज़ कानों

१. अहमद, नसई, २. क़रीब होना ३. शोक वतन,

में भली मालूम होती है जैसे) आंखों में सुरमा लगाने से आंखों को लज्जत महसूस होती है और मोमिन को क़ब्र का दबाना ऐसा होता है जैसे किसी के सर में दर्द हो और उसकी ममता भरी मां धीरे-धीरे अपने बेटे का सर दबाती है और वह उससे आराम व राहत पाता है, और (याद रख) ऐ आइशा ! अल्लाह के बारे में शक करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है और वे क़ब्र में इस तरह भींचे जाएंगे जैसे अंडे पर पत्थर रख कर दबा दिया जाए।^३

ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना और उसकी मौत पर रोना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि हर इंसान के लिए आसमान के दो दरवाज़े हैं। एक दरवाज़े से उसका अमल चलता है और दूसरे दरवाज़े से उसकी रोज़ी उतरती है। जब मोमिन मर जाता है तो दोनों दरवाज़े उसके (मरने पर) रोते हैं।^४

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया बेशक जब मोमिन मर जाता है तो उसको मरने पर क़ब्रस्तान अपने आप को सजा लेते हैं, इसलिए इनमें का कोई हिस्सा ऐसा नहीं होता, जो यह तमन्ना न करता हो कि यह मुझ में दफन हो।^५

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते थे कि मोमिन के मरने पर ४० दिन तक ज़मीन रोती है।^६

हज़रत अता अल-खुरासानी रह० फ़रमाते थे कि जो बंदा ज़मीन के किसी हिस्से में सज़दा करता है, यह हिस्सा क्रियामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगा और उसके मरने के दिन रोयेगा।^७

१. शोक वतन के हवाने से,
२. तिमिज़ी शरीफ़,
३. इब्ने असाकिर,
४. हाकिम बशरह,
५. अबू नुऐम, शोक वतन के हवाने से

सदका जारीया! और औलाद वगैरह की तरफ से इस्तरफार का नफा

हजरत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा मरने के बाद जो चीज़ें मोमिन को उसकी नेकियों से पहुंचती हैं, उनमें से एक इल्म है, जिसको उसने फैलाया हो या नेक औलाद छोड़ी हो या कोई कुरआन शरीफ़ वरसे^१ में छोड़ गया हो या मस्जिद बनवा गया हो या कोई मुसाफ़िरखाना बना गया, हो या नहर जारी कर गया हो या अपनी ज़िदगी व तन्दुस्ती की हालत में अपने माल में से ऐसा सदका कर गया हो जिसका सवाब मरने के बाद भी पहुंचता हो।^२

और हजरत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा अल्लाह तआला नेक बन्दे का दर्जा जन्नत में बुलंद फ़रमा देगा। वह कहेगा कि ऐ खुदा! यह दर्जा मुझे कैसे मिला? अल्लाह जल्ल शानुहु इर्शाद फ़रमायेंगे, तेरी औलाद ने तेरे लिए इस्तरफ़ार की जिसकी वजह से यह मर्जआ तुम को मिला।^३

एक रिवायत में है कि क्रियामत के दिन कुछ आदमियों के साथ पहाड़ों के बराबर नेकियां होंगी। वह यह देखकर अर्ज़ करेगा कि ये मुझे कहां से मिलीं? इर्शाद होगा, तेरी औलाद के इस्तरफ़ार की वजह से तुझे यह दी गयी है।^४

हजरत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलु खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मंयत अपनी क़ब्र में बस ऐसी ही (मुहताज) होती है, जैसे कोई डूबता हुआ। (फिर फ़रमाया कि) वह दुआ के इन्तिज़ार में रहती है जो उसके बाप या मां या भाई या दोस्त की तरफ़ से उसे पहुंच जाए। जब उसे (इनमें से किसी की) दुआ पहुंचती है तो सारी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, इस सब से ज्यादा उसको वह दुआ प्यारी होती है और

१. ऐसा सदका या भला काम, जिससे लोग बराबर फ़ायदा उठाते रहें,
२. विरासत, ३. मिशकात, ४. मिशकात, ५. शीक़े बतन के हवाले से,

बेशक ज़मीन वालों की दुआ से अल्लाह तआला क़ब्र वालों पर पहाड़ों के बराबर सवाब दाखिल फ़रमाते हैं और बेशक ज़िदों का हदिया मुदों के लिए उनके वास्ते इस्तरफ़ार^१ करना है।^२

मोमिन को मलकुल मौत का सलाम

हजरत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूलु करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मलकुल मौत खुदा के मक्बूल बन्दे के पास आते हैं तो उसको सलाम करते हैं और यों इर्शाद फ़रमाते हैं—

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللَّهِ قَدْ فَارَحَ مِنْ دَارِكَ النَّارِ حَرَّتُهَا
إِلَى دَارِكَ النَّارِ عُمُرَتُهَا.

अस्सलामु अलैक या वलीयल्लाह सुम्म फ़ज्रुज्ज। मन दारिकल्लती ख़रब्तहा इला दारिकल्लती अम्मर्तहा० (शुहुस्सुदूर)

'तुम परसलाम हों ऐ अल्लाह के दोस्त! उठो और इस घर से निकलो, जिसे तुम ने (नफ़स को ख़्वाहिशों को क़ुर्बान करके) बर्बाद किया है और उस घर को चलो जिसे तुम ने (इबादत करके) आबाद किया है।'

मोमिन का दुनिया में रहने से इन्कार करना और उसको बशारत मिलना

हजरत इब्ने जुरैज रज़ि० से रिवायत है कि रसूलु खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजरत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन (मरते वक़्त) फ़रिश्तों को देखता है तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि क्या हम तुम को दुनिया में वापस कर दें और रूह कब्ज़ न करें? वह कहता है, क्या मुझे ग़मों और फ़िक्रों की जगह छोड़ जाना चाहते हो? अब मैं तो नहीं रहता, मुझे अल्लाह तआला के पास ले चलो।^१

१. मरफ़रत चाहना, २. मिशकात,
३. इब्ने जरीर वगैरह.

हजरत जैद बिन असलम रज़ि० फ़रमाते हैं कि मौत के वक़्त मोमिन के पास फ़रिस्ते आकर उसे खुशख़बरी सुनाते हैं और उससे कहते हैं कि तुम जहाँ जा रहे हो, वहाँ जाने से डरो नहीं। इस लिए उस का डर जाता रहता है और उस से यह भी कहते हैं कि दुनिया और दुनिया वालों (से जुदा होने) पर रंज न करो और जन्नत की खुशख़बरी सुन लो, इसलिए वह इस हाल में मरता है कि इस दुनिया में खुदा उसकी आँखें ठंडी कर देता है।^१

शहीदों से अल्लाह का खिताब

हजरत मसरूक (तावई रह०) रिवायत करते हैं कि हमने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस आयत की तफ़सीर प्रछी—

وَالْمُحْسِنِينَ الَّذِينَ قَاتَلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَا
عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْزُقُونَهُ

व ला तहसबन्नल्लज़ी न क़तिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वाता बल् अह्याउन अन्द रब्बिहिम युज़्ज़कून०

‘और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये उनको मुर्दा मत समझो, बल्कि ज़िंदा हैं, अपने रब के करीबी लोग हैं, उनको रोज़ी मिलती है।’

तो हजरत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हम इसकी तफ़सीर रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मालूम कर चुके हैं, फिर फ़रमाया कि शहीद की रूहें हरे रंग के परिदों के पोतों में हैं। उनके लिए अर्श इलाही के नीचे क़न्दील लटके हुए हैं। वे जहाँ चाहें जन्नत में चलती-फिरती हैं, फिर इन क़न्दीलों में आकर ठहर जाती हैं। अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया कि तुम कुछ चाहते हो ? उन्होंने अर्ज़ किया कि हम क्या चाहें ? हालांकि जहाँ चाहते हैं, जन्नत में चलते-फिरते हैं। चुनांचे तीन बार खुदा ने उनसे यही सवाल व जवाब फ़रमाया, सो जब उन्होंने यह समझ लिया कि जब तक हम जवाब न देंगे, सवाल ही होता रहेगा, तो उन्होंने यह अर्ज़ किया कि हम

१. इब्ने अबी हातिम,

२. व्याख्या, टीका,

यह चाहते हैं कि हमारी रूहें हमारे जिस्मों में वापस कर दी जाएं, यहाँ तक कि हम दोबारा तेरी राह में क़त्ल कर दिए जाएं। सो जब दुनिया के परवरदिगार ने उन से मालूम कर लिया कि उनको कोई ज़रूरत नहीं, तो छोड़ दिए गए (और फिर उन से सवाल नहीं किया गया) यानी वहाँ की कोई चीज़ उन्होंने तलब न की, और सवाल किया तो दुनिया में वापसी का सवाल किया, जो क़ानून के खिलाफ़ है, इसलिए फिर उन से सवाल न किया गया।^१

रूहों का हरे परिदों के पोतों में होना शहीदों के साथ खास नहीं है, बल्कि दूसरे मोमिनों की रूहें भी उन परिदों के पोतों में जन्नत की संर करती हैं, जैसा कि हजरत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि—

إِنَّ أَرْوَاحَ الْمُؤْمِنِينَ فِي طَيْرٍ حُطِرٍ تَلْقَى بِشَجَرِ الْجَنَّةِ (مشكاة)

इन् अर्वाहल मुअ्मिनीन फ़ी तौरन ख़ुज़िन तअलुकु बि श ज रिल-जन्नति०

—मिशकात

‘बिला शुबहा ईमान वालों की रूहें हरे परिदों के अंदर होती हैं, जो जन्नत के पेड़ों से खाती-पीती हैं।’

मुल्ला अली कारी रह० ‘मिक्कात शरहे मिश्कात’ में लिखते हैं कि एक हदीस में है कि बिला शुबहा ईमान वालों की रूहें परिदों के पोतों में जन्नत के फल खाती और पानी पीती फिरती हैं और अर्श के नीचे सोने की क़न्दीलों में आराम करती हैं।

‘शहादत की तक्लीफ़ चूटी के काटे के बराबर होती है।’

हजरत अब्दुल्लर रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि शहीद क़त्ल होने की तक्लीफ़ बस इतनी ही महसूस करता है जैसे तुम चूटी के काटे की तक्लीफ़ महसूस करते हो।^१

१. मुस्लिम शरीफ़,

२. मिश्कात शरीफ़,

कब्र के अजाब की तफसीलात

अहले सुन्नत वल जमाअत के अक्रीदे में कब्र का अजाब हक है, जिस तरह सालेह (नेक, भले) ईमान वालों को कब्र में आराम मिलता है और खुशी के साथ क्रियामत तक रहना होता है। उसी तरह काफ़िरों और बदकारों को कब्र में अजाब होता है। बहुत सी हदीसों से ये बातें साबित होती हैं—

हजरत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास एक यहूदी औरत आयी, और उसने उनके सामने कब्र के अजाब का जिक्र किया और कहा कि—

अ आजकिल्लाहु मिन अजाबिल कब्रि०

(यानी तुझे अल्लाह कब्र के अजाब से पनाह में रखे) हजरत आइशा रज़ि० ने अहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसके बारे में सवाल किया तो आप ने फ़रमाया—

न अम अजाबुल कब्रि हवकुन०

(हां कब्र का अजाब हक है)। हजरत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि इसके बाद हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब भी नमाज़ पढ़ी, कब्र के अजाब से ज़रूर अल्लाह की पनाह मांगी।^१

हजरत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी कब्र के पास खड़े होते तो इतना रोते कि मुबारक दाढ़ी तर हो जाती थी। सवाल किया गया कि आप जन्नत व दोज़ख का जिक्र कर के नहीं रोते और कब्र को देख कर (इतना) रोते हैं। हजरत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि बेशक कब्र आखिरत की मंजिलों में से पहली मंजिल है, सो अगर उससे निजात पायी तो इसके बाद की मंजिलें इससे ज़्यादा आसान हैं और अगर इससे निजात न पायी तो इसके बाद की मंजिलें इससे ज़्यादा सख्त हैं।^२ कब्र के अजाब की कुछ तफ़सीलात गुज़र चुकी हैं और कुछ अब जिक्र की जाती हैं।

१. बुखारी व मुस्लिम,

२. तिमिज़ी शरीफ़,

कब्र में अजाब देने वाले अज़दहे

हजरत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश्राद फ़रमाया कि कब्र में काफ़िर पर ज़रूर ९९ अज़दहे मुक़र्रर कर दिए जाते हैं, जो क्रियामत तक उसे डसते रहते हैं। उनके ज़हर का यह हाल है कि अगर उनमें से एक भी ज़मीन पर फुंकार मार दे तो ज़मीन बिल्कुल सड़जी न उगाये।^१

यानी उनके ज़हर का यह असर है कि उनमें से एक अज़दहा भी अगर एक बार ज़मीन की तरफ़ फुंकार मार दे, तो उसके ज़हर के असर से ज़मीन में घास का एक तिनका भी उगने के काबिल न रहे। आजकल के लड़ाई के सामान जैसे एटमबम वगैरह देख कर, नबी सल्ल० के इस इश्राद के समझने में ज़रा भी भिन्नक महसूस करने की गुंजाइश नहीं रहती।

कब्र में अजाब की थजह से मय्यत का चीखना और लोहे के गुर्जों से उसका मारा जाना

हजरत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इश्राद फ़रमाया कि जब काफ़िर जवाब देता है कि हाय! हाय!! मुझे पता नहीं! तो आसमान से मुनादी^१ आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा, इसके नीचे आग बिछा दो और इसे आग का पहनावा पहना दो और इसके लिए दोज़ख का एक दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया जाता है, जिस से दोज़ख की गर्मी और सख्त गर्म लू आती रहती है और उसकी कब्र तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां

१. दारमी,

२. निदा (आवाज़) देने वाला,

इधर से उधर हो जाती है, फिर उसके अज़ाब देने के लिए एक (अज़ाब देने वाला) मुकर्रर कर दिया जाता है जो अंधा और बहरा होता है। उसके पास लोहे का गुर्ज़ होता है, जिसकी हकीकत यह है कि अगर वह पहाड़ पर मार दिया जाए तो पहाड़ जरूर मिट्टी हो जाए। (फिर इश्रादि फ़रमाया कि) उस गुर्ज़ को एक बार मारता है तो उसकी आवाज़ को इन्सान और जिन्नात के अलावा पूरव-पश्चिम के दमियान की सारी मख़नूक सुनती है। एक बार मारने से वह मिट्टी हो जाता है फिर रुह लौटा दी जाती है।^१

बुखारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि इस गुर्ज़ के मारे जाने से वह इस ज़ोर से चीखता है कि इन्सान और जिन्नात के सिवा उसके करीब की हर चीज़ उसकी चीख व पुकार सुनती है।

सवाल—यहां यह बात मालूम करने की है कि इंसानों और जिन्नों को मयत के मारने और उसके चीखने की आवाज़ क्यों नहीं सुनायी जाती?

तो इसका जवाब यह है कि इंसानों और जिन्नों को बर्जख की दुनिया से वास्ता पड़ता है। अगर उनको क़द्र का अज़ाब दिखा दिया जाए या कानों से वहां के मुसीबत के मारे हुआओं की चीख व पुकार की आवाज़ सुना दी जाए तो ईमान ले आये और नेक अमल करने लगे, हालांकि खुदा के यहां ग़ैब पर ईमान मोतबर (जिस पर भरोसा किया जाए) है कि सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल० की बात सुन कर मान लें और समझ में आए या न आए, बहरहाल आपकी बात सही मानें, इसी को ईमान फ़रमाया गया है।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ

इन्तलज़ी न यल्शी न रव्वहुम विल ग़ैबि लहुम मग़िफ़र तुव्व अज़रून कबीर०

‘बिला शुबहा जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग़िफ़रत है और बड़ा अज़्र है।’

अगर दोज़ख व जन्नत और बर्जख के हालात आंखों से दिखा दिए जाएं तो फिर ‘ग़ैब पर ईमान’ न रहे और सब मान लें और मोमिन हो जायें मगर खुदा के यहां आंखों से देखे हुए पर ईमान लाना मोतबर नहीं है, इसी वजह से मरते वक़्त ईमान लाने का एतबार नहीं है, क्योंकि उस

१. अहमद व अबूदाऊद,

वक़्त अज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आ जाते हैं—

فَلَمَّا يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَكَ رَاَوْبَاسًا. (مونس)

फ़ ल म य कु य न फ़ अहुम ईमानुहुम लम्मा रऔ वा स ना०

—मोमिन

‘सो उनको उनका ईमान लाना फ़ायदेमंद न हुआ, जबकि उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया।’

जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे और फिर जन्नत-दोज़ख आंख से देख लेंगे तो सब ही ईमान ले आएंगे और रसूलों की बातों की तस्दीक कर लेंगे, मगर उस वक़्त का ईमान और तस्दीक मोतबर नहीं है।

इंसानों को क़द्र के अज़ाब के न दिखाने और उसकी आवाज़ न सुनाने में यह मसलहत भी मालूम होती है कि इंसान उसकी बरदाश्त नहीं कर सकते, अगर क़द्र के अज़ाब का हाल आंखों से देख लें या कानों से सुन लें तो बेहोश हो जाएं, जैसा कि हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में है कि रसूल खुदा सल्ल० ने इश्रादि फ़रमाया कि ना-फ़रमान की नय्यत को जब लोग उठाकर चलते हैं तो वह कहता है, हाय मेरी बरबादी! मुझे कहाँ ले जा रहे हो? उसकी इस आवाज़ को इंसान के सिवा हर चीज़ सुनती है और अगर इंसान सुन ले तो बेहोश हो जाए।^१

हां, अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को बर्जख की चीज़ें न सिर्फ़ बता दीं, बल्कि दिखा भी दीं। चूंकि आप में उन्हें देखकर बरदाश्त करने की ताक़त मौजूद थी यहां तक कि दोज़ख के मंज़र को देखकर भी आपके हँसने-बोलने और सहावा रजि० के साथ उठने-बैठने और खाने-पीने में फ़र्क न आता था। हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार सूरज डूबने के बाद (मदीना मुनव्वरा से) बाहर तशरीफ़ ले गये। आपने एक आवाज़ सुनी (जो भयानक आवाज़ थी) उसको सुनकर फ़रमाया कि यहूदियों को उनकी क़ब्रों में अज़ाब हो रहा है।^२

हज़रत जैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्दवा अपने ख़न्जर पर सवार होकर क़बीला बनू नज़्जार के एक धाश में तशरीफ़ ले जा रहे थे

१. बुखारी शरीफ़,

२. बुखारी व मुस्लिम शरीफ़,

और हम भी आपके साथ थे कि अचानक आपका खच्चर बिदक गया और ऐसा बिदका कि करीब था कि आपको गिरा दे। वहीं पांच या छः कब्रें थीं। उनके बारे में रसूलुल्लाह सल्ल० ने दर्यापत्र फरमाया कि इन कब्र वालों को कौन पहचानता है ? एक शख्स ने अर्ज किया, मैं पहचानता हूं। आपने उससे पूछा, यह कब मरे थे ? उसने कहा कि शिक के जमाने में मरे थे। आपने इशार्द फरमाया कि इंसान को कब्रों में अजाब दिया जाता है, सो अगर मुझे डर न होता कि तुम आपस में दफन करना छोड़ दोगे तो खुदा से जरूर दुआ करता कि तुमको (भी) इस कब्र के अजाब का कुछ हिस्सा सुना दे, जिसे मैं सुन रहा हूं।^१

चुगली करने और पेशाब से न बचने से अजाबे कब्र होता है

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दो कब्रों पर गुजर हुआ। आपने इशार्द फरमाया, इनको अजाब हो रहा है और किसी बड़े मुश्किल काम की वजह से अजाब नहीं हो रहा है (बल्कि ऐसी मामूली बातों पर, जिनसे बच सकते थे।)

फिर आपने उन दोनों के गुनाहों की तपसील बतायी कि इन दोनों में एक पेशाब करने में पर्दा नहीं करता था (और एक रिवायत में है कि पेशाब से तृप्तान था) और यह दूसरा चुगली करता फिरता था। फिर आपने एक तर टहनी मंगा कर बीच में से उसको चीर कर आधी उस कब्र में गाड़ दी और आधी दूसरी कब्र में, सहाबा रजि० ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! आपने ऐसा क्यों किया ? इशार्द फरमाया कि शायद इन दोनों का अजाब उनके सूखने तक हल्का कर दिया जाए।^२

कुछ खास कामों पर खास अजाब

बुखारी शरीफ में एक लंबी रिवायत है, जिस में अल्लाह के रसूल

१. मुस्लिम,

२. मिशकात शरीफ, इसकी तशरीह (व्याख्या) में कुछ उलेमा ने फरमाया है

सल्ल० का एक ख्वाब रिवायत किया गया है, जिसमें बर्जख की दुनिया में खास-खास अजाबों का जिक्र है। आपने फरमाया कि मैंने आज रात ख्वाब देखा है कि दो आदमी मेरे पास आये और मेरा हाथ पकड़ कर मुझको एक मुकद्दस (पाक) जमीन की तरफ ले चले। देखता क्या हूं कि एक आदमी बैठा हुआ है और दूसरा खड़ा है और उसके हाथ में लोहे का जंबूर है। उस बैठे हुए शख्स के कल्ले को उसमे चीर रहा है, यहां तक कि गुद्दी तक जा पहुंचता है, फिर दूसरे कल्ले के साथ भी यही मामला करता है और पहला कल्ला उसका ठीक हो जाता है, वह फिर उस पहले कल्ले के साथ ऐसा ही करता है। मैंने पूछा, यह क्या बात है ? वे दोनों आदमी बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक ऐसे शख्स पर गुजर हुआ जो लेटा हुआ है और उसके सर पर एक शख्स भारी पत्थर लिए खड़ा है। यह खड़ा हुआ शख्स उस पत्थर से उस लेटे हुए आदमी का सर बहुत जोर से फोड़ता है, जब वह पत्थर उसके सर पर दे मारता है, तो पत्थर लुढ़क कर दूर जा गिरता है। जब वह उसको उठाने के लिए जाता है, तो अभी तक लौटकर उसके पास आने नहीं पाता कि उसका सर जैसा था, वैसा ही हो जाता है और फिर उसको उसी तरह फोड़ता है। मैंने पूछा, यह क्या है ? वे दोनों बोले, आगे चलो, यहां तक कि हम एक-गार पर पहुंचे जो तनूर की तरह था और ऊपर से तंग था, नीचे से चौड़ा था। उसमें आग जल रही थी और उसमें बहुत से नंगे मर्द और औरतें भरे हुए थे, जिस वक्त वह आग ऊपर को उठती, तो उसके साथ वे सब ऊपर को उठ आते थे, यहां तक कि करीब निकलने को हो जाते। फिर जिस वक्त आग बैठती तो वे भी सब नीचे चले जाते। मैंने पूछा यह क्या है ? वे दोनों बोले, आगे चलो। हम दोनों आगे चले, यहां तक कि एक खून की नहर पर पहुंचे। उसके बीच में एक शख्स खड़ा है और नहर के किनारे पर एक शख्स है, जिसके सामने बहुत से पत्थर पड़े हैं। वह नहर के अंदर वाला शख्स नहर के किनारे की तरफ आता है, जिस वक्त वह निकलना चाहता है, यह किनारे वाला शख्स उसके मुंह पर पत्थर इस जोर से मारता है कि वह फिर अपनी पहली जगह पर जा पहुंचता है, फिर जब भी वह किनारे की तरफ आना चाहता है, इसी तरह पत्थर मारकर हटा देता है। मैंने पूछा यह क्या है। वे दोनों बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक हरे-भरे बाग में आ पहुंचे। उसमें एक

कि तर टहनी के तस्वीह खुदावंदी में लगे रहने की वजह से अजाब हल्का होने की उम्मीद पर आपने ऐसा किया,

बड़ा पेड़ है और उसके नीचे एक बूढ़ा आदमी है और बच्चे हैं। उस पेड़ के करीब एक और आदमी बैठा हुआ है और उसके सामने आग जल रही है, जिसे वह धौंक रहा है, फिर वह दोनों मुझको चढ़ाकर पेड़ के ऊपर ले गये। वहाँ एक घर पेड़ के बीच में बहुत उम्दा था, उसमें मुझे दाखिल कर दिया। मैंने उस घर से अच्छा घर कभी नहीं देखा। उसमें बहुत से मर्द, बूढ़े, जवान, औरतें और बच्चे थे, फिर उससे बाहर लाकर और ऊपर ले गये, वहाँ एक घर पहले घर से भी उम्दा था। उसमें ले गये। उसमें बूढ़े और जवान थे। मैंने उन दोनों आदमियों से कहा कि तुमने मुझको तमाम रात फिराया। अब बताओ कि ये सब क्या भेद की बातें थीं। उन्होंने कहा, वह जो तुमने देखा था, जिसके कल्ले चीरे जाते थे, वह आदमी झूठा है, जो झूठी बातें बयान करता था और वे बातें दुनिया में मशहूर हो जाती थीं। उसके साथ क्रियामत तक यों ही करते रहेंगे और जिसका सर फोड़ते हुए देखा, वह आदमी है कि अल्लाह तआला ने उसको कुरआन का इल्म दिया। रात को उससे गाफिल होकर सो रहा था और दिन को उस पर अमल न किया। क्रियामत तक उसके साथ यही मामला रहेगा और जिनको तुमने आग के गार में देखा, वे जिना करने वाले लोग हैं और जिनको खून की नहर में देखा, वे सूद खाने वाले हैं और पेड़ के नीचे जो बूढ़े शम्स थे, वह हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे और उसके आस-पास जो बच्चे थे, वह लोगों की ना-बालिग औलाद हैं और जो आग धौंक रहा था, वह मालिक दारोगा दोजख का है और पहला घर, जिसमें आप दाखिल हुए, वह आम मुसलमानों का है और दूसरा घर शहीदों का है और मैं जिब्रील हूँ और यह मीकाईल हूँ। फिर बोले, सर ऊपर उठाओ। मैंने सर उठाया तो मेरे ऊपर एक सफ़ेद बादल नज़र आया, बोले कि यह तुम्हारा घर है। मैंने कहा कि मुझे छोड़ दो, मैं अपने घर में दाखिल हो जाऊँ। बोले, अभी तुम्हारी उम्र बाकी है, पूरी नहीं हुई। अगर पूरी हो चुकी होती तो अभी चले जाते।'

फ़ायदा—जानना चाहिए कि नवियों का ख़ाव बह्य होता है। ये तमाम बाक़िए सच्चे हैं। इस हदीस में कई चीज़ों का हाल मालूम हुआ। एक झूठ का कि कैसी सख्त सज़ा है, दूसरे बे-अमल आलिम का, तीसरे जिना, चौथे सूद का। खुदा सब मुसलमानों को इन कामों से बचाये रखे।

जमीन का मय्यत से बात करना

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूले खुदा सल्ल० वाहर तशरीफ़ लाये, तो आपने लोगों को देखा कि खिलखिला कर हँस रहे हैं, जिसकी वजह से उनके दांत बाहर निकले हुए हैं। उनका यह हाल देखकर आपने इशार्द फ़रमाया कि खबरदार ! बिना शुबहा अगर तुम लज़ज़तों को काटने वाली चीज़ यानी मौत को बहुत ज्यादा याद करते तो तुमको मैं इस हाल में न देखता, इस लिए तुम लज़ज़तों को काटने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता, जिस दिन वह यह न कहती हो कि मैं पराये-पन का घर हूँ और मैं तंहाई का घर हूँ और मैं भिट्टी का घर हूँ और मैं कीड़ों का घर हूँ।

फिर फ़रमाया कि जब मोमिन बन्दा दफ़न कर दिया जाता है, तो उस से क़ब्र कहती है कि मुबारक हो, तू अपने ही घर आया, समझ ले, बेशक तू मुझे उन सबसे ज्यादा महबूब था, जो मुझ पर चलते हैं, तो जब तू आज मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और मेरे पास आ गया है, तो अब मेरा मुलूक देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या अच्छा मुलूक करती हूँ। इसके बाद जहाँ तक नज़र पहुँचती है, वहाँ तक क़ब्र फैल जाती है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है और जब फ़ाजिर या काफ़िर बंदा दफ़न कर दिया जाता है, तो उससे क़ब्र कहती है कि तेरा आना बुरा आना है और तू बुरी जगह आया, समझ ले कि मुझ पर चलने वालों में तू मुझे सबसे मवगूज़ (नापसंदीदा, दुश्मन) था, सो अब जब तू मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और आज मेरे बस में आ गया है, अब तू देखेगा कि तुझसे क्या मामला करती हूँ। इसके बाद वह उसे इस तरह भीचती है कि उसकी दायाँ पसलियाँ बायीं पसलियों में और बायीं पसलियाँ दायाँ पसलियों में घुस जाती हैं। इसको हुज़ूरे अब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह जाहिर फ़रमाया कि अपने मुबारक हाथ की उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में दाखिल फ़रमायीं।'

कब्र के अजाब से बचे रहने वाले

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि कसम है उस जात की, जिसके कब्जे में मेरी जान है, जब मय्यत को कब्र में रख दिया जाता है तो दफन करने के बाद जब लोग वापस होते हैं, तो वह उनके जूतों की आवाज सुनता है, सो अगर वह मोमिन होता है तो नमाज उसके सिरहाने आ जाती है और रोजे उसके दाहिनी तरफ आ जाते हैं और जकात उसके बायीं तरफ आ जाती है और (नफल काम जो किए थे, जैसे) सदका, नफल नमाज और लोगों के साथ जो नेकी और भलाई की, वह उसके पैरों की तरफ आ जाती है। अगर उसके सिरहाने की तरफ से अजाब आता है तो नमाज कहती है कि मेरी तरफ से जगह न मिलेगी, फिर उसकी दाहिनी तरफ से अजाब आता है तो रोजे कहते हैं कि हमारी तरफ से जगह न मिलेगी, फिर बायीं तरफ से अजाब आता है, तो जकात कहती है कि मेरी तरफ से जगह न मिलेगी, फिर पैरों की तरफ से अजाब आता है, तो भले काम, सदका और एहसान के काम जो लोगों के साथ किये थे, वे कहते हैं कि हमारी तरफ से जगह न मिलेगी।^१

सूर: मुल्क और अलिफ-लाम-मीम सज्दा पढ़ने वाला

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० से रिवायत है कि प्यारे नबी सल० के एक सहाबी रजि० ने एक कब्र हर खेमा लगाया और उनको पता न था कि यह कब्र है। (खेमे में बैठे-बैठे) अचानक देखते क्या है कि इसमें एक इंसान है जो सूर: तबारकल्लजी बियदिहिल मुल्कु पढ़ रहा है। पढ़ते-पढ़ते उसने पूरी सूर: खत्म कर दी। यह वाक़िआ उन्होंने हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि सल्लम की खिदमत में अर्ज किया तो आपने फरमाया कि यह सूर: अजाब रोकने

१. तर्जिब

वाली है (और) इसको अल्लाह के अजाब से बचा रही है।^१

हजरत अबू दुरैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बिना शुबहा कुरआन में एक सूर: है, जिसकी ३० आयतें हैं। उसने एक शख्स की सिफारिश की, यहां तक कि वह बरस दिया गया, फिर फरमाया कि वह सूर: तबारकल्लजी बियदिहिल मुल्कु है।^१

हजरत खालिद बिन मेदान (ताबई) रह० सूर: तबारकल्लजी बियदिहिल मुल्कु और सूर: अलिफ-लाम-मीम सज्दा के बारे में फरमाया करते थे कि ये दोनों सूरतें अपने पढ़ने वालों के लिए कब्र में अल्लाह से भगड़ेंगी और दोनों में से हर एक कहेगी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तेरी किताब में से हूँ तो इसके हक में मेरी सिफारिश कुबूल फरमा और अगर मैं तेरी किताब में से नहीं हूँ तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। यह भी फरमाते थे कि यह परिदों की तरह अपने पढ़ने वाले पर फैला देंगी और उसे कब्र के अजाब से बचा लेंगी।^१

इन दोनों सूरतों को कब्र के अजाब से बचाने में बड़ा दखल है, जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर हुआ। आहज़रत संयदे आलम सल्ल० इन दोनों सूरतों को पढ़े बग़ैर न सोते थे।^२

फायदा—जिस तरह सूर: अलिफ-लाम-मीम सज्दा और सूर: मुल्क कब्र के अजाब से बहुत ज्यादा बचाने वाली हैं, उसी तरह चुपल-खोरी करना और पेशाब से न बचना, दोनों काम कब्र के अजाब में बहुत ज्यादा डाल देने वाले हैं।

पेट में मर्ज में मरने वाला

हजरत मुलेमान बिन सरूर रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि जिसको उसके पेट (के मर्ज) ने क़त्ल किया, उसको कब्र में अजाब न दिया जाएगा।^१

पेट के कई मर्ज हैं। इनमें से जो भी मौत की वजह बन जाए,

१. मिशकात शरीफ,
२. मिशकात, ३. मिशकात,
४. मिशकात शरीफ, ५. अहमद व तर्जिब,

उसको कब्र में अजाब न होगा। हर एक फी हदीस का मजमून शामिल है, जैसे प्यास का मर्ज, हैजा, पेट का दर्द वगैरह।

जुमे की रात या जुमे के दिन मरने वाला

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल रजियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जो भी मुसलमान जुमा के दिन या जुमा के रात में मरता है, उसको खूदा कब्र के फितने से बचाये रखता है।^१

रमजान में मरने वाला

हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते थे कि विलायुब्हा रमजान के महीनों में मुर्दों से कब्र का अजाब उठा लिया जाता है।^१

जो मरीज हो कर मरे

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहजूरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो मर्ज की हालत में मरा, वह शहीद मरा या (फरमाया) वह कब्र के फितने से बचा दिया जाएगा और मुद्ह-शाम उसे जन्नत की रोजी मिलती रहेगा।^१

मुजाहिद और शहीद

हजरत मिक्दाम बिन मादी कर्ब रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहजूरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि अल्लाह के पास शहीद के लिए छः इनाम हैं—

१—खून का पहला कतरा गिरते ही बख्श दिया जाता है और जन्नत में जो उसका ठिकाना है, वह उसे दिखाया जाता है,

१. अहमद व तिमिजी, २. बहकी,
३. मिश्कात शरीफ, ४. जिहाद करने वाला,

२—और वह कब्र के अजाब से बचा दिया जाता है,
३—और वह बड़ी घबराहट से बचा रहेगा (जो सूर फूँके जाने के वक़्त लोगों को होगी) और,

४—उसके सर पर इज्जत का ताज रखा जाएगा, जिसका (एक-एक) याकूत दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर होगा, और,

५—बेहतर हूरे ऐन^१ उसके जोड़े के लिए दी जाएंगी,

६—और सत्तर रिश्तेदारों के हक़ में उसकी सफ़ा़रिश कुबूल की जाएगी।^१

हजरत सलमान फारसी रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहजूरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया है कि अल्लाह तआला के रास्ते में इस्लामी मुल्क की सरहद तक हिफ़ाज़त एक रात व दिन करना एक महीने के (नफ़ली) रोज़े रखने और रातों-रात नमाज़ में एक माह तक खड़े रहने से बेहतर है और यह हिफ़ाज़त करने वाला अगर (इसी हालत में) मर गया, तो जो अमल वह करता था, उसका सवाब उसके लिए बराबर (क्रियामत तक) जारी रखा जाएगा और उसकी रोजी जारी रहेगी (जो शहीदों के लिए जारी रहती है) और कब्र में फ़ितना डालने वालों से अमन में रहेगा।^१

हजरत अबू प्रथ्यूब रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स दुश्मन से लड़ा और फिर क़दम जमाये रहा यहाँ तक मक्तूल हो गया (यानी मारा गया) या शालिव हो गया, तो कब्र के अन्दर फ़ितने में न डाला जायेगा।^१

एक शख्स को ज़मीन ने कुबूल न किया

हजरत अनस रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख्स आहजूरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का कातिब^१ था, वह इस्लाम से फिरकर मुशिरकों से जा मिला, तो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि

१. बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरे,
२. तिमिजी, इब्नेमाजा, ३. मिश्कात शरीफ,
४. नसरई व तवरानी, ५. लिखने वाला,

व सल्लम ने उसके हक में बद-दुआ फरमायी कि उसको ज़मीन कुबूल न करेगी। इसके बाद जब वह मर गया तो हज़रत अबू तल्हा रज़ि० उस कब्र की तरफ़ तदरीक ले गये तो उसे कब्र से बाहर पड़ा हुआ पाया। यह देखकर उन्होंने वहाँ के लोगों से यह माज़ूम फरमाया कि माजरा क्या है, तो उन्होंने बताया कि उसको हमने कई बार दफन किया, मगर हर बार उसफो ज़मीन ने बाहर फेंक दिया, इसलिए हमने बाहर ही छोड़ दिया।^१

कुछ उस्तादों से इस किताब के लिखने वाले ने यह वाकिआ सुना है कि एक आलिम की कब्र किसी ज़रूरत से खोदी गयी जो मदीना मुनव्वरा में थी, तो उसमें एक लड़की की लाश निकली। देखने वालों में से कुछ लोग उस लड़की को पहचानते थे और उनको माज़ूम था कि यह फ़लां ईसाई की लड़की है। चुनांचे उन्होंने वहाँ पहुँच कर उसके मां-बाप से उसका हाल पूछा और कब्र माज़ूम की, तो उन्होंने कब्र भी बतायी और यह भी फरमाया कि दिल से मुसलमान थी और मदीना मुनव्वरा में मरने की ख्वाहिश रखती थी। फिर उसकी कब्र खुदवा कर देखी गयी, तो उस में उस आलिम की लाश निकली, जिसकी कब्र में वह लड़की मदीना मुनव्वरा में देखी गयी थी। फिर उस आलिम की बीवी से उनका अमल मालूम किया तो उसने बताया कि वह बड़े नेक आदमी थे। यह बात ज़रूर थी कि वे यों कहा करते थे कि ईसाई मज़हब में यह बात बड़ी आसानी की है कि उनके यहाँ जनाबत का मुस्ल ज़रूरी नहीं है, इसी वजह से वह उस लड़की की कब्र में पहुँचाये गये।

बर्जख में सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख का पेश होना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशाद फरमाया कि बिला शुबहा जब तुम में से कोई मर जाता है तो सुबह-शाम उसका ठिकाना जन्नत या दोज़ख उसके सामने पेश किया जाता है, अगर वह जन्नती है तो सुबह-शाम उस के सामने जन्नत पेश की जाती है और

१. बुखारी व मुस्लिम शरीफ़,

२. बीबी के साथ सोहबत करने की नापाकी का नहान,

अगर वह दोज़खी है तो सुबह-शाम उसके सामने दोज़ख पेश की जाती है और उसका ठिकाना दिखा कर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है (फिर फरमाया कि) क्रियामत के दिन तक जब कि ख़ुदा उसे (कब्र से) उठायेगा, हर सुबह-शाम ऐसा ही होता रहेगा।^१

आं हज़रत सल्ल० पर उम्मत के आमाल पेश किये जाते हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशाद फरमाया कि मेरी ज़िदगी तुम्हारे लिए बेहतर है और मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए बेहतर है, तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश होंगे, पस जो भलाई (तुम्हारी तरफ़ से पेश की जाएगी, जिसे) मैं देखूंगा तो उस पर अल्लाह की तारीफ़ करूंगा और जो कोई बुराई देखूंगा (जो तुम्हारी तरफ़ से पेश की जाएगी) तो तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से मफ़िरत की दुआ करूंगा।^२

रौज़ा-ए-मुतहहरा के पास दरूद व सलाम पढ़ा जाये तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद सुनते हैं और जो कोई दूर से दरूद व सलाम भेजे, उसको फ़रिश्ते पहुँचा देते हैं

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो कोई मुझ पर मेरी कब्र के पास दरूद पढ़े, मैं उसको सुनूंगा और जो कोई मुझ पर दूर से दरूद भेजे, वह दरूद मुझे पहुँचा दिया जाता है।^३

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बिला शुबहा अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं, जो ज़मीन में गश्त लगाते फिरते हैं (और) मेरी उम्मत का सलाम मेरे पास पहुँचाते हैं।^४

दुनिया में कायदा है कि मौजूद लोग आपस में एक दूसरे को सलाम

१. बुखारी व मुस्लिम

२. जमउल फ़वाइद, ३. बेहकी,

४. हाकिम, नसाई शरीफ़ वगैरह,

करते हैं और जो दूर होते हैं, उनको डाक से या आदमी के जरिए सलाम भेजते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी कामिल (पूर्ण) रहमत से यह सिल-सिला जारी रखा है कि जो मुसलमान अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दूर से सलाम भेजें, तो उसको फ़रिश्तों के जरिए पहुंचा देते हैं।

इन हदीसों से जहां यह मालूम हुआ कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बर्जखी ज़िंदगी में भी अपनी उम्मत से ताल्लुक बाक्की है, और यह कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत को यह शफ़ (बुजुर्गी) बख़्शा है कि फ़रिश्तों को इस बड़े काम के लिए मुकर्रर फ़रमाया है कि उम्मतियों का सलाम फ़ख़रे कायनात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पहुंचा दें। वहां यह भी माज़ूम हुआ कि गो हज़रत अबिया-ए-किराम ज़िदा हैं, लेकिन खुदा की पनाह, हर जगह न हाज़िर हैं, न सब कुछ देख रहे हैं और न दूर की बात को सुनते हैं। जब नबियों अलै० के बारे में यह साबित है कि हर जगह न हाज़िर हैं, न देख सकते हैं और न हर आवाज़ सुनने वाले हैं, तो उन औलियाअल्लाह के बारे में ऐसा ख्याल करना तो बिल्कुल ही ग़लत और बिद्अत होगा, जो अल्लाह के चुने हुए, बुजुर्ग पैग़म्बरों के सहावियों (साथियों) से भी कम दर्जे के हैं।

नबियों की बर्जखी ज़िन्दगी

हज़रत अबिया किराम अलै० इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी ज़िदा ही हैं, माना कि शहीदों के बारे में क़ुरआन शरीफ़ में आया है कि इनको मुर्दा मत कहो, लेकिन नबियों के बारे में भी हदीस की बहुत-सी रिवायतों से साबित है कि इस दुनिया से चले जाने के बाद ज़िन्दा ही हैं।

मशहूर मुहद्दिस^१ अल्लामा बहक़ी रह० और मशहूर मुसन्नफ़ अल्लामा सुयूती रह० ने इस मौजू' पर एक-एक रिसाला (किताब) लिखा है और 'हयातुल अबिया' (नबियों की ज़िंदगी) को साबित किया है।

१. हदीस के माहिर,

२. लेखक, ३. विषय

अल्लामा सुयूती रह० ने अपने फ़तावा में लिखा है कि—

'प्यारे नबी सल्ल० और दूसरे तमाम अबिया किराम के क़ब्रों में ज़िदा होने की दलीलों के साथ हमको क़तई जानकारी है और इस बारे में तवातुर' के दर्जे को हदीसों पहुंच चुकी है।

इमाम क़ात्बी ने अपनी किताब 'तज़किरा' में फ़रमाया है कि हज़रत अबिया-ए-किराम की मौत का हासिल इतना समझो कि वे हमारी नज़रों से छिपा दिए गये हैं और उनका हाल हमारी निस्बत ऐसा है जैसे फ़रिश्तों का हाल है (कि हम फ़रिश्तों को देख नहीं सकते हैं)।

मुहद्दिस बहक़ी रह० ने फ़रमाया कि हज़रत अबिया-ए-किराम की रूहें कब्ज़ करने के बाद फिर वापस कर दी गयीं, इस लिए वे अपने रब के हुज़ूर में ज़िदा हैं जैसा कि शहीद हैं।

हज़रत अनस रजियेल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अबिया अलै० ज़िदा हैं, अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं,^२ यह नमाज़ तक्लीफ़े शरअी की वजाह से नहीं है, बल्कि लज्जत हासिल करने के लिए है।

हज़रत अबुदुर्दा रजि० से रिवायत है कि आं हज़रत सैयदे आलम सल्ल० ने फ़रमाया कि जुमा के दिन मुझ पर दरूद ज़्यादा से ज़्यादा भेजा करो, क्योंकि यह दिन मशहूद है, जिसके मानी यह हैं कि इसमें फ़रिश्तों का आना (ज़्यादा से ज़्यादा) होता है, (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) बेशक तुम में से जो भी आदमी मुझ पर दरूद भेजता है, उसका दरूद मेरे सामने पेश होता रहता है जब तक कि वह उसमें लगा हुआ हो। सवाल किया गया है कि या रसूलल्लाह ! वफ़ात के बाद क्या होगा ? इर्शाद हुआ कि वफ़ात के बाद मुझ पर दरूद पेश किया जाता रहेगा, क्योंकि उस आलम (दुनिया) में जा कर भी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ज़िदा रहते हैं और यह ज़िंदगी रूहानी नहीं होती, बल्कि जिस्मानी होती है (क्योंकि) बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर यह हुराम फ़रमा दिया है कि नबियों के जिस्मों को खा जाये, इस लिए अल्लाह का नबी ज़िदा रहता है और उसको रोज़ी भी दी जाती है।

इस मुवारक हदीस से माज़ूम हुआ कि हज़रत अबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलामु वस्सलामु इस दुनिया से इन्तिक़ाल फ़रमा कर जिस्मानी

१. बीब की कड़ियों में से किसी रावी को छोड़ें बग़ैर,

२. अबूआला ३. इन्नेमाज़ा,

जिंदगी के साथ जिंदा हैं और रोजी भी पाते हैं। यह रोजी उसी दुनिया के मुनासिब है। शहीदों के बारे में भी रोजी का मिलना आया है, लेकिन हज़रत अब्दिया-ए-किराम अलै० की जिंदगी और उनका रोजी दिया जाना शहीदों के मुकाबले में कामिल (पूर्ण) है। हज़रत शाह अब्दुलहक साहब मुहद्दिस देहलवी रह० ने 'अश्शतुल्लम आत', शरह मिश्कात में लिखा है—

‘नबियों की जिंदगी का ऐसा मसूला है, जिस पर सबका इत्तिफाक (सहमत) है, किसी को इसमें इस्तिस्नाफ नहीं और यह हयाते जिस्मानी है जैसा कि दुनिया में थी, उनकी जिंदगी रूहानी या मानवी (अर्थ निरूपित) न समझी जाए।’

हज़रत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि एक बार हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्के और मदीने के बीच सफ़र कर रहे थे, आप ने एक वादी (घाटी) के बारे में पूछा कौन सी वादी है? मौजूद लोगों ने जवाब दिया कि यह ‘वादी-ए-रिज़क’ (यानी रोजी की घाटी) है। आपने इर्शाद फरमाया कि गोया मैं देख रहा हूँ मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ, यह फरमा कर उनके रंग और बालों की हालत कुछ बयान फरमायी (और फरमाया कि वह) इस हाल में (नज़र आ रहे) हैं कि अपनी दोनों उंगलियाँ दोनों कानों में दिए हुए हैं (और) अपने रब के नाम का तल्विया जोर-जोर से पढ़ते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि इसके बाद हम और आगे चले, यहां तक कि एक वादी आयी। उसके बारे में फ़ख़रे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सवाल फरमाया कि यह कौन सी वादी है? हाज़िर लोगों ने जवाब दिया कि यह वादी ‘हरशा’ (नामी) है या बजाए हरशा के लुप्त कहा। आहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि गोया मैं यूनस (अलैहिस्सलाम) को देख रहा हूँ कि मुर्ख ऊंटनी पर सवार हैं, उनके जिस्म पर उनका जुब्बा है और उनकी ऊंटनी की लगाम पेड़ की छाल की है, तल्विया पढ़ते हुए उस घाटी से गुज़र रहे हैं।^१

इस मुबारक हदीस से साबित हुआ कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मूसा और हज़रत यूनस अलै० को बेकारी की हालत

१. लब्बक व सार्दक कहना,

२. मुस्लिम शरीफ,

में तल्विया पढ़ते हुए देखा, मानूम हुआ कि हज़रत अब्दिया किराम की बर्जखी जिंदगी इतनी कामिल और इतनी बुनंद है कि इस दुनिया में तशरीफ़ ला सकते हैं और हज़ की ज़रूरी रस्में अदा कर सकते हैं और उनका देखा जाना भी मुम्किन है। कुछ बुजुर्गों से जो यह नक़ल किया गया है कि उन्होंने आहज़रत सल्ल० को बेदारी में देखा, तो यह झुठलाने की चीज़ नहीं है। अगर कोई तस्दीक़ न करे तो झुठलाना भी मुनासिब नहीं है। मेराज शरीफ़ का वाक़िया जो हदीस की किताबों में आया है, उस में यह भी है कि सयदे आलम सल्ल० ने फ़रमाया कि मैंने मूसा और ईसा और इब्राहीम अलै० को खड़े हुए नमाज़ पढ़ते देखा, इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया, तो मैं उनका इमाम बना।^१

उस वक़्त आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी दनियावी जिंदगी ही में थे और जिन नबियों को आप ने नमाज़ पढ़ायी, वे बर्जखी जिंदगी में थे। हज़रत ईसा अलै० गो इस दुनिया में नहीं हैं, मगर बर्जखी जिंदगी में भी नहीं हैं, बल्कि उनकी यही दुनिया की जिंदगी उस वक़्त तक जारी मानी जाएगी, जब तक कि दोबारा तशरीफ़ ला कर वफ़ात न पा जाए।

उहद के कुछ शहीदों के जिस्म वर्षों के बाद भी सही—सालिम पाये गये

मुअत्ता इमाम मालिक रह० में है कि अम्र बिन जमूह रजि० और अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि० की कब्र को पानी के बहाव ने खोद दिया था। ये दोनों अंसारी थे और उहद की लड़ाई में शहीद हुए थे और एक ही कब्र में दोनों को दफ़न कर दिया गया था। जब पानी ने कब्र खोद डाली तो दूसरी जगह दफ़न करने के लिए उनकी कब्र खोदी गयी तो इस हालत में पाये गये कि उनके जिस्मों में ज़रा भी फ़र्क़ न आया था और ऐसा लगता था कि जैसे कल ही वफ़ात पायी है। यह वाक़िया उस वक़्त का है जबकि उहद की लड़ाई को ५६ साल गुज़र चुके थे।

हज़रत मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने अमीर होने के ज़माने में मदीना तैयबा में नहर निकालने का इरादा फरमाया तो उसकी गुज़रगाह में उहद का क़ब्रस्तान पड़ गया, हज़रत मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु ने एलान फरमा दिया कि अपने-अपने रिश्तेदारों की लाशें यहां से उठा कर दूसरी जगह कर लें। जब इस मक़सद से लाशें निकाली

१. मुस्लिम शरीफ,

गयीं तो बिल्कुल अपनी असली हालत पर तर व ताज। माजूम होती थीं। उसी वक्त यह वाकिआ भी पेश आया कि खुदवाई करते हुए हजरत हमजा रजि० के मुबारक कदम में कुदाल लग गया तो उसी वक्त खून जारी हो गया। यह वाकिआ उहद की लड़ाई से पचास साल बाद का है।

उहद के शहीदों के अलावा और भी उम्मत के दूसरे बुजुर्गों के बारे में सियर^१ व तारीख की किताबों से यह साबित है कि दफन करने के बाद जब वर्षों के बाद देखे गये, तो उनके जिस्मों में कोई तबदीली न हुई थी। हजरात अब्बिया-ए-किराम अल० के बारे में तो हदीस शरीफ में कतई फंसला है कि उनके जिस्मों को जमीन गला नहीं सकती, लेकिन किसी और नबी को भी अल्लाह तआला यह शफ बरखें तो उनकी रहमत और कुदरत कुछ ना-मुम्किन नहीं है—

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْحَيَاتِ وَخَيْرَ الْمَمَاتِ وَأَنْ تَغْفِرَ
لِي وَتَرْحَمَنِي وَأَنْ تَتُوبَ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ مَرِيءٌ
أَنْتَ مَوْلَايَ وَأَنْتَ لِي بِعَمِّ الْوَكِيلِ وَعِطَ اللَّهُ تَعَالَى
عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدَنَا وَسَيِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ
وَالِهِ وَمُصْحِبِهِ أَجْمَعِينَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु क खैरल हयाति व खैरल ममाति व अन् तगिफ़ र ली व तहम्नी व अन त तू व अलय्य इन्न क अन्त रब्बी अन्त मौ ला य व अन्त ली निअमल व की ल व सल्लल्लाहु तआला अ ला खैरि खलिफ़ही सय्यदिना व सन दिना व मौलाना मुहम्मदिव्व आलिही व सहिबही अज्मईन०

१. मुस्तसर ताजकरा अल-कुतुबी,

२. सौरत, जीवन-चरित्र,

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَفْوَا تُنْفِسُكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

‘ऐ ईमान वालों!’ अपने आपको और अपने अहल व अयाल (यानी वाल-बच्चों) को आग (यानी दोजख) से बचाओ।

मरने के बाद क्या होगा? (२)

दोजख के हालात

इसमें कुरआनी आयतों और मुस्तनद हदीसों की रोशनी में आसान उर्दू जवान (हिंदी) में आखिरत के कंदखाने यानी जहन्नम के हालात लिखे गये हैं और आखिर ‘में सोचने-समझने की बातें’ के नाम से एक अहम मज्मून है जिसमें दोजख के अज़ाब से बचने की दुआ और तरीका बताया गया है।

लेखक :

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्द शहरी

अनुवादक :

कौसर यज़दानी नदवी एम. ए.

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

अपनी बात

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، نَحْمَدُكَ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِكَ الْكَرِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० नहमदुह व नुसल्ली अला रसूलि-
हिल करीम० अम्मा बअद—

इस किताब में ना-चीज ने जहन्नम के हालात कुरआन की आयतों और नबी सल्ल० की हदीसों से लेकर उर्दू (और अब हिंदी) में कलमबंद किये हैं। लिखने की वजह यह है कि मुसलमानों की जुबान पर यों तो दोज़ख का जिक्र आता ही रहता है, मगर इससे बचने और महफूज़ रहने के कामों और हरकतों से इस लिए गाफिल हैं कि इसके दिल हिला देने वाले अज़ाब और उन मुसीबतों से बे-खबर हैं जो दोज़खियों पर गुज़रेगी।

मुखे यकीन है कि जो मुसलमान इन पन्नों को ध्यान से पढ़ेंगे और कुरआन की आयतों और नबी की हदीसों को सच्चा जानते हुए दोज़ख के हालात का मुराक़बा (अवलोकन) करेंगे, वे आसानी से गुनाहों से बच सकेंगे और फिर उनका तपस नेकियों के करने में ज्यादा रोक भी न बनेगा। खुदा करे दीन की दूसरी किताबों की तरह यह किताब भी मुसलमानों को दीनदार बनने में मदद दे और उनमें ज्यादा से ज्यादा मक्बूल हो।

इसके साथ अगर आप जन्नत वालों के ऐश व आराम और हर्ष के मैदान के वाकिफ़ात भी मालूम करना चाहें तो हमारी मशहूर किताबें 'मैदान हर्ष' और 'खुदा की जन्नत' को जरूर पढ़ें।

पढ़ने वालों से दरखवास्त है कि अपनी नेक दुआओं में इस ना-चीज को भूलेंगे नहीं।

—मुहम्मद आशिक इलाही वुलंद शहरी
अफ़लाहु अन्हु

दोज़ख के हालात

इस किताब को दो हिस्सों में लिखता हूँ, एक 'दोज़ख के हालात', दूसरे 'दोज़खियों के हालात'। पहले दोज़ख के हालात लिखता हूँ, फिर दोज़खियों के हालात लिखे जायेंगे। व लिल्लाहिल मुवफ़िक् व हु व यह्दिस्सबील०

दोज़ख की गहराई

हज़रत अबूमूसा अश्शरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने (दोज़ख की गहराई बयान करते हुए) फ़रमाया, अगर एक पत्थर जहन्नम में डाला जाए तो दोज़ख की तह में पहुँचने से पहले सत्तर साल तक गिरता चला जाएगा।

—तर्गीब

और हज़रत अबू हुदैरह रज़ि० का बयान है कि हम रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बरकती खिदमत में बैठे हुए थे कि हमने किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनी। रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि यह (आवाज़) क्या है? हमने अर्ज किया, अल्लाह और उसका रसूल ही खूब जानते हैं। आपने फ़रमाया, यह एक पत्थर है, जिसको खुदा ने जहन्नम के मुंह पर (तह में गिरने के लिए) छोड़ा था और वह सत्तर साल तक गिरते-गिरते अब दोज़ख की तह में पहुँचा है। यह उसके गिरने की आवाज़ है।

—मुस्लिम

दोज़ख की दीवारें

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख को चार दीवारें घेरे हुए हैं, जिनमें हर दीवार की चौड़ाई

चालीस साल चलने की दूरी रखती है।

यानी दोज़ख की दीवारें इतनी मोटी हैं कि सिर्फ़ एक दीवार की चौड़ाई तै करने के लिए चालीस साल खंच हों। —तिमिज़ी

दोज़ख के दरवाज़े

कुरआन शरीफ़ में दोज़ख के दरवाज़ों के बारे में फ़रमाया—

وَأَنَّ هَٰؤُلَاءِ لَأَصْحَابُ الْآبَاءِ الْكَافِرِينَ
وَأَنَّ هَٰؤُلَاءِ لَأَصْحَابُ الْآبَاءِ الْكَافِرِينَ

व इन् जहन्नम ल मोहिदुहुम अज्मईन लहा सद्मत्तु अब्बाबिन
लिकुल्लि बाबिम भिन्हुम जुप्पुम मक्सूम०

‘और उन सबसे जहन्नम का वायदा है, जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।’

खुद रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख के सात दरवाज़े हैं, जिनमें से एक उसके लिए है, जो मेरी उम्मत पर तलवार उठाये। —सूर: हिज़, पारा १४

—मिस्कात

दोज़ख की आग और अंधेरी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख को एक हजार वर्ष तक धौंका गया, तो उसकी आग लाल हो गयी, फिर एक हजार वर्ष तक धौंका गया तो उसकी आग सफ़ेद हो गयी, फिर एक हजार वर्ष तक धौंका गया तो उसकी आग काली हो गयी, चुनांचे दोज़ख अब काली अंधेरे वाली है।

एक रिवायत में है कि वह अंधेरी रात की तरह तारीक है और दूसरी रिवायत में है कि उसकी लपट से उसमें रोशनी नहीं होती। —तिमिज़ी

—तर्गीब

यानी हमेशा अंधेरा ही रहता है।

बुखारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी यह आग (जिसको तुम जलाते हो) दोज़ख की आग का सत्तरवां हिस्सा है। सहाबा रज़ि० ने

अर्ज किया (जलाने को तो) यही बहुत है। आपने फ़रमाया, (हां इसके बावजूद) दुनिया की आगों से दोज़ख की आग गर्मी में ६६ दर्जा बड़ी हुई है और एक रिवायत में है कि दोज़खी अगर दुनिया की आग में जाएं तो उनको नींद आ जाए। —तर्गीब

क्योंकि दोज़ख की आग के मुकाबले में दुनिया की आग बहुत ही ज्यादा ठंडी है। इसलिए उसमें उनको दोज़ख के मुकाबले में आराम मालूम होगा।

दोज़ख के अज़ाब का अंदाज़ा

रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दोज़खियों में सबसे हल्का अज़ाब उस शख्स पर होगा, जिसकी दोनों जूतियां और तस्मे आग के होंगे, जिनकी बजह से हांडी की तरह उसका दिमाग खोलता होगा, वह समझेगा कि मुझे ही सबसे ज्यादा अज़ाब हो रहा है, हालांकि उसको सबसे कम अज़ाब होगा। —बुखारी व मुस्लिम

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया, क्रियामत के दिन एक ऐसे दोज़खी को, जो दुनिया में तमाम इंसानों से ज्यादा लज्जत और ऐश में रहता था, पकड़ कर एक बार दोज़ख में गोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम (आदम की औलाद ?) क्या तूने कभी नेमत देखी है ? क्या कभी तुझे आराम नसीब हुआ है ? इस पर वह कहेगा, खुदा की कसम ! ऐ रब नहीं ! (मैंने कभी आराम नहीं पाया) फिर फ़रमाया कि क्रियामत के दिन एक ऐसे जन्नती को जो दुनिया में तमाम इंसानों से ज्यादा मुसीबत में रहा था, उसे पकड़ कर जन्नत में गोता दिया जायेगा फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम ? कभी तूने मुसीबत देखी है ? क्या कभी तुझ पर सख्ती गुजरी है ? वह कहेगा, खुदा की कसम, ऐ रब ! मुझ पर कभी सख्ती नहीं गुजरी और मैंने कभी मुसीबत नहीं देखी ?

दोज़ख की सांस

रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बड़ी गर्मी हो तो जुह्न की नमाज़ देर से पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की सख्ती

दोज़ख की तेज़ी की वजह से होती है। (फिर फ़रमाया कि) दोज़ख ने अपने रब के दरबार में शिकायत की कि (मेरी तेज़ी बहुत बढ़ गयी है, यहां तक कि) मेरे कुछ हिस्से दूसरे हिस्सों को खाये जाते हैं (इस लिए मुझे इजाज़त दी जाए कि किसी तरह अपनी गर्मी हल्की करूं) चुनांचे अल्लाह तआला ने उसको दो बार सांस लेने की इजाज़त दी, एक सांस सर्दी के मौसम में और एक गर्मी के मौसम में, इस लिए गर्मी जो तुम महसूस करते हो, दोज़ख की लू का असर है (जो सांस के साथ बाहर आती है) और सख्त सर्दी जो महसूस करते हो, दोज़ख के ढंढे हिस्से का असर है।

—बुखारी शरीफ

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि दोपहर को हर दिन दोज़ख दहकाया जाता है।

फ़रमाया—दोज़ख के सांस लेने से गर्मी बढ़ जाना तो समझ में आता है, लेकिन सर्दी का बढ़ना, देखने में समझ में नहीं आता। सच बात तो यह है कि गर्मी में दोज़ख सांस बाहर फेंकती है और इस तरह दुनिया में गर्मी बढ़ जाती है और सर्दी में सांस अन्दर लेती है और इस तरह दुनिया की तमाम गर्मी खींच लेती है, इस वजह से सर्दी बढ़ जाती है।

कुछ उलेमा ने इसकी यह तथ्य की है कि दोज़ख में जलाने की का अज़ाब नहीं है, बल्कि ठंडक का अज़ाब भी है। उम्मत मुहम्मदी सल्ल० के मशहूर अहले क़फ़ बुजुर्ग हज़रत अब्दुलअज़ीज़ दब्बाग़ रह० का बयान है कि जिन्नात को आग का अज़ाब नहीं दिया जाएगा, क्योंकि आग उनकी तबीयत है, बल्कि उनको बेहद ठंडक का अज़ाब दिया जाएगा। जिन्नात दुनिया में भी सर्दी से बेहद डरते हैं और सर्द हवा से जंगली गधों की तरह बद-हवास होकर भागते हैं। फ़रमाते थे कि पानी में न गैतान दाखिल हो सकता है, न कोई जिन्न जा सकता है। अगर कोई उनको पानी में डालदे, तो बुझकर फ़ना हो जाएंगे। यह भी फ़रमाते थे कि क़ातिलों को शैतान के साथ ठंडक का अज़ाब दिया जाएगा। यहां पहुंच कर ज़रा सबक हासिल करने वाली आंख खोलिए कि इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी को इन्सान नहीं बर्दाश्त कर सकता जो दोज़ख की सांस से पैदा होती है, फिर भला दोज़ख की असली गर्मी और सर्दी कैसे बर्दाश्त करेगा। फ़अतबिरू या उलिल अबसार। कितने अफ़सोस की जगह है कि करोड़ों

१. ब्याख्या,

२. ऐसे बुजुर्ग, जो क़फ़ व करामात वाले हों, (ग़ैर मामूली तरीक़े से कुछ ऐसी बातें जान लेना जो आम इन्सान न समझ सके, उसे क़फ़ कहते हैं)

इन्सान ऐसे हैं, जो इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी से बचने का एहतमाम करते हैं, मगर दोज़ख से बचने का उनको कुछ ध्यान नहीं।

दोज़ख का ईंधन

कुरआन हकीम फ़रमाता है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا ذُودُهَا النَّاسُ وَالْجِبَارَةُ (نور)

وَالْجِبَارَةُ (نور)

या ऐयुहल्लज़ी न आमनू कू अन्फु स कुम व अहलीकुम नारा वकूदुह नानु वल् हिज़ारतु०

—सूरः तहरीम

ऐ ईमान वाले ! अपने आपको और अपने घर वालों को दोज़ख की आग से बचाओ, जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।

फ़रमाया—पत्थरों से क्या मुराद है ? इसके मुतालिक हज़रत इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्राद है कि पत्थर जो दोज़ख का ईंधन हैं, वह किन्नोत (यानी गंधक) के पत्थर हैं, जो खुदा ने क़रीब वाले आसमान में उस दिन पैदा किये थे, जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा फ़रमाये थे। फिर फ़रमाया, ये पत्थर कुफ़ार (के अज़ाब) के लिए तैयार फ़रमाये हैं।

—हाकिम

इन पत्थरों के अलावा मुशिरकों की बे-मूर्तियां भी दोज़ख में होंगी, जिनकी वह पूजा किया करते थे। चुनांचे सूरः अंबिया में है—

إِشْكُرُوا مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ وَلَهَا

وَارِدُونَ

इन्नकुम व मा तम्बुदून मिन इन्लिलाहि ह स बु जहन्नम अन्तुम लहा वारिदून०

ऐ मुशिरको ! बेशक तुम और तुम्हारे वे माबूद, जिनकी खुदा के सिवा पूजा करते हो, सब दोज़ख में भोंके जाओगे और तुम सब उसमें दाखिल होगे।

दोज़ख के तब्क़े

पहले गुजर चुका है कि दोज़ख के सात दरवाज़े हैं। चुनांचे

फरमाया—

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ وَفَتْحٌ مُّسَوِّمٌ ط -

लहा सव् अतु अब्बाबिन लिकुलि बाबिम मिन्हुम जुज्जुम मक्सूम०
इस आयत की तपसीर में मुअल्लिक 'बयानुल कुरआन' कहस
सिरंहु लिखते हैं कि कुछ लोगों ने कहा है, सात तक्के मुराद हैं, जिनमें
तरह-तरह के अजाब हैं। जो जिस अजाब का हकदार होगा, उसी तक्के
में दाखिल होगा, चूंकि हर तक्के का दरवाजा अलग-अलग है, इस लिए
'सात दरवाजों' के नाम से याद किया। और कुछ लोगों ने कहा है कि
सात दरवाजे ही मुराद हैं और मक्सद यह बयान करना है कि दोज्ख में
दाखिल होने वालों की ज्यादाती की वजह से एक दरवाजा काफ़ी न होगा,
इसलिए सात दरवाजे बनाये गये हैं।

अल्लामा इब्ने कसीर कहस सिरंहु ने हज़रत अली करंमल्लाहु
वज्हुह का इशार्द नक़ल किया है कि आपने सब् अतु अब्बाबिन 'सात
दरवाजों' के मुताल्लिक हाथों से इशारा करके फरमाया कि दोज्ख के
दरवाजे इस तरह हैं यानी ऊपर नीचे हैं। इस इशार्द से भी यही मालूम
होता है कि नीचे-ऊपर जहन्नम के सात तक्के हैं और हर तक्के का अलग-
अलग दरवाजा है और कुरआन हकीम की आयत—

إِنَّ الْمُنْفِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ (نार)

इन्नाल मुनाफ़िकी न फ़िदकिल अस्फ़लि मिननारि०

—निसा

'बिला गुब्हा मुनाफ़िक दोज्ख के सबसे नीचे के तक्के में जाएंगे' से
भी यही बात मालूम होती है कि जहन्नम के कई तक्के हैं। बुजुर्गों ने इन
तक्कों के नाम और इन तक्कों वालों की तपसील इस तरह बतायी है कि
सबसे नीचे का तक्का, मुनाफ़िकों, फ़िअौन और उसके मददगारों का है,
जिसका नाम 'हाविया' है और दूसरा तक्का जो हाविया के ऊपर है,
मुदिरकों के लिए है, जिसका नाम 'जहीम' है। फिर जहीम के ऊपर तीसरा
तक्का 'सकर' जो बे-दीन फ़िर्का 'साइबीन' के लिए है। चौथा तक्का जो
सकर से ऊपर है 'नतय' है, वह इब्लीस और उसके ताबेदारों के लिए है
और उसके ऊपर पांचवां तक्का यहूद के लिए है, जिसका नाम 'हुत्मा' है
और छठा तक्का 'सईर' है जो ईसाइयों के लिए है और सबसे ऊपर
सातवां तक्का जहन्नम है जो गुनाहगार मुसलमानों के लिए है, उसी पर
पुल सिरात कायम होगी और गो सब तक्कों के लिए लफ़्ज 'जहन्नम' आता

१. लिखने वाले, लेखक

है लेकिन असल में इसी तक्के का नाम जहन्नम है। यह भी लिखा है कि
जहन्नम के तक्कों के हर दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक सात सौ वर्ष की
दूरी है।

दोज़ख की एक खास गरदन

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया,
क्रियामत के दिन दोज्ख से एक गरदन निकलेगी, जिसकी दो आंखें होंगी
और दो कान होंगे, जिनसे सुनती होगी और एक जुवान होगी, जिससे
बोलती होगी, वह कहेगी, मैं तीन शरस्सों पर मुसल्लत की गई हूँ—(१)
हर सरकश जिद्दी पर, (२) हर उस शरस्स पर जिसने अल्लाह के साथ कोई
दूसरा माबूद ठहराया, (३) तस्वीर बनाने वाले पर। —तिर्मिज़ी

आग के स्तूनों में बन्द कर दिए जाएंगे

نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ الَّتِي تَطْلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ إِيَّاهُمْ عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ

فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ط (नार)

नारुल्लाहिल मू क़द तुल्लती तत्तलिअु अलल अपइदः इन्नहा अलै-
हिम मू स द तुन फ़ी अ म दिम मुमद्दः० —सूरः हुमज़ा

'(हुत्मा) सुलगायी हुई अल्लाह की वह आग है, जो दिलों तक
जा पहुंचेगी, वह आग, उन पर लम्बे-लम्बे स्तूनों में बन्द कर दी जायेगी।'

दुनिया में किसी को आग लगती है, तो दिल तक पहुंचने से पहले
ही उसकी रूह निकल जाती है, लेकिन दोज्ख में चूंकि मौत ही न आयेगी,
इसलिए सारे बदन के साथ दिलों पर भी आग चढ़ी बैठी होगी और खूब
जलायेगी, आग बन्द कर दी जाएगी यानी दोज्खियों को दोज्ख में भर
कर आगे से दरवाजे बन्द कर दिए जाएंगे, क्योंकि उसमें उनको हमेशा
रहना होगा। निकलना तो नसीब ही न होगा। लम्बे-लम्बे स्तूनों का
मतलब यह है कि आग के इतने-इतने बड़े शोले होंगे, जैसे स्तून होते हैं
और दोज्खी उसमें बन्द होंगे। —बयानुल कुरआन

दोज़ख़ पर मुकर्रर फरिश्तों की तायदाद

अलैहा तिस्र अत अशर०

‘दोज़ख़ पर उन्नीस फरिश्ते मुकर्रर होंगे।’

—मुद्स्सिर

फ़ —इन उन्नीस में से एकमालिक है और बाकी खाज़िन (खज़ान-ची) हैं और गो दोज़खियों को सज़ा देने के लिए उनमें का एक फरिश्ता भी काफ़ी है, मगर तरह-तरह के अज़ाब देने और अज़ाब के इन्तिज़ाम के लिए १६ फरिश्ते मुकर्रर हैं, जिनके मुताल्लिक सूरः तहरीम में है—

عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝

अलैहा मलाइकतुन शिदादुल ला यअसूनल्ला ह मा अमर हुम व यफ़ अलू न या युअमरून०

‘उस पर सल्ल और मजबूत फरिश्ते मुकर्रर हैं जो अल्लाह की (ज़रा), नाफ़रमानी उसके हुक्म में नहीं करते और जो हुक्म होता है, वही करते हैं।’

‘बयानुल कुरआन’ में ‘दुर्र मंसूर’ से नक़ल किया है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर मुकर्रर फरिश्तों में से हर एक की तमाम ज़िन्नो व इन्सानों के बराबर ताक़त है।

दोज़ख़ का गैज़ व ग़ज़ब, चीख़ना चिल्लाना और दोज़खियों को आवाज़ देकर बुलाना और दोज़खियों का तंग जगहों में डाला जाना।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ إِذَا
الْقَوَائِيهَا سَمِعُوا لِهَا شَيْئًا وَهِيَ تَقُودُ تَكَادُ تَمَيِّزُ مِّنَ
الْعَيْطِ ۝ (سورة ملک)

व लिल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अज़ाबु जहन्नम म व बिअसल मसी० इज़ा उल्कू फ़ीहा समिअू ल हा शहीक़व हि य तफ़ूर तकादु तमय्यज़ु मिनल गैज़ि०

—सूरः मुल्क, पारा २६

‘और जो लोग अपने रब का इन्कार करते हैं, उनके लिए दोज़ख़

का अज़ाब है और वह बुरी जगह है। जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे, तो उसकी एक बड़ी जोर की आवाज़ सुनेंगे और वह इस तरह जोश मारता होगा जैसे अभी गुस्से की वजह से फट पड़ेगा।’

हज़रत हकीमुल उम्मत क़हस सिरंहू ‘बयानुल कुरआन’ में लिखते हैं कि या तो अल्लाह तआला उसमें समझ और गुस्सा पंदा कर देगा। हक़ का ग़ज़ब जिन पर हुआ है, उन पर उसको भी गुस्सा आयेगा और या मिसाल देकर समझाना मक्सूद है कि ऐसा मालूम होगा जैसे दोज़ख़ को गुस्सा आ रहा है—

إِذَا رَأَتْهُمْ مِّن مَّكَانٍ يَبِيدٌ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا
وَذَفِيرًا وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَّانًا مُّضِقًّا
مُّقَرَّرِينَ دَعَوْا هُنَا لَكَ شُبُهْرًا ۝ (فرقان)

इज़ा रअतहुम मिम मकानिम बईद समिअू लहा तशयुज़व्व जफ़ीरा व इज़ा उल्कू मिन्हा मकानन ज़य्यिक़म मुकर्रनी न दअ्रो हुनालि कमुबूरा०

—फ़ुक्कान

‘जब वह (दोज़ख़) उनको दूर से देखेगा तो (वह देखते ही इतना ग़ज़बनाक होकर जोश मारेगा कि) वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे और जब वह उसकी किसी तंग जगह में हाथ-पांव पकड़ कर डाल दिए जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे।’

फ़ —अभी जहन्नम दोज़खियों से सौ साल के फ़ासले पर होगा कि उसकी नज़रें उन पर पड़ेंगी और उनकी नज़रें उस पर पड़ेंगी। वह देखते ही पेच व ताव खायेगा और जोश व ख़रोश से आवाज़ें निकालेगा, जिनको वे सुन लेंगे और जब उसमें धकेल दिये जाएंगे तो मौत को पुकारेंगे यानी जैसे दुनिया में किसी मुसीबत के वक़्त कहते हैं, हाय मर गये।

इन्ने अबी हातिम को एक रिवायत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ‘इज़ा रअतहुम’ को पढ़कर दोज़ख़ की दो आंखें साबित फ़रमायीं।

—इन्ने कसीर

अगरचे दोज़ख़ बहुत बड़ी जगह है, लेकिन अज़ाब के लिए दोज़खियों को तंग-तंग जगहों में रखा जाएगा। कुछ रिवायतों में खुद

१. दूसरी बहुत सी रिवायतों से भी मालूम होता है कि दोज़ख़ और जन्नत को अल्लाह पाक समझ दे देगे। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसकी तफ़सीर नक़ल की गयी है कि जिस तरह दीवार में कील गाड़ी जाती है, उसी तरह दोज़खियों को दोज़ख में ठूसा जाएगा।
—इब्ने कसीर

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى وَجَمَعَ فَأَوْعَى

(माल)

तदश्व मन अद्व र व तवल्ला व जम अ फ़ औआ० —मअरिज
'दोज़ख उस शख्स को (खुद) बुलायेगा, जिसने (दुनिया में हक से) पीठ फेरी होगी (इताअत) से वे हखी की होगी और (माल) जमा किया होगा, फिर उठा-उठा रखा होगा।'

इब्ने कसीर में है कि जिस तरह जानवर दाना खोज करके चुगता है उसी तरह दोज़ख हशर के मैदान से घुरे लोगों को एक-एक करके देख-भाल के चुन लेगा। इस आयत में माल जमा करने वालों का जिक्र है। हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु इसकी तफ़सीर में फ़रमाते थे कि जिसने जमा करने में हलाल व हराम का ख़याल न रखा और ख़ुदा के फ़रमान के बावजूद खर्च न करता था, वह शख्स मुराद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हक़ीम इस आयत के डर की वजह से कभी थैली का मुँह ही बंद न करते थे। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि ऐ इब्ने आदम! तू ख़ुदा का डरावा सुनता है और फिर माल समेटता है। रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'क्रियामत के दिन इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (यानी ज़िल्लत की हालत में) लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर दिया जाएगा, अल्लाह जल्लशानुहु उससे फ़रमायेंगे, क्या मैंने तुम्हें माल नहीं दिया, मवेशी और गुलाम व खादिम नहीं दिए, तुम्हें पर इनामात नहीं किए? बता तूने (उसके शुक्रिए में) क्या किया? इस पर वह जवाब देगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने जमा किया और खूब बढ़ाया और जितना था उससे कहीं ज़्यादा छोड़ा, इसलिए मुझे इजाज़त दीजिए कि इस सबको ले आऊँ—शरज़ यह कि वह बंदा ऐसा होगा कि उसने कुछ खर्च आगे न भेजी होगी, इसलिए उसको दोज़ख में पहुंचा दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी

और यह भी इशार्द फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है, जिसका कोई घर नहीं है और उसका माल है जिसका कोई माल नहीं और दुनिया के लिए वह जमा करता है जिसके पास कुछ भी अक्ल न हो।

—मिशक़ात शरीफ़

बेहक़ी ने शोबुल ईमान में मफ़ू'अ' हदीस नक़ल की है जब मरने वाला मर जाता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि उसने आख़िरत में क्या भेजा है और इंसान कहते हैं कि उसने दुनिया में क्या छोड़ा है?

दोज़ख की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिश्ते

हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस दिन दोज़ख को लाया जाएगा, जिसकी सत्तर हज़ार बागें होगी और हर बाग़ पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़रर होंगे जो उसको खींच रहे होंगे।

—मुस्लिम शरीफ़

हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज़ मुन्ज़री रह० ने 'अल्तशौब बत्तहीब' में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इशार्द नक़ल फ़रमाया है कि मान लीजिए अगर इस वक़्त फ़रिश्ते दोज़ख की बागें छोड़ दें तो हर नेक व बंद को अपने घेरे में ले लें।

दोज़ख के सांप और बिच्छू

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि बेशक दोज़ख में बड़ी लम्बी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर सांप हैं (जिनके ज़हरीले माढ़े की हकीकत यह है कि) एक बार जब उनमें से एक सांप डसेगा तो दोज़खी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। (फिर फ़रमाया) और बेशक दोज़ख में पालान से लदे हुए खच्चरों की तरह बिच्छू हैं (जिनके ज़हरीले माढ़े की हकीकत यह है कि) एक बार जब उनमें से एक बिच्छू डसेगा तो दोज़खी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा।

—अहमद

कुरआन शरीफ़ में है—

رُزِقْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ لِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِالْآيَاتِ

१. ऐसी हदीस जिसके सब रावी मोतबर हों और कहीं कोई रावी छूटता न हो।

‘यानी हम उनके लिए अज़ाब बढ़ा देंगे, उस शरारत के बदले जो वे करते थे।’

हज़रत इब्ने मसूअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस आयत की तपसीर में फ़रमाया कि आग के आम अज़ाब के अलावा उनके लिए यह अज़ाब बढ़ा दिया जाएगा कि इन पर बिच्छू मुसल्लत किए जाएंगे, जिनके कीले (बड़ दांत) लम्बी-लम्बी खजूरों के बराबर होंगे। —तर्गीब

दोज़ख़ में मौत न आयेगी और अज़ाब हल्का न होगा

कुरआन हकीम में इशार्द है—

لَا يَمُوتُونَ فِيهَا وَلَهُمْ فِيهَا مَزِيدٌ (زمر)

ला युफ़तरु अन्हुम व हुम फ़ीहि मुब्लिसून०

उनका अज़ाब हल्का न किया जाएगा और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे।

दूसरी जगह इशार्द है—

لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فِيمَ نِيْمَتُهُمْ وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِنَا (نار)

(नार)

ला युक्ज़ा अज़ैहिम फ़ यमूत व ला युखफ़फ़ु अन्हुम मिन अज़ाबिहा०

‘न तो उनकी क़ज़ा (मौत) आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जायेगा।’

यानी दोज़ख़ में यह भी नहीं हो सकता कि अज़ाब में पड़े-पड़े मौत ही आ जाए और अज़ाब से बच जाएं, बल्कि वहां बे इतिहा तक्लीफ़ होने पर भी ज़िदा रहेंगे। हदीस में है कि जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे और दोज़खी दोज़ख़ में जा चुकेंगे (और दोज़ख़ से कोई जन्नत में जाने वाला बाक़ी न रहेगा,) तो दोज़ख़ और जन्नत के दमियान (मेंढे की सूरत में) मौत लायी जाएगी। इसके बाद एक पुकारने वाला पुकारेगा कि ऐ जन्नत वालो! अब मौत न आयेगी। और ऐ दोज़ख़ वालो! अब मौत न आयेगी। इस एलान के सुनने से जन्नत वालों की खुशी में बढ़ोती होगी और दोज़ख़ वालों का रंज अर बढ़ी जाएगा। —बुखारी व मुस्लिम

दोज़ख़ की आवाज़ ‘हल मिम मज़ीद’

يَوْمَ تَقُولُ لِحَبِثْتُمْ هَلْ أُمْتَلَأْتِ وَتَقُولُ

هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ (نار)

यौम नक़ूलु लिजहन्नम म हलिम तलअति व तकूलु हल मिम मज़ीद०

—क्राफ़

‘जिस दिन हम कहें दोज़ख़ से, क्या तू भर चुकी? वह कहेगी कि क्या कुछ और भी है?’ (तर्जुमा शेख़ुल हिद रह०)

हदीस शरीफ़ में है कि रसूलु खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि जहन्नम में दोज़खी डाले जाते रहेंगे और दोज़ख़ ‘हलमिम मज़ीद’ (क्या और भी है?) कहता जाएगा और सब दोज़खी दाखिल हो जाएंगे, जब भी न भरेगा, यहां तक कि अल्लाह उस पर अपना क़दम शरीफ़ रख देंगे, जिसकी वजह से दोज़ख़ सिमट जाएगा और यों अर्ज करेगा—क़त क़त बिअिज्जतिक व क र मिक (बस, बस आप की इज्जत और करम का वास्ता देता हूं।) —मिशकात

सब्र करने पर भी अज़ाब से रिहाई न होगी

दुदिया में तरीक़ा है कि सब्र करने से मुसीबत के बाद राहत नसीब हो जाती है मगर दोज़ख़ के अज़ाब के बारे में इशार्द है—

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ

إِنَّمَا تَجَزُونَ مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ (طور)

इस्लोहा फ़स्बिरू अब ला तस्बिरू सवाउन अलैकुम इन्नमा तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअमलून,

—तूर

‘दोज़खियों से कहा जाएगा, इसमें दाखिल हो जाओ, फिर सब्र करो या न करो, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं, जैसा कि तुम करते थे, वैसा ही तुम्हें बदला दिया जाएगा।’

दोज़खियों का खाना-पीना

ज़रीअ यानी आग के कांटे—

تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ آتِيَةٍ ۖ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ۖ
لَا يَسْبِغُونَ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ جُوعُهُمْ

तुस्का मिन अयिन आनियतिन लै स लहुम तआमुन इत्ला मिन
ज़रीअत्ला युस्मिन व ला युनी मिन जूअ०

‘दोज़खियों को खोलते हुए चरमे’ का पानी मिलेगा और सिवाए
भाड़-कांटों वाले खाने के इन के लिए कुछ खाना न होगा, जो न ताकत
देगा, न भूख दूर करेगा।’

साहिबे ‘मिकर्त’ लिखते हैं कि ‘ज़रीअ’ हिजाज में एक कांटेदार
पेड़ का नाम है, जिसकी खवासत (वे-मज्जा बदबूदार होने) की वजह से
जानकर भी पास नहीं फटकते। अगर जानवर खा ले तो मर जाए। फिर
लिखते हैं, यहां ‘ज़रीअ’ से आग के कांटे मुराद हैं जो एलवे से कड़ुवे,
मुर्दा से ज्यादा बदबूदार और आग से ज्यादा गर्म होंगे और जिनको बहुत
ज्यादा खाने के बाद भी भूख दूर न होगी।

गिस्लीन (घावों का धोवन)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ مِنْهَا شَرِبٌ ۖ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا
مِنْ غَسْلِيْنٍ ۖ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝ (صافات)

फ़लै स लहुमु ल्याय म हाहुना हमीमुव ला तआमुन इत्ला मिन
गिस्लीन ला यश्कुलुह इत्ललखाति उन०

‘आज उसका कोई दोस्त नहीं और न कुछ खाने को ही है सिवाए
घावों के धोवन के जिसे सिर्फ गुनाहगार खाते हैं।’

जक्कूम (सेंड) —

إِنَّ شَجَرَةَ الزَّقْوَمِ طَعَامٌ الْأَشْيَمِ ۖ كَالْمُهْلِ يَغْلِي
فِي الْبُطُونِ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۖ

इन्न श जर तश्जक्कूम तआमुल असीम कल्मुहिल यरली फ़िल
बुतूनि व पस हमीम०

—दुखान

‘वेशक गुनाहगार का खाना पिघले हुए तांबे जैसा जक्कूम का पेड़
है जो पेटों में गरम पानी की तरह खोलेगा।’

شَرِبْنَاكَمُ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمَكْدُورُونَ لَا تَكُونُوا مِنْ شَجَرَةٍ مِنْ رَقِيمٍ ۖ
فَمَا لَكُمْ مِنْهَا الْبُطُونَ فَتَرْتَوُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۖ فَتَشْرَبُونَ
شَرِبَ الْعَمِيمُ ۖ هَذَا شَرِبُوا لَهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۖ (واقعه)

सुम्म इन्नकुम अय्युहज़ाल्लून मुकश्जिबून ल आकिलून मिन श जर
रतिम मिन जक्कूम फ़ मालिऊ न मिनहल बुतून फ़ शारिबून अलैहि मिनल
हमीम फ़ शारिबून शुबलहमीम हाज़ा नुजुलुहुम यौमदीनि०

—सूर: वाक्किअ:

‘फिर ऐ झुठलाने वाले-गुमराह लोगो! तुम जक्कूम के पेड़ खाओगे
और उससे अपने पेट भर लोगे, फिर ऊपर से खोलता हुआ पानी पियोगे
जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, क्रियामत के दिन इस तरह उनकी मेहमानी
होगी।’

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۖ طَلْعُهَا كَأَنَّهَا

رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ ۖ (صافات)

इन्हा श जर तुन तख़रुजु फ़ी अस्लिल जहीमि तल्शुहा क अन्नह
रऊमुशयातीनि०

—साफ़ात

‘असल में वह (जक्कूम) एक पेड़ है जो दोजख में जड़ से निक-
लता है। इसके फल ऐसे हैं जैसे साँपों के फल।’

फ़—जक्कूम का तज़ुमा सेंड किया जाता है जो मशहूर कड़ुवा
पेड़ है। लेकिन यह सिर्फ़ समझाने के लिए है, क्योंकि वहां की हर चीज़
कड़ुवाहट और बदबू वगैरह में यहां की चीज़ों से कहीं ज्यादा बुरी है और
क्या ही बुरा मंजर होगा जबकि उस पेड़ से खायेंगे और फिर ऊपर से
खोलता हुआ पानी पियेंगे और वह भी थोड़ा बहुत नहीं, बल्कि प्यासे
ऊंटों की तरह खूब ही पियेंगे।

أَعَاذَنَا اللَّهُ تَعَالَى مِنَ الزَّقْوَمِ وَالْحَمِيمِ وَسَائِرِ أَنْوَاعِ عَذَابِ الْجَحِيمِ ۖ

अया ज नल्लाहु तआला मिनज़क्कूम वल हमीम व साइरि
अन्वाअि अज़ाबिल जहीमि०

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया, अगर

जबकूम का एक कतरा (धूँद) भी दुनिया में टपका दिया जाए तो वह यकीनी तौर पर तमाम दुनिया वालों के खाने बिगाड़ डाले (यानी सब कड़ुवे हो जाएँ) अब बताओ कि उसका क्या हाल होगा जिस का खाना ही जबकूम होगा।

—तिमिजी व इन्हे हव्वान वगैरह हाकिम की रिवायत में है कि खुदा की कसम ! अगर जबकूम का एक कतरा दुनिया के दरियाओं में डाल दिया जाए तो वह यकीनन तमाम दुनिया वालों की गिजाएँ कड़ुवी कर दे, तो बताओ उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही जबकूम होगा।

—तर्गीब

गस्साक

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا
إِلَّا حَمِيمًا وَعَسَاقًا (سورة نبا)

ला यजूकू न फ्रीहा बर्दव्व ला शराबन इल्ला हमीमव्व गस्साका०

—सूर: नबा

'वह उस दोजख में खोलते हुए पानी और गस्साक के अलावा किसी ठंडक और पीने की चीज का मजा तक न चख सकेंगे।'

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अगर गस्साक का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाए, तो तमाम दुनिया वाले सड़ जाएँ।

—तिमिजी व हाकिम

गस्साक क्या चीज है ? इसके बारे में उम्मत के बुजुर्गों के अलग-अलग कौल हैं। साहिबे मिक्रात ने चार कौल नक़ल किए हैं—

१. दोजखियों के पीप और उन का धोवन है।

२. दोजखियों के आंसू मुराद है,

३. दोजख का ठंडक वाला अज़ाब मुराद है।

४. गस्साक सड़ी हुई और ठंडी पीप है जो ठंडक की वजह से पी न जा सकेगी (अगर भूख की वजह से मजबूरन पीनी पड़ेगी) बहरहाल गस्साक बड़ी बुरी चीज है।

अल्लाहुम्मा अग्रिज़ना मिन्ह०

माइन कलू सुहल (कीट)

وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ

يَشْوِي الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا (سورة كهف)

व इन्ड्यस्तगीसू युगासू बिमाइन कलू मुह्लि यदिवल वुजूह बिअसशराबि व साअत मुर्वफ़का० —सूर कहफ़

'और अगर प्यास से तड़प कर फ़रियाद करेंगे तो उनको ऐसा पानी दिया जाएगा जो तेल की तलछट (कीट) की तरह होगा, जो चेहरों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और दोजख क्या ही बुरी जगह है ?'

माइन सदीद (पीप का पानी)

وَيُسْقَوْنَ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا
يَكَادُ يُسِغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ
(البقرة)

व युस्का मिम माइन सदीद० य त जर्रुहु व ला यकादु युसीगुह व यातीहिल मोतु मिन कुल्लि मकानिन व माहु व बिमय्यतिन०

—इब्राहीम

'इस (दोजखी) को पीप का वह पानी पिलाया जायेगा, जिसको वह घूँट-घूँट कर के पियेगा और उसको गले से मुश्किल से उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत (आती हुई) नज़र आयेगी, मगर वह मरेगा नहीं।'

यानी हर तरफ़ से तरह-तरह के अज़ाब देखकर समझेगा कि अब मैं मरा, अब मरा, मगर वहाँ मौत न होगी कि मरकर ही पाप कट जाए और अज़ाब से रिहाई हो सके।

हमीमुन (खोलता हुआ पानी)

وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ (سورة محمد)

व सुकू माअन हमीमुन फ़ क त अ अम् आअहुम० —मुहम्मद

'और दोजखियों को खोलता हुआ पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आंतों के टुकड़े कर डालेगा।'

तआमुन जी गुस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا وَطَعَامًا
ذَا غَضَبٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا (سورة نزل)

इस लदना अन्कालव्व जहीमन व तआमन जा गुस्सतिव्व अजावन अलीमा०

—सूर: मुज्जम्मिल

‘बेशक (इन काफ़िरो के लिए) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढेर और गले में अटक जाने वाला खाना और दर्दनाक अजाव है।’

हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते थे कि ‘तआमुन जी गुस्सतिन’ एक कांटा होगा जो गले में अटक जाएगा, न बाहर निकलेगा, न नीचे उतरेगा।

—तर्गीव

हजरत अबुद्दुर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत फ़रमाते हैं कि आपने फ़रमाया, दो ज़ख़ियों को (इतनी ज़बरदस्त) भूख लगा दी जाएगी जो अकेली ही उस अजाव के बराबर होगी जो उनके भूख के अलावा हो रहा होगा, इसलिए वे खाने के लिए फ़र्याद करेंगे, इस पर उनको जीराअ का खाना दिया जायेगा, जो न मोटा करे, न भूख दूर करे, फिर दोबारा खाना तलब करेंगे तो उनको ‘तआमुन जी गुस्सतिन’ (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा जो गलों में अटक जाएगा, उसके उतारने के लिए उपाय सोचेंगे, तो याद करेंगे कि दुनिया में पीने की चीज़ों से गले की अटकी हुई चीज़ें उतारा करते थे इसलिए पीने की चीज़ को मांगेंगे, चुनांचे खोलता हुआ पानी लोहे की सँडासियों के ज़रिए उनके सामने कर दिया जायेगा, वे सँडासियाँ जब उनके चेहरों के करीब होंगी, तो उनके चेहरों को भून डालेंगी, फिर जब पानी पेटों में पहुँचेगा, तो पेट के अन्दर की चीज़ों (यानी आंतों वगैरह) के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। —मिदकात

हजरत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ‘युस्सक़ा मिम माइन सदीदिय्य त जर्र अु ह’ पढ़कर फ़रमाया, ‘माइन सदीद’ (पीप का पानी) जब दो ज़ख़ी के मुँह के करीब किया जाएगा तो वह उससे नफ़रत करेगा, फिर और करीब किया जायेगा तो चेहरे को भून डालेगा और उसके सर की खाल गिर पड़ेगी। फिर जब उसे पियेगा, तो अंतड़ियाँ काट डालेगा और आखिर में पाखाना की जगह से बाहर निकल जायेगा। इसके बाद रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह आयतें पढ़ीं।

अजाव के अलग-अलग तरीक़े

दो ज़ख़ की आग और उसकी कड़ी गर्मी, साँप, बिच्छू, खाने-पीने की चीज़ें, अंधेरा यह सब कुछ अजाव ही अजाव होगा, मगर यह जो कुछ अब तक ज़िक्र किया गया, दो ज़ख़ के अजाव का थोड़ा-सा हिस्सा है, कुरआन व हदीस से मालूम होता है कि इन तरीक़ों के अलावा और भी बहुत से तरीक़ों से अजाव दिया जाएगा, जिनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं।

सह (गर्म पानी)

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ هُ يُصْهِرُ
بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُودُ هُ (ح)

युसब्बु मिन फ़ौक् रूसहिमुल हमीम युस्हर बिही मा फ़ी बुतूनि-हिम वल् जुद०

—सूर: हज

‘उनके सरोँ पर जलता-जलता पानी डाला जाएगा, जिसकी तेज़ी से उनके पेट में से और खाल में से सब कुछ गलकर बाहर निकल आयेगा।’

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया, बेशक खोलता हुआ पानी ज़रूर दो ज़ख़ियों के सरोँ पर डाला जाएगा जो उनके पेटों में पहुँच कर उन तमाम चीज़ों को काट देगा जो उनके पेटों के अन्दर हैं और आखिर में क्रदमों से निकल जाएगा। इसके बाद फिर दो ज़ख़ी को वैसे ही कर दिया जाएगा जैसा था। फिर इशदि फ़रमाया कि आयत में जो लफ़्ज़ ‘युस्हर’ है, उसका यही मतलब है।

—तिर्मिज़ी, वैहकी

मक़ामिअु (गुर्ज़)

وَلَهُمْ مَقَامِعٌ مِنْ حَدِيدٍ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا
مِنْهَا مِنْ عَمِ أَعْيِدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ هُ

(سورة ج)

व लहुम मक़ामिअु मिन हदीद कुल्लमा अरादू अय्यख़रूजू मिन्हा

मिन गम्मिन उम्मीदू फ्रीहा व जूजू अजाबल हरीक़० —सूर: हज
'और दोऊखियों (के मारने के लिए) लोहे के गुर्ज हैं। वे लोग
जब भी दोऊख की घुटन से निकलना चाहेंगे, फिर उसी में धकेल दिए
जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जलने का अजाब चखते रहो।'

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि,
(दोऊख का) लोहे का एक गुर्ज ज़मीन पर रख दिया जाए, तो अगर
उसको तमाम ज़िन्न और इंसान मिलकर उठाना चाहें तो नहीं उठा
सकते।

—अहमद, अबूयाला

और एक रिवायत में है कि जहन्नम के लोहे का गुर्ज अगर पहाड़
पर मार दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर रेज़ा-रेज़ा होकर राख हो
जाएगा।

—तर्गीब

खाल पलट दी जायेगी

كَلِمًا تَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بِدَلَّتْهُمْ جُلُودًا

غَيْرَهَا لِيَدُّوْا الْعَذَابَ ط (سورة نساء)

कुल्लमा नज़िजत जुलूदुहुम बद्लनाहुम जुलूदन ग़ैरहा लियजूकुल
अज़ा ब०

—सूर: निसा

'जब एक बार उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उसकी जगह दूसरी
नयी खाल पैदा कर देंगे ताकि अजाब चखते ही रहें।'

हज़रत हसन बसरी रज़ि० से नक़ल किया गया है कि दोऊखियों को
हर दिन सत्तर हजार बार आग जलायेगी। हर बार जब आग जलायेगी
तो कहा जायेगा, जैसे थे, वैसे ही हो जाओ। चुनांचे वे हर बार वैसे ही
हो जाएंगे।

—तर्गीब व तर्हीब

अलग-अलग सज़ाएं

इल्म छिपाने वाले की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया,
जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी और उसने जानते हुए (न बतायी
बल्कि) उसको छिपा लिया तो उसके मुंह में आग की लगाम लगायी
जाएगी।

—मिशकात शरीफ़

शराब या नशा वाली चीज़ पीने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे
रब ने क़सम खायी है कि मुझे अपनी इज़ज़त की क़सम है, मेरे बन्दों में
से जो भी बन्दा शराब का कोई घूँट पियेगा तो इसको इतनी ही पीप
मिलाऊंगा और जो बन्दा मेरे डर से शराब छोड़ेगा, उसको पाक-साफ़
होज़ों से पिलाऊंगा।

—अहमद

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, खुदा ने अपने ज़िम्मे यह अहद कर लिया
है कि जो कोई नशेदार चीज़ पिएगा, क्रियामत के दिन ज़रूर उसको
'तीनतुल खबाल' में से पियालेगा। सहाबा रज़ि० ने अज़ किया 'तीनतुल
खबाल' क्या है? इशार्द फ़रमाया, दोऊखियों का पसीना या फ़रमाया,
दोऊखियों के जिस्मों का निचोड़।

—मिशकात

हज़रत अबू मूसा अश्शरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है
कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसकी
आदत शराब पीने की थी, और वह इसी हाल में मर गया तो अल्लाह
तआला उसको 'नहरुल गोता' से पिलाएंगे। अज़ किया गया 'नहरुल
गोता' क्या है? इशार्द फ़रमाया, एक नहर है जो ज़िना कराने वाली
औरतों की शर्म ताहों से जारी होगी।

—अहमद व इब्ने हब्बान

वे-अमल वाइज़ों की सज़ा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिस
रात मुझको मेराज कराया गयी, मैंने ऐसे लोग देखे, जिनके होंठ आग की
कंचियों से काटे जा रहे थे। मैंने पूछा, ऐ ज़िन्नो! ये कौन लोग हैं?
उन्होंने कहा, ये आपकी उम्मत की वे वाइज़ हैं, जो लोगों को भलाई का
हुक्म करते हैं और अपने आप को भूल जाते हैं और अल्लाह की किताब
पढ़ते हैं, लेकिन अमल नहीं करते।

—मिशकात शरीफ़

बुखारी और मुस्लिम में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम ने फ़रमाया, क्रियामत के दिन एक शख्स को लाया जायेगा, फिर
उसको दोऊख में फेंक दिया जाएगा, उसकी अंतड़ियां आग में जल्दी से
निकल पड़ेंगी, फिर वह उसमें इस तरह घूमेगा जिस तरह गधा चक्की

को लेकर घूमता है। उसका हाल देखकर दोऊखी उसके पास जमा हो जाएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ फ़लां ! तुझे क्या हुआ है ? क्या तू हमको भलाई का हुक्म न करता था और बुराई से न रोकता था, वह कहेगा, हां, तुम को भलाई का हुक्म करता था मगर खुद न करता था और तुम को बुराई से रोकता था, मगर उसको खुद करता था।

सोने-चांदी के बर्तन इस्तेमाल करने वालों की सज़ा

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने सोने या चांदी के बर्तन में या किसी ऐसे बर्तन में कुछ खाया-पिया, जिसमें सोने या चांदी का हिस्सा हो, वह अपने पेट में दोऊख की आग भरता है।

—दारे कुली

फोटो ग्राफ़र की सज़ा

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह के नज़दीक सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तस्वीर बनाने वालों को होगा।

—बुखारी व मुस्लिम

और इश़ाद फ़रमाया है कि तस्वीर बनाने वाला दोऊख में होगा, उस की बनायी हुई हर तस्वीर के बदले एक जान बना दी जाएगी जो उसको दोऊख में अज़ाब देगी।

—बुखारी व मुस्लिम

इस रिवायत के बाद हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, अगर तुझे बनानी ही हो तो पेड़ और बे-जान चीज़ की तस्वीर बना ले।

—मिशकात शरीफ़

खुद कुशी करने वाले की सज़ा

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने पहाड़ से गिरकर खुद कुशी कर ली तो वह दोऊख की आग में होगा, उसमें हमेशा-हमेशा (चढ़ता और गिरता) रहेगा। और जिसने ज़हर पीकर खुद कुशी कर ली तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा, जिसके दोऊख की आग में हमेशा-हमेशा पीता रहेगा और जिसने किसी लोहे की चीज़ में

१. आत्म हत्या, २. यह काफ़िर के मुताबिक़ है। मुसलमान खुदकुशी करने वाला खुदकुशी की सज़ा पूरी कर लेने के बाद दूसरे गुनाहना मुसलमानों की तरह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।

खुद कुशी कर ली तो उसकी वह लोहे की चीज़ उसके हाथ में होगी जिस को हमेशा-हमेशा दोऊख की आग में अपने पेट में घोंपता रहेगा।

—बुखारी

घमंडी की सज़ा

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया, घमंड करने वाले चूंटियों के बराबर जिस्मों में उठाये जाएंगे, जिनकी शक्लें इंसानों की होंगी। फिर फ़रमाया, हर तरफ़ से उनको ज़िल्लत घेर लेगी। (फिर फ़रमाया) वे दोऊख के जेलख़ाने की तरफ़ इसी तरह हंकाये जाएंगे। इस जेलख़ाने का नाम बोल्स है। उन पर आगों को जलाने वाली आग चढ़ी होगी और उनको 'तीनतुल ख़्याल' यानी दोऊखियों के जिस्मों का निचोड़ मिलाया जाएगा।

—मिशकात शरीफ़

तिमिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि बेशक जहन्नम में एक वादी है जिसको 'हब-हब' कहा जाता है, उसमें हर ज़व्वार (सरकश) रहेगा।

दिखावटी आबिदों की सज़ा

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जुबुल हुज़न (घम के कुएं) से पनाह मांगो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि जुबुल हुज़न क्या है ? इश़ाद फ़रमाया दोऊख में एक गढ़ा है, जिससे हर दिन खुद दोऊख चार सौ बार पनाह चाहता है। अर्ज़ किया गया, इसमें कौन जाएगा ? फ़रमाया, अपने आमाल का दिखलावा करने वाले आबिद (इबादत करने वाले) जाएंगे।

—तिमिज़ी शरीफ़

इब्ने माज़ा की रिवायत में यह भी है कि इसके बाद आपने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़-तरीन इबादत गुज़ारों में वे भी हैं जो (ज़ालिम) अमीरों (सरदारों) के पास जाते हैं यानी उनकी खुशामद और चापलूसी के लिए।

—मिशकात शरीफ़

सअद (आग का एक पहाड़)

क़ुरआन शरीफ़ में है—

स उहिकुह सअदन

'बहुत जल्द मैं उसको सअद पर चढ़ाऊंगा (जो दोऊख में आग का पहाड़ है)'

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया

—मुहत्सिर

कि 'समूद' आग का एक पहाड़ है, जिस पर दो जखी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा, फिर सत्तर साल तक ऊपर से गिराया जाएगा यानी ७० साल तक तो वह पऊर चढ़ा था, अब सत्तर साल तक गिरते-गिरते नीचे पहुंचेगा और हमेशा उसके साथ ऐसा ही होता रहेगा। —तिमिजी

सिलसिला (बहुत लंबी जंजीर)

कुरआन शरीफ में है—

حَدُّوهُ فَعَلُّوهُ ۖ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۖ ثُمَّ
فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۗ ط (سورة الحاقة)

खुजूहु फ़ गुलूहु मुम्मल जही म सल्लूहु मुम्म फ़ी सिलसिल तिन ज़अ्रु हा स० अ न ज़िराअन फ़सलुकूहु० —सूर: हाक्का
'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो फिर उसको तौक पहना दो, फिर दो जखी में दाखिल कर दो, फिर ऐसी जंजीर में जकड़ दो जिसकी नाप सत्तर गज है।'

हज़रत हकीमुल उम्मत क़द्दस सिर्रु वयानुल कुरआन में लिखते हैं कि उस गज की मिकदार खुदा को मालूम है, क्योंकि यह गज वहां का होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर रांग का एक टुकड़ा जमीन की तरफ़ आसमान से छोड़ दिया जाए तो रात के आने से पहले जमीन तक पहुंच जाए जो पांच सौ साल की दूरी है और अगर वह टुकड़ा दो जखी की जंजीर के सिरे से छोड़ा जाए तो दूसरे तक पहुंचने से पहले चालीस साल तक चलता रहेगा। —तिमिजी शरीफ़ इससे मालूम हुआ कि दो जखियों के जकड़ने की जंजीर आसमान और जमीन के बीच की दूरी से भी लंबी होंगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि ये जंजीर उसके जिस्म में पिरो दी जाएगी, पाखाने के रास्ते से डाली जाएगी, फिर उसे आग में इस तरह भूना जाएगा जैसे सीख में कबाब और तेल में टिंडी भूनी जाती है। —इब्ने कसीर

तौक

अल्लाह जल्ल शानुह का इशार्द है—

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ۚ

इन्ना अअ्तदना लिल काफ़िरी न सला सिललव्व अग़लालव्व ससीरा०

—सूर: दह

'और हमने काफ़िरी के लिए जंजीरें, तौक और धधकती आग तैयार कर रखी है।'

सूर: मोमिन में है—

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۚ إِذَا أَعْلَلُ فِيْ أَعْنَاقِهِمْ وَ
لَسْلِسٍ يُسْحَبُونَ فِي الْحَمِيمِ ۖ ثُمَّ فِي النَّارِ

يُسْجَرُونَ ۖ

फ़ सौफ़ यअलमू न इज़िल अग़लालु फ़ी अअ़नाक़िहिम व ससलासिलु मुस्तह्व न फ़िल हमीमि मुम्म फ़िन्नारि युस्ज रू न०

'उनको अभी मालूम हो जाएगा, जबकि तौक उनकी गरदनों में होंगे और (उन तौकों में) जंजीरें (पिरोयी हुई होंगी और इस तरह वह) घसीटते हुए गर्म पानी में ले जाए जाएंगे, फिर आग में भोंक दिए जाएंगे।'

इब्ने अबी हातिम की एक मफ़ूअ हदीस में है कि एक तरफ़ से काला बादल उठेगा जिसे दो जखी देखेंगे, उनसे पूछा जाएगा, तुम क्या चाहते हो? वह दुनिया पर सोच करके कहेंगे, हम यह चाहते हैं कि बादल बरसे! चुनांचे उस में से तौक और जंजीरें और आग के अंगारे बरसने लगेंगे, जिनके शोले उन्हें जलायेंगे और उनके तौकों व जंजीरों में और बढ़ती हो जाएगी।

—इब्ने कसीर

जिस खोलते पानी में दो जखी डाले जाएंगे, उसके मुताल्लिक हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु फ़रमाते थे कि गुनाहगार के बाल पकड़ कर उस पानी में गोता दिया जाएगा तो उसका तमाम गोश्त गल कर गिर जाएगा और हड्डियों के ढांचे और दो आंखों के सिवा कुछ न बचेगा।

गंधक के कपड़े

सूर: इब्राहीम में इशार्द है—

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطْرِ اِنٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهُهُمُ النَّارُ ۚ

सराबीलुहम मिन क़ति रानिब्व तग़शा वुजूह हुमुन्नार०

'उनके कुरते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग लिपटी

हुई होगी।'

फिर—हजरत हकीमुल उम्मत रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि चीड़ के तेल को क़तिरान कहते हैं (जिसका तज़ुमा गंधक किया गया है) और उसके कुरते का मतलब यह है कि सारे बदन को क़तिरान लिपटी होगी ताकि उसमें जल्दी और तेज़ी के साथ आग लग सके।

—बयानुल कुरआन

हजरत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि 'क़तिरान' पिघले हुए तांबा को कहते हैं। इस तांबे के दो ज़खियों के कपड़े होंगे जो सख्त गर्म आग जैसे होंगे।

—इब्ने कसीर

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

मय्यत पर चीख-पुकार करके रोने वाली औरत अगर मौत से पहले तौबा न करेगी तो क़ियामत के दिन इस हाल में खड़ी की जाएगी कि उस का एक कुरता क़तिरान (गंधक) या पिघले हुए तांबे का होगा और खजुली का होगा, यानी उसके जिस्म पर खारिश (खजुली) पैदा कर दी जाएगी और ऊपर से क़तिरान लपेट दिया जाएगा। सूर: हज़ में इशार्द है—

فَالْكَاذِبِينَ كَفَرُوا وَأَطْغَتْ لَهُمْ شِبَابٌ مِّن نَّارٍ ط

फ़लज़ी न क फ़ रू क़त्ति अत लहुम सियाबुम मिननारि०

'सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के लिए) आग में कपड़े तराशे जाएंगे।'

दोज़ख़ के दारोगों के ताने

तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफ़ों और अलग-अलग क्रिस्म के अज़ाब के तरीक़ों के अलावा एक बड़ी रूहानी तकलीफ़ दो ज़खियों को यह पहुंचेगी कि दो ज़ख़ के दारोगे उनको ताने देंगे, जिसको कुरआन हकीम में अलग-अलग अन्दाज़ में बयान किया गया है। चुनांचे सूर: अलिफ़-लाम-

१. अगर क़तिरान से घुराद गंधक ही है तो यह गंधक इसलिए न होगी कि उसकी खजुली को आराम हो जाए, बल्कि इसलिए ताकि जिस्म पर और ज्यादा जलन हो, क्योंकि खजुली में गंधक लगाने से बहुत जलन होती है। (बल्लाहु तआला अमलमु)

भीम-सज्दा में इशार्द है—

وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ٢٩

व की ल लहुम जूकू अज़ाबन्नारि तलज़ी कुन्तुम बिही तुक़्ज़िबून०
'और उनसे कहा जाएगा, अब चलो इस आग का अज़ाब, जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूर: अहकाफ़ में है—

أَدْهَبَكُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَنْعَمْتُمْ بِهَا

فَالْيَوْمَ تَنْجُرُونَ عَذَابَ الْهُونِ يَمَّا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ

بِعَٰلِي الْحَقِّ وَيَمَّا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ط (سورة احقاف)

अज़हबतुम तय्यिबातिकुम फ़ी हयातिकुमुदुन्या वस्तम्ताअतुम बिहा फ़ल यो म तुज्जो न अज़ाबल हूनि बिमा कुन्तुम तस्तक्बिरून फ़िल अज़ि बिगैरिल हज़िक व बिमा कुन्तुम तफ़सुकून०

—सूर: अहकाफ़

'तुमने दुनिया की ज़िंदगी में अपने मज़े पूरे कर लिए, उन्हें तो हासिल कर चुके (अब ज़रा संभल जाओ, क्योंकि) आज तुम ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा पाओगे, अपनी उस अकड़ के बदले कि तुम खामखाह ज़मीन में बड़े बनते थे और खुदा की ना-क़र्मांनी करते थे।'

हजरत ज़ौद बिन अस्लम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हजरत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी तलब फ़रमाया, चुनांचे आप की खिदमत में शहद में मिलाया हुआ पानी पेश किया गया, तो आप ने नहीं दिया और फ़रमाया यह है तो बहुत अच्छा, मगर नहीं पियूंगा, क्योंकि मैं कुरआन शरीफ़ में पढ़ता हूँ कि अल्लाह तआला ने ख़्वाहिशों पर अमल करने वालों की निंदा करते हुए फ़रमाया है कि उनसे आखिरत में कहा जाएगा कि तुमने दुनिया की ज़िंदगी में मज़े उड़ाये, इसलिए मैं डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकी के बदले में दुनिया ही में लफ़्फ़तें मिल जाएं।

—मिस्कात

दोज़ख़ियों के हालात

दोज़ख़ में जाने वालों की तादाद

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हजरत आदम अलैहिस्सलाम को खिताब करके फ़रमायेंगे, ऐ

आदम ! वे अर्ज करेंगे—

لَيْتَكَ وَسَعْدَكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ

लम्बैक व सअदैक वल खैरकुल्लुह फ्री यदैक०

यानी, 'मैं हाज़िर हूँ और हुक्म का ताबेअ हूँ और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है,' अल्लाह जल्ल शानुह फ़रमायेंगे (अपनी ओलाद में से) दोज़खी निकाल दो। वे अर्ज करेंगे, दोज़खी कितने हैं ? इशदि होगा, हर हज़ार में ६६६ हैं। यह सुन कर ओलादे आदम सख्त परेशान होगी और (रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे-बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग बद-हवास हो जाएंगे और हकीकत में बे-होश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख्त होगा (जिसकी वजह से बद-हवासी होगी)।

—मिशकात

यह सुन कर हज़रत सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया कि या रसूल-ल्लाह वह एक जन्नती हम में से कौन-कौन होगा ? आपने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) खुश हो जाओ, क्योंकि यह तायदाद इस तरह है कि एक तुम में से और हज़ार याज़ूज माज़ूज हैं।

मतलब यह है कि याज़ूज-माज़ूज की तायदाद बहुत ज्यादा है, अगर तुम में और उन में मुकाबला हो तो तुम में से एक शख्स के मुकाबले में याज़ूज-माज़ूज एक हज़ार आएंगे और चूँकि वे भी आदम ही की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर हज़ार ६६६ दोज़ख में जाएंगे।

दोज़ख में ज्यादा औरतें होंगी

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मैंने जन्नत में नज़र डाली तो अक्सर बे-पैसे वाले देखे और मैंने दोज़ख में नज़र डाली तो अक्सर औरतें देखीं।

—मिशकात

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक बार ईद या बकर ईद की नमाज़ के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में औरतों पर गुज़र हुआ तो आपने (उनको खिताब करके) फ़रमाया, ऐ औरतों ! सदका किया करो, क्योंकि मैंने दोज़खियों में ज्यादातर औरतें

१. लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूर होना। आपका मतलब यह था कि औरतें चूँकि अक्सर दूसरों औरतों पर लानत करती रहती हैं, इस वजह से वे खुद ही अल्लाह की रहमत से दूर होती रहती हैं और रहमत से दूर होने का मतलब ही दोज़ख में जाना है।

देखी है। औरतों ने अर्ज किया, क्यों ? आपने फ़रमाया कि लानत बहुत करती हो। और शोहर की ना-शुक्र करती हो। —बुखारी व मुस्लिम

दोज़खियों की बद-सूरती

وَالَّذِينَ كُنُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٍ لَّيْسَ لَهُمْ شُرَكَاءُ
تَرَاهُمْ ذُلًّا مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ
وُجُوهُهُمْ قُطُوفٌ مِنَ الْإِلِّيلِ مُطْمِئِنًّا (سورة ناز)

वल्लजी न क स बुस्सव्यिअति जज़ाउ सव्यिअतिम बिमिस्लिहा व तहकुहुम ज़िल्लतुन माल हु म मिनल्लाहि मिन आसिम क अन्नमा उमिशायत वुज़ूहुहुम कि त अम मिनल्लैलि मुज़्लिमन० —सूर: यूनुस

और जिन लोगों ने बुरे काम किये वदी की सज़ा उस बुराई के बराबर मिलेगी और उन पर ज़िल्लत छा जाएगी, उनको अल्लाह (के अज़ाब) से कोई न बचा सकेगा (उनकी बद-सूरती का यह हाल होगा कि) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत के परत लपेट दिये गये हैं। इस आयत से मालूम हुआ कि दोज़खियों के चेहरे बेहद स्याह होंगे।

हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, अगर दोज़खियों में से कोई शख्स दुनिया की तरफ़ निकाल दिया जाए, तो उसकी जंगली सूरत के मंज़र और बदबू की वजह से दुनिया वाले ज़रूर मर जाएंगे। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० बहुत रोये।

—तर्गीब

सूर: मूमिनून में है—

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ (مؤمنون)

तल्फ़हु वुज़ूह हुमुन्नार व हुम फ़ीहा कालिहून० —मूमिनून
'आग उनके चेहरों को झलसती होगी और उसमें उनके मुँह बिगड़े होंगे।'

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने 'कालिहून' की तफ़सीर फ़रमाते हुए इशदि फ़रमाया कि दोज़खी को आग जलायेगी, जिसकी वजह से उसका ऊपर का होंठ सुकड़ कर बीच सर तक पहुँच जाएगा और नीचे का होंठ लटक कर नाफ़ तक पहुँच जाएगा।

—तिर्मिजी शरीफ़

दोज़खियों के आंसू

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्ल० ने हज़रत सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, ऐ लोगो ! रोओ और रो न सको तो रोने की सूरत बनाओ, क्योंकि दोज़खी दोज़ख में इतना रोयेगी कि उनके आंसू उनके चेहरों पर नालियां-सी बना देंगे, रोते-रोते आंसू निकलने बंद हो जाएंगे तो खून बहने लगेंगे, जिस की वजह से आंखें जलूमी हो जाएंगी (मतलब यह कि आंसू और खून की इतनी ज्यादाती होगी कि) अगर उनमें कश्तियां छोड़ दी जाएं तो वे भी चलने लगें।
—शहू स्मुलः

दोज़खियों की जुबान

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बेशक काफ़िर अपनी जुबान एक फ़सख़ और दो फ़सख़ तक खींच कर बाहर निकाल देगा जिस पर लोग चल कर जाएंगे।
—तर्गीब-तर्हीब

दोज़खियों के जिस्म

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दोज़ख में काफ़िर के दोनों मोड़ों के दमियान का हिस्सा तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बा होगा, जबकि कोई तेज़ रफ़्तार सवार चल कर जाए और काफ़िर की दाढ़ उहद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते के बराबर होगी।
—मुस्लिम शरीफ़

तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, काफ़िर की दाढ़ क्रियामत के दिन उहद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी रान बैजा पहाड़ के बराबर होगी और दोज़ख में उसके बैठने की जगह तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बी-चौड़ी होगी, जितनी दूर मदीना से रबजा गांव है।
—मिशकात

और एक रिवायत में है कि दोज़खियों के बैठने की जगह इतनी लम्बी होगी जितना मक्का और मदीना के दमियान का फ़ासला है।
—मिशकात शरीफ़

फ़तः—कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर की खाल की मोटाई ४२

१. एक फ़सख़ तीन मील का होता है। मालूम हुआ कि काफ़िर की जुबान इतनी लम्बी हो जाएगी।

हाथ होगी, और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में गुज़र चुका है कि तीन दिन की दूरी के बराबर होगी, मगर कोई यह गुरिकल बात नहीं, क्योंकि मुस्तलिफ़ काफ़िरों को मुस्तलिफ़ सज़ाएं होंगी, किसी को कम किसी को ज्यादा।

कुछ रिवायतों में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी उम्मत के कुछ लोग दोज़ख में इतने बड़े कर दिए जाएंगे कि एक ही आदमी दोज़ख के पूरे एक कोने को भर देगा।

—तर्गीब व तर्हीब

हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि मुझ से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, दोज़ख कितना चौड़ा है ? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया, हां! खुदा की कसम! खुदा की कसम!! तुम नहीं जानते, बेशक दोज़खी के कान की ली और मोठे के दमियान सत्तर साल चलने का रास्ता होगा, जिसमें खून और पीप की वादियां (नालें) जारी होंगी।
—तर्गीब

पुले सिरात से गुज़र कर दोज़ख में गिरना

दोज़ख की पीठ पर पुल कायम किया जाएगा, जिसको पुले सिरात कहते हैं। तमाम नेक और बंद लोगों को उस पर होकर गुज़रना होगा।

कुरआन हकीम में इशदि है—

وَأَنذَرْتُكُمْ الْآثَرَ ۚ إِنَّكُمْ لَعِندَ رَبِّكُمْ عَلَىٰ حَتْمٍ مَّقْضِيٍّ (٤١)

व इन् मिकुन इल्ला वारिदुहा का न अला रब्बि क हत्तम मबजोया०

—मयम

‘और तुम में ऐसा कोई भी नहीं, जिसका इस दोज़ख पर गुज़र न हो (क्रियामत के दिन)’

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दोज़ख की पीठ पर पुले सिरात कायम किया जाएगा और मैं नबियों में सबसे पहले अपनी उम्मत को लेकर उस पर से गुज़रूंगा और उस दिन सिर्फ़ रसूल ही बोलेंगे और उनका कलाम (बोल) सिर्फ़ यह होगा—

अल्लाहुम्म सल्लिम सल्लिम०

‘ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख।’ फिर फ़रमाया कि

जहन्नम में सादान' के कांटों की तरह मुड़ी हुई कीलें हैं, जिन की बड़ाई अल्लाह ही को मालूम है। वे कीलें पुल सिरात पर चलने वालों को बद-आमालियों की वजह से घसीट कर दोजख में गिराने की कोशिश करेंगी, जिसके नतीजे में कुछ हलाक होकर (दोजख में) गिर जाएंगे (और कभी भी न निकल सकेंगे, ये काफ़िर होंगे) और कुछ कट-कटा कर दोजख में गिरेंगे और फिर निजात पा जाएंगे (ये फ़ासिक होंगे)।

दूसरी रिवायत में है कि कुछ मोमिन पलक भपकने में गुजर जाएंगे और कुछ बिजली की तरह जल्दी से गुजर जाएंगे। और कुछ हवा की तरह और कुछ तेज़ घोड़ों और ऊंटों की तरह, इन रफ़्तारों में कुछ सलामती के साथ निजात पा जाएंगे और कुछ (कीलों से) छिज-छिला कर छूट जाएंगे और कुछ दोजख में औंधे धकेल दिए जाएंगे।

—बुखारी व मुस्लिम

हजरत काब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा लेगा। जब सब नेक व बद जमा हो जाएंगे तो अल्लाह तआला का इशार्द होगा कि तू अपनी को पकड़ ले, जन्नितियों को छोड़ दे। चुनांचे जहन्नम बुरों का निवाला कर जाएगा, जिन को वह इस तरह पहचानता होगा जैसे तुम अपनी औलाद को पहचानते हो, बल्कि उस से भी ज्यादा।

—इब्ने कसीर

हासिल यह है कि जन्नत वाले पार होकर जन्नत में पहुँच जाएंगे जिन के लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले हुए होंगे और दोजखी दोजख में भोंक दिए जाएंगे, जिसको अल्लाह जल्ल शानुह ने यों वयान फ़रमाया है—

لَمْ نَبْنِیْ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَتَذَرُوا الظَّالِمِیْنَ فِیْهَا جَنَّتِیَّاهُ (م)

सुम्म नुनज्जिल्ली न त्त क़ौ व न ज़ रुज़्जालिमीन फ़ीहा जिसीया०

—सूर: मरयम

'फिर हम उनको निजात देंगे जो डरा करते थे और ज़ालिमों को उस (दोजख) में ऐसी हालत में रहने देंगे कि घुटनों के बल गिर पड़ेंगे।'

१. एक कांटेदार पेड़ का नाम है, जिसके कांटे बड़े-बड़े होते हैं,

२. खुलासा, सार,

दाखिले की सूरत

कुरआन शरीफ की आयतों में दोजखियों के दाखिले की सूत्रन कई जगह बयान की गयी हैं, जिनमें यह भी है कि दोजखी प्यास की हालत में जहन्नम रसीद किये जाएंगे और दोजख में जाने से पहले दरवाज़े पर खड़ा करके उनसे फ़रिश्ते सवाल व जवाब भी करेंगे। नीचे की आयतों से ये मज़मून खूब साफ़ साफ़ समझ में आते हैं—

وَسَوْفَ الْمَجْرُمِیْنَ اِلَیْهِمْ وَرَدَّاهُ (م)

व नसूकुल मुज़िमी न इला जहन्नम विर्दा० —सूर: मरयम

'और हम मुज़िमी को दोजख की तरफ प्यासा हाँकेंगे।'

یَوْمَ یُسْعَبُوْنَ فِی النَّارِ عَلٰی وُجُوْهِهِمْ ذُقُوْا مَرَسَقًا (سورة م)

(सूरा म)

यो म युस्हबू न फ़िन्नारि अला वुजूहिहिम जूकू मस्स स कर०

—सूर: कमर

'जिस दिन मुज़िम मुंह के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, तो उन से कहा जाएगा कि दोजख की आग का मज़ा चखो।'

فَلَا یُكْبَرُ اِیْهَاهُمْ وَالْفَاوْنُ وَجُنُودُ اِبْلِیْسَ اجْعُوْنَهُ (سورة م)

(सूरा म)

फ़ कुब्किबू फ़ीहा हुम वल् गाऊन व जुनूदु इब्लीस अज्मऊन०

—सूर: शुमरा

'फिर वे और गुमराह लोग और इब्लीस का लश्कर सब के सब दोजख में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे।'

یُعْرَنُ الْمَجْرَمُوْنَ بِسِیْمَاهُمْ فِیْوَحْدَ (سورة م)

(सूरा म)

بِالنَّوَامِیْ وَالْاَتْدَامِ

युम् रफ़ुल मुज़िमू न बिसीमाहुम फ़ युम्खबु बिन्निवासी वल् अतदाम०

—सूर: रहमान

'मुज़िम लोग अपने हुलिए से पहचाने जाएंगे। (क्योंकि उनके चेहरे स्याह और आँखें नीली होंगी), फिर उनके सर के बाल और पांव

पकड़ लिए जाएंगे (और उनको घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा) ।

तर्जिब व तर्हीब में हजरत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कौल इस भायत की तपसीर में नक़ल किया गया है कि मुज्रिम के हाथ और पैर मोड़ कर हकट्टे कर दिए जाएंगे। फिर लकड़ियों की तरह तोड़-मरोड़ दिया जाएगा (और जहन्नम में भोंक दिया जाएगा) ।

أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَبْعَدُونَ هـ
مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ هـ وَقِفُوا هـ
هُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُورُونَ هـ مَا كُمْ لَا تَنَاصَرُونَ هـ بَلْ هُمْ هـ
الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ هـ (साफ़त)

उहमुल्लज़ी न ज़ल मू व अस्वा जुहम व मा कानू यमबुदू न मिन दूनिल्लाहि फहदुहम इला सिरातिल जहीम व क़िफ़ुहम इन्नहुम मसूऊन न मा लकुम ला तना स रून बल हुमुल यौ म मुस्तस्लिमून०

—साफ़त

‘(फ़रिस्तों को हुक़म होगा कि) जमा कर लो ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को और उनके माबूदों को, जिन को वे लोग खुदा को छोड़ कर पूजा करते थे, फिर इन सब को दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ। (और फिर हुक़म होगा अच्छा ज़रा) उनको ठहराओ, उन से सवाल किया जाएगा (चुनांचे यह सवाल होगा) कि अब तुम को क्या हुआ, एक दूसरे की मदद नहीं करते। (इस पर भी वे एक दूसरे की कुछ मदद न करेंगे) बल्कि सब के सब सर झुकाये खड़े रहेंगे।’

يَوْمَ تَقُفُّ أَوْجُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا
أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ هـ (अरब)

यौ म तुकल्लबु वुज हुहम फ़िल्लारि यूकूलूना या लै तना अतम- नल्ला ह व अत अमनरसूला०

—सूर: अज़ाब

‘जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पलट किये जाएंगे, वे यों कहते होंगे, ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत की होती।’

दोज़ख़ वालों से शैतान का खिताब

इधर तो दोज़खी शैतान पर पछताते होंगे और अल्लाह की ओर से ऊपर के खिताब के जरिये उन पर डांट पड़ेगी, उधर शैतान इस तकरीर से उनको लताड़ेगा—

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لِمَنْ أَتَى الْأَمْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ
وَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا
أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُمُونِي وَلَا لَوْمَةٌ
أَنْفُسِكُمْ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنتُمْ بِمُصْرِخِي إِنْ
كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ هـ (سورة البر)

व क़ालशैतानु लम्मा कुज़ियल अम्ह इन्नल्ला ह व अद कुम वअदल हक्क व वअतु कुम फ़ अल्लपतुकुम व मा कान लि य इल्ला अन् दओतुकुम फ़स्तजबतुम ली फ़ ला तलूमनी व लूम अन्फुसकुम मा अना बिमुस्लिखिकुम व मा अन्तुम बिमुस्लिखी य इन्नी कफ़तु बिमा अशरक्तुमनि मिन कब्बु इन्नश़्शालिमी न लहुम अज़ाबुन अलीम० —सूर: इब्राहीम

‘और (क्रियामत के दिन) जब सब मुक़दमे फ़ैसला हो चुकेंगे तो शैतान कहेगा (मुझे बुरा-भला कहना ना-हक़ है, क्योंकि) बिला शुबहा अल्लाह ने तुम से सच्चे वायदे किये थे और मैंने भी कुछ वायदे किये थे, सो मैंने वे वायदे ख़िलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा इससे ज्यादा ज़ोर न चलता था कि मैंने तुमको (गुमराही की) दावत दी, सो तुमने (खुद ही) मेरा कहना मान लिया। तुम मुझ पर मलामत मत करो और अपने आप को मलामत करो, न मैं तुम्हारा मददगार हूँ और न तुम मेरे मददगार हो। मैं तुम्हारे इस काम से खुद बेज़ार हूँ कि तुम इससे पहले (दुनिया में) मुझ (खुदा का) शरीक़ करार देते थे। यकीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।’

दोज़खियों को वाकई बड़ी हसरत होगी, जबकि शैतान अपना अलगाव जाहिर करेगा और हर क्रिस्म की मदद और तसल्ली से अलग हो जाएगा। उस वक़्त दोज़खियों के गुस्से की जो हालत होगी, जाहिर है।

गुमराह करने वालों दोज़खियों का गुस्सा

जो लोग गुमराह करने वाले थे, उन पर दोज़खियों को गुस्सा आयेगा और उनसे कहेंगे—

إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ هَلْ أَنتُمْ مُّعْتَوُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ ۖ (अब्राहीम)

इन्ना कुन्ना लकुम त ब अन्न फहल अन्तुम मुग्नून अन्ना मिन अज़ाबिल्लाहि मिन शैइन०

—इब्राहीम

‘हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम खुदा के अज़ाब का कुछ हिस्सा हम से हटा सकते हो ?

वे जवाब देंगे—

لَوْ هَدَيْنَا اللَّهُ لَهْدَيْكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرُ غَنَاتٍ ۖ
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ۖ (अब्राहीम)

लो हदानल्लाहु ल हदैनाकुल सवाउन अलैना अज जिअना अम सबर्ना मा लना मिम् महीस०

—इब्राहीम

‘(तुम्हें क्या बचाएं हम तो खुद ही नहीं बच सकते) अगर अल्लाह हमको बचने की कोई राह बताता तो तुम को भी वह राह बता देते। हम सब के हक में दोनों शकलें बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों, चाहे जबर करें। हमारे बचने की कोई शकल नहीं।’

वह लोग गुस्से और जलन से भर कर गुमराह करने वालों के बारे में अल्लाह के दरबार में अर्ज करेंगे। सूर: हाम्मीम सज्दा में है—

رَبَّنَا آتِنَا الَّذِيْنَ أَضَلَّنا مِنَ الْيَقِيْنِ وَالْإِنْسِ جُعَلْنا مَثَلًا
لِّذِيْنَ أَضَلَّنا مِنَ الْإِنْسِ ۖ (अब्राहीम)

रब्वना अरिनल्लज्ज नि अज़ल्लाना मिनल जिन्नि वल इंसि नज् अलहुमा तहत अक्दामिना लियकुना मिनल अस्फलीन०

‘ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें वह शैतान और इंसान दिखा दे, जिन्होंने हमें गुमराह किया, हम इनको पैरों के नीचे कुचल डालेंगे, ताकि वे खूब जलील हों।’

दोज़ख के दारोगों और मालिक से अर्ज-मारुज़

दोज़खी अज़ाब से परेशान होकर अर्ज-मारुज़ का सिलसिला शुरू करेंगे कि—

أَدْعُوا رَبَّكُمْ يَحْقِيقْ عَنَّا نَوْمًا مِنَ الْعَذَابِ. (मूस)

उद्द्यू रब्वकुम युख़फ़िफ़ अन्ना योमम मिनल अज़ाबि०

—मोमिन

‘तुम ही अपने पालनहार से दुआ करो कि किसी एक दिन तो हम से अज़ाब हल्का कर दे।’

वे जवाब देंगे—

أَوَلَمْ تَكُنْ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ. (मूस)

अ व लम तकु नानिकुम रुसूलुकुम बिल बय्यिनाति० —मोमिन

‘क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैगम्बर भोज्जे लेकर नहीं आते रहे थे, (और दोज़ख से बचने का तरीका नहीं बतलाया था)

इस पर दोज़खी जवाब देंगे कि ‘बला’ यानी हां आते तो थे, लेकिन हमने उनका कहना न माना, फ़रिस्ते जवाब में कहेंगे—

فَادْعُوا وَمَا دَعَا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ (मूस)

फ़दअ व मा दुआउल काफ़िरी न इल्ला फ़ी ज़लाल० —मोमिन

‘तो फिर (हम तुम्हारे लिए दुआ नहीं कर सकते, तुम ही दुआ कर लो और वह भी बे-नतीजा होगी) क्योंकि काफ़िरो की दुआ (आखिरत में) बिल्कुल बे-असर है।’

इसके बाद मालिक यानी दोज़ख के अप्सर के दरबार में दर्खास्त पेश करके कहेंगे—

يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ (अब्राहीम)

या मालिकु लियविज्ज अलैना रब्वु क० यानी ऐ मालिक ! (तुम ही दुआ करो कि) तुम्हारा परवरदिगार (हम को मौत देकर) हमारा काम तमाम कर दे।’

वे जवाब देंगे—

إِنَّا لَكُمْ مَسْكُونُونَ ۖ

इन्नकुम माकिमून०

‘तुम हमेशा इस हाल में रहोगे (न निकलोगे, न मरोगे)।’
हज़रत आमश रह० फ़रमाते थे कि मुझे रिवायत पहुंची है कि मालिक अलै० के जवाब और दोज़खियों की दर्खास्त में हज़ार वर्ष की

मुद्दत का फासला होगा।

इसके बाद कहेंगे कि आओ अपने स्व से सीधे-सीधे दख्खिस्त करें और उससे दुआ करें, क्योंकि इस से बढ़ कर कोई नहीं है। चुनांचे अजब करेंगे—

رَبَّنَا عَلِمْتَ عَلَيْنَا شَعْوَتَنَا كُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ هُ رَبَّنَا
اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِن عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ هُ (المؤمن)

रब्बना गल बत अजैना शिक्वतुना व कुन्ना कौमन जाल्लो न रब्बना अखिरज्ना मिन्हा फ़ इन्मुद्दना फ़ इन्ना जालिमून० --- मोमिनून

‘ऐ हमारे रब! (वाकई) हमारी बद-बस्ती ने हमको घेर लिया था और हम गुमराह हो गये थे, ऐ हमारे रब! हमको इससे निकाल दीजिए, फिर हम अगर दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक कसूरवार हैं।’

अल्लाह तआला जवाब में फ़रमायेंगे—

اِخْسُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُون ۝ اِذْ يَرْثُهَا رَبُّكَ
‘इसी में फिटकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात न करो।’

हज़रत अबुद्दुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि अल्लाह जल्लशानुह के इस इशार्द पर हर क्रिस्म की भलाई से नाउम्मीद हो जाएंगे और गधों की तरह चीखने-चिल्लाने और हसरत व दुख में लग जाएंगे।

—मिशकात शरीफ

इदने कसीर में है कि उनके चेहरे बदल जाएंगे, शक्लें बिगड़ जाएंगी, यहां तक कि कुछ मोमिन शफ़ाअत लेकर आयेंगे, लेकिन दोज़खियों में से किसी को पहचानेंगे नहीं, दोज़खी उनको देख कर कहेंगे कि फ़लां हूँ, मगर वे कहेंगे कि ग़लत कहते हो हम तुमको नहीं पहचानते। ‘इस्सऊ फ़ीहा’ के जवाब के बाद दोज़ख के दरवाज़े बंद कर दिए जाएंगे और वे उसी में सड़ते रहेंगे।

दोज़खियों की चीख-पुकार

सूर: हूद में अल्लाह तआला का इशार्द है—

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُّوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا
رَبِّيرٌ وَنَسِيمٌ هُ خَالِدِينَ فِيهَا

फ़ अम्मल्लजी न शक्कू फ़ फ़िन्नारि लहुम फ़ीहा ज़फ़ीरुव्व शहीकुन ख़ालिदी न फ़ीहा०

‘जो लोग शक्की (बद-बस्ती) हैं, वे दोज़ख में इस हाल में होंगे कि गधों की तरह चिल्लाते होंगे।’

क़ामूस में है कि ‘ज़फ़ीर’ गधे की शुरु की आवाज़ को कहते हैं और ‘शहीक’ उसकी आखिरी आवाज़ को कहते हैं।

दोज़ख के अज़ाब से छुटकारे के लिए फ़िदया देना ग़वारा होगा

अल्लाह जल्ल शानुह का इशार्द है—

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جِيعًا وَمِثْلًا مَعًا لَا تَمْتَدُّوا
بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ هُ (زمر)

व लौ अन्न लिल्लजी न ज़ ल मू मा फ़िल अज़ि ज़मीअव्व मिस्लह म अह लफ़तदो बिही मिन सूइल् अज़ाबि यौमल क्रियामति० — जुमर

‘और अगर जुल्म (यानी शिक व कुज़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन चीज़ों के साथ और भी इतनी चीज़ें हों तो वे लोग क्रियामत के दिन सल्ल अज़ाब से छूट जाने के लिए (बे-भिन्नक) उन सबको देने लगे।’

सूर: मअरारिज में इशार्द है कि, ‘उस दिन मुज़्रिम यह तमन्ना करेगा कि आज के अज़ाब से छूट जाने के लिए अपने बेटों को और अपनी बीबी को और भाई को और कुन्बे को, जिन में वह रहता था और तमाम ज़मीन की चीज़ों को अपने बदले में दे दे, और फिर यह बदला उसको बचा ले।’

लेकिन वहां न तो माल होगा, न कोई किसी के बदले में आना मंज़ूर करेगा और मान लो, ऐसा हो भी जाए, तो मंज़ूर न किया जाएगा, जैसा कि सूर: माइद: में जिक्र है—

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جِيعًا
وَمِثْلًا مَعًا لَفَتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَمَةِ
مَا تَقَبَّلُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ هُ

इन्ल्लजी न क फ़रू लौ अन्न लहुम मा फ़िल अज़ि ज़मीअव्व मिस्लह म अ ह लियफ़तदू बिही मिन अज़ाबि यौमल क्रियामति मा

तुकुव्वि ल मिन्हम व लहुम अजावुन अलीम०

‘यक्रीनन जो लोग काफिर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया की चीजें हों और उतनी चीजों के साथ उतनी चीजें और भी हों ताकि उनको देकर कियामत के दिन के अजाब से छूट जाएं, तब भी वे चीजें उन से हरगिज कुबूल न की जाएंगी और उनको दर्दनाक अजाब होगा।’

जन्नतियों का हंसना

कुरआन हकीम में फरमाया गया है कि जन्नती दोजखियों के हाल पर हंसेंगे। सूर: मुतफिफ़ीन में है—

وَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ عَلَى
الْأَسْرَآئِكَ يَنْظُرُونَ ۝

फल यौ मल्लजी न आ म नू मिनल कुफ़फ़ारि यज्जहकून अलन अराइकि यज्जहकून०

‘आज ईमान वाले काफिरों पर हंसते होंगे, मजहूरियों पर वे उनका हाल देख रहे होंगे।’

तपसीर दुर्र मंसूर में हजरत क़तादा रजि० से रिवायत की है कि जन्नत में कुछ दरीचे और भरोखे ऐसे होंगे जिनसे जन्नत वाले दोजख वालों को देख सकेंगे और उनका बुरा हाल देखकर ‘बदले के तौर पर’ उन पर हंसेंगे जैसा कि दुनिया में मोमिनों को देख कर ख़ुदा के मुज्रिम हंसते थे और कनखियों के इशारों से उनका मज़ाक़ उड़ाते थे और बग़ों में बैठ कर भी दिल्लगी के तौर पर ईमान वालों का ज़िक्र करते थे—

قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ

कालल्लाहु अज्ज व जल्ल—इन्तल्लजी न अजरमू कानू मिनल्लजी न आमनू यज्जहकून०।

सूर: मुअ्मिन में है कि दोजखियों से अल्लाह तआला शानुह का इशार्द होगा कि मेरे बंदों में एक गिरोह (ईमान वालों का) था जो (हम से) अर्ज़ किया करते थे कि, ‘हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये, सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़रमाइए और आप

१. अल्लाह अज्ज व जल्ल ने फ़रमाया, ‘बेशक मुज्रिम मोमिनों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।’

सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं।—तुमने उनका मज़ाक़ बना रखा था और यहां तक तुम उनका मज़ाक़ बनाने में मशगूल रहे कि उनके मशगले ने तुमको मेरी याद भी भुला दी। आज मैं ने उनको उनके सब का बदला यह दिया कि वही कामियाब हुए।

सोचने की बात

दोजख और दोजखियों के हालात जो अब तक आपने पढ़े हैं, यह इसलिए नहीं लिखे गये कि सरसरी नज़र से पढ़ कर किताब अलमारी के सुपुर्द कर दी जाए और दोजख और दोजखियों के हालात को पढ़ कर दूसरे किस्सों और कहानियों की तरह भुला दिया जाए।

हकीकत यह है कि पिछले वाक़िए और हालात जो बयान किए गये हैं, चूँकि कुरआन की आयतों और नबी की हदीसों का तर्जुमा हैं, इसलिए बिलाशक सही और वाक़ई हैं। अगर इनको बार-बार पढ़ा जाए और अपनी बद-आमालियों पर नज़र की जाए तो सलत से सलत दिल वाला आसान भी अपनी ज़िदगी को बहुत आसानो से पलट सकता है और अपने नपस को दोजख के हालात समझा कर नेकियों के रास्ते पर डाल सकता है, बशर्ते कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अज़ैहि व सल्लम को सच्चा समझता हो और उनके बताये हुए दोजख के हालात को सही और वाक़ई मानता हो। मोमिन बंदे हमेशा अपनी ज़िन्दगी का हिसाब करते रहते हैं और अल्लाह तआला शानुह के दरबार में दोजख से पनाह में रहने की दुआ करते रहते हैं, भला हो सकता है कि जो शख्स इन हालात को सही समझता हो, वह अपनी ज़िदगी को दुनिया की लज्जतों और फ़ना हो जाने वाली इज्जत और दौलत के हासिल करने में ग़वा दे। रसूल ख़ुश सल्लल्लाहु तआला अज़ैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि दोजख लज्जतों में छिपा दिया गया है, जन्नत ना-गवारियों में छिपा दी गयी है।

—बुखारी व मुस्लिम

यानी लज्जतों में पड़ कर ज़िदगी गुज़ारने वाले वे काम कर रहे हैं जिनके पदों में दोजख है और नपस को ना-गवारियों में फंसाकर अच्छे अमल करने वाले वह काम कर रहे हैं, जिनके पदों में जन्नत है। आह! उन लोगों को जहन्नम के हालात का पता ही नहीं जो खुदकुशी करके यह समझते हैं कि मुसीबत से छुटकारा हो जाएगा और जो दुनिया की सल्लती और मशवक़त से घबराकर यों कह देते हैं क्या ख़ुदा के यहां मेरे लिए

दोजख में भी जगह नहीं है।

हकीकत यह है कि अगर दोजख की आग, उसके सांप, बिच्छू, आग के कपड़े, अज्ञाव के तरीके, दोजख की खुराक वगैरह का ध्यान रहे तो म्युनिसिपैलटी और एसमवलियों की कुसियों के एजाज हासिल करने वाले, रुपया जमा करने और बिल्डिंग व जायदाद बनाने वाले हरगिज-हरगिज उन चीजों में पड़ कर और बड़े-बड़े गुनाहों में मुक्ता होकर अपनी आखिरत खराब नहीं कर सकते।

भला जिसे दोजख की भूख की खबर हो, वह रोजा छोड़ सकता है ? और जो दोजख की बेचैनो को जानता हो, वह ज़रा-सी नींद और फ़ानी आराज के लिए नमाज बर्बाद कर सकता है ? और जो दोजख के सांप, बिच्छूओं के डसने की जलन की खबर रखता हो, वह यों कह सकता है कि दाढ़ी रखने से खजुली होती है ? जिन्हें 'जुबुल हुज़्ज़' की खबर हो, वे दिखावे की इबादत कैसे कर सकते हैं और जिसको तस्वीर बनाने का अंजाम भालूम हो, वे तस्वीर बना सकते हैं ? जिनको यह यक़ीन हो कि शराब पीने की सज़ा में दोजखियों के जिस्मों का धोवन या निचोड़ पीना पड़ेगा, वे शराब के पास जा सकते हैं ? हरगिज नहीं, हरगिज नहीं।

हकीकत यह है कि जन्नत और दोजख के हालात सिर्फ़ जुबानों तक ही महदूद (सीमित) रह गये हैं और यक़ीन के दर्जे में नहीं रहे, बरना बड़े गुनाह तो दूर की बात, छोटे गुनाहों के पास जाना भी सोचा नहीं जा सकता। हज़रत अली करमल्लाहु वज्हुहु फ़रमाते थे कि अगर जन्नत और दोजख मेरे सामने रख दिए जाएं तो मेरे यक़ीन में ज़रा-सी भी बढ़ती नहीं होगी यानी मेरा ग़ैब पर ईमान इतना मजबूत है कि आंखों से देख कर भी उतना ही यक़ीन हो सकता है जितना वगैर देखे है, जिनको दोजख के हालात की खबर हो, वे गुनाह तो क्या करते इस दुनिया में न हंसते, न खुशी मनाते।

अतर्गीब वत्तर्हीब में एक रिवायत नक़ल की है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलामु वस्सलामु से दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या बात है, मैंने मीकाईल को हंसते हुए नहीं देखा ? अर्ज़ किया, जब से दोजख की पैदाइश हुई है, मीकाईल नहीं हंसे।

सही मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा इशाद फ़रमाया कि उस जात की कसम, जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, अगर तुमने वह मंज़र देखा होता जो मैंने देखा है, तो तुम ज़रूर कम हंसते और ज्यादा रोते ! सहाबा रज़ि०

ने अर्ज़ किया, आपने क्या देखा ? इशाद फ़रमाया, मैंने जन्नत और दोजख देखे।

हज़रत इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, मुझे ताज़ुब है कि लोग हंसते हैं, हालांकि उनको दोजख से बचने का यक़ीन नहीं है। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम एक बार (मकान से) बाहर तशरीफ़ लाये और देखा कि लोग खिलखिला कर हंस रहे हैं, यह देखकर आप ने फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ (यानी मौत) को कसरत से याद करते तो तुम्हें इसकी फ़ुर्सत नहीं मिलती, जिस हाल में तुमको देख रहा हूँ।

—मिशकात शरीफ़

गरज यह कि होशियार वही है, जो अपनी आखिरत की ज़िदगी बनाये और दो-चार दिनों के माल व दौलत, इज़्ज़त व आवरू, ओहदा व हुकूमत के फंदों में पड़ कर अपनी जान को दोजख के हवाले न करे, जब अज्ञाव से फ़सेगा तो पछताने और—

لَيْلِيَّهَ كَانَتْ الْقَاضِيَّةُ مَا عَنِ عَنِّي مَالِيَّةٌ هَلَكَتْ عَنِّي سُلْطَانِيَّةٌ (الامار)

या लै तहा कान्तिल काज़ियः मा अग्नी अग्नी मालियः हल क अग्नी सुल्तानियः०

—अल-हाक्का

'हाय, काश ! वह मौत ही ख़त्म कर देती, मेरे काम कुछ न आया मेरा माल, जाती रही मेरी हुकूमत, कहने और हाथ मलने से कुछ हासिल न होगा। जन्नत जैसी आराम की जगह की तलब से लापरवाही और दोजख जैसे बे-मिसाल अज्ञाव के घर से बचने की चिंता से ग़फ़लत बे-अक्लों ही का काम हो सकता है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत को तलब करो, जितना तुमसे हो सके और दोजख से भागो जितना तुमसे हो सके, क्योंकि जन्नत का तलबगार और दोजख से भागने वाला (लापरवाही की नोद) सो नहीं सकता।

—अतर्गीब वत्तर्हीब

हज़रत यह्या बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि आदमी बेचार जितना तंगदस्ती से डरता है, अगर जहन्नम से उतना डरे तो सीधा जन्नत में जाए।

हज़रत मुहम्मद बिन मुकदिर जब रोते थे तो आंसुओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और इसकी वजह यह बताते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि उस जगह जहन्नम की आग न पहुंचेगी जहां आंसू पहुंचें होंगे।

एक अंसारी ने तहज्जुद पढ़ा और बैठ कर बहुत रोये और कहते रहे कि जहन्नम की आग के बारे में अल्लाह ही से फरियाद करता हूँ। उनका हाल देख कर रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आज तुमने फरिश्तों को रुला दिया।

हजरत जैनुल आबिदीन रजियल्लाहु तआला अन्हु एक मर्तबा नमाज पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गयी, मगर आप नमाज में मशगूल रहे। लोगों ने पूछा कि आपको खबर न हुई ? फरमाया कि दुनिया की आग से आखिरत की आग ने शाफिल रखा।

एक साहब का कितसा है कि रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाते और सोने की कोशिश करते, मगर नींद न आती थी, इसलिए उठ कर नमाज शुरू कर देते थे और अल्लाह के दरबार में अर्ज करते थे कि ऐ अल्लाह ! आपको मालूम है कि जहन्नम की आग के खौफ ने मेरी नींद उड़ा दी, फिर सुबह तक नमाज में मशगूल रहते।

हजरत अबू यज़ीद रह० हर वक्त रोते रहते थे। इसकी वजह पूछी गयी तो फरमाया कि अगर खुदा का यों इशार्द हो कि गुनाह करोगे तो हमेशा के लिए हम्माम (गुस्लखाना) में क़ैद किये जाओगे, तो उसके डर से मेरा आंसू हरगिज़ न रुकेगा, फिर जबकि गुनाह करने पर दोजख से डराया जिसकी आग तीन हजार साल तक गर्म की गयी है, तो मेरे आंसू कैसे रुकें ?

फ़श्तबिरु या उलिल अब्सार०

खात्मा

दोज़ख से बचने की कुछ दुआयें

१. हजरत इब्ने अब्बास रजि० फरमाते हैं कि हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस तरह सहाबा रजि० को कुरआन की सूरः सिखाते थे, उसी तरह यह दुआ सिखाते थे—

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ — (ترغيب عن مسلم)

अल्लाहुम इन्नी अम्बूजुबि क मिन अज़ाबि जहन्नम व अम्बूजुबि क मिन अज़ाबिल क़ब्रि व अम्बूजुबि क मिन फ़ित्नतिल मसीहिदज्जालि व

अम्बूजुबि क मिन फ़ित्नतिल मस्य़ा वल ममाति० —तर्गीब

२. हजरत अनस रजि० फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अक्सर यह दुआ फरमाया करते थे—

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (بخاری)

रब्बना आतिना फ़िदुन्या ह स न तंव्व फ़िल आखिरति ह स न तंव्व किना अज़ाबन्नारि० —बुखारी

३. हजरत रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी 'मुस्लिम' रजियल्लाहु तआला अन्हु को बतलाया था कि मरिव की नमाज से फ़ारिग होकर किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा—

اللَّهُمَّ أَجِرْنِي مِنَ النَّارِ अल्लाहुम्म अजिर्नी मिनन्नारि०

कहा करो। अगर इसको कह लोगे और अगर उसी रात में मर जाओगे तो दोजख से तुम्हारी खलासी कर दी जाएगी और जब सुबह को नमाज पढ़ चुको और उसको इसी तरह (सात मर्तबा किसी से बोलने से पहले) कह लोगे और उसी दिन मर जाओगे तो दोजख से तुम्हारी खलासी जरूर कर दी जाएगी। —अबूदाऊद शरीफ

४. रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है जो शहर तीन बार खुदा से जन्नत का सवाल करे तो जन्नत उसके लिए खुदा से दुआ करती है कि—

اللَّهُمَّ ادْخِلْهُ الْجَنَّةَ अल्लाहुम्मा अदखिलहुल जन्नत०

'ऐ अल्लाह ! इस को जन्नत में दाखिल कर दे।'

और जो आदमी तीन बार दोजख से पनाह चाहे तो दोजख उसके लिए खुदा से दुआ करता है कि—

اللَّهُمَّ اجْرِمْنِي مِنَ النَّارِ अल्लाहुम्म अजिर्हु मिनन्नारि०

'ऐ अल्लाह ! इसको दोजख से बचा।'

—तर्गीब

आखिरी बात

अब मैं इस रिसाले को खत्म करता हूँ। सबक लेने वाली आंख रखने वालों के लिए थोड़ा भी बहुत है और शाफिलों के लिए बड़े-बड़े दफ़्तर भी कुछ नहीं।

पढ़ने वालों से दख्वास्त है कि मुहताज व भिस्कीन के हक में दुआ फरमायें कि अल्लाह अपनी रहमत से दुनिया व आखिरत के तमाम अज़ाबों

और तक्लीफों से बचाये रखें और जन्नतुल फ़िदो' स नसीब फ़रमायें।
मेरे वालिद मोहतरम सूफ़ी मुहम्मद सिद्दीक साहब जी द मज्दुम
को भी दुआ-ए-खैर से याद फ़रमायें, जिनकी कोशिश से मैं कुरआन
करीम की मौके की आयतें जमा करने और नबी सल्ल० की हदीसों को
चुनने के लायक हुआ।

جزاه الله عني خيرا في هذه الدار وفي تلك
الدار واحشرنى واياهم مع المتقين الابرار- أمين
وأخردعوننا ان الحمد لله رب العالمين والصلوة
والسلام على خير خلقه سيدنا محمد الشفيع لامت يوم
الدين وعلى آله وصحبه هداة الدين المستين ۞

जजाहुल्लाहु अन्नी जजाअ खैरिन फ़ी हाज़िहिद्दारि व फ़ी तिल्कद्
दारि व ह्शुनी व इय्याहु मअन्न मुत्तकीनल अन्नारि० आमीन
व आखिरुद्अ वाना अनिल हुम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन
वस्सलामु वस्सलामु अला खल्किहि सय्यदिना मुहम्मदि-निश्शफ़िअिल
उम्मति यौमद्दीनि व अला आलिही व सत्विही हुदातद्दीनिल मतीन०

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَارْجِعُوا إِلَيْهِ
عَنْ وَلَدٍ وَلَا مُوَلُّوهُ هُوَ جَابِرٌ عَنْ الْإِلَهِ شَيْئًا

या ऐ युहन्नासुत्तकू रब्बकुम वरूशौ यौमल्ला यज्जी वालिदुन
अन्व ल दिही व ला मौलूदुन हु व जाज़िन अन्वालिदिही शैआ०

मरने के बाद क्या होगा? (३)

मैदाने हशर

कुरआन व हदीस की रोशनी में क़ियामत के
तफ़सीली हालात, हशर व नशर, हिसाब व
किताब की तफ़सील के बयान की गयी
कैफ़ियत

लेखक: मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही
बुलन्द शहरी

अनुवादक :

कौसर यज़दानी नदवी एम. ए.

प्रकाशक:

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उदें मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन : 23242427, (मोबाईल) 9312172536 (घर) 25702399

विषय-सूची

कहाँ?

१. क्रियामत किन लोगों पर कायम होगी ?
२. क्रियामत की तारीख की खबर नहीं दी गयी
३. क्रियायत अचानक आ जाएगी
४. सूर और सूर का फूँक जाना
५. कायनात का बिखर जाना
६. पहाड़ों का हल
७. आसमान व जमीन
८. चांद, सूरज, सितारे
९. इंसानों का कब्रों से निकलना
१०. कब्रों से नंगे और बे-खत्ता के निकलेंगे
११. मैदाने हृदय में जमा होने के लिए चलना
१२. काफिर गूँगे बहरे अंधे उठेंगे
१३. काफिरों की आंखें नीली होंगी
१४. दुनिया में कितने दिन रहे ?
१५. क्रियामत के दिन की परेशानी और हैरानी
१६. चेहरों पर खुशी और उदासी
१७. महशर में पसीने की मुसीबत
१८. हृदय के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें
१९. भिखारियों की हालत
२०. बीबी के साथ ना-इन्साफ़ी करने वाला
२१. जो कुरआन शरीफ़ भूल गया हो
२२. जकात न देने वाला
२३. क्रियामत के दिन सबसे ज्यादा भूखे
२४. दुनिया में दोबारा आने की दख्वास्त
२५. लीडरों की बेजारी
२६. हृदय के मैदान में प्यारे नबी सल्ल० के बुलन्द मर्तबे का जुहर
२७. उम्मत मुहम्मदिया की पहचान
२८. हीजे कौसर
२९. हजरत मुहम्मद सल्ल० के हीजे की खूबियाँ
३०. सबसे पहले हीजे पर पहुँचने वाले
३१. हीजे कौसर से हटाये जाने वाले

क्या?

- ११६
- ११८
- ११९
- १२०
- १२३
- १२३
- १२४
- १२४
- १२६
- १३१
- १३१
- १३२
- १३३
- १३४
- १३४
- १३७
- १३६
- १४१
- १४२
- १४२
- १४२
- १४४
- १४७
- १४४
- १४७
- १४८
- १४८
- १४९
- १५०
- १५२
- १५२
- १५२
- १५४
- १५७
- १५८
- १६२
- १६३
- १६४
- १६४
- १६६

कहाँ?

३२. अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जाएंगे
३३. नेमतों का हाल
३४. फ़रिश्तों से खिताब
३५. फ़रिश्तों का जवाब
३६. मुशिरकों का इकार
३७. जिन की पूजा करते थे, वे भी इंकारी होंगे
३८. हिसाब-किताब, क्रिसास, मौज़ान
३९. नमाज का हिसाब और नफ़लों का फ़ायदा
४०. बे-हिसाब जन्नत में जाने वाले
४१. सख्त हिसाब
४२. मोमिन पर अल्लाह का खास करम
४३. किसी पर जुल्म न होगा
४४. बन्दों के हक़
४५. क्रियामत के दिन सबसे बड़ा शरीब
४६. जानवरों के फ़सले
४७. मालिकों और गुलामों का इसाफ़
४८. ज़िन्नो से खिताब
४९. जुर्म न मानने पर गवाहियाँ
५०. जमीन की गवाही
५१. आमालनामे
५२. आमालनामों की तक्सीम
५३. आमालनामों के मिलने पर
५४. अमल का वज़न
५५. एक बन्दे के अमल का वज़न
५६. सबसे ज्यादा वज़नी अमल
५७. काफ़िरों की नेकियाँ बे-वज़न होंगी
५८. अल्लाह की रहमत से बल्झे जाएंगे
५९. हर एक शर्मिन्दा होगा
६०. शफ़ाअत
६१. तंबीह
६२. मोमिनो की शफ़ाअत
६३. मुजाहिद की शफ़ाअत
६४. ना-बालिग़ बच्चों की शफ़ाअत

क्या?

- १६८
- १७०
- १७५
- १७६
- १८०
- १८०
- १८२
- १८४
- १८५
- १८६
- १८७
- १८८
- १८९
- १९०
- १९१
- १९३
- १९५
- १९७
- १९८
- १९८
- २००
- २०१
- २०३
- २०५
- २०६
- २०७
- २१०
- २११
- २१२
- २१६
- २१६
- २१७
- २१८

क्या ?

६५. कुरआन के हाफिज़ की शफ़ाअत
६६. रोज़ा और कुरआन की शफ़ाअत
६७. तजल्ली-ए-साक़, पुल सिरात, तक्सीम नूर
६८. नूर की तक्सीम
६९. साक़ की तजल्ली
७०. प्यारे नदी जन्नत खुलवाएंगे
७१. जन्नत व दोज़ख में गिरोह-गिरोह जाएंगे
७२. दोज़खियों की आपस में एक दूसरे पर लानत
७३. दोज़खियों की अनोखी हैरत
७४. अपने मानने वालों के सामने शैतान की सफ़ाई
७५. मालदार जन्नत में जाने से अटके रहेंगे
७६. दोज़ख में अक्सर औरतें और मालदार जाएंगे
७७. दोज़ख और जन्नत दिखायी जाएगी
७८. दोज़ख में जाने वालों का अन्दाज़ा
७९. क्रियामत के दिन की लम्बाई
८०. आराफ़ वाले

कहां ?

- २१९
- २२०
- २२०
- २२१
- २२४
- २३०
- २३०
- २३२
- २३३
- २३३
- २३५
- २३६
- २३८
- २३९
- २४०
- २४२

मैदाने हशर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِهِ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ

अल्लहुमु लिल्लाहि रद्दिल आलमीन वस्सलामु वस्सलामु अला
रसूलिही सय्यदिना मुहम्मदिब्ब आलिही व अस्हाबिही अजमईन०
अम्मा वअदु—

इस दुनिया में जो भी आया. हर एक ने इसको छोड़ कर
दूसरी दुनिया का रास्ता लिया यानी अपनी उम्र के सांस पूरी करके मौत
की कठिन घाटी को तै करके बर्जख में पहुँचा। बर्जख में अज़ाब और
तक्लीफें भी हैं और आराम व राहत भी है। अपने-अपने आमाल के
एतबार से बर्जख में अलग-अलग हालात से गुज़रना पड़ता है। दुनिया से
जो आता है, बर्जख में जगह पाता है, शरज यह कि हर आने वाला जाएगा
और—

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा।

जिस तरह इन्सानों और जिनों की उम्रें मुकर्रर हैं, उसी तरह इस
दुनिया की उम्र भी मुकर्रर है। जब इस दुनिया की उम्र पूरी होगी,
अचानक उसके मजमूए को मौत आ जाएगी, एक-एक आदमी के चले जाने
को मौत और पूरी दुनिया के खत्म हो जाने को क्रियामत कहते हैं।
मौत और ज़िदगी की हिक्मत वयान फ़रमाते हुए अल्लाह जल्ल शानुह
ने इशदि फ़रमाया है।

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ وَيَسْكُتُ أَتَيْكُمْ أَحْسَنَ عَمَلًا

अल्लजी ख ल क़ल मौ त बल हया त लियब्लु व कुम अय्युकुम
अह्सनु अ म ला०

जिसने पैदा किया मौत को और ज़िदगी को, ताकि तुमको जांचा

जाए कि तुममें कौन अच्छे काम करता है।

यानी मौत व जिंदगी का यह सिलसिला इस लिए है कि अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल की जांच करे कि कौन बुरे काम करता है और कौन अच्छे काम करता है और—अच्छे से अच्छा काम करने वाला कौन है ? पहली जिंदगी में अमल का मौका देकर और काम करने का तरीका बता कर इंसान को इम्तिहान में डाला, फिर दूसरी जिंदगी रखी गयी, जिसका एलान पैगम्बरों की जुवानी साफ कर दिया गया कि ऐ इंसानो ! तुमको मरना है और मरने के बाद जी उठना है और जी उठ कर पेश करने वाले व मालिक के हुजूर में जवाब देही करना है। सूरः मूमिनून में इंसान की पैदाइश के हालात बयान करने के बाद इशार्द फरमाया—

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ

सुम्ह इन्नकुम व अद जालि क ल मय्यितू न मुम्ह इन्नकुम योमल क्रियामति तुवअसून०

‘फिर तुम इसके बाद मरोगे, फिर तुम क्रियामत के दिन खड़े किये जाओगे।’

यानी यह जिंदगी, जिंदगी नहीं है और जीती-जागती मूरत और हंस्ती-बोलती तस्वीर, देखती-सुनती जान जो तुम को दी गयी है, हमेशा न रहेगी, मौत की घाटी से गुजर कर एक और जिंदगी पाओगे और अपनी उस प्यारी जान को लेकर अल्लाह के हुजूर में पेश होकर ‘वुफ़ियत कुल्लु नापिसम मा अमिलत’ का मंजर देखोगे।

आमाल का बदला मिलना जरूरी है, इस पर तमाम अक्ल वाले एक राय हैं, ‘जैसी करनी वैसी भरनी’ मशहूर मसल है जो आम व खाम हरेक की जुवान पर है। दुनिया में जो काम इंसान करते हैं, उनके फ़सले क्रियामत के दिन होंगे। कुरआन मजीद में क्रियामत के दिन को ‘योमुद्दीन’ (बदले का दिन) और ‘मौमुल फ़स्लि’ (फ़सले का दिन) और ‘योमुल हिसाबि’ (हिसाब का दिन) फ़रमाया गया है। उस दिन रिश्तेदार काम न आयेंगे, ताक़त न चलेगी, बेकसी और बेबसी की दुनिया होगी, आमाल पेश होंगे। हर भलाई-बुराई सामने आयेगी। सूरः जिल्जाल में फ़रमाया—

يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لَّيُّوْاْغِبَا لَهُمْ مِّنْ يَّعْنُنْ مَّشَقَّانَ

ذَرَّةٌ خَيْرًا يَّوْمَئِذٍ وَكُنْ يَّعْنُنْ مَّشَقَّانَ ذَرَّةٌ شَرًّا يَّوْمَئِذٍ

यो मइजियस्दुल्नासु अश्तातल्लि युरी अश्र मा ल हुम फमय्य-अमल मिसकाल जर्रति न खौरय्यर हू व मय्यअमल मिसकाल जर्रति

अंश् ययरहू०

‘उम दिन अलग-अलग जमाअतों में हो जाएंगे ताकि आमाल को देख लें सो जिसने जर्ग बराबर नेकी की, वह उसे देख लेगा और जिसने जर्ग बराबर बुराई की वह उसे देख लेगा।’

अपने आप अकेले हाजिरी होगी और पहले के और आखिर के लोगों में से कोई भी छिप कर कहीं न जा सकेगा। अल्लाह का इशार्द है—

لَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ وَاعْدَ هُمْ عَذَابًا لَّكُلِّهُمْ أَتِيْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا (سورة الاحقاف)

ल क द अहसा हुम व अद हुम अद व कुल्लुहुम आतीहि योमल क्रियामति फ़र्दा०

—सूरः मय्यम

‘उसके पास उनकी गिनती है और गिन रखी है उनकी गिनती, और क्रियामत के दिन इनमें से हर एक उसके सामने तंहा आयेगा।’

इंसानों ने जो काम दुनिया में किये थे, उनका अक्सर हिस्सा दुनिया में ही भूल गये थे, फिर आखिरत में तो क्या याद रखेंगे, लेकिन अल्लाह तआला उनके तमाम आमाल से इत्तिला फ़रमायेंगे। सूरः मुजादला में फ़रमाया—

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا يَّتَبَيَّنُ عَنْهُمْ بِمَا عَمِلُوا اِخْتَصًا

اللَّهُ وَرَسُولُهُ

यो म यब् अमु हुमु ल्लाहु जमीअन फ़ गुनबिउ हुम बिमा अमिलू अहसा हु ल्लाहु व नसूहु०

जिस दिन अल्लाह तआला इन सब को दोबारा जिंदा करेगा तो फिर उनका सब किया हुआ उनको जता देगा, अल्लाह ने वह महफूज कर रखा है और वे भूल गये।’

रहा यह सवाल कि नेकियों और बुराइयों का बदला क्रियामत के दिन पर उधार क्यों रखा है, मरते के साथ ही क़ब्र में क्यों फ़सला नहीं हो जाता तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला हिक्मत वाला और जानने वाला है। उनकी हिक्मत चाहती है कि फ़सलों और बदलों के लिए क्रियामत के दिन का इंतज़ार किया जाए। अल्लाह जल्ल शानुह के इल्म में तो (खुदा ही बेहतर जाने) कितनी मस्लहतें और हिक्मतें होंगी, सरसरी नज़र में जो (मस्लहत) हमारी समझ में आती है, वह यह है कि इस दुनिया में इन्सान का ताल्लुक इन्सान से भी है और इसके अलावा दूसरी मस्लूक से भी है और इंसान को अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म दिया गया है कि सारी मस्लूक से अच्छा बर्ताव रखे

और अच्छा व्यवहार करे, किसी पर जानी या माली जुल्म न करे, मखनूक के मखनूक पर जो हक है, खुले तौर पर पाक शरीरत ने उनसे आगाह (सूचित) फरमा दिया है, फिर यह कि इंसान के जिम्मे न सिर्फ मखनूक के हक हैं, बल्कि अल्लाह तआला के हक भी हैं, उनकी तपसील भी पाक शरीरत में मौजूद है, उसके साथ दूसरी बात यह भी जेहन में रख लीजिए कि नेक अमल और बुरे अमल दोनों की दो क्रिस्में हैं, एक वे अमल कि जो अमल करते ही खत्म हो जाते हैं और उन को कर लेने के बाद इंसान अजाब या सवाब का हकदार हो जाता है। दूसरे वह अमल कि जो वजूद में आते ही खत्म नहीं होते, बल्कि उनका असर बराबर जारी रहता है और उस अमल की वजह से उस अमल का करने वाला बराबर ज्यादा से ज्यादा सवाब या अजाब का हकदार होता चला जाता है, जैसे किसी शख्स ने लिख कर या बोल कर तल्लीग (प्रचार) की और उसके असर से दुनिया में नेकियां जारी हैं या किसी ने कुब्रां खुदवा दिया है या सराय बनवा दी है या और कोई ऐसा काम कर दिया है, जिसका नफ़ा और असर बराबर जारी है, तो बहरहाल उसका सवाब भी चालू है, वह मर भी जाएगा, तब भी उसका सवाब चालू रहेगा। इसके खिलाफ अगर किसी ने कोई गुनाह का काम चालू किया या किसी को गुनाह का रास्ता बता दिया या कोई ऐसी किताब लिख दी जो इंसानों को गुनाहों पर उभारती रहती है या और कोई ऐसा काम कर दिया जिसकी वजह से गुनाह बराबर जारी हैं तो बहरहाल उसके आमांल नामे में गुनाह बढ़ते रहेंगे और ज्यादा से ज्यादा अजाब का हकदार होता रहेगा इससे यह भी साफ हो गया कि जिस तरह दुनिया में इंसान के आमांल का खाता बराबर लिखा जाता रहता है, इसी तरह मरने के बाद भी उसके आमांल में (अच्छे हों या बुरे) बढ़ती होती रहती है।

कहने का मतलब यह है कि—

जब कि क़न्न (यानी बर्जख की दुनिया) भी अमल का घर है और आखिरत में जिन आमांल की वजह से अजाब या सवाब मिलता है, वह अब भी उसके आमांल नामे में जारी हैं (चाहे उसने किये हों या वह उन के करने की वजह बन गया हो) कैसे दे दिया जाए और आखिरी फ़ैसला किस तरह हो ? फिर चूंकि बंदे के हक़ों के फ़ैसले भी होना जरूरी हैं, इसलिए भी क्रियामत के दिन पर फ़ैसला रखा गया, क्योंकि बर्जख की दुनिया में तमाम हक़दार मौजूद न होंगे, हर आदमी की मौत का वक़्त

अलग-अलग है, बर्जख की दुनिया में यह आज पहुंचा है और जिसने उस पर जुल्म किया था वह दस वर्ष बाद वहां पहुंचेगा और जिन लोगों पर उसने जुल्म किया है, वह बीस वर्ष बाद दुनिया से रुस्त होकर बर्जख में जगह पाएंगे। इंसान का तक्राज़ा है कि मुर्दे और मुद्आ अर्बह दोनों मौजूद हों, तब फ़ैसला किया जाए, ताकि गायबाना फ़ैसला करने पर मुर्दे यह एतराज़ न कर सके कि मेरा हक़ कम दिलाया गया और मुद्आ अर्बह यों न कह सके कि मेरे खिलाफ़ डिब्री देना उस वक़्त सही होता जब कि मुर्दे मौजूद होता, बया मुम्किन न था कि मुर्दे माफ़ कर देता।

इसलिए—

क्रियामत व मखलहत का तक्राज़ा यह हुआ कि एक ऐसी तारीख़ फ़ैसलो और बदलो के लिए मुक़र्रर कर दी जाए, जिसमें सब हाज़िर हों और जिस में हर क्रिस्म के आमांल (चाहे खुद किए हों या वास्ते के साथ बंदे के आमांलनामे में लिखे गये हों) ख़त्म हो चुके हों, ताकि सबके सामने फ़ैसला हो और पूरे आमांल का पूरा बदला दिया जाए। इसी तारीख़ को क्रियामत का दिन कहते हैं। क्रियामत के दिन यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी और हर क्रिस्म के अमल और अमल के सिलसिले ख़त्म हो जाएंगे और तमाम अगले व छिछले लोग ज़िदा करके हाज़िर किये जाएंगे और उस दिन फ़ैसले होंगे और बदले मिलेंगे।

बाक़ी रहा यह सवाल कि इस दुनिया में क्यों फ़ैसले नहीं होते और बदले क्यों नहीं मिलते, तो इसका जवाब यह है कि एक तो यह दुनिया अमल की जगह है, इसमें इम्तिहान के लिए आते हैं, अमल की जगह अमल का बदला मिलने लगे तो ग़ैब पर ईमान न रहे और इम्तिहान का मक़सद बेकार हो जाए, फिर यह कि अमल बराबर जारी हैं, नेकियों से बहुत से गुनाह (छोटे) माफ़ होते रहते हैं और तीबा करने का भी मौक़ा है, इस लिए यह मुनासिब और सही है कि इस ज़िदगी के बाद दूसरी ज़िदगी में फ़ैसले हों और बदले दिए जाएं। क्रियामत का दिन जब ख़त्म होगा और सबके फ़ैसले हो जाएंगे तो हर एक अपने-अपने अंजाम के मुताबिक़ दोज़ख़ या जन्नत में पहुंचेगा, वे गुनाहगार मोमिन जो बुरे आमांल की वजह से दोज़ख़ में जाएंगे, बाद में जब अल्लाह जल्ल शानुह की मंशा होगी, दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे, लेकिन जन्नत से निकाल कर किसी को किसी दूसरी जगह न भेजा जाएगा। क्रियामत के फ़ैसले के बाद जन्नत का फ़ैसला हो जाना ही सच्ची कामियाबी है। कुरआन शरीफ़ में है—

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ الْجُؤَرَ كَمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَمَنْ
 نُخْرِجُ عَنِ النَّارِ دَاخِلَ الْجَنَّةِ فَقَدْ نَارُ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعٌ
 الْعُرُورُ (آل عمران)

कुल्लु नफिसन जाइकतुल मौति व इन्मा तुवफफां न उजूर कुम
 यौमल क्रियामति फ मन जुहिज ह अनिन्नारि व उदखिलल जन्न त फ क द
 फा ज व मल हयातुदुन्या इल्ला मताउल गुरुरि० —आले इआन

‘हर जान मौत को चखने वाली है और तुमको पूरे बदले क्रियामत
 के दिन दिए जाएंगे। पस जो शख्स दोजख से बचा लिया गया और जन्नत
 में दाखिल कर दिया गया, सो वह पूरा कामियाब हुआ और दुनिया की
 जिदगी धोखे की पूंजी के सिवा कुछ भी नहीं है।’

इंसान के आमाल का बदला जो दोजख या जन्नत की शकल में
 मिलेगा और उसके आमाल के फसले जो क्रियामत के दिन होंगे, उनके
 हालात और तपसीलात कुरआन व हदीस में खूब खोल कर बयान किये
 गये हैं। मुसलमानों के अलावा दूसरी कौमों में भी मरने के बाद अमल का
 बदला मिलने के बारे में कुछ बातें मिलती हैं, लेकिन इनकी कोई सही
 बुनियाद नहीं, जिसकी वजह यह है कि उन बातों को उन्होंने अपनी
 अटकल से तज्वीज कर लिए हैं जो अल्लाह तआला के रसूलों (सल्लल्लाहु
 अलैहिम व सल्लम) की तालीमात और उनके बताये अक़ीदों के खिलाफ
 हैं। जैसे, कुछ कौमों में आवागमन का अक़ीदा चला आ रहा है, जिसे
 उन लोगों ने अपनी तरफ से तज्वीज किया है। उन लोगों का ख्याल है
 कि मरने के बाद इंसान की रूह दूसरे इन्सान या जानवर की योनि में
 जगह पाकर नया जन्म ले लेती है और हमेशा यही होता रहता है। इस
 अक़ीदे की वजह यह नहीं है कि खुदा के पैग़म्बरों की बतायी हुई बात को
 मान कर ऐसा कर रहे हैं, बल्कि इस अक़ीदे के गढ़ने की वजह यह है कि
 इन लोगों को दुनिया में इन्सानों के अलग-अलग मर्तबे और दर्जे इस तरह
 नज़र आये कि कोई हाकिम है, कोई महकूम (जिस पर हुकूमत को जाए)
 कोई अमीर है, कोई गरीब, कोई खादिम है, कोई मखदूम (जिसकी खिदमत
 की जाए) और इसी तरह के अनगिनत फ़र्क है। इस अलगाव की वजह
 क्या है? इसका फलसफ़ा (दर्शन) उन लोगों की समझ में न आया।
 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत की तरफ रुजू
 करते तो इस अलगाव की बहुत सी वजहें मालूम हो जातीं। खुद
 समझना चाहा, इस लिए समझ न सके। मजबूर होकर यह तज्वीज किया

कि पिछले जन्म में जो कर्म किये थे, यह अच्छा या बुरा हाल उसी का
 नतीजा है। इन नादानों का यह अक़ीदा जो उनका खुद गढ़ा हुआ है,
 बहुत से पहलुओं से ग़लत है, अगर शौर किया जाए तो सरसरी नज़र में
 एक बड़ा सवाल और एतराज इस अक़ीदे के मान लेने के साथ ही मामूली
 समझ वाले इंसान की अक़ल में यह आता है कि अमल का बदला (अज़ाब
 की हैसियत में) सच में, वही बदला समझा जा सकता है, जिसके बारे में
 बदला मिलने वाले को उसका इल्म और यक़ीन हो कि मुझे यह आराम
 या तकलीफ़ फ़लां अमल की वजह से मिल रही है, अगर आराम पाने वाले
 या सज़ा भुगतने वाले को इसका इल्म न हो कि यह आराम या तकलीफ़
 फ़लां अमल की वजह से है तो उसको बदला कहने का कोई मतलब न
 हुआ। दुनिया में जो लोग मौजूद हैं, जबकि उनको यह मालूम नहीं कि
 यह आराम या तकलीफ़ फ़लां जगह के लिए फ़लां अमल की वजह से
 है तो दुनिया के आराम व राहत या तकलीफ़ व मुसीबत को किसी पिछले
 जन्म का नतीजा किस तरह माना जाए? सज़ा भुगतने वाले को जब ही
 शर्म और पछतावा होगा जबकि उसे यह खबर हो कि यह फ़लां अमल की
 सज़ा है, काश वह अमल में न करता।

बहरहाल हक़ वही है जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु
 अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और बताया, उन्होंने जो कुछ फ़रमाया,
 सही फ़रमाया, जो बताया, अल्लाह की तरफ़ से फ़रमाया, गुमान और
 अटकल को उन्होंने किसी मतलब का न समझा।

अब मैं कुरआन हकीम और नबी सल्ल० के इशारात की रोशनी
 में क्रियामत के हालात तपसील से लिखता हूँ, ये हालात हक़ हैं, इनको
 सच्चा जानो और अपनी आक़वत (अंजाम) की फ़िक्र करो।

क्रियामत का आना ज़रूरी है, कोई माने या माने, वायदा सच्चा
 है जो होकर रहेगा। जिस वक़्त कुरआन करीम नाज़िल होता था उस
 वक़्त भी क्रियामत के इकारी थे और आज भी इस साबित सच्चाई के
 इकार करने वाले मौजूद हैं। वही नाज़िल होते वक़्त जो लोगों को इस बारे
 में शक व शुब्हे थे, बहुत से मौकों पर कुरआन शरीफ़ में उनके जवाब दिए
 गये हैं। नीचे कुछ आयतें इसी से मुताल्लिक लिखी जाती हैं। सूर: यासीन
 में फ़रमाया—

وَصَرَبْنَا مَثَلًا وَنَبِيٍّ خُلِفَتُهُ قَالَ مَنْ يَتَّبِعِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ

व ज र ब लना म स लं व नसि य खल्कहू का ल मंयुहिय ल

अज्ञा म व हि य रमीम०

‘और वयान की (इंसान ने) हमारे लिए मिसाल और भूल गया अपनी पैदाइश को, कहने लगा कौन हड्डियों को जिंदा करेगा, जबकि वह खोकर हो गयी होगी।’

इस आयत में इंसान की ना-मुनासिब बात की शिकायत की गयी है कि देखो वह खुदा पर भी जुम्ले चरपा करता है और कहता है कि मियां, गली-सड़ी हड्डियों को कौन जिंदा करेगा? वस ये सब कहने की बातें हैं। ऐसा सवाल करते वक्त इंसान अपनी पैदाइश को भूल जाता है, अगर उसे अपनी पैदाइश का खयाल होता और इस बात को भूल न जाता कि उसकी पैदाइश एक जलील कतरे (बूंद) से है तो अल्लाह जल्ल शानुह के बारे में ऐसे लपज कहने में कुछ तो शर्म खाता और अक्ल से काम लेता तो इस सवाल का जवाब भी अपनी पैदाइश में गौर करने से पा लेता। आगे इस सवाल का तपसीली जवाब देते हुए फरमाया—

كُلُّ يَوْمٍهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَكُونُ لَهُ وَهُوَ يَكُنْ خَلْقٌ عَلَيْهِ

कुल युह्यीहल्लजी अन्श अ हा अक्व ल मरंतिन वहु व विकुलि खलिक्न अलीम०

‘आप फरमा दीजिए कि इन हड्डियों को वही जिंदा करेगा जिसने इनको पहली बार पैदा फरमाया था और वह सब बनाना जानता है।’

यानी जिसने पहली बार हड्डियों को वजूद बरूश और उनमें जान डाली, वही दोबारा उनको जिंदगी बरूशेगा, वह पूरी कुदरत रखता है, उरुके लिए सब कुछ आसान है, बदन के अंश और हड्डियों के कण जहां कहीं भी बिखरे हों उनका एक-एक कण उसके इल्म में है, वह हर तरह बनाने पर कुदरत रखता है। सोचना चाहिए कि जिसने नुफ़े (वीर्य) को बहुत-से हालात से गुज़ार कर जीती-जागती तस्वीर देकर रूह डाल दी, भला उसके लिए यह कैसे मुम्किन है कि वह मुर्दों को जिंदा न कर सके।

الَّذِينَ ذَلِكْ يَقْدِرُ عَلَى أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَى

अ लै स जालिक बिकादिरिन अला अय्युहियल मौता०

इंसानी समझ का तकाज़ा तो यह है कि पहली बार अदम (न होना) से वजूद बरूशने के बाद दोबारा जिंदगी देना आसान है। सूरुम में फरमाया—

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ

व हुवल्लजी यब्द उलखलक मुम्म युअ्रीदुह वहु व अह्वन अलैहि०

‘और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उसको दोबारा पैदा कर देगा और यह (दोहराना) इसके लिए (पहली बार पैदा करने से) ज्यादा आसान है।’

यानी तुम खुद ही समझ लो कि जिसने पहली बार बिना मिसाल, नक्शे और खाके के वजूद बरूश दिया, वह दोबारा पैदा करने पर क्योंकर कुदरत न रखेगा, गो इसके लिए पहली पैदाइश और दूसरी पैदाइश सब बराबर है। लेकिन तुम्हारी समझ के एतबार से पहली बार पैदा करने से दूसरी बार दोहरा देना आसान होना चाहिए। यह अजीब बात है कि जिसने पहली बार वजूद बरूश वह मौत देकर दोबारा जिंदा न कर सके, कुछ तो समझो। सूरः अह्काफ में फरमाया—

أَوَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَكُنْ لِيَوْمٍ عَلَيْهِ يَغْتَابُ يَغْتَابُ عَلَى أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَى بَلَى إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

अ व लम यरी अन्नल्ला हल्लजी ख ल कस्स मावाति वल् अर्ज व लम यय विल्लिकहिन्न बिकादिरिन अला अय्युहियल मौता बला-इन्नहू अला कुलि शैइन कदीर०

‘क्या नहीं देखते कि वह अल्लाह जिसने बनाये आसमान व जमीन और उनके बनाने से वह थका नहीं, वह कुदरत रखता है कि मुर्दों को जिंदा कर दे जरूर! वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।’

यानी जिसने आसमानों और जमीन जैसी बड़ी-बड़ी चीज़ें सिर्फ अपनी कुदरत से फरमा दीं, क्या इस पर कुदरत नहीं रखता कि मुर्दों को जिंदा करे। बिला शुबहा इस पर वह जरूर क़ादिर (कुदरत रखने वाला) है। सूरः हाम-मीम सज़्दा में फरमाया—

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَأْتِي السَّمَاءُ دُخَانًا فَذَا الشُّرُكُ عَلَيْهِمُ الْمَاءُ

أَمْ تَرَى أَنَّ الَّذِينَ لَا يُحْيِي الْمَوْتَى إِنَّهُمْ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

कदीर०

व मिन आयाति ही इन्न क तरल अर्ज खाशिशतन फ इज़ा मा अन्नल्ला अलैहल मा अह तबजत प रबत इन्नल्लजी अह्याहा ल मुहियल

मोता व हव अला कुल्लि शैइन कदीर०

'और बहुत सी इसकी निशानियों में से एक यह है कि तू जमीन को देखता है, दबी पड़ती है, फिर जब हम इस पर पानी बरसाते हैं वह उभरती है। बेशक जिसने इस जमीन को जिंदा कर दिया है, वही मुर्दों को जिंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज पर कादिर है।'

यानी जिस खुदावन्द करीम ने इस जमीन को जिंदा कर दिया वही मुर्दों के जिस्मों में दोबारा जान डाल देगा।

एक बार एक सहाबी रजि० ने हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि या रसूलल्लाह ! अल्लाह तआला मल्लूक को कैसे दोबारा जिंदा फरमायेगा और (मौजूदा) मल्लूक में इसकी क्या नज़ीर (मिसाल) है ? इस पर आहज़रत संयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क्या ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपनी कौम के जंगल पर उस वक़्त नहीं गुज़रे जबकि जमीन सूखी हुई थी, फिर दोबारा उस वक़्त गुज़रे जबकि वह हरी-भरी होकर लहलहाती हुई थी ? उन्होंने अर्ज किया कि जी हां, ऐसा तो हुआ है। प्यारे नबी सल्ल० ने फरमाया कि यही अल्लाह की निशानी है उसकी मल्लूक में, (यानी मोत के बाद जिन्दा करने की एक नज़ीर है) इसी तरह अल्लाह मुर्दों को जिंदा फरमाएगा।

कुछ जगहों का कुरआन मजीद में क्रियामत के इंकारियों का सवाल नक़ल फरमाकर उनका जवाब दलील से नहीं दिया, बल्कि क्रियामत कायम होने का यक़ीन दिलाने के लिए क्रियामत होने के दावे को दोहरा दिया है। चुनांचे सूरः साफ़फ़ात में पहले इंकार करने वालों की वान नक़ल फरमायी, फिर जवाब में दावे को दोहरा दिया। चुनांचे इशार्द है-

إِذَا مَنَّكَ وَكَتَبْنَا رَبَّاءَ عِظَامًا وَإِنَّا لَنَبْعَثُونَ آبَاءَهُمْ وَإِخوانَهُمْ
ثُمَّ نَعْمَدُ وَأَنبَعِدُ وَأَخْرُونَ ۚ فَإِنَّا لَنَسْأَلُهُمْ وَأَجِدُ ۚ كَذَابَهُمْ
يُظْهِرُونَ وَقَالُوا أَيَوْتِكُمْ هَٰذَا إِذْ نَمُوتُ ۚ إِنَّكُمْ لَنَقُصِلُ ٱلَّذِينَ
كُنتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ۝

अ इज्जा मिला व कुत्रा नुरावव्व इज्जामन अ इज्जा लमब अमू न
अ व आवाउनल अब्वनू न कुल न अम व अन्तुम दाखिरून फ इज्जमा हिय
जजरतुव्वाहिदतुन फ इज्जा हुम यन्जुरून व कालू या वलना हाज्जा योमुहीनि

हाज्जा योमुल फ़स्लिल्लजी कुन्तुम बिही तुकज़िज़ू न०

'क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां ही हड्डियां हो गये तो क्या हम उठाये जाएंगे ? क्या हमारे अगले बाप-दादे भी उठाये जाएंगे ? आप फ़रमा दीजिए कि हां, (तुम उठाये जाओगे) और ज़िल्लत की हालत में होंगे और कहेंगे कि हाय ! हमारी ख़राबी !! यह आ गया बदले का दिन ! (जवाब मिलेगा कि) यह है दिन फ़सले का जिसको तुम झुल्लाते थे।'

सूरः सबा में इशार्द फरमाया—

وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ مِن نَّادٍ كُفُّواْ عَن رَّجُلَيْهِ يَكْفُرُ إِذَا قَامَ فَتَكُنْ كُنْ
مُؤْمِرٍ ۖ إِنَّكُمْ لَنفَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ أَفَتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَيْدًا مَّأْمُومٍ
جَنَّةً ۖ بَلْ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْآخِرَةِ فِي ٱلْعَذَابِ ۖ وَٱلضَّلٰلِ
ٱلْبَعِيدِ ۝

व क़ालल्लजी न क फ़रू हल नदुल्लुकुम अला रज़ुलिन युनब्बि-
उकुम इज्जा मुज़िज़तुम कुल्ल मुमशज़किन इन्नकुम लफ़ी ख़ल्किन जदीद०
अफ़तरा अलल्लाहि कज़िबन अम बिही जिन्नतुन बलिल्लजी न ला युअ्मिनु
न बिल आखिरति फ़िल अज़ाबि वज़ज़लालिल बईद०

'और कहने लगे काफ़िर क्या हम बतलाएं तुम को एक मर्द जो तुम्हें खबर देता है कि जब तुम फट कर ज़रा-ज़रा से रेज़े (कण) हो जाओगे, तुमको फिर नये सिरे से बनना है, क्या बना लाया है अल्लाह पर झूठ, या उसको जुनून है ? कुछ भी नहीं, लेकिन जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, आफ़त में हैं और गुमराही में दूर जा पड़ हैं।

हासिल यह है कि क्रियामत हक़ है। अल्लाह तआला की जब मंशा होगी, सूर फूंक दिया जाएगा, क्रियामत आ मौजूद होगी, तो कोई भी उसका झुल्लाने वाला न होगा, उसके आने का वक़्त अल्लाह तआला के इल्म में मुक़र्रर है। लोगों के एतराज़ करने से अल्लाह तआला वक़्त से पहले जाहिर न फरमायेंगे। सूरः सबा में यह भी इशार्द है—

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۚ لَنُفِؤُنَّ عَنْهُ سَاعَةً ۖ وَنَاسْتَعِذُكَ ۝

व यकूलू न मता हाज़ल् वम्दु इन कुन्तुम सादिकीन कुल लकुम
मौआदु योमिल्ला तस्ताखिरून अन्हु साअतत्व ला तस्तविदमू न०
'और वे कहते हैं कि यह वायदा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे

हो। आप कह दीजिए कि तुम्हारे लिए वायदा है, एक दिन का, न एक घड़ी इससे लेट किये जाओगे और न पहले।'

क्रियामत की निशानियां इस ना-चीज ने एक किताब में जमा कर दी हैं जो 'रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीन गोइया' के नाम से छप चुकी हैं, इसलिए क्रियामत की निशानियों को उसी में पढ़ लें। अब उन लोगों का मुस्तसर हाल लिख कर जिन पर क्रियामत कायम होगी, क्रियामत के हालात लिखना शुरू करता हूं।

وَاللَّهُ وَرَبُّ الْمَوْتَى وَهُوَ خَيْرُ الْعَاوِلِينَ

वत्लाहु वलीयुतोफीकि व हु व खैर औनिन व खैर रफीकिन०

क्रियामत किन लोगों पर कायम होगी?

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसूद रजिअल्लाहु तआला अन्हु सेरिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया कि क्रियामत सबसे बुरी मल्लूक पर कायम होगी, यह भी इशदि फरमाया कि उस वक्त तक क्रियामत कायम न होगी जब तक जमीन में अल्लाह-अल्लाह किया जाता रहेगा, यह भी इशदि फरमाया कि क्रियामत किसी ऐसे शख्स पर कायम न होगी जो अल्लाह गल्लाह कहता होगा।'

एक लम्बी हदीस में है कि (चूंकि किसी मुसलमान की मौजूदगी में क्रियामत कायम न होगी, इसलिए दुनिया के इसी दिन व रात के होते हुए) अचानक अल्लाह तआला एक उम्दा हवा भेज देंगे जो मुसलमानों की बगलों में लगकर हर मोमिन और मुस्लिम की रूह कब्ज कर लेगी और सबसे बुरे लोग बाक्री रह जाएंगे जो (सबके सामने बे-हयाई से) गधों की तरह औरतों से जिना करेंगे।'

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि प्यारे नबी सल्ल० ने इशदि फरमाया कि दज्जाल को क़त्ल करने के बाद हजरत ईसा अलैहिस्सलाम सात वर्ष लोगों में रहेंगे, इस दौर में दो आदमियों के बीच जुरा दुश्मनी न होगी, फिर अल्लाह तआला मुल्क शाम की तरफ से एक ठंडी हवा भेज देंगे, जिसकी वजह से तमाम मोमिन ख़त्म हो जाएंगे (और) जमीन पर कोई भी ऐसा शख्स बाक्री न रहेगा, जिसके दिल में खैरका (या फरमाया ईमान का) कोई ज़र्आ होगा, यहां तककि अगर तुम

(मुसलमानों में से) कोई शख्स किसी पहाड़ के अन्दर (खोह में) दाखिल हो जाएगा, तो वह हवा वहां भी दाखिल होकर उसकी रूह कब्ज कर लेगी।

इसके बाद सबसे बुरे लोग रह जाएंगे (जो बुरे कर्तूतों और शरारत की तरफ बढ़ने में) हल्के परिदों की तरह (तेज़ी से उड़ने वाले) होंगे और (दूसरों का खून वहाने और जान लेने में) दरिदों जैसे अल्लाक वाले होंगे, न भलाई को पहचानते होंगे, न बुराई को बुराई समझते होंगे, उनका यह हाल देखकर इंसानी शक्लों में शैतान उनके पास आकर कहेगा कि (अफ़सोस ! तुम कैसे हो गये) तुम्हें शर्म नहीं आती (कि अपने बाप-दादों का दीन छोड़ बैठे)। वे उससे कहेंगे कि तू ही बता हम क्या करें ? इसलिए वे उनको बुत परस्ती की तालीम देगा (और वे बुत की पूजा करने लगे) वे इसी हाल में होंगे (यानी क़त्ल व खून, बिगाड़-फ़साद और बुत परस्ती में पड़े होंगे) और उनको खूब रोजी मिल रही होगी और अच्छी ज़िंदगी गुज़र रही होगी कि मूर फूक दिया जाएगा। मूर की आवाज़ सब ही सुनेंगे, जो-जो सुनता जाएगा (डर की वजह से, हैरान होकर) एक तरफ को गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ को उठा देगा।

फिर फरमाया कि सबसे पहले जो शख्स उसकी आवाज़ सुनेगा, वह होगा जो ऊंटों को पानी पिलाने का हौज लीप रहा होगा, यह शख्स मूर की आवाज़ सुनकर बेहोश हो जाएगा और फिर सब लोग बे-होश हो जाएंगे, फिर खुदा एक बारिश भेजेगा जो ओस की तरह होगी, उससे आदमी उग जाएंगे (यानी क़ब्रों में मिट्टी के जिस्म बन जाएंगे) फिर दोबारा मूर फूका जाएगा तो अचानक सब खड़े देखते होंगे, इसके बाद एलान होगा कि ऐ लोगो ! चलो अपने रब की तरफ और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इनको ठहराओ। इनसे सवाल होगा, फिर एलान होगा कि (इस सारे मज्मे से) दो ज़खियों को अलग कर दो। इस पर पूछा जाएगा (अल्लाह जल्ल शानुहु से) कि किस तायदाद में से कितने दो ज़खी निकाले जाएं, जवाब मिलेगा कि हर हज़ार में ६६६ दो ज़खी निकालो, इसके बाद आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि यह वह दिन होगा कि जिसके डर और दहशत से, बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और यह दिन बड़ा ही मुसीबत का होगा।'

इन हदीसों से मालूम हुआ कि क्रियामत कायम होने के वक्त कोई

मुसलमान दुनिया में मौजूद न होगा, इस बड़ी मुसीबत से अल्लाह तआला इन इंसानों को बचाये रखेंगे, जिनके दिल में ज़रा-सा भी ईमान होगा।

क्रियामत की तारीख की खबर नहीं दी गयी

अल्लाह तआला ही जानते हैं कि क्रियामत कब आयेगी। कुरआन शरीफ में बताया गया है कि क्रियामत अचानक आ जाएगी, बाकी उसकी मुकर्रर तारीख की खबर नहीं दी गयी। एक बार हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने इंसानी शक्ल में आकर मजलिस में हाजिर लोगों की मौजूदगी में प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्रियामत कब क़ायम होगी, तो उनके इस सवाल के जवाब में प्यारे नबी सल्ल० ने इशार्द फ़रमाया कि—

مَا السَّئُولُ عَنْهَا يَا عَلَمَ السَّائِلِينَ (بخاری و مسلم)

मल् मस् ऊलु अन्हा बि अन्नल म मिनस्साइलि०

—बुखारी व मुस्लिम

‘इस बारे में सवाल करने वाले से ज्यादा उसको इल्म नहीं है जिस से सवाल किया गया है।’

यानी इस बारे में हम और तुम दोनों बराबर हैं, न मुझे उसके क़ायम होने के वक्त का इल्म है और न तुम को है। एक बार जब लोगों ने प्यारे नबी सल्ल० से पूछा कि क्रियामत कब आयेगी तो अल्लाह तआला शानुह की तरफ से हुक्म हुआ—

قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجِيبُنَا وَفِيهَا إِلَّا غُطٌّ تَنَزَّلَتْ فِي السَّمَوَاتِ

وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْضَةٍ ۖ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ خَافِيٌّ عَنْهَا غُلٌّ إِنَّكَ

عَلِيمٌ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

कुल इन्नमा अिल्मुहा इन्द रब्बी लायुजल्लिहा लिबज़ितहा इल्ला हु व सकूलत फ़िल्समावाति वल्अज़िज़ ला तातीकुम इल्ला बरततन० यस्अलू न क क अन्नक हफ़ीयुन अन्हा कुल इन्नमा अिल्मुहा अिन्दल्लाहि व ला किन्न अक्सरन्नसि ला यस्अल्मून०

‘आप फ़रमा दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है, उसके वक्त पर उसको सिवाए अल्लाह तआला के कोई ज़ाहिर न करेगा, आसमान व ज़मीन में बड़ी भारी घटना होगी, वह तुम पर बिल्कुल ही

अचानक आ पड़ेगी, वे आप से इस तरह पूछते हैं जैसे गोया आप उसकी खोज कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

क्रियामत अचानक आ जाएगी

सूरः अंबिया में फ़रमाया—

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْضَةً تَنْبَغُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ دَرْكَهَا وَلَا لَهْمُ

يُنْظَرُونَ-

बल तातीहिम बरततन फ़नब्हुतुहुम फ़ ला यस्ततीऊन रहहा व ला हुम युन्ज़रून०

‘बल्कि वह आ जाएगी अचानक उन पर और उनको बद-हवास कर देगी, न उसके हटाने की उनको क़ुदरत होगी और न उनको मोहलत दी जाएगी।’

इस मुबारक आदत से और इससे पहली आयत से मालूम हुआ कि क्रियामत अचानक आ जाएगी, हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि अल-बत्ता क्रियामत ज़रूर इस हालत में क़ायम होगी कि दो आदमियों ने अपने दमियान (खरीदने-बेचने के लिए) कपड़ा खोल रखा होगा और अभी मामला तै करने और कपड़ा लपेटने भी न पायेंगे कि क्रियामत क़ायम हो जाएगी (फिर फ़रमाया कि) अल-बत्ता क्रियामत ज़रूर इस हाल में क़ायम होगी कि एक इंसान अपनी ऊटनी का दूध निकाल कर जा रहा होगा और पी भी न सकेगा और क्रियामत यकीनन इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपना हीज लीप रहा होगा और अभी उसमें (मवेशियों को) पानी भी न पिलाने पायेगा और बाक़ई क्रियामत इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपने मुँह की तरफ़ लुक़मा उठायेगा और उसे खा भी न सकेगा।’

यानी जैसे आजकल लोग कारोबार में लगे हुए हैं, उसी तरह क्रियामत के आने वाले दिन भी लगे होंगे कि अचानक क्रियामत आ

पहुँचेगी। जिस दिन क्रियामत कायम होगी, वह जुमे का दिन होगा।^१ प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि सब दिनों से बेहतर जुमा का दिन है, उसी दिन वह जन्नत से निकाले गये और क्रियामत जुमा ही के दिन कायम होगी।^२

दूसरी हदीस में है कि आहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जुमा के दिन क्रियामत कायम होगी, हर क़रीबी फरिश्ता और आसमान और ज़मीन और पहाड़ और समुद्र, ये सब जुमा के दिन से डरते हैं कि कहीं आज क्रियामत न हो जाए।^३

सूर और सूर का फूँका जाना

क्रियामत की शुरुआत सूर फूँकने में होगी। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि सूर एक सींग है, जिसमें फूँका जाएगा।^४ और यह भी इर्शाद फरमाया कि मैं मज़े की ज़िदगी क्यों कर गुज़ारूँगा, हालांकि सूर फूँकने वाले (फरिश्ते) ने मुंह में सूर ले रखा है और अपना कान लगा रखा है और माथा झुका रखा है, इस इतिज़ार में कि कब सूर फूँकने का हुक्म हो।^५ सूर मुहल्लस में सूर को नाकूर फरमाया है, चुनांचे इर्शाद है—

لَا تَقْرَأُ فِي الْقُرْآنِ وَلَا تَسْمَعُ فِيهِ عَسِيرٌ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُكَسِيرٍ

फ़ इज़ा नुकिर फ़िन्नाकूरि फ़ ज़ालिक यी म इज़िय्योमुन असीरुन अलल्काफ़िरी न शैरु यसीरु०

‘फिर जब नाकूर (यानी सूर) फूँका जायेगा तो वह काफ़िरोँ पर एक सल्ल दिन होगा जिसमें कुछ आसानी न होगी।’

सूर: जुमर में इर्शाद फरमाया—

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا
مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ

१. यह जो मशहूर है कि क्रियामत मुहर्रम की दसवीं तारीख को कायम होगी, किसी हदीस से साबित नहीं है। मज्मउल बिहार में इसको मौजूअ यानी गढ़ी हुई बातों में गिना है।

२. मुस्लिम शरीफ, ३. मिश्कात शरीफ, ४. मिश्कात शरीफ,

५. मिश्कात शरीफ,

व नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ सअि क़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल अज़ि इल्ला मन शाअल्लाहु मुम्म नुफ़ि ख़ फ़ीहि उरुरा फ़ इज़ा हुम क्रिया-मुय्यज्जुन०

‘और सूर में फूँका जाएगा, सो बेहोश हो जाएंगे, जो भी आस-मानों और ज़मीन में हैं सिवाए उनके जिनका होश में रहना अल्लाह चाहें फिर दोबारा सूर में फूँका जाएगा तो वह फ़ौरन खड़े हो जाएंगे हर तरफ़ देखते हुए।’

क़ुरआनी आयतों और नबी की हदीसों में दो बार सूर फूँके जाने का जिक्र है, पहली बार सूर फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएंगे (इल्ला मन शाअल्लाहु)। फिर ज़िदे तो मर जाएंगे और जो मर चुके थे उनकी रूहों पर बेहोशी की हालत दैदा हो जाएगी, इसके बाद दोबारा सूर फूँका जाएगा तो मुदों की रूहें उनके बदनों में वापस आ जाएगी और जो बेहोश थे उनकी बेहोशी चली जाएगी और फ़ायदा हो जाएगा, उस वक़्त का अजीब व गरीब हाल देखकर सब हैरत से तकते होंगे और अल्लाह के दरबार में पेशी के लिए तेज़ी के साथ हाज़िर किए जाएंगे। सूर: यासीन में फरमाया—

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ
يَوْمَئِذٍ أَصْحَابُ الْأَيْمَانِ يَدْخُلُونَ فِي الْأَفْئِدَةِ
الْمُؤْمِنُونَ إِنْ كَانَتْ الْأَفْئِدَةُ وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدُنَّ

مُخْطَرُونَ

व नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ इज़ाहुम मिनल अज्दासि इला रब्बिहिम यन्सिलू न कालू यावैलना मम व अ स ना मिम मर्किदना हाज़ा मा व अ दर हमानु व स द क़लमुसलू न कानत् इल्ला सैहतव्वाहिदतन फ़ इज़ा हुम ज़मीअल्लदेना मुहज़ज़ुन०

‘और सूर में फूँका जाएगा, वस अचानक, वह अपने रब की तरफ़ जल्दी-जल्दी फ़ैल पड़ेंगे, कहेंगे कि हाय हमारी खराबी, किसने हम को उठा दिया हमारे लेटने की जगह से, (जवाब मिलेगा कि) यह वह माजरा है जिसका रहमान ने वायदा किया है और पैगम्बरों ने सच्ची खबर दी, वस एक चिंघाड़ होगी, फिर उसी वक़्त वे सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे।’

यानी कोई न छिप सकेगा न छिप कर जा सकेगा, सब अल्लाह के हुज़ूर में मौजूद कर दिए जाएंगे।

हजरत अबू हुसैर रह रजि० ने फरमाया कि प्यारे नबी सल्ल० ने पहली बार और दूसरी बार सूर फूंकने की दमियानी दूरी बताते हुए चालीस का अदद फर्माया। मौजूद लोगों ने हजरत अबू हुसैर रह रजियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि क्या चालीस ? चालीस दिन या चालीस माह या चालीस साल। आहजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने क्या फरमाया ? इस सवाल के जवाब में हजरत अबू हुसैर रह रजियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ला-इल्मी ज़ाहिर की और फरमाया कि मुझे खबर नहीं (या याद नहीं) कि आहजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सिर्फ चालीस फरमाया या चालीस साल या चालीस दिन फरमाया। दोबारा सूर फूँके जाने के बाद फिर अल्लाह तबार क व तआला आसमान से पानी बरसा देंगे, जिसकी वजह से लोग (कब्रों से) उग जाएंगे जैसे (जमीन से) सब्जी (उग जाती है)। यह भी फरमाया कि इंसान के जिस्म की हर चीज गल जाती है यानी मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाती है सिवाए एक हड्डी के कि वह बाक़ी है, क्रियामत के दिन उसी से जिस्म बना दिए जाएंगे, यह हड्डी रीढ़ की हड्डी है।^१

सूर जुमर की आयत में यह जो फरमाया कि सूर फूँके जाने से सब बेहोश हो जाएंगे, सिवाए उनके जिनको अल्लाह चाहे, इसके बारे में तपसीर लिखने वालों के कुछ कौल हैं, किसी ने फरमाया कि शहीद मुराद हैं, किसी ने कहा कि जिब्रील व मीकाईल और इस्राफ़ील व इज़्राईल के बारे में फरमाया है, किसी ने अर्श उठाने वालों को इस छूट में शामिल किया है, इनके अलावा और भी कौल हैं (अल्लाह ही बेहतर जानता है।) मुम्किन है कि बाद में इन पर भी फ़ना छा जाए, जिसे इस छूट में बयान किया जाता है, जैसा कि आयत 'लि मनि ल मुल्कल यौम लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार' की तपसीर में साहिबे मआलिमुल तंज़ील लिखते हैं कि जब मल्लूक के फ़ना हो जाने के बाद अल्लाह तआला 'लि मनि ल मुल्कुल यौम' (किस का राज है आज) फरमायेंगे, तो कोई जवाब देने वाला न होगा, इसलिए खुद ही जवाब में फरमायेंगे, 'लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार' (आज वस अल्लाह ही का राज है जो तंहा है और क़ह्हार है)

यानी आज के दिन वस उसी एक हकीक़ी बादशाह का राज है,

१. बुखारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि राई के दाने के बराबर रीढ़ की हड्डी बाक़ी रह जाती है, उसी से दोबारा जिस्म बनेंगे। —अतर्ग़ीब बतर्ह़ीब,
२. जबर्दस्त क़ह्हर वाला,

जिसके सामने हर ताक़त दबी हुई है, तमाम दुनिया की हकूमतें और राज इस वक्त फ़ना हैं।

हजरत अबू हुसैर रह रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहजरत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बेशक लोग क्रियामत के दिन बेहोश हो जाएंगे और मैं भी उनके साथ बेहोश हो जाऊंगा, फिर सबसे पहले मेरी ही बेहोशी दूर होगी तो अचानक देखूंगा कि मूसा (पंगम्बर अलैहिस्सलामु वस्सलामु) अर्श इलाही को एक तरफ़े पकड़े खड़े हैं, मैं नहीं जानता कि वह बेहोश होकर मुझ से पहले होश में आ चुके होंगे या उन पर बेहोशी आयी ही न होगी और वे उनमें से होंगे जिनके बारे में अल्लाह का इशदि है 'इल्ला मन शा-अल्लाहु' है।

—मिस्कात शरीफ़

कायनात का बिखर जाना

सूर फूँके जाने से न सिर्फ़ ये इंसान मर जाएंगे बल्कि कायनात का निजाम ही टूट-फूट कर बिखर जाएगा, आसमान फट जाएगा, सितारे भड़ जाएंगे और और बे-नूर हो जाएंगे, चांद व सूरज की रोशनी ख़त्म कर दी जाएगी, जमीन हमवार मैदान बन जाएगी, पहाड़ उड़ते फिरेंगे।

नीचे की आयतों व हदीसों से ये बातें साफ़-फ़ाफ़ जाहिर हो रही हैं।

पहाड़ों का हाल

अल्लाह का इशदि है—

الْقَارِعَةُ مَا الْقَارِعَةُ مَا الْقَارِعَةُ يَوْمَ يَكُونُ النّٰكْسُ
كَالْفَرَّاشِ الْبَيْتُوتِ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ

अल्ले क़ारि अ तु मल् क़ारि अ तु व मा अद्रा क मल क़ारि अ यो म यकूनुन्नासु कल्फ़ राशिल मब्सूसि व तकू नुल जिबालु कल् अहि्तिल मन्फूशि०

‘वह खड़खड़ाने वाली, क्या है वह खड़खड़ाने वाली और तू क्या

२. व्यवस्था,

समझा, क्या है वह खड़खड़ाने वाली, जिस दिन लोग परवानों की तरह और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह होंगे।

‘अल् कारि अः’ (खड़खड़ाने वाली) क्रियामत को फरमाया है, यह नाम इसका इस लिए रखा गया कि वह दिलों को घबराहट से और कानों को सख्त आवाज से खड़खड़ा देगी। उस दिन इंसान परवानों की तरह, बेचैनी के साथ, बद-हवास होकर महशर की तरफ जमा होने के लिए चल पड़ेंगे, ऐसे बिखरे हुए अन्दाज में चलेंगे कि जैसे परवाने अधा-धुंध चिराग पर गिरते जाते हैं और पहाड़ों का यह हाल होगा कि जैसे धुनिया ऊन या रुई को धुन कर एक-एक फाया उड़ा देता है, उसी तरह पहाड़ बिखर कर उड़ जाएंगे। सूरः मुसलात में फरमाया—

व इजल जिबालु नुसिफन०

‘और जब पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे’

सूरः नवा में फरमाया—

व सुयिय रतिल जिबालु फ कानत सरावा०

‘और चलाये जाएंगे पहाड़ तो हो जाएंगे चमकता हुआ रेत’।

सूरः नहल में फरमाया—

وَنَزَى الْجِبَالِ تَحْسَبُهَا جَمَادٍ وَوَجَّهَ نِيرُومَ السَّحَابِ صُنْعَ اللَّهِ

الْبَنَى الْفَنَ كُلَّ شَيْءٍ ط

त्र तरल जिबाल तहसबुहा जामिदनन व हि य तमुरु मरम्सहावि मुन् अल्लाहिल्लजी अत्क न कुल शैइन०

‘और तू देखे पहाड़ों को यह समझते हुए कि वे जमे हुए हैं, हालांकि वे चलेंगे बादल के चलने की तरह, कारीगरी अल्लाह की, जिसने ठीक किया हर चीज को’।

यानी ये बड़े-बड़े पहाड़, जिनको तुम उस वक्त देख कर यह ख्याल करते हो कि ये ऐसे जमे हुए हैं कि कभी अपनी जगह से जुबिश भी न खा सकेंगे, उन पर एक दिन ऐसा आने वाला है कि यह रुई के गालों की तरह उड़-उड़ फिरेंगे और बादल की तरह तेज रफ्तार होंगे। अल्लाह ने हिक्मत के मुताबिक हर चीज को दुरुस्त किया, उसी ने आज पहाड़ों को ऐसा बोझ और भारी और ठहरा हुआ बनाया कि जमीन को भी हिलने से रोके हुए है।

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ

व अत्का फिल अजिर वा सि य अन् तमी द बिकुम०

‘फिर क्रियामत के दिन उन का मालिक और पैदा करने वाला जर्ज-जर्ज करके उड़ा देगा, यह सब उस कारीगर की कारीगरी है, जिस का कोई काम हिक्मत से खाली नहीं।’ सूरः वाकिआ में फरमाया—

وَلَبِثَ الْبَشَرُ نَسْأَةً كَذِبًا

व बुस्सतिल जिबालु वस्सन फ कानत हवाअम मंबस्सा०

‘और रेजा-रेजा हो जाएंगे पहाड़, फिर हो जाएंगे उड़ता हुआ गुबार (गद-धूल)।’

आसमान व ज़मीन

सूरः ताहा में फरमाया—

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا فَيَذَرُهَا حِطَاءً

صَفْصَفًا لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ط

व यस अलून क अनिल जिबालि फ कुल यन्सिफुहा रब्बी नस्फन फ य ज रहा काअन सफसफला तरा फीहा अि व जव्व ला अमता०

‘और वे आप से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं। आप फरमा दीजिए कि मेरा रब उन को अच्छी तरह उड़ा देगा, फिर ज़मीन को छोड़ देगा चटियल मैदान, न देखेगा तू उसमें मोड़ और टीला।’

यानी क्रियामत के दिन पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे और ज़मीन साफ और हमवार मैदान बना दी जाएगी, कोई टीला उस पर न रहेगा। सूरः इब्राहीम में फरमाया—

يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ

الْفَقَّارِ ط

यो म तुवदलुल अजु शैरल अजि वस्समाबातु व ब र जू लिल्लाहि-ल वाहि दिल कन्हारि०

‘जिस दिन बदल दी जाए इस ज़मीन से दूसरी ज़मीन और बदले जाए आसमान और लोग निकल खड़े होंगे अल्लाह वाहिद कन्हार के सामने।’

इस आयत से मालूम हुआ कि आसमान व ज़मीन क्रियामत के दिन बदल दिए जाएंगे और अपनी इस मौजूदा शक्ल पर बाक़ी न रहेंगे। इस आयत के बारे में हजरत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने

आं हजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मे सवाल किया कि जब आसमान व जमीन बदले जाएंगे तो उस दिन लोग कहां होंगे ? इसके जवाब में फखरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पुत्र सिरात पर होंगे ।'

इस रिवायत से मालूम होता है कि इस आयात में जो आसमान व ज़मीन के बदले जाने का जिक्र है, वह हिसाब-किताब होने के बाद उस वक्त होगा, जबकि लोग जन्मत या दो-बख्त में भेजे जाने के लिए पुर सिरात पर पहुँच जाएंगे।

पहली आयत में जो जिक्र हुआ कि ज़मीन हमवार और साफ़ मैदान कर दी जाएगी, वह हिसाब व किताब शुरू होने से पहले का जिक्र है। हज़रत सल्ल वन साद रज़ियल्लाहु तन्नाला अन्हु से रिवायत है कि अं हज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तन्नाला अज़ैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग ऐसी ज़मीन पर जमा किए जाएंगे जिसका रंग सफ़ेद होगा, लेकिन सफ़ेदी का झुकाव मटियाले रंग की तरफ़ होगा। उस वक़्त ज़मीन मैदे की रोटी जैसी होगी, किसी की उसमें निशानी न होगी। जब क़ियामत होगी तो आसमान में...

जब क्रियात्मत होगी तो आसमान में यह तबदीली होगी कि उसके सितारे झड़ पड़ेंगे और वे-नूर हो जाएंगे और चांद-सूरज की रोशनी लपेट दी जाएगी, नीज आसमान फट पड़ेगा और उसमें दरवाजे हो जाएंगे। सूरः नवा में फरमाया—

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ مَا تَأْتُونَ أَفْوَاجًا وَقُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا

यौ म युक्त्वु क्रिस्सूरि कृतातू न अपवा जंवं कृतिहत्तिस्समाज
ककानत्त अन्वावा०

‘जिस दिन फूँका जाएगा सूरः में तो तुम चले आओगे झुन्ड के झुन्ड और खोला जाएगा आसमान तो हो जाएंगे उसमें दरवाजे।’
यानी आसमान पर दरवाजे होंगे।

यानी आसमान फट कर ऐसा हो जाएगा कि गोया दरवाजे ही दरवाजे हैं।

सूरः मुसंलात में है—

व इजस्समाउ फुरिजत०

‘और जब आसमान में भरोगे पड़ जाएंगे।’

सूरः फुर्कानि में क्रमाया—

وَيَوْمَ تَشْقَى السَّمَاءُ بِالدَّغَامِ وَيُنَزَّلُ الْمَلَكُ تَنْزِيلًا

व यो म त शत्रुककु स्समाउ बिल् गमामि व नुज्जिलल मलाइकु,
तन्जीला०

‘जिस दिन फट जाए आसमान बादल से और उतार दिए जाएं फरिश्ते लगातार।’

सूरः हाक्का में फरमाया—

[illegible]

फ इ ज्ञा नु कि ख किस्सूरि नपखतुं व्वाहि दतुन व हुमिलतिल अजुं
वल जिवावु फ दुक्कता दक्क तं व्वाहि द तन फ यो म इज्जिव्वं क अ तिल
वा किअतु वन्शक्क तिस्समाउ फ हि य योम इज्जिवाहि य तुव्वं म
ल क भला अर्जाइ हा व यहिमुल अर्श रब्बि क फी क हुम यो म इज्जिन
समानिय तुन०

‘फिर जब सूर में फूंक मारी जाए, एक फूंक और उठा दिए जाएं (अपनी जगह से) जमीन और पहाड़ फिर दोनों एक बार रेजा-रेजा कर दिए जाएंगे तो उस दिन हो पड़ने वाली हो पड़ेगी (यानी क्रियामत) और आसमान फट जाएगा तो वह उस दिन बोदा होगा और फरिश्ते आसमान के किनारों पर आ जाएंगे और आपके परिवारदिगार के अर्श को उस दिन आठ फरिश्ते उठाये होंगे।’

जिस वक्त दर्मियान से ग्रासमान फटने लगेगा तो फ़रिश्ते उस के किनारों पर चले जाएंगे ।

सूर: रहमान में इशदि फरमाया—

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ط

ॐ इज्जन शक्कतिस्समाउ ॐ कानत वदंतन कद्दिहानि०

‘बस जब आसमान फट जायेगा तो ऐसा लाल हो जाएगा जैसे लाल नरी।’

और सूरः मझारिज में फरमाया है कि आसमान उस दिन 'मुहल' यानी पिघले हुए तांबे की तरह होगा यानी फटने के साथ उस का रंग भी बदल जाएगा और लाल हो जाएगा। सूरः तुर में फरमाया है कि उस

दिन आसमान कपकपायेगा—

यौ म तमूससमाउ मोरा०

यानी कपकपा कर फट पड़ेगा।

सूर: इन्शिकाक में फरमाया—

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ.

इजस्समाउन शक्कत व अजिनत लिरब्बिहा व हुक्कत व इजल
अजु मुदत व अलक्त मा फ्रीहा व तखल्लत व अजिनत लिरब्बिहा व
हुक्कत०

‘जब आसमान फट जाएगा और अपने रब का हुक्म सुन लेगा
और वह इसी लायक है और जब जमीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी और
अपने अन्दर की चीजों को बाहर डाल देगी और खाली हो जाएगी और
अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक है।’

आसमान को फटने का और जमीन को खींच कर बढ़ जाने और
फैल जाने का हुक्म उन के रब की तरफ से होगा, दोनों अल्लाह की
मख्लूक हैं, मख्लूक को खालिक (पैदा करने वाले) का हुक्म सुनना और
अमल करना जरूरी बात है, ये दोनों भी अल्लाह तआला के हुक्म को
पूरा करेंगे और उनको यही लायक भी है कि अपने पैदा करने वाले और
मालिक के आगे झुक जाएं और फरमांबरदारी में तनिक भी कहें-मुनें
नहीं।

जमीन खींच कर रबड़ की तरह बढ़ा दी जाएगी और इमारत और
पहाड़ वगैरह सब बराबर कर दिये जाएंगे ताकि एक हमवार बराबर
जमीन पर सब अगले-पिछले एक साथ खड़े हो सकें और कोई पर्दा-
रुकावट बाकी न रहे, जमीन अपने भीतर की चीजों को बाहर डाल देगी
और खाली हो जाएगी यानी वह अपने अंदर से खजाने और मुद्दे और
मुद्दों के हिस्से उगल डालेगी और उन तमाम चीजों से खाली हो जाएगी,
जिनका ताल्लुक बंदों के आमाल का बदला मिलने से होगा।

चांद, सूरज, सितारे

जब सूर फूट जाएगा, तो चांद, सूरज और सितारे भी अपने
हाल पर बाक़ी न रहेंगे। सूर: तक्वीर में फरमाया—

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَرَتْ ۝

इजश्शम्सु कुव्विरत व इजन्नूजूमन क द रत०

‘जब सूरज बे-नूर हो जाएगा और जब सितारे टूट कर गिर
पड़ेंगे।’

सूर: इन्फितार में फरमाया—

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَكَرَتْ ۝

इजस्समाउन्फत रत व इजल कवाकिबुन्त स रत०

‘जब आसमान फट जायेगा और जब सितारे भड़क पड़ेंगे।’

इन आयतों से आसमान का फटना और सितारों का भड़क कर
गिरना जाहिर हुआ। सूर: मुसल्लात में फरमाया है कि उस दिन सितारों
की रोशनी खत्म कर दी जाएगी, चुनांचे इशदि है—

فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۝

‘सो जब सितारे बे-नूर हो जाएंगे।’

सूर: क्रियाम: में फरमाया—

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ إِذَا يَرَى الْبَصِيرَ وَخَسَعَتِ الْفُجُورُ
جَمِيعُ الشَّمْسِ وَالْقَمَرُ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ الْفُجُورُ
كَلَّا لَا وَزَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ لَا تُنْفِرُ ۝

यस्अलु अय्या न यौमुल क्रियामति फ इज्जा बरिक्कल व स ह व ख
स फल क म ह व जुमिअश्शम्सु वल क म ह यकूलुल इन्सानु यौम इज्जिन
ऐनल मफरु कल्ला ला व ज र इला रब्बि क यौम इज्जिन-निल-मुस्तक़रु०

‘पूछता है (इन्सान) कब होगा दिन क्रियामत का, पस जब चुंघि-
याने लगे आंख और बे-नूर हो जाए चांद और जमा किए जाएं चांद और
सूरज, उस दिन कहेगा इन्सान, कहां चला जाऊं भाग कर। हरगिज नहीं
कहीं, पनाह की जगह नहीं उस दिन सिर्फ तेरे रब की तरफ जा
ठहरना है।’

इन आयतों से साफ़ हो गया कि क्रियामत के दिन चांद भी बे-नूर
हो जाएगा। चांद के बे-नूर होने का जिक्र फरमा कर इशदि फरमाया,
‘व जुमिअश्शम्सु वल क म ह’ (सूरज और चांद जमा किए जाएंगे) यानी
सिर्फ चांद ही बे-नूर न होगा, बल्कि बे-नूर होने में दोनों शरीक होंगे,
चांद के बे-नूर होने का खास तौर से इस लिए जिक्र फरमाया कि अरब
के लोगों को चांद का हिसाब रखने की वजह से उसका हाल देखने का

ज्यादा एहतमाम था।

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क्रियामत के दिन चांद और सूरज दोनों लपेट दिये जाएंगे। यानी उनकी रोशनी लपेट दी जाएगी, जिसकी वजह से रोशनी न फैल सकेगी, न किसी चीज़ पर पड़ेगी।

बैहकी ने किलाबुल बअसि वन्नुशूर में हजरत हसन बसरी रह० से रिवायत की है कि हजरत अबू हुदैरह रजि० ने आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इशार्द गराभी नकल करते हुए फरमाया कि सूरज और चांद बे-नूर करके दो टुकड़े बना कर क्रियामत के दिन दोज़ख में डाल दिए जाएंगे। यह सुन कर हजरत हसन रह० ने सवाल किया कि इनकी क्या वजह है? हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि मैं आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान नकल कर रहा हूँ (इससे ज्यादा मुझे इल्म नहीं) यह सुन कर हसन रह० खामोश हो गये।

१. आसमान, जमीन, चांद, सूरज और सितारों के बारे में मुराने फलसफ़े और भाज की साइन्स के कुछ ख्यालात हैं। ये सब उन लोगों ने खुद तजवीज़ कर लिए हैं जिन में तब्दीलियां तजवीज़ करते रहते हैं। आज एक नज़रिया है, कल दूसरी बात कह देंगे, अटकलों, ख्यालों और गुमानों के चारों तरफ़ इनके नज़रिए घूमते रहते हैं, फिर ताज़्जुब यह है कि कुरआन व हदीस में इन चीज़ों के पिछले का अगले जो हालात जिक्र किये गये हैं, उनके मान लेने में इसलिए भ्रमकते हैं कि अपने गढ़े हुए नज़रियों के खिलाफ़ नज़र आते हैं, जिसने इन चीज़ों को वजूद बरूसा है, उससे ज्यादा उसकी मख़लूख का जानने वाला कौन हो सकता है? बेशक वे लोग बड़े बे-सूझ-बूझ के और हक़ के रास्ते से हटे हुए हैं अल्लाह जो सब का पैदा करने वाला और हर का मालिक है, उसकी खबर को अपने तजवीज़ किए हुए नज़रियों पर परखते हैं, क्रियामत आने के सिलसिले में दुनिया के जगड़ने और बदलने के जिन हालात का जिक्र कुरआन व हदीस में किया गया है, बेशुक्का सही और हक़ हैं। जो लोग अपने तजवीज़ किए हुए नज़रियों की बुनियाद पर कुरआन व हदीस को न मानें, खुनी गुमराही और खुनी नादानी में पड़े हुए हैं। इय्यत्तबिम् न इल्लज्ज़न्न व मा तह्वल अन्कुमु लक़द जा अ हुम मिर्रिबिहि मुलहुदा०

२. बुख़ारी शरीफ़,

३. मिश्कात शरीफ़,

इंसानों का क़ब्रों से निकलना

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि प्यारे नबी सल्ल० ने इशार्द फरमाया कि सबसे पहले ज़मीन फट कर मुझे जाहिर करेगी, फिर अबू बक्र व उमर रजि० क़ब्रों से जाहिर होंगे, फिर बक़ीअ (क़ब्रस्तान) में जाऊंगा, इस लिए वे (क़ब्रों से निकल कर) मेरे साथ जमा कर दिए जाएंगे, फिर मैं मक्का वालों का इन्तिज़ार करूंगा, (यहां तक कि वे भी क़ब्रों से निकल कर मेरे साथ हो जाएंगे) फिर मैं हरमैन (वालों) के दर्मियान (महशर में) जमा हो जाऊंगा।

जो लोग क़ब्रों में दफ़न हैं (मुस्लिम हों या काफ़िर) वे तो दूसरी बार सूर की आवाज़ सुन कर क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और जो लोग आग में जला दिये गये या समुद्रों में बहा दिए गये या जिन को दरिदों ने फाड़ खाया था, उनकी रूहों को भी जिस्म दिया जाएगा और जरूर ही वे भी महशर में हाज़िर होंगे।

क़ब्रों में नंगे और बे-ख़त्ना के निकलेंगे

हजरत आइशा रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैंने प्यारे नबी सल्ल० से सुना कि क्रियामत के दिन लोग नंगे पांव, नंगे बदन, बे-ख़त्ना के जमा किए जाएंगे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या मर्द व औरत सब (नंगे होंगे और) एक दूसरे को देखते होंगे। (अगर ऐसा हुआ तो बड़े शर्म की बात होगी) इसके जवाब में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ आइशा रजि०! क्रियामत की सख़्ती इतनी ज्यादा होगी (और लोग घबराहट और परेशानी से ऐसे बे-हाल होंगे) कि किसी को दूसरे की तरफ़ देखने का ध्यान ही न होगा।

दूसरी हदीस में है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि बेशक़ क्रियामत के दिन तुम नंगे पांव, नंगे बदन, बे-ख़त्ना जमा किये जाओगे। यह फरमा कर कुरआन मजीद की आयत 'क मा बदश् ना अव्वल खल्किन नुअ़ीदुह' (हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त शुरूआत की थी, उसको दोबारा इसी तरह लौटाएंगे) निलावत फरमायी, फिर फरमाया कि सबसे पहले क्रियामत के दिन

१. तिमिज़ी शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को कपड़े पहनाये जाएंगे।^१

उलेमा ने लिखा है कि हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस लिए सबसे पहले लिबास पहनाया जाएगा कि उन्होंने सबसे पहले फकीरों को कपड़े पहनाये थे या इस लिए कि वे अल्लाह तआला की तरफ दावत देने की वजह से सबसे पहले नंगे किये गये जबकि काफ़िरों ने उनको आग में डाला था।

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले जिसको कपड़े पहनाये जाएंगे, वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम होंगे। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मेरे दोस्त को पहनाओ। चुनांचे जन्नत के कपड़ों में से दो बारीक और नर्म-सफ़ेद कपड़े उनको पहनाने के लिए लाए जाएंगे, उन के बाद कपड़े मुझे कपड़े पहनाये जाएंगे।

कब्रों से उठकर मैदाने हशर के लिए चलना में जमा होने

हजरत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्रियामत के दिन लोग तीन किस्म से जमा किये जाएंगे—१. एक जमाअत पैदल, २. दूसरी सवार, ३. तीसरी वह जमाअत होगी जो अपने चेहरों के बल चलेंगे, समाल किया गया कि या रसूलल्लाह ! वे लोग चेहरों के बल क्यों कर चलेंगे ? जवाब में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जिस जात पाक ने उनको क़दमों पर चलाया, वह इस पर कुदरत रखता है कि उनको चेहरों के बल चला दें, फिर फ़रमाया कि खबरदार वे (चेहरों के बल इस तरह चलेंगे) कि ज़मीन के उभरे हुए हिस्से और कांटों तक से अपने चेहरों के ज़रिए बचाव करेंगे।^१

यह हाल काफ़िरों का होगा, चूँकि इन ना-स्लायकों ने दुनिया में अपने चेहरे को खुदा के हुज़ूर में रखने से मुंह फेरा और घमंड की वजह से सज़्दे में सर रखने से इन्कार किया, इस लिए क्रियामत के दिन उनके चेहरों से उनको पांव का काम दिलाया जाएगा ताकि खूब ज़लील हों और चेहरों के पैदा करने वाले और मालिक को सज़्दा करने से जो इन्कार किया था, उसका मज़ा चख लें। अल्लाह तआला को सब कुछ कुदरत है,

१. बुखारी व मुस्लिम शरीफ, २. तिमिजी शरीफ,

वह अपनी मसलूक के जिरम के हर हिस्से को उसकी हर खिदमत में इस्ते-माल फ़रमा सकते हैं। दुनिया ही में देख लिया जाए कि कुछ चीज़ें चार पैरों पर और कुछ दो पैरों पर चलती हैं और कुछ सिर्फ़ अपने पेट से (फ़ मिन्हुम मय्यम् शी अला बल्तिही) वे लोग जिनके एक हाथ हैं, वे उसी एक हाथ से दोनों हाथों का कामकर लेते हैं, जो लोग अंधे होते हैं, उनकी सुनने और महसूस करने की ताक़त अक्सर तेज़ होती है, जिनसे बड़ी हद तक आंख न होने की कमी दूर हो जाती है, क्रियामत के दिन अल्लाह तआला काफ़िरों को चेहरे के बल चलायेंगे, यह अक्ल के एतबार से ज़रा भी ना मुम्किन नहीं है।

काफ़िर गूंगे-बहरे और अन्धे उठाये जायेंगे

सूर: बनी इसराईल में फ़रमाया—

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عَذَابًا وَثِيمًا.

व नहशुरुहुम योमल क्रियामति अला वुजूहिहिम अश्रम्यव बुकमव्व मुम्मन०

‘और हम उनको क्रियामत के दिन अंधे, बहरे, गूंगे करके चेहरों के बल चलाएंगे।’

सूर: ताहा में इर्शाद फ़रमाया—

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّكَ إِتْنَا فَتَسْتَيْهَاتِكُ الْيَوْمَ تَنُوسُ ۚ وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ ۚ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشدُّ وَأَبْعَدُ ۝

व मन अग्र ज अन जिक्री फ़ इन्न लहू मअशीशतन जन्नकव्व नहशुरुहू योमल क्रियामति अग्रमा क़ाल रब्बि लि म हशर्तनी अग्रमा व क़द कुन्तु बसीरा क़ाल वज़ालि क अतत् क़आयातुना फ़नसी त हा व कज़ालि कल यो म तुन्सा व कज़ ल क नज़्ज़ी मन अस् र फ़ व लम् युअम्मिम बिआ-याति रब्बिही व ल अज़ावुल आखिरति अशदु व अब्का०

‘और जिसने मुंह फेरा मेरी याद से तो उसके लिए है तंगी की ज़िदगी और क्रियामत के दिन हम उसका हशर इस तरह करेंगे कि वह अंधा होगा। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब ! क्यों तूने मुझे अंधा उठाया हालांकि मैं देखता था। जवाब में खुदा इर्शाद फ़रमायेगा, इसी तरह आती थीं तेरे पास मेरी आयतें, पस तूने उनको भुला दिया और इसी

‘तुम्हारे आज तु भुलाया जाएगा और इसी तरह हम बदला देंगे उसको जो हृद से बढ़ा और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाया और अल-बत्ता आखिरत का अज्ञाब सल्ल है और बाकी रहने वाला है।’

अल्लाह के दीन से दुनिया में जिन लोगों ने आंखें फेरीं और सच्चे मालिक की आयतों को सुन कर कुबूल करने और इकरार करने के बजाए सब मुनी-अन मुनी कर दी, उनकी आंखों और कानों और जुवानों की ताकतें छीन ली जाएंगी और गूँगे-बहरे हो कर उठेंगे। यह हृद के शुरू का जिक्र है, फिर आंखें और जुवानें और कान खोल दिए जाएंगे ताकि महशर के हालात और उसकी सल्लियां देख सकें और हिसाब-किताब के मोक़े पर उनसे जवाब-सवाल किया जाए।

काफ़िरों की आंखें नीली होंगी

सूर: ताहा में फ़रमाया—

وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرًّا يَنْفَخَتُونَ فِيَنَهُمُ الرُّوحُ
الْأَعْيُنُ

व नहशुरुल मुज्रिमी न यौ म इजि न जुक्रय्य त खाफ़ तू न बैन हम इल्ल बिस्तुम इल्ला अहरा०

‘और हम जमा करेंगे उस दिन गुनाहगारों को इस हाल में कि उनकी आंखें नीली होंगी, चुपके-चुपके आपस में कहते होंगे कि दुनिया में बस तुम दस दिन रहे।’

यानी बुरा लगने के लिए उनकी आंखें नीली कर दी जाएंगी, जब क्रियामत को उठ खड़े होंगे तो आपस में धीरे-धीरे बातें करेंगे कि दुनिया में कितने दिन रहे, फिर खुद ही आपस में जवाब देंगे। कोई कहेगा कि दुनिया में हम दस दिन ही रहे।

दुनिया में कितने दिन रहे?

अल्लाह तआला ने इस आयत के बाद दूसरी आयत में फ़रमाया—

१. मयालिमुत्तज़ील,

مَنْ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُونَ أَمْ لَمْ يُحِطْ بِهِنَّ إِنْ لَيْسَ
الْأَيُّومُ

नहनु अमलमु बिमा यकूलू न इज यकूलु अमसलुहुम तरीक़तन इल्ल बिस्तुम इल्ला यौमन०

‘हमको अच्छी तरह मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं। जब बोलेगा उनमें का अच्छी रविश वाला कि तुम दुनिया में एक दिन से ज्यादा नहीं रहे।’

आखिरत के लम्बे और वहां के दर्दनाक मंज़रों को देख कर दुनिया में या क़द में रहना इतना कम नज़र आयेगा कि गोया दस दिन से ज्यादा नहीं रहे, दस दिन भी किसी के ख्याल में गुज़रेगा, वरना जो इनमें ज्यादा अक्लमंद और अच्छी राय वाला और होशियार होगा, वह कहेगा कि दस दिन भी कहां? सिर्फ़ एक ही दिन समझो। इस बात के कहने वाले को अक्लमंद और अच्छे रवैया वाला इस लिए फ़रमाया कि दुनिया का ख़तम हो जाना और आखिरत का बाकी रहना और सल्लि को उसने दूसरों से ज्यादा समझा।

सूर: नाज़िआत में फ़रमाया—

كَأَنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ يُرَوُّنَهَا كَمَا يُكَلِّمُ الْوُحُوحَ

क अन्नहुम यौ म यरौ न हां लम् यल्वसू इल्ला अशीयतन औ जु हा हा०

‘जब वे क्रियामत को देखेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि दुनिया में बस एक शाम या उसकी सुबह ठहरे हैं।’

अब तो जल्दी करते हैं और कहते हैं, ‘मता हाज़ल वअद्दु इन कुन्तुम सादिकीन०’ (यह वायदा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो) और यह भी कहते हैं कि ‘अय्या न मुसहि’ (कब पूरा होगा क्रियामत का आना) लेकिन जब वह अचानक आ पहुंचेगी, उस वक़्त ऐसा मालूम होगा कि बहुत जल्द आयी, बीच में ज़रा देर भी नहीं लगी।

सूर: रूम में फ़रमाया—

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِئُوا غَيْرَ سَاعَةٍ
كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْكَلُونَ

व यौ म तकूमस्सा अ त युक्सिमुल मुज्रिमुन मा लाबिसू गैर साअतिन क जालिक कानूयुअ फ़ कून०

'और जिस दिन क़ायम होगी क़ियामत, क़सम खाकर कहेंगे मुज़िम कि हम दुनिया में एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। इसी तरह उलटे चलते थे।'

क़ब्र में या दुनिया में रहना थोड़ा सा मालूम होगा, जब क़ियामत की मुसीबत सर पर आ खड़ी होगी तो अफ़सोस करेंगे और कहेंगे कि दुनिया की और बर्ज़ख़ की ज़िदगी बड़ी जल्दी ख़त्म हो गयी, कुछ प्यादा मुद्दत ठहरने का मौक़ा मिलता तो इस दिन के लिए तैयारी करते। यह तो एक दम मुसीबत की घड़ी सामने आ गयी। दुनिया के मजे और लम्बी चौड़ी उम्मीदें सब भूल जाएंगे, बेहूदा उम्र खोने और दुनिया की साज-सज्जा और ओहदों और बड़ाइयों में जो वर्षों गुज़ारे थे, उतनी लम्बी उम्र को घड़ी भर की ज़िदगी बतायेंगे। अल्लाह ज़ल्ल शानुहू ने फ़रमाया, क़ज़ालि क कानू युश्र क कून० यानी इसी तरह दुनिया में उलटी बातें करते थे और बेहूदा ख़्यालात जमाते थे, न दुनिया में हक़ को माना और दिल में उतारा, न यहां सच बोल रहे हैं।

आगे इशार्द फ़रमाया—

وَقَالَ الْكَاذِبُونَ وَلِلَّهِ الْعِلْمُ وَلَئِيْنَّا لَقَدْ كُنْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ وَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

व क़ालिल्लज़ी न ऊतुल इल्म वल ईमा न लक़द लबिस्तुम फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल बअ़सि व हाज़ा यौमुल बअ़सि व ला किन्न-कुम कुन्तुम ला तअ़ल मून०

'और कहेंगे इल्म और ईमान वाले, तुम्हारा ठहरना अल्लाह की किताब में जी उठने के दिन तक था, सो यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम जानते न थे।'

इल्म और ईमान वाले उस वक़्त उनकी बातों को रद्द करेंगे और कहेंगे कि तुम झूठ बकते हो और यह जो कहते हो कि सिर्फ़ एक घड़ी रहना हुआ, सरासर ग़लत है, तुम ठीक अल्लाह तआला के इल्म में और लौहे महफूज़' के नविश्ता' के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक ठहरे, एक सिकंड की भी कमी नहीं हुई, हर एक को जितनी उम्र मिली थी, उसने सब पूरी की, फिर बर्ज़ख़ की लम्बी ज़िदगी गुज़ार कर अब मंदाने हसर में मौजूद हुआ है, आज वह दिन आ पहुंचा जिसका आना यक़ीनी था। अब देख लो जिसे तुम जानते और मानते न थे, अगर पहले से उस दिन

१. सुरक्षित तहज़ो, २. लिखे हुए,

का यक़ीन करते, तो यहां के लिए ईमान और नेकियों से तैयार होकर आते।

क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी

क़ियामत का दिन होश गुम कर देने वाला होगा

सूर: इब्राहीम में फ़रमाया—

وَلَا تَحْشَبَنَّ اللَّهُ عَاقِلًا يَعْلَمُ الظَّالِمُونَ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ يُؤْمِنُ
تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ مُطْعِمِينَ مُقْتَبِعِينَ رُؤُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ هَوَاءٌ

व ला तहसबल्ला हा गाफ़िलन अम्मा यअमलुज्ज़ालिमू न इन्नमा गुश्रख़िरुहुम लियोमिन तशख़सु फ़ीहिल अब्सारु मुह्तिअीन मुन्निअी रुसिहिम ला यतददु इलैहिम तफ़ुहुम व अफ़इदतुहुम हवाउन०

'और जो कुछ ज़ालिम करते हैं अल्लाह तआला को उनके आमांल से बे-खबर मत समझ, उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है, जिसमें उन लोगों की आंखें फटी रह जाएंगी, दौड़ते होंगे (और) अपने सर ऊपर को उठाये हुए होंगे, उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आयेगी और उनके दिल बिल्कुल बद-हवास होंगे।'

महशर की तरफ़ (क़ब्रों से निकल कर) सख्त परेशानी और हैरत से ऊपर को सर उठाये टकटकी बांधे घबराते हुए चले आएंगे, हक्का-बक्का होकर देखते होंगे, ज़रा पलक भी न भपकेगी, दिलों का यह हाल होगा कि होश से बिल्कुल खाली होंगे, खौफ़ में उड़े जा रहे होंगे।

सूर: हज़ में फ़रमाया—

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زُرْجَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ يَوْمَ
تَرْوُفُهُمْ تَنَادُّ هَلْ كُلٌّ مُرْسِمَةٌ عَمَّا أَوْصَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتٍ
حَبْلَ حَبْلُهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَوًى وَمَا هُمْ بِسُكُوًى وَلَكِنْ عَذَابُ
اللَّهِ شَدِيدٌ

या ऐयुहन्नामुत्तकू रब्बकुम इन्न ज़र ज़ल ज़लतरसा अति शैउन अज़ीमुन यौ मतरो न हा तज़हलु कुल्लु मुज़िअ तिन अम्मा अज़ाअत व तज़ अ

कुल्लु जाति हम्मिलन हम्म हा व तरभा स मुकारा व मा हुम विसुकारा
व ला किन्न अजाबल्लाहि शदीद०

‘ऐ लोगो ! डरो अपने रब से बिला शुबहा क्रियामत का भूंचाल एक बड़ी चीज है, जिस दिन उसको देखोगे; भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पिलाने को और गिरा देगी हर हमल वाली अपने हमल को और तू देखेगा लोगों को नशे में और (हकीकत में), वे नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अजाब सस्त है।’

क्रियामत के बड़े जलजले दो हैं, क्रियामत से कुछ पहले, जो क्रियामत की निशानियों में से हैं, दूसरा उस वक्त जब दोबारा सूरफ़ के जाने के बाद क़ब्रों से निकल खड़े होंगे। इस आयत में अगर पहला जलजला मुराद है तो दूध पिलाने वालियों का बच्चों का भूल जाना और हामिला औरतों का अपने-अपने हमल गिरा देना हकीकती और जाहिरी मानी के एतबार से मुराद होगा और अगर दूसरे मानी मुराद हों तो यह मिसाल के तौर पर कहा गया समझा जाएगा यानी क्रियामत की धवराहत और सस्ती इतनी होगी कि अगर औरतों के पेटों में उस वक्त हमल हो तो उनके हमल गिर जाएं और अगर उनकी गोदों में दूध पीते बच्चे हों तो उनको भूल जाएं।

इस वक्त लोग इतने डरे हुए होंगे कि देखने वाला ख्याल करेगा कि ये लोग शराब के नशे में हैं, हालांकि वहां नशे का क्या काम ? अजाब की सस्ती होश गुम कर देगी। सूर: मुजज़म्मिल में इशार्द है।

كَيْفَ تَقُولُ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا

फ़ के फ़ तत्तकू न इन कफ़तुम यौमंय्य ज़ज़लुल विल् दान शीबा०
‘सो अगर तुम कुफ़् करोगे तो कैसे बचोगे उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।’

अगर दुनिया में बच गये तो उस दिन किस तरह बचोगे, जिस दिन की तेज़ी और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी, चाहे, सच में बूढ़े न हों, मगर वह दिन ऐसा सस्त होगा कि उसकी सस्ती और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी।

चेहरों पर खुशी और उदासी

महशर में सब ही हाज़िर होंगे अल्लाह के नेक बेदों के चेहरे सफ़ेद

और खुश और हंसते-खेलते होंगे और काफ़िरो और ना फ़रमानों के चेहरों पर उदासी और ज़िल्लत छापी होगी। सूर: आले इम्रान में फ़रमाया—

يَوْمَ نَبْصِئُ الْوُجُوهُ وَنُكْشِرُ الْوُجُوهُ كَأَمْثَالِ الْذِّبْنِ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ
بَعْدَ آيَاتِنَا كُفْرًا قَدْ زُفِرَ إِلَيْنَا الْعَذَابُ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَإِنَّمَا الْإِنشَاءُ
وُجُوهُهُمْ فَيَوْمَ رَحْمَةُ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

यो म तब्यज्जु वुजूहुं व तस्वदु वुजूहुन फ़ अम्मल्लज़ी नस्वदत
वुजूहुहुम अ कफ़तुम बअ द ईमानिकुम फ़ ज़कुल अज़ा व बिना कुन्तुम
तक्फ़ूरुन० व अम्मल्लज़ी नब यज़ज़त वुजूहुहुम फ़ फ़ी रहमतिल्लाहि हुम
फ़ीहा ख़ालिदुन०

‘जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ स्याह होंगे, सो जिनके चेहरे स्याह होंगे, उनसे कहा जाएगा, क्या तुम काफ़िर हुए बाद ईमान लाने के, बस चसो अज़ाब इस वजह से कि तुम कुफ़् करते थे और जिनके चेहरे सफ़ेद हुए, सो वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे।’

कुछ के चेहरों पर ईमान व तक्वा का नूर चमकता होगा और इज़ज़त के साथ खुश-खुश नज़र आएंगे, उनके खिलाफ़ दूसरों के मुंह कुफ़् व निफ़ाक़ की स्याही से काले होंगे, शक़ल से ज़िल्लत व रुसवाई टपक रही होगी, हर एक का जाहिर उसके भीतर का आईना होगा।

सूर: अ ब स में फ़रमाया—

وُجُوهُ يَوْمَئِذٍ مُّسْفَرَةٌ مَّالِحَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ وَوُجُوهُ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا
غَبَرَةٌ تَرْهَقُهَا قَتَرٌ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُ الْفَجَرُ ۚ

वुजूहुं य्यौ म इज़िम मुस्फ़ र तुन जाहिकतुम मुस्तब्शिर तुन व
वुजूहुं य्यौ म इज़िम अलैहा श ब रतुन तर्हकुहा क़ त रतुन उलाइ क हुमुल
क फ़ र तुल फ़ ज रः०

‘कितने चेहरे उस दिन रोशन (और) हंसते (और) खुशी करते होंगे और कितने चेहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी और स्याही चढ़ी आती होगी, ये लोग काफ़िर व नाफ़रमान होंगे।’

ईमान और नेक कामों की वजह से नेक बन्दों के चेहरे रोशन होंगे, उनकी शक़लों से खुशी और ताज़ापन जाहिर हो रहा होगा और जिन नालायकों ने दुनिया से खुदा को भुला दिया, ईमान और नेक कामों के

नूर से अलग रहे और कुफ़ और नाफ़रमानी की स्याही में धुसे रहे, क्रियामत के दिन उनके चेहरों पर स्याही चढ़ी होगी, ज़िल्लत और रुसवाई के साथ महशर में हाज़िर होंगे अपने बुरे आमाल की वजह से उदास हो रहे होंगे और डरे हुए होकर यह सोचते होंगे कि वहां हमसे बुरा बर्ताव होने वाला है और वह आफ़त आने वाली है जो कमर तोड़ देने वाली होगी। (तजुनु अय्युफ़ अल बिहा फ़ाकिर: ०) ﴿كَفَىٰ لَنَا نَارُهَا وَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ﴾

इश्राद फ़रमाया सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कि क्रियामत के दिन (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की उनके बाप आज़र से मुलाक़ात हो जाएगी, उनके बाप के चेहरे पर स्याही होगी और गर्द पड़ी होगी। (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अपने बाप से फ़रमायेंगे, क्या मैंने न कहा था कि मेरी ना-फ़रमानी न करो, उनका बाप कहेगा कि आज आपकी ना फ़रमानी न करूंगा, उसके बाद (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के दरबार में अर्ज करेंगे कि आपने मुझ से वायदा फ़रमाया था कि क्रियामत के दिन मुझे आप रुसवा न करेंगे, इस से ज्यादा क्या रुसवाई होगी कि मेरा बाप हलाक हो रहा है। अल्लाह तआला शानुहू फ़रमायेंगे कि मैंने काफ़िरों पर ज़न्नत हराम कर दी है (तुम्हारा बाप अज़ाब से बचकर जन्नत में नहीं जा सकेगा) फिर (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से पूछा जाएगा कि आपके पांव में क्या है ? वह नज़र करेंगे, तो एक लिथड़ा हुआ बिज्जू नज़र आएगा, फिर इस बिज्जू की टांगें पकड़ कर दोज़ख में डाल दिया जाएगा।^१

अल्लाह तआला शानुहू अपनी क़दरत से आज़र को बिज्जू को शकल में कर देंगे ताकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रुसवाई न हो और उनको अपने बाप की शकल देखकर तरस भी न आये। अल्लाह ! अल्लाह ! यह किस के बाप का अंजाम हुआ ? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वस्सलामु के बाप का ! जो नवियों के बाप हैं और खुदा के दोस्त हैं, जिनकी मिल्लत (तरीक़े) की पैरवी करने का हुक्म हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुआ, जिन्होंने खाना कावा बनाया, काफ़िर बाप के हक में उनकी सिफ़ारिश भी न चली ! कहां हैं वह पीर-ऊकीर जो नसब, और रिश्ते पर फ़ख़्र करने वाले हैं और जो बुरे कर्मों के साथ रिश्तों की आड़ लेकर बख़्शे जाने के उम्मीदवार बने हुए हैं।

१. बुख़ारी शरीफ़,

महशर में पसीने की मुसीबत

हज़रत मिक्दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि प्यारे नबी सल्ल० ने इश्राद फ़रमाया कि क्रियामत के दिन मूरज मसबूक से इतना करीब हो जाएगा कि उनसे करीब एक मील के फ़ासले पर होगा और आमाल की बुराइयों के बराबर लोग पसीने में होंगे, बस कोई तो पसीने में टखनों तक होगा और किसी के घुटनों तक पसीना होगा और किसी के तहमद बांधने की जगह तक पसीना होगा और किसी का यह हाल होगा कि पांव से लेकर मुंह तक पसीना में होगा, उसका पसीना लगाम की तरह मुंह में घुसा हुआ होगा।^१

एक हदीस में है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश्राद फ़रमाया कि हरर के मदान में इंसान को इतना पसीना आयेगा और लगानार बाक़ी रहेगा कि इंसान यह कह उठेगा कि ऐ रब ! आप का मुझे दोज़ख में भेज देना मेरे लिए इस युसीबत से आसान है, महशर के अज़ाब की सख्ती को देखकर ऐसा कहेगा, हालांकि दोज़ख के अज़ाब की सख्ती को जानता होगा।^२

१. पहले गुजर चुका है कि क्रियामत कायम होने से चांद-मूरज बे-नूर हो जाएंगे, आममान फट जाएगा। अगर कोई सवाल करे कि मूरज बे-नूर होने के बाद महशर में लोगों के सरो से एक मील होकर कैसे गर्मी पहुंचाएगा, जवाब यह है कि एक तो बे-नूर होने के साथ उसकी जलन और गर्मी का ख़तम हो जाना जरूरी नहीं और अगर यह मान लिया जाए कि बे-नूर होने के साथ उसकी जलन भी जाएगी तो दूसरा जवाब यह है कि उसको दोबारा रोशनी और गर्मी देकर महशर में सरो पर कायम किया जाएगा, फिर इसके बाद दोबारा बे-नूर करके दोज़ख में डाल दिया जाएगा, ताकि उसके पुजारियों को सबक मिले और समझें कि यह पूजा के क़ाबिल होता, तो खुद क्यों दोज़ख में पड़ा होता। बहरहाल आयतों और हदीसों में जो कुछ आया है, उस पर ईमान लाना जरूरी है।

२. मुन्निम शरीफ़,
३. तर्माव,

हजर के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें

भिखारियों की हालत

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी लोगों से सवाल करते-करते उस हालत को पहुंच जाता है कि क्रियामत के दिन इस हालत में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोشت की जरा सी भी बोटी न होगी यानी भोजन मांगने वाले को रुकवा और जलील करने के लिए हजर के मैदान में इस हाल में लाया जाएगा कि उसके चेहरे पर वस हड्डियां ही हड्डियां होंगी और गोشت की एक बोटी भी न होगी और तमाम लोग उसे देखकर पहचान लेंगे कि यह दुनिया में लोगों से सवाल करके अपनी इज्जन खोता था, आज भी उसकी कुछ इज्जन नहीं और सबके सामने जलील हो रहा है।

जिसने एक बीवी के साथ ना-इंसाफी की हो

हजरत अबू हुदैरह रजि० फ़रमाते हैं कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस मर्द के पास दो बीवियां हों और उसने उनके दमियान इंसाफ़ न किया हो, तो क्रियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसका पहलू गिरा हुआ होगा।

जो कुरआन शरीफ़ भूल गया हो

हजरत साद बिन उबादा रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख्स ने कुरआन शरीफ़ पढ़ा और फिर उसे (ग़फ़लत और मुस्ती की वजह से) भुला दिया, वह अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा कि 'अज्जम' होगा।

'अज्जम होगा' यानी कोढ़ी होगा, उसके हाथ या उंगलियां गिरी हुई होंगी और कुछ बुजुर्गों का कहना है कि इसका मतलब यह है कि उसके

१. बुखारी व मुस्निम शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़, ३. मिश्कात,

दांत गिरे हुए होंगे। जाहिर में यह आखिरी मतलब ही ज्यादा मुनासिब मानूम होता है, क्योंकि कुरआन शरीफ़ पढ़ते रहने से याद रहता है और पढ़ते रहना जुवान और दांतों का अमल है, इसलिए इसकी सजा दांतों का न होना ही मुनासिब है। (खुदा ही बेहतर जाने)

एक हदीस में है कि प्यारे नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये गये तो मैंने कोई गुनाह इससे बढ़कर नहीं देखा कि किसी को कुरआन की कोई सूर या आयत आती हो और फिर वह उसे भूल जाए।

बे-नामाजियों का हजर

हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने नमाज की पाबन्दी न की, इसके लिए नमाज न पूरा होगी, न दलील होगी, न निजात का सामान होगी और क्रियामत के दिन उसका हजर फ़िर्मा न, कारून, हामान और उवई बिन खल्फ़ के साथ होगा।

कातिल व मक्तूल

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्रियामत के दिन मक्तूल अपने कातिल को पकड़ कर इस तरह लायेगा कि कातिल का माथा और उसका सर मक्तूल के हाथ में होगा और मक्तूल की गरदन की नसों से खून बह रहा होगा। वह अल्लाह के दरबार में अर्ज करेगा कि ऐ रब ! मुझे उसने क़त्ल किया था (इसी तरह वह) उसे अर्श के करीब ले पहुंचेगा।

कातिल की मदद करने वाला

हजरत अबू हुदैरह रजि० से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन के क़त्ल में जरा सा कलमा कहकर भी मदद की हो (क्रियामत के दिन) वह खुदा से इस हाल में मुलाकात करेगा कि उस की दोनों आंखों के दमियान 'आइमुम मिर्रहम-तिल्लाहि' लिखा होगा, जिसके मानी यह है यह अल्लाह की रहमत से

१. नमआत, २. तिमिजी शरीफ़, ३. अहमद व दारमी,

४. जिसे क़त्ल किया जाए, ५. तिमिजी व नमई.

वायदा न पूरा करने वाला

हजरत सईद रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अन्हि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि क्रियामत के दिन हर गादिर (यानी वायदा तोड़ने वाला) के लिए झंडा होगा जो उसके पाखाने की जगह पर लगा होगा।^२

दूसरी रिवायत में है कि आहजरत सल्लल्लाहु अन्हि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि जिसका वायदा तोड़ा जितना ही बड़ा होगा, उतना ही झंडा बुलन्द होगा, इसके बाद फरमाया कि खबरदार जो जनता का हाकिम बना उसके वायदा तोड़ने से बढ़कर किसी का वायदा तोड़ना नहीं यानी अगर वह वायदा तोड़गा तो तमाम पब्लिक उसके निशाने पर आ जाएगी, इस लिए उसका वायदा तोड़ना सबसे बड़ा हुआ।^३

अमीर या बादशाह

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु अन्हि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि जो शम्स भी दस आदमियों का अमीर बना होगा, वह क्रियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके हाथ बंधे हुए होंगे, यहां तक कि (अगर उसने अपने मानहत्तों में इस्त्राफ से काम लिया होगा तो) उसे इस्त्राफ छुड़ा देगा या (अगर जुल्म का बर्ताव किया होगा तो) उसे जुल्म हलाक कर देगा।^४

एक हदीस में है कि जो हाकिम भी लोगों के दमियान हुक्म करना है, वह क्रियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि एक फरिश्ते ने उसकी गुद्दी पकड़ रखी होगी, (वह फरिश्ता उसको लाकर खड़ा कर देगा और) फिर अपना सर आसमान की तरफ उठाकर (अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करेगा) सो अगर अल्लाह तआला हुक्म फरमाएंगे कि उसको गिरा दे तो वह उसको इतने गहरे गड्ढे में गिरा देगा, जिसकी तह में गिरते-गिरते चालीस साल में पहुंचा जाए।^५

जालिम हाकिम गिराए जाइंगे।

१. इब्ने माजा. २. मुस्लिम शरीफ,
३. मिशकात, ४. दारमी,
५. मिशकात शरीफ,

जकात न देने वाला

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अन्हि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसने उसकी जकात न अदा की तो क्रियामत के दिन उसका माल गंजा सांप बना दिया जाएगा, जिसकी आंखों पर उभरे हुए दो नुबते होंगे। वह सांप तौक बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा, फिर वह सांप उसके दोनों बांहों को पकड़ कर कहेगा कि मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा खजाना हूं, फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमायी (जिस में यही मरभूत आया है)---

وَلَا يَحْسِبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنعَمَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِمْ أَنَّهُمْ مُؤْتَوْنَ
لَهُمْ بَلْ هُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا لَكُمْ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. (آل عمران)

व ला यह सब वन्तल्लजी न यव्खनू न विमा आता हुमु त्लाहु मिन फजिलही हु व खैरल्लहुम वल हुव शरल्लहुम म यु तव्वकून मा वखिनु विही योमल क्रियामति०
---आने इम्रान

और जो लोग अल्लाह के दिए हुए में बखूल (कंजूसी) करते हैं, जो उसने उनको अपने फजल से दिया है, वे यह खयाल न करें कि यह उनके हक में बेहतर है, बल्कि यह उनके लिए बवाल है। उन्हें बहुत जल्द क्रियामत के दिन इस (माल) का तौक पहनाया जायेगा, जिसमें उन्होंने कंजूसी की थी।
---बुखारी

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अन्हि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि सोने-चांदी के जिस मालिक ने इनमें से इनका हक (जकात) अदा न किया तो जब क्रियामत का दिन होगा तो उसके लिए आग की तख्तियां बनायी जाएंगी जो दो जख में तपायी जाएंगी, फिर उनसे उनका पहलू और उसका माथा और उसकी पीठ को दाग दिया जाएगा। जब भी वे (तख्तियां ठंडी हो-हो कर दो जख की आग में) वापस कर दी जाएंगी, तो फिर बार-बार निकाली जाती रहेंगी (और उनसे दाग दिया जाता रहेगा और यह सजा) उमको उस दिन में (मिलती रहेगी) जो पचास हजार वर्ष का दिन होगा, यहां तक कि सब बन्दों का फंसला कर दिया जाएगा। फिर आखिरकार वह (इस मुमीवत से निजान पा कर) अपना रास्ता

पायेगा जो जन्नत की तरफ होगा या दोजख की तरफ। मौजूद लोगों में से किसी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह ! ऊंटों का हुक्म (भी) इर्शाद फरमायें। आपने फरमाया, जो ऊंटों वाला इनमें से इनका हक अदा नहीं करता और इनके हकों में से एक हक यह भी है कि जिस दिन उनको पानी पिलाये उस दिन उनका दूध भी निकाल ले तो उसको उन ऊंटों के नीचे साफ मंदान में लिटा दिया जाएगा। इसके ऊंट खूब मोटे-ताजे सब के सब वहां मौजूद होंगे। उनमें से एक बच्चा भी गैर-हाज़िर न होगा। वे ऊंट अपने खुरों से उसको रौंदेंगे और अपने मुँहों से उसको काटेंगे। जब उनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो बाद का गिरोह उस पर लौटा दिया जाएगा। पचास हजार वर्ष के दिन में बन्दों के दमियान फंसले होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी, फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ पाएगा या दोजख की तरफ।

सवाल किया गया कि या रसूलल्लाह ! बकरियों और गायों का हुक्म भी इर्शाद फरमायें। आपने फरमाया कि जो गायों का मालिक और बकरियों का मालिक इनमें से इनका हक अदा नहीं करता, तो जब क्रियामत का दिन होगा तो उसको साफ मंदान में उनके नीचे लिटा दिया जाएगा। इनमें से वहां एक गाय या बकरी गैरहाज़िर न होगी (और) न कोई इनमें मुड़े हुए सींगों की होगी और न कोई बे-सींगों की और न कोई टूटे हुए सींगों की। फिर ये गायें और बकरियां उस पर गुज़रेंगी और अपने सींगों से उसको मारती जाएंगी और खुरों से रौंदती जाएंगी। जब इनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो आखिर का गिरोह उस पर लौटा दिया जाएगा। पचास हजार वर्ष के दिन में फंसला होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी, फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ पायेगा या दोजख की तरफ।

क्रियामत के दिन सबसे ज्यादा भूखे

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने एक शख्स ने डकार ली। आप ने फरमाया कि अपनी डकार कम करो, क्योंकि क्रियामत के दिन सबसे ज्यादा देर तक वही भूखे रहेंगे जो दुनिया में सबसे

१. मुस्लिम शरीफ,

ज्यादा देर तक पेट भरे रहते हैं।

दोगले का हशर

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जो दुनिया में दो चेहरों वाला था (यानी ऐसा शख्स कि इस गिरोह के सामने इसकी तारीफ़ और दूसरों की निंदा करता हो और फिर जब दूसरों में जाए तो उनकी तारीफ़ और उस गिरोह की बुराई करता हो) तो क्रियामत के दिन उसकी जुबान आग की होगी।

कनसई लेने वाला

फरमाया हुज़ूरे अब्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कि जिसने बनाकर (यानी अपनी तरफ से गढ़ कर) झूठा ख़्बाब बयान किया उसे क्रियामत के दिन मजबूर किया जाएगा कि दो जों के बीच में गिरह लगाये और वह उनमें हरगिज़ गिरह न लगा सकेगा (इस लिए अज़ाब में रहेगा) और जिसने किसी गिरोह की बात की तरफ कान लगाये, हालांकि वह सुनाना न चाहते थे तो क्रियामत के दिन उसके कान में सीसा (पिघला कर) डाला जाएगा और जिसने कोई तस्वीर (जानदार की) बनायी उसे क्रियामत के दिन अज़ाब दिया जाएगा और मजबूर किया जाएगा कि उसमें रूह फूंक कर ज़िंदा करे और वह रूह फूंक न सकेगा।

ज़िल्लत का लिबास

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिसने दुनिया में शोहरत (धमंड और इतरावे) का निवास पहना, उसे खुदा क्रियामत के दिन ज़िल्लत का लिबास पहनायेगा।

ज़मीन हड़पने वाला

इर्शाद फरमाया हुज़ूरे अब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिम्ने थोड़ी-सी ज़मीन भी बग़ैर हक के ले ली, उसको क्रियामत के दिन

१. मिश्कात शरीफ, २. मिश्कात शरीफ,
३. मिश्कात शरीफ, ४. अहमद, अबूदाऊद,

सातवीं जमीन तक धंसा दिया जायेगा ।^१

दूसरी रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया कि जिसने जुल्म के तौर पर एक बालिशत जमीन भी ले ली उसको अल्लाह तआला मजबूर करेगा कि उसे इतना खोदे कि सातवीं जमीन के आखिर तक पहुँच जाए, फिर क्रियामत का दिन खत्म होने तक, जब तक कि लोगों में फ़सला न हो, वे सातों जमीनें उसके गले में तौक़ की तरह डाल दी जाएंगी ।^१

आग की लगाम

हजरत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी, जिसे वह जानता था था और उसने वह छिपा ली तो क्रियामत के दिन उसके (मुँह में) आग की लगाम दी जाएगी ।^१ चूँकि उसने झोलने के वक्त जुबान बंद कर रखी, इस लिए जुर्म के मुताबिक़ सज़ा तज्बीज़ हुई कि आग की लगाम लगायी गयी ।

गुस्सा पीने वाला

हजरत सहेल रज़ि० अपने बाप हजरत मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत फ़रमाते थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने गुस्सा पी लिया, हालाँकि वह गुस्से के तक्राजो पर अमल करने की क़ुदरत रखता था, क्रियामत के दिन अल्लाह तआला उसको सारी मल्लूक के सामने बुला कर अस्तिथार देगे कि जिस हूर को चाहे, अपने लिए अस्तिथार कर ले ।^१

हरमैन में वफ़ात पाने वाला

हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मदीने में ठहरा और उसने मदीने की तक्लीफ़ पर सब्र किया, मैं क्रियामत के दिन उसके लिए गवाह और सिफ़ारिशी हूँगा और जो शख्स मक्का के हरम या मदीना के हरम में मर गया, उसे अल्लाह क्रियामत के दिन अम्न वालों में उठायेगा ।^१

१. बुखारी शरीफ़, २. मिश्कात शरीफ़,

३. अहमद व तिमिज़ी, ४. तिमिज़ी व अबू दाऊद,

५. दोनों हरम (काबा और मदीने का रोज़ा-ए-अक़दस), ६. बंहेक़ी,

जो हज़ करते हुये मर जायें

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि एक साहब हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अरफ़ात में ठहरे हुए थे, अचानक सवारी से गिर पड़े, जिससे उनकी गरदन टूट गयी । हुजूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि उसको बेरी के पत्तों में पके हुए पानी से नहलाओ और उसको इन (एहराम के) ही कपड़ों में कफ़न दो और उसका सरन ढाँको क्योंकि यह क्रियामत के दिन 'तलबिया' पढ़ता हुआ उठेगा ।^१

शहीद

हजरत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की राह में जिस किसी के ज़रम लग गया और अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि उसकी राह में किस-किस के ज़रम आया है, (यानी) नीयत का हाल अल्लाह ही ख़ूब जानता है तो वह क्रियामत के दिन उस ज़रम को लेकर इस हाल में आयेगा कि उसका खून खूब बह रहा होगा जिसका रंग खून की तरह होगा और खुशबू मुस्क की तरह होगी ।^१

कामिल नूर वाले

हजरत बुरैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मस्जिदों को अंधेरे में जाने वालों को खुशख़बरी सुना दो कि उनको क्रियामत के दिन पूरा नूर इनायत किया जाएगा ।^१

अज्ञान देने वाले

हजरत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अज्ञान देने वाले क्रियामत के दिन सब लोगों से ज़्यादा लम्बी गरदनो वाले होंगे ।^१

१. हज़ में जो दुआ अक्सर पढ़ी जाती है, जिसमें बार-बार लम्बक़ आता है उसे तलबिया कहते हैं, २. बुखारी शरीफ़, ३. बुखारी व मुस्लिम शरीफ़,

४. तिमिज़ी, ५. मुस्लिम शरीफ़,

खुदा के लिये मुहब्बत करने वाले

हुजुरे अक्बस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाते हैं कि मेरी अम्मत (बड़ाई) की वजह से आपस में मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मिबर होंगे और नबी व शहीद उन पर रश्क करते होंगे (क्योंकि वे तो बे-खौफ और बे-गम होकर नूर के मिम्बरों पर बैठे होंगे और नबी व शहीद दूसरों की सिकांरिश में लगे होंगे)।

अर्श के साथे में

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूले करीम सल्ल० ने इर्शाद फरमाया कि सात शरूतों को उस दिन अल्लाह अपने साथे में रखेगा जबकि उसके साथे के अलावा और किसी का साथे न होगा—

१. मुसलमानों का इंसान पसंद बादशाह,
२. वह जवान, जिसने अल्लाह की इबादत में जवानी गुजारी।
३. वह मर्द, जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है, जब वह मस्जिद से निकलता है, जब तक वह वापस न आये (उसका जिस्म बाहर और दिल मस्जिद के अंदर रहता है)
४. वे दो शरूत जिन्होंने आपस में अल्लाह के लिए मुहब्बत की। उसी मुहब्बत की वजह से जमा होते हैं और उसी को दिल में रखते हुए जुदा हो जाते हैं।
५. वह शरूत जिसने तंहाई में अल्लाह को याद किया और उसके आंसू वह निकले।
६. वह मर्द जिसको खूबसूरत और इच्छतदार औरत ने (बुरे काम के लिए) बुलाया और उसने टका-सा जवाब दे दिया कि मैं तो अल्लाह से डरता हूँ।
७. वह शरूत जिसने ऐसे छिपा कर सद्का दिया कि उसके बाएं हाथ को खबर न हुई कि दाहिने हाथ ने क्या खर्च किया।

नूर के ताज वाले

हजरत मुआज जुहनी रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते

१. मिश्कात शरीफ. २. बुखारी व मुस्लिम.

है कि हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिसने कुरआन पढ़ा और उस पर अमल किया, क्रियामत के दिन उसके मां-बाप को एक ताज पहनाया जाएगा, जिसकी रोशनी सूरज की उस रोशनी से भी अच्छी होगी जबकि दुनिया के घरों में इस शबल में होती, जिस वक्त कि सूरज तुम्हारे घरों में मौजूद होता। अब तुम ही बताओ कि जब उसके मां-बाप का यह हाल है तो खुद जिसने उस पर अमल किया होगा, उस का कैसा रूबा होगा।

हलाल कमाने वाले

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिसने हलाल तरीके से इसलिए दुनिया तलब की कि भीख मांगने से बचे और अपने घर वालों पर खर्च करे और अपने पड़ोसी पर रहम करे तो क्रियामत के दिन अल्लाह तआला से वह इस हाल में मुलाकात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकता हुआ होगा और जिसने हलाल तरीके से दुनिया इसलिए तलब की कि दूसरों के मुकाबले में ज्यादा जमा कर ले और दूसरों पर फख्र करे और दिखावा करे तो खुदा से इस हाल में मुलाकात करेगा कि अल्लाह तआला उस पर गुस्सा होगा।

—मिश्कात

रिश्ते-नातेदार काम न आरेंगे

उस दिन हर आदमी सिर्फ अपने बचाव की फिक्र में होगा, कोई किसी के काम न आयेगा, एक दूसरे से भागेगा। बहुत सी आयतों में इन्हीं बातों का एलान फरमाया गया है। सूर: लुकमान में इर्शाद है—

وَاخْشَوْا يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْكَ وَالِدُكَ وَلَا مَوْلَاكَ شَيْئًا

وَالْإِبْرَاهِيمُ شَيْئًا

वल्शी योमल्ला यज्जी वालिदुन अन्व ल दिही वला मौलदुन हु व

१. अहमद, अबूदाऊद
२. यह बात ध्यान देने की है कि फख्र करने के लिए हलाल कमाने वाले के हक में यह घमकी है, पस जो लोग इस मकसद के लिए हराम कमाते हैं, उनका क्या बनेगा ? फख्र तबिक् या उलिक् अन्सार०

जाज़िन अन्वालिदिही शंअन०

‘उस दिन से डरो जिस दिन न बाप बेटे का बदला चुकायेगा, न बेटा ही बाप की तरफ से कोई मुतालबा (मांग) अदा कर सकेगा।’

क्रियामत के दिन बड़ा बिखराव होगा, दुनिया की कुछ दिनों की ज़िदगी से (जिस में नाते-रिश्तेदार काम आते हैं) धोखा खाकर बेवकूफी से यह समझना कि क्रियामत में भी ये लोग काम आयेंगे, नादानी है। सूरः मूमिनून में फ़रमाया—

فَاَنفَعُ فِي الصُّورِ نَدَا سَابَّ يَنَّهُمْ وَلَا يَكْسَاؤُونَ

फ़ इज़ा नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ ला अन्सा व बैन हुम व ला यत साअ लून०

‘जब सूर फूँका जा चुकेगा तो उस दिन उनके दमियान रिश्ते-नाते न रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा।’

सूरः अ व स में फ़रमाया—

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ

यो म यफ़िरुल मरु अख़ीहि व उम्मिही व अबीहि व साहिबतिही व बनीहि०

यानी ‘क्रियामत के दिन इंसान अपने भाई से और मां-बाप से और बीबी से और बेटों से सबसे भायेगा।’

यानी किसी के साथ हमदर्दी और मदद तो दूर की बात, वह अपने ऐसे करीबी रिश्तेदारों तक से दूर भागेगा।

दोस्त दुश्मन हो जायेंगे

क्रियामत के दिन बस नेक अमल ही काम आयेंगे। इंसान को सब से ज्यादा भरोसा अपने रिश्तेदारों पर होता है, ऊपर की आयतों से यह बात मालूम हुई कि इंसान अपने रिश्तेदारों से दूर भागेगा, उनके बाद नम्बर दोस्तों और हमदर्दों का आता है, उनके बारे में अल्लाह का इशारा है।

وَلَا يَسْعَىٰ خَلِيلٌ خَلِيلًا يُصَوِّرُهُمْ

व ला यस अलु हमीमुन हमीमय्युवस्सरु न हुम०

यानी ‘न दोस्त दोस्त को पूछेगा, हालांकि (वे एक दूसरे को) दिखाई दे रहे होंगे और फ़रमाया—

२. सूरः मुमारिज,

मरने के बाद

१५२

अल-अख़िल्लाउ यौ म इज़िन बअज़ुहुम लिबअज़् ज़िन अदुवुन इल्लल मुत्तकीन०

‘यानी उस दिन दुनिया के दोस्त एक दूसरे के दुश्मन बने हुए होंगे, हां, परहेज़गारों की दोस्ती उस वक़्त भी कायम रहेगी।

रिश्वत में सारी दुनिया

देने को तैयार होंगे

सूरः मआरिज में फ़रमाया—

يَوْمَ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ تَوْمِيذٍ بِبَنِيهِ وَصَاحِبَتِهِ
وَأَخِيهِ وَقَرْنَيْتِهِ وَالْأَنْفُسَ مِنْ جَمِيعَاتِ شَمِّ
يُنْجِيهِ كَلَّا

यवददुल मुज़रिमु लो यफ़तदी मिन अज़ाबि यौ म इज़िम बिबनीहि व साहिबतिही व अख़ीहि व फ़सीलतिहिल्लती तुअवीहि व मन फ़िल अज़ि जमीअन सुम्म युन्जीहि कल्ला०

‘मुज़रिम चाहेगा (किसी तरह) अपनी सज़ा के बदले में अपनी औलाद को, बीबी को, भाई को, यहां तक कि अपना सारा कुन्वा जिसके साथ रहता था, बल्कि ज़मीन में जो कुछ है वह सब (रिश्वत के तौर पर) दे दे और फिर उसे छुटकारा मिल जाए।’

(लेकिन) हरगिज़ ऐसा न होगा। क्रियामत के दिन अपने बदले में रिश्तेदार-नातेदार, माल व दीलत, बल्कि सारी ज़मीन देकर जान छुड़ाने तक के लिए इंसान राज़ी होगा, मगर वहां आमाल के सिवा कुछ पास भी न होगा, अजीज़ व रिश्तेदार क्यों किसी के बदले उस दिन की मुसीबत में पड़ना पसंद करेंगे। मान भी लीजिए अगर किसी के पास कुछ हो और कोई किसी की तरफ़ से अपनी जान को बदले में देने को तैयार भी हो जाए, तो कुबूल न होगा। सूरः आले इअ्रान में फ़रमाया—

إِنَّا لَنَدِينُ كَفُورًا وَمَا كُؤُواهُمْ كُفَّارًا فَكَفَّ يَغْبِلُ مِنْ أَحَدِهِمْ
مِلًّا الْأَنْفُسَ مِنْ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ

इन्नल्लज़ी न क फ़ रु व मातू व हुम कुफ़ारुन फ़लंयुक्ब ल मिन अ हदिहिम मिल्उल् अज़ि ज़ ह बंक्व ल विफ़तदा बिही०

१. सूरः जूहरफ़,

‘बेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और कुफ़ की हालत में मर गये सो उन में से किसी का जमीन भर कर सोना भी न लिया जाएगा भले ही अपनी जान के बदले देना चाहे।’

अल्लाहु अक्बर! कौसी परेशानी और मजबूरी और बेकसी की हालत होगी।

दुनिया में दोबारा आने की दख्वास्त

सूर: अलिफ-लाम-मीम सज्दा में फ़रमाया—

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصُرْنَا
وَسَمِعْنَا فَانْجِصْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا رَبَّنَا يُؤْمِنُونَ ۝

व लौ तरा इज़िल मुज़िमून नाकिसू रुऊसिहिम अन्दि रब्बिहिम रब्बना अन्सिरना व समिअना फ़ाजिअना नअमल सालिहिन इन्ना मूक्निन०
‘और अगर तुम वह वक़्त देखो जबकि मुज़िम अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाये हुए (कह रहे) होंगे कि ऐ हमारे माबूद! हमने देख लिया और सुन लिया, हमें आप दुनिया में लौटा दीजिए, हम नेक काम करेंगे, अब हमें यक़ीन आ गया, उस वक़्त अजीब मंज़र देखोगे।’

लेकिन एक तो, इन्हें दोबारा दुनिया से भेजा नहीं जाएगा और अगर भेज भी दिया जाए, तो फिर नाफ़रमानी करेंगे, चुनांचे फ़रमाया—

व लौ रुद्दू ल आहु लिमानुह अन्हु व इन्नहुम ल काज़िबून०

وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا هُمْ بِعَصِيَ ۝ وَالْمُكْرِكُونَ ۝ — अन्शाम

‘अगर उन्हें लौटा दिया जाए तो फिर वे गुनाह करेंगे, जिसे मना किया गया है, बेशक ये बड़े झूठे हैं।’

सरदारों पर लानत

सूर: सबा में फ़रमाया—

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْجَعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
يَقُولُونَ ۝ يٰۤاَلَيْسَ الَّذِيْنَ اسْتَضْعِفُوا لِّلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوا اَوْلٰٓآءُ اَنۡتُمْ لَكُنَّا
مُؤْمِنِيْنَ ۝ ۙ مَالِ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوا لِّلَّذِيْنَ اسْتَضْعِفُوا
اَنۡحٰنُ صَدَدۡنَا عَنْ الْهُدٰىۙ بَعۡدَ اِنۡجَاۙ كُنۡمُ بَلۡ كُنۡتُمْ مُّجۡرِمِيْنَ

मरने के बाद क्या होगा ?

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضْعِفُوا لِّلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوا بَلۡ كُنۡمُ الْاَوَّلِيْنَ وَالْآخِرِ
اِذۡ تَاۡمُرُوۡنَا اَنۡ تَكۡفُرَ بِاللّٰهِ وَتَكۡفُرَ كَمَا اُنۡتَ اٰدَا

व लौ तरा इजिज्जालिमून मोक्फू न अन्दि रब्बिहिम यज़िअु बाज़ुहुम इला बाज़ि-निल-कौल यक्लुल्लजी नस तुज़अिफू लिल्लजी नस्तक्वरू लौ ला अन्तुम ल कुन्ना मुअ्मिनीन० कालल्लजी नस्तक्वरू लिल्लनजीस्तु ज़अिफू अन्हनु सद्दनाकुम अनिल हुदा बअद इज्ज जा अ कुम बल कुन्तुम मुज़िमून व कालल्लजीनस्तु ज़अिफू लिल्लजी नस्तक्वरू बल मक्ल्लैल वअहारि इज्ज तअ्मुरून ना अन तुक्फुर बिल्लाहि व नज़्अ ल लह अन्दादा०

‘काश, तुम वह वक़्त देखो जब ज़ालिम अपने परवरदिगार के पास सड़े हुए एक दूसरे पर बात टाल रहे होंगे, जो लोग दुनिया में छोटे समझे जाते थे, उन लोगों से कहेंगे जो दुनिया में बड़े समझे जाते थे, अगर तुम न होते, तो हम यक़ीनन मोमिन होते। (यह सुनकर) बड़े लोग छोटों से कहेंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत से रोका था। जब तुम्हारे पास हिदायत आसी थी, बल्कि तुम खुद मुज़िम हुए। वे बड़ों को जवाब देंगे, बल्कि तुम्हारे रात-दिन के फ़रेब और चाल बाज़ियों ने ही (हमें) गुमराह किया), जब तुम हमें अल्लाह पाक के साथ कुफ़ करने और उसके साथ धारीक ठहराने का हुक्म देते थे।’

इन आयतों में बातिल के सरदारों और कुफ़ व शिर्क के लीडरों और उसकी बात पर चलने वालों की आपस में जो बहस क्रियामत के दिन अल्लाह के दरबार में होगी, उसको नक़ल फ़रमाया है। छोटे कहेंगे कि लीडरो! तुमने हमारा नास मारा और खुदा से बासी किया, लीडर कहेंगे कि हम ने कब तुमको कुफ़ व शिर्क पर मजबूर किया और कब तुम्हारा हाथ पकड़ कर रोका, तुमने खुद ही कुफ़ किया, खुद मुज़िम हो, छोटे कहेंगे कि तुमने ज़बरदस्ती तो मजबूर न किया था, मगर तुम्हारी चालों और धोखेबाज़ियों ने हमको हक़ मानने और अल्लाह के रसूलों की परबी से रोके रखा। सूर: साफ़ात में फ़रमाया—

وَأَقْبِلۡ بَعْضُهُمۡ عَلَىٰ بَعْضٍ يَّخَسِرُونَ ۚ قَالُوا اِنۡنَا كُنۡتُمْ تَاۡمُرُوۡنَا بِالۡاِيۡمٰنِ
تَاۡوَابِلۡ كَمَا تَكُوۡنُوۡا مُؤْمِنِيۡنَ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۭ بَلۡ كُنۡتُمْ
تَوۡمٰٓاۡنَ غٰلِيۡنَ ۝ فَحَقَّ عَلٰٓيۡنَا اَوَّلُ رِۡبَاۙ اِنَّا لَكُنۡمُۢمۡ فَاغُوۡنَ كُنۡمُۢمۡ اِنَّا كُنَّا غٰوِيۡنَ ۝

व अब ल वअजुहुम अला वअजिअय य साअलू त कालू इअकुम कुनुम तअतून ना अनिल यमीनि कालू बल लम तकून मुअमिनीन व मा का न लना अलकुम मित सुलतानिन बल कुनुम कौमन तागीन फ हक्क अलैना कौलु रब्बिना इअना लजाइकून फ अरबैनाकुम इन्ना कुन्ना गावीन०

‘और एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर जवाब व सवाल करने लगेंगे जो तावे (मातहत) थे, वे अपने लीडरों से कहेंगे कि हमारे पास तुम्हारा आना बहुत जोर से हुआ करता था। लीडर कहेंगे, बल्कि तुम खुद ही ईमान नहीं लाये थे और हमारा तुम पर कोई जोर तो था ही नहीं, बल्कि तुम खुद ही सरकशी किया करते थे, सो हम सब पर हमारे रब की बात साबित हो गयी कि हम को मजा चखना है, तो हमने तुम को बहकाया, हम खुद ही गुमराह थे।’

छोटे लोग और जनता अपने लीडरों और सरदारों पर इल्जाम रखेंगे कि तुमने हमारा नास खोया और बड़े जोर-शोर से तुम हमारे पास आते और तक्ररीरों (भाषणों)-तहरीरों (लेखों) से हम पर जोर डालते और बातिल (असत्य) की तरफ बुलाते और हक के मानने से रोकते थे। लीडर जवाब में कहेंगे कि हमारा तुम पर क्या जोर था जो तुम्हारे दिल में ईमान न घुसने देते, तुम खुद ही अबल व इसाफ़ की हद से निकल गए कि बे-अरज नसीहत करने वालों का कहना न माना और हमारे बहकावे में आये, समझ से और अंजाम को सोचते हुए काम लेते तो हमारी बातों पर कान धरते, खुदा के सच्चे पैगम्बरों और ज्ञानियों की बातों से क्यों मुंह मोड़ते? हम तो खुद गुमराह थे, गुमराह से और क्या उम्मीद हो सकती है? वह तो गुमराह ही करेगा, अब क्या बन सकता है, अब हम को और तुमको प्रजाब चखना है। आगे फरमाया—

فَأَنفَعُكُمْ رَسُولٌ فِي الدِّنَارِ مُشَرِّفُونَ إِنْ كُنَّا لَكُمْ نَفْعٌ بِالْجُورِ

إِنَّمَا كَانُوا إِذَا تَبَيَّنَ لَهُمْ لَأَكْرَاهِ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ وَيَقُولُونَ كَرَاهٍ

لَكَرَاهٍ كَرَاهٍ لَشَاعِرٍ مَجْنُونٍ ط

फ इन्नहुम यी म इजिन फिल अजाबि मुश्तरिकून इन्ना कजाल क नफअलु विल मुज्जिमीन इन्नहुम कानू इजा कील लहुम ला इला ह इल्ल-ल्लाहु यस्तविरू न व यकूलू न अ इन्ना लतारिकू आलिहतिना लिशाइरिम मजून०

‘सो वे सब उस दिन अजाब में शरीक हों, हम मुज्जिमीयों के साथ

ऐसा ही करते हैं, दुनिया में जब उनसे ‘ला इला ह इल्लल्लाहु’ कहा जाता तो धमंड करते और यों कहते थे, क्या हम छोड़ देंगे अपने माबूदों को एक शायर दीवाना के कहने से।’

लीडर हों या जनता, जिसने भी ‘ला इला ह इल्लल्लाहु’ से इंकार किया और खुदा को माबूद मानने को अपनी शान के खिलाफ़ समझा, और खुदा के रसूल को झूठलाया और शायर व दीवाना बताया, ऐसे लोग सब ही अजाब में डाले जाएंगे, यह न होगा कि सिर्फ़ गुमराह करने वाले लीडरों को अजाब हो और उनके रास्ते पर चलने वाली जनता छोड़ दी जाए।

लीडरों की बेजारी

सूर: बकर: में फरमाया—

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ يُؤْتُونَ الدِّينَ إِلَىٰ أَهْلِ الدِّنَارِ وَتَفَقَّطُوا
بِهِمُ الْأَسْبَابَ

इज तवर्रअल्लजी नत्तबिअू मिनल्लजी नत्तबअू व र अ वुल अजा ब व तकत्तअत बिहिमुल अस्बाबु०

‘जिनके कहने पर दूसरे चलते थे, जब वे इनसे साफ़ बेजारी जाहिर करेंगे जिन्होंने उनका कहा माना था और अजाब को देख लेंगे और उनके ताल्लुकात आपस में टूट जाएंगे।’

क्रियामत-के दिन गुमराही के लीडर और कुफ़ के सरदार अपने लोगों से बेजारी जाहिर करेंगे और कोई मदद न करेंगे और न मदद कर सकेंगे, उस वक़्त उनकी बात पर चलने वालों और उनकी कुफ़ व बातिल की तज्वीजों और प्रस्तावों पर हाथ उठाने वालों को लीडरों पर जो गुस्सा आएगा, जाहिर है। इसी आयत के आगे लोगों की परेशान और शमिदगी का जिक्र फरमाते हुए अल्लाह जल्ल शानुह ने फरमाया—

وَقَالَ الَّذِينَ يُتَّبَعُونَ لَوْ أَنَّا كُنَّا نَدْرِكُهُمْ كَمَا تَبَرَّأُوا إِلَيْهِمْ

كَذَلِكَ يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ عَلَىٰ مَا هُمْ بِجَارِينَ

مِنَ النَّارِ ۝

व कालल्लजी नत्त ब अू ली अन्न लना करतन फ न त वर्र अ मिन हुम

कमा तब रंऊ मिल्ना क जालि क युरीहिमुल्लाहु अग्रमालहुम ह स रातिन अलैहिम व मा हुम बिखारिजी न मिनन्नारि०

‘(और इन झूठे लीडरों के) लोग कहेंगे कि किसी तरह एक बार ज़रा हमको दुनिया में जाना मिल जाए, तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएं जैसा ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो गए और उनको दोज़ख़ से निकलना नसीब न होगा।’

कुरआन करीम ने साफ़ खोल कर मैदाने हशर के वाक़िए वयान फ़रमाये हैं। क्या ठिकाना है हमदर्दी और भलाई चाहने का। बद-क्रिस्मत हैं जो उसकी दावत पर कान नहीं धरते और उसकी खुर्ला निशानियों से नसीहत हासिल नहीं करते ?

मैदाने हशर में प्यारे नबी सल्ल० के बुलन्द मर्तबे का जहूर

‘शफ़ाअते कुबरा, मक़ामे महमूद,
उम्मतें मुहम्मदिया की बड़ाई

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशादि फ़रमाया कि क्रियामत के दिन आदम की तमाम औलाद का मैं सरदार हूंगा (यानी सरदार होना सब पर साफ़ हो जाएगा, गो हक़ीक़त में सरदार अब भी आप ही हैं) और मैं इस पर फ़ख़ू नहीं करता हूं (बल्कि यह वयान हक़ीक़त और नेमत का इज़हार है) और मेरे हाथ में हम्द का शंका होगा और मैं इस पर फ़ख़ू नहीं करता हूं और उस दिन हर बनी आदम और उनके अलावा सब नबी मेरे झंडे के नीचे होंगे और ज़मीन में सबसे पहले मैं जाहिर हूंगा।^१

दूसरी रिवायत में है कि आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब क्रियामत का दिन होगा तो मैं नबियों के आगे-आगे हूंगा और उन पर ख़तीब और शफ़ाअत करने वाला हूंगा, यह वरीर फ़ख़ू के वयान कर रहा हू।^१

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं

१. तिमिज़ी, २. ख़ुत्बा देने वाला, (वक्ता), ३. तिमिज़ी,

कि एक दावत में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ थे। एक दस्त (बकरी का) आपकी खिदमत में पेश किया गया, आपको दस्त पसन्द था। उसमें से आपने अपने मुबारक दांतों में थोड़ा-सा रखा और उस वक़्त इशादि फ़रमाया कि क्रियामत के दिन मैं सब इंसानों का सरदार हूंगा। तुम को मालूम है इसके (जाहिर होने) की क्या शक़ल होगी ? फिर खुद ही जवाब में इशादि फ़रमाया कि एक ही मैदान में अल्लाह तआला तमाम अगलों-पिछलों को जमा फ़रमाएंगे, देखने वाला सब को देखेगा और पुकारने वाला सब को सुनायेगा और सूरज उनसे क़रीब होगा, इसलिए लोगों को ऐसी घुटन और बे-चैनी होगी जो ताक़त और बर्दाश्त से बाहर होगी।

इस घुटन और बेचैनी की वजह से लोग (प्रापस में) कहेंगे कि जिस हाल और जिस मुसीबत में तुम हो, जाहिर है क्या किसी ऐसे (बुजुर्ग) शख्स को नहीं खोजते जो तुम्हारे रब के दरबार में सिफ़ारिश कर दे, फिर कुछ-कुछ से कहेंगे कि तुम्हारे बाप आदम इसके अहल हैं, उनसे अज़्र करो, चुनांचे उनके पास आकर कहेंगे कि ऐ आदम ! आप अबुल वशर^१ हैं, अल्लाह ने आपको अपने हाथ से पैदा फ़रमाया और अपनी रूढ़ आपके अंदर फूँकी और फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया और आप को जन्नत में ठहराया, क्या आप अपने रब से हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते ? आप देखते नहीं हैं, हम किस मुसीबत और परेशानी में हैं ? (हज़रत) आदम (प्रलैहिस्सलाम) फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि इससे पहले न कभी हुआ और न इसके बाद कभी हरगिज़ इतना गुस्सा होगा और यह हक़ीक़त है कि मेरे रब ने मुझे पेड़ (के पास जाने) से रोका था, जिसकी मुझ से नाफ़रमानी हो गयी। नफ़सी-नफ़सी-नफ़सो, (मुझे अपनी ही फ़िक्र है) तुम लोग मेरे अलावा किसी दूसरे के पास चले जाओ, ऐसा करो कि नूह के पास पहुंचो (और उनसे दरख़वास्त करो)। इसलिए लोग (हज़रत) नूह (प्रलैहिस्सलाम) के पास पहुंचेंगे और अज़्र करेंगे कि आप ज़मीन वालों की तरफ़ (कुपफ़ार को ईमान की दावत देने के लिए) सबसे पहले रसूल थे, अल्लाह ने आपको शुक्रगुज़ार बन्दा फ़रमाया है। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि हम किस मुसीबत में हैं और हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है ? क्या आप अपने रब के दरबार में हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते ? (हज़रत) नूह (प्रलैहिस्सलाम) जवाब में

१. इन्सानों के बाप,

फरमायेंगे, यकीन जानो मेरे रब को आज इतना गुस्सा है कि कभी ऐसा गुस्सा न इससे पहले हुआ और न हरगिज कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने अपनी क्रीम के लिए बद-दुआ की थी (मुझे इसपर पकड़े जाने का डर है) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, तुम लोग मेरे प्रलावा किसी और के पास पहुंच जाओ, ऐसा करो कि इब्राहीम के पास जाओ।

इसके बाद लोग (हजरत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास आएंगे और उनसे अर्ज करेंगे कि आप अल्लाह के नबी और जमीन वालों में से (चुने हुए) अल्लाह के दोस्त हैं, हमारे लिए अपने रब के सामने सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। आप देख ही रहे हैं कि हमारा क्या हाल बना हुआ है ? (हजरत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उनको जवाब देंगे, यकीन जानो, मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि न कभी ऐसा गुस्सा इससे पहले हुआ, न हरगिज कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने तीन झूठ बोले थे (गो दीनी मस्लहत और दीनी ज़रूरत से हुए थे, लेकिन ख़ौफ़ है कि कहीं मेरी पकड़ न हो जाए) यह फ़रमा कर उन तीन मौकों का जिक्र फ़रमाया, जिन में उनसे झूठ निकला था। (आखिर में हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमायेंगे) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, (तुम मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ) ऐसा करो कि मूसा के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग (हजरत) मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आएंगे और उनसे अर्ज करेंगे कि ऐ मूसा ! आप अल्लाह के रसूल हैं, आप को अल्लाह ने अपने पैग़ामों के ज़रिए और अपने साथ हमकलामी (बात करने) के ज़रिए लोगों पर फ़ज़ीलत दी। आप अपने रब के सामने हमारी सिफ़ारिश कर दीजिए, आप देख रहे हैं कि हमारा कैसा हाल बना हुआ है। (हजरत) मूसा (अलैहिस्सलाम) जवाब देंगे कि यकीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर गुस्सा है कि ऐसा गुस्सा इससे पहले न हुआ, न हरगिज इसके बाद कभी होगा, यह सच है कि मैंने एक शख्स को क़त्ल किया था, जिसके क़त्ल करने का (ख़ुदा की तरफ़ से) मुझे हुक्म न था।^१ नफ़्सी-

१. जिन तीन झूठों का जिक्र इस हदीस पाक में है, उनकी कैफ़ियत (अवस्था) ज़रूरत व मस्लहत दूसरी रिवायत में जिक्र हुई है, ऐसे मौकों पर झूठ बोलना मना नहीं है, लेकिन हजरत इब्राहीम खलीलुल्लाह अपने बुलंद मर्तबे की वजह से ख़ौफ़ करेंगे कि गो जायज़ था, मगर झूठ तो था। खलीलुल्लाह से उसका होना शायद पकड़ में आये, जिनके रुबे हैं सिवा, उनको सिवा मुश्किल है।

२. मूसा अलै० ने एक दिन देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं, एक

नफ़्सी-नफ़्सी, तुम लोग मेरे अलावा किसी और के पास जाओ। ऐसा करो कि ईसा अलै० के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग (हजरत) ईसा (अलैहिस्सलाम) के पास जाएंगे और उनसे अर्ज करेंगे कि ऐ ईसा ! आप अल्लाह के रसूल हैं और उसका कल्मा है, जिसे अल्लाह ने मर्यम तक पहुंचाया और अल्लाह की तरफ़ से रूह है। आपने ग़ह्वारा में लोगों से बात की (ये आप के फ़ज़ाइल हैं) अपने पालनहार के दरबार में हमारी सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। आप देख ही रहे हैं कि हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है ? वह फ़रमाएंगे कि यकीन जानो मेरे रब को आज इतना गुस्सा है कि ऐसा गुस्सा न इससे पहले हुआ, न हरगिज कभी इसके बाद होगा।^१

यहां पहुंच कर प्यारे नबी सल्ल० ने हजरत ईसा अहिस्सलाम की किसी 'भूल' का जिक्र नहीं फ़रमाया, जिसे याद करके वह सिफ़ारिश का उज़्र करेंगे (बल्कि इसके बाद यह फ़रमाया कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमायेंगे, नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (और यह फ़रमायेंगे कि) मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ, ऐसा करो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचो।

आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब मेरे पास लोग आयेंगे और कहेंगे कि ऐ मुहम्मद सल्ल० ! आप अल्लाह के रसूल हैं और नवियों में आखिरी नबी हैं और अल्लाह ने आप का सब कुछ वरुश दिया। अपने रब के दरबार में आप हमारे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए, आप देख ही रहे हैं कि हम किस बद-हाली में हैं।

इसलिए मैं रवाना हो जाऊंगा और अर्श के नीचे आकर अपने रब के लिए सज़्दा में पड़ जाऊंगा, फिर अल्लाह तआला मुझ पर अपनी

उनकी क्रीम का था और दूसरा दुश्मनों की क्रीम से था। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की क्रीम वाले ने उनसे मदद चाही, इसलिए आपने उस आदमी को एक घूसा मार दिया जो उनकी क्रीम वाले पर जुल्म कर रहा था, मारा तो था, सज़ा के लिए, तंबीह करने के लिए, मगर हुक्म ख़ुदा का ऐसा हुआ कि वह मर गया। हजरत मूसा अलै० शमिदा हुए, अल्लाह तआला से माफ़ी मांगी, अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया, इसी क्रिस्से की तरफ़ इशारा है।

१. दूसरी रिवायत में है कि इस मौके पर हजरत ईसा अलैहिस्सलाम शफ़ाफ़त न कर सकने की वजह यह बयान फ़रमाएंगे, अल्लाह से बरे मेरी इबादत की गयी।

वे तारीफें और वह बेहतरीन सना (गुण-गान) खोलेंगे जो मुझ से पहले किसी पर न खोली गयी थी, फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! सर उठाओ और मांगो, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा, सिफारिश कुबूल की जाएगी, चुनांचे मैं सर उठाऊंगा और (अल्लाह के दरबार में) अर्ज करूंगा कि ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फरमा, ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फरमा, ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फरमा, इस लिए मुझे इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं है, जन्नत के दरवाजों में से दाएं दरवाजे से दाखिल कर दो और उस दरवाजे के अलावा दूसरे दरवाजों में भी वे सामी हैं (यानी उनको यह भी अस्तियार है कि इस दरवाजे के अलावा दूसरे दरवाजों से दाखिल हो जाएं) इसके बाद आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि कसम उस जात की, जिसके कब्जे में मेरी जान है, जन्नत के दरवाजों (की इतनी बड़ी चौड़ाई है कि उन) के दोनों किनारों के दमियान जो फासला है, वह इतना लम्बा है कि जितना मक्का और हिज्र के दमियान का रास्ता है या (फरमाया कि जैसे) मक्का और बसरा के दमियान का रास्ता है।^१

दूसरी रिवायत में है (जिसे रिवायत करने वाले हजरत अनस रजियल्लाहु तआला अन्हु है) कि आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शफाअत का वाकिआ बयान फरमा कर यह आयत तिलावत फरमायी—

عَلَى أَنْ يَبْعَثَ رَبُّكَ مَقَامًا مَكْرُومًا

असा अय्यब् अ स क रब्बु क मक़ामम महमूदा०
(करीब है कि आप का रब आप को मक़ामे महमूद में खड़ा करेगा)

फिर फरमाया कि यह मक़ामे महमूद है जिसका वायदा (अल्लाह तआला ने) तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से किया है।^१

उम्मतें मुहम्मदिया की पहचान

हजरत अबुद्दुर्दा रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि आंहुजरत संयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक आदमी ने पूछा, ऐ

१. अत्तर्तीब बत्तर्हीब (बुखारी व मुस्लिम) २. बुखारी व मुस्लिम

अल्लाह के रसूल! आप (कियामत के दिन) सारी उम्मतों के दमियान जो (हजरत) नूह (अलैहिस्सलाम) की उम्मत से ले कर आप की उम्मत तक दुनिया में आयी थी, अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे? इसके जवाब में आंहुजरत संयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि वुजू के असर से उनके चेहरे रोशन होंगे और हाथ-पांव सफ़ेद होंगे, इनके अलावा और कोई इस हाल में न होगा और मैं उनको इस तरह भी पहचानूंगा कि उनके आमालनामे उनके दाहिने हाथों में दिए जाएंगे और इस तरह भी उनको पहचानूंगा कि उनकी जुरियत उनके आगे दोड़ती होगी।^१

हौजे कौसर

हजर के मंदान में बड़ी भारी तायदाद में होज होंगे। आंहुजरत संयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हर नबी का एक होज होगा और सब नबी आपस में इस पर फ़व्व करेंगे कि किस के पास पीने वाले ज्यादा आते हैं (हर नबी के होज से उसके उम्मती पिएंगे) और मैं उम्मीद करता हूं कि सब से ज्यादा लोग मेरे पास पीने के लिए आएंगे।^१

हजरत अनस रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि आप क़िया-मत के दिन मेरे लिए सिफारिश फरमा दें। आप ने इर्शाद फरमाया कि

१. कुरआन शरीफ में है कि जिनके आमालनामे दाहिने हाथों में दिए जाएंगे, उनसे आसान हिसाब होगा और अपने बाल-बच्चों में खुश-खुश लौटकर जाएंगे, इसमें उम्मतें मुहम्मदिया को खास नहीं किया गया, इसलिए इस हदीस शरीफ में जो यह फरमाया कि मैं अपनी उम्मत को इस तरह भी पहचानूंगा कि उनके आमालनामे सीधे हाथों से दिए जाएंगे तो इसके बारे में कुछ उलेमा ने फरमाया कि दाहिने हाथों में किसी ऐसी खास शकल से उनको आमालनामे मिलेंगे जो दूसरी उम्मतों के साथ न होगा या यह समझो कि उम्मतें मुहम्मदिया को सबसे पहले दिए जाएंगे। (हाशिया मिश्कात)

२. आल-भीलाद, ३. मिश्कात, किजाबुत्तहारत,

४. क्योंकि उम्मतें मुहम्मदिया (अला साहिबहस्सलानु बस्सलामु) सब उम्मतों से ज्यादा होगी। —तिमिजी,

हां, मैं कर दूंगा। मैंने अर्ज किया, आप को कहां तलाश करूं? फ़रमाया पहले पुल सिरात पर तलाश करना। मैंने अर्ज किया, वहां आपसे मुलाकात न हो तो कहां तलाश करूं? फ़रमाया, आमाल की तराजू के पास तलाश करना! मैंने अर्ज किया, वहां भी मुलाकात न हो तो कहाँ हाज़िर हूँ? फ़रमाया होज़ पर तलाश करना, इन तीनों जगहों में से किसी एक जगह जरूर मिल जाऊंगा।

हजरत मुहम्मद सल्ल० के होज़ की ख़बियां

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि मेरे होज़ की लम्बाई-चौड़ाई इतनी ज्यादा है कि उसके एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाने के लिए एक महीने की मुदत चाहिए और उसके कोने बराबर हैं (यानी वह चौकोर है, लम्बाई-चौड़ाई दोनों बराबर हैं) उसका पानी दूध से ज्यादा सफ़ेद है और उसकी खुशबू मुस्क से ज्यादा उम्दा है और उसके लोटे इतने हैं जितने आसमान के सितारे हैं, जो उसमें पियेगा, कभी प्यास न होगा।

हजरत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि देशक मेरा होज़ इतना लंबा-चौड़ा है कि उसके दोनों किनारों के दमियान उस फ़ासले से भी ज्यादा फ़ासला है जो एला से अदन तक है, सच जानो वह बर्फ़ से ज्यादा सफ़ेद और शहद से ज्यादा मीठा है, जो दूध में मिला हुआ हो और उसके बर्तन सितारों की तायदाद से ज्यादा हैं और मैं (दूसरी उम्मतों) को अपने होज़ पर आने से हटाऊंगा, जैसे (दुनिया में) कोई शख्स दूसरों के ऊंटों को अपने होज़ से हटाता है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस दिन आप हमको पहचानते होंगे? इशार्द फ़रमाया, हां, (जरूर पहचान लूंगा, इसलिए कि) तुम्हारी एक निशानी होगी जो और किसी उम्मत की न होगी और वह यह कि तुम होज़ पर मेरे पास इस हाल में आओगे कि बुजू के आसार से तुम्हारे चेहरे रोशन होंगे और हाथ-पांव सफ़ेद होंगे।

दूसरी रिवायत में यह भी है कि आपने इशार्द फ़रमाया कि आसमान

के तारों की तायदाद में होज़ के अंदर सोने-चांदी के लोटे नज़र आ रहे होंगे। यह भी इशार्द फ़रमाया कि इस होज़ में दो परनाले गिर रहे होंगे जो जन्नत (की नहर से) उसके पानी में बढ़ती कर रहे होंगे, एक परनाला सोने का और दूसरा चांदी का होगा।

सबसे पहले होज़ पर पहुंचने वाले

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि मेरा होज़ इतना बड़ा है जितना अदन और अमान के दमियान फ़ासला है, बर्फ़ से ज्यादा ठंडा और शहद से ज्यादा मीठा है और मुस्क से बेहतर उसकी खुशबू है। उसके प्याले आसमान के सितारों से भी ज्यादा हैं, जो उसमें से एक बार पी लेगा, उसके बाद कभी भी प्यास न होगा। सबसे पहले पीने के लिए उस पर मुहाज़िर फ़ुकरा (मुहताज़) आएंगे। किसी ने (मोज़ूद लोगों में से) सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! उनका हाल बता दीजिए, ये वह लोग हैं (दुनिया में) जिन के सरो के बाल बिखरे हुए और चेहरे (भूख, मेहनत व थकन की वजह से) बदले होते थे। इनके लिए (बादशाहों और हाकिमों) के दरवाज़े नहीं खोले जाते थे और अच्छी औरतें इनके निकाह में नहीं दी जाती थीं और (इनके मामलों की ख़ूबी का यह हाल था कि) इनके जिम्मे जो हक़ (किसी का) होता था तो सब चुका देते थे और इनका जो (हक़ किसी पर) होता था तो पूरा न लेते थे (बल्कि थोड़ा बहुत) छोड़ देते थे।

यानी दुनिया में उनकी बदहाली और तंगी का यह हाल था कि बाल सुधारने और कपड़े साफ़ रखने की ताक़त भी न थी और जाहिर

१. मुस्लिम, २. मुस्लिम,

३. होज़ की लम्बाई-चौड़ाई कई तरह इशार्द फ़रमायी है, कहीं एक माह की दूरी उसके किनारों के दमियान फ़रमाया, कहीं एला और अदन के बीच की दूरी से इसे नापा, कहीं कुछ और फ़रमाया। इन मिसालों का मक़सद होज़ की लम्बाई-चौड़ाई को समझाना है, नापी हुई दूरी बताना मुराद नहीं है। मोज़ूद लोगों के हिसाब से वह दूरी ज़िक्र फ़रमायी है जिसे वे समझ सकते थे। खुलासा तमाम रिवायतों का यह है कि इस होज़ की दूरी संकड़ों मील है।

४. तर्ग़ीब व तर्ह़ीब,

है संवारने का उनको ऐसा खास ध्यान भी न था कि बनाव-सिगार के चों चलों में वक्त गुजारते और आखिरत से गफलत बरतते, उनको दुनिया में फ़िक्र-मुसीबतें इस तरह घेरी रहती थीं कि चेहरों पर उनका असर जाहिर था, दुनिया वाले उनको ऐसा नीच समझते थे कि मज्लिसों, जश्नों और शाही दरबारों में उनको दावत देकर बुलाना तो दूर की बात उनके लिए ऐसे मौकों में दरवाजे ही न खोले जाते थे और वे औरतें जो नाज़ व नेमत में पली थीं, इन खुदा के खास बन्दों के निकाहों में नहीं दी जाती थीं, मगर आखिरत में उनका यह रुत्बा होगा कि हौज़ कौसर पर सबसे पहले पहुंचेंगे, उनको छोटा समझने वाले उनके बाद उस पाक हौज़ से पी सकेंगे (बशर्त कि ईमान वाले और उसमें से पीने के लायक हो)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के सामने आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह इशार्द सुनाया गया कि हौज़े कौसर पर सबसे पहले फ़ुकरा मुहाज़िरीन पहुंचेंगे जिनके सर बिखरे हुए और कपड़े मैले रहते थे और जिनसे अच्छी औरतों के निकाह न किये जाते थे और जिनके लिए दरवाजे नहीं खोले जाते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इशार्द को सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (घबरा गये) और बे-अस्तियार फ़रमाया कि मैं तो ऐसा नहीं हूँ। मेरे निकाह में अब्दुल मलिक की बेटी फ़ातिमा (शाहजादी) है और मेरे लिए दरवाजे खोले जाते हैं, अब तो ज़रूर ही ऐसा करूंगा कि उस वक्त तक सर को न धोऊंगा जब तक बाल बिखर न जाया करेंगे और न अपने बदन का कपड़ा उस वक्त तक धोऊंगा जब तक मैला न हो जाया करेगा।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि वक्त के खलीफ़ा और इस्लामी सरकार के चलाने वाले थे। आखिरत की फ़िक्र के उनके बड़े-बड़े क़िस्से एतबार वाली किताबों में मिलते हैं।

हौज़े कौसर से हटाये जाने वाले

हज़रत सल्ल बिन साद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि यक़ीन जानो (क्रियामत के दिन) हौज़ पर तुम्हारा मेरा सामना होगा (यानी मैं तुमको पिलाने के लिए पहले पहुंचा हुआ हूंगा)। जो मेरे पास

१. तर्ग़ीब व तर्हीब,

से होकर गुज़रेगा, पी लेगा और जो (मेरे पास हौज़ से) पी लेगा, कभी प्यासा न होगा, फिर इशार्द फ़रमाया, ऐसा ज़रूर होगा कि पीने के लिए मेरे पास ऐसे लोग आएंगे, जिनको मैं पहचानता हूंगा और वे मुझे पहचानते होंगे, फिर (उनको मुझ तक पहुंचने न दिया जाएगा, बल्कि) मेरे और उनके दमियान झाड़ लगा दी जाएगी (और वे पीने से महरूम रह जाएंगे, मैं कहूंगा, ये तो मेरे आदमी हैं (इनको आने दिया जाए) इस पर (मुझ से) कहा जाएगा कि आप नहीं जानते हैं कि आपके बाद उन्होंने क्या नयी चीज़ें निकाली थीं, यह सुनकर मैं कहूंगा दूर हों, जिन्होंने मेरे बाद अदल-बदल किया।

आह ! दीन में पच्चर लगाने वालों का उस वक्त कैसा बुरा हाल होगा जबकि क्रियामत के दिन प्यास से बेताब और मुसीबत से परेशान होंगे और हौज़े कौसर के करीब पहुंचा कर धुत्कार दिये जाएंगे और प्यारे नबी सल्ल० उनकी 'नयी बातों' का हाल सुनकर 'दूर-दूर' फ़रमा कर फ़टकार देंगे।

कुरआन व हदीस में जो कुछ आया है और जो हदीसों और आयतों से निकलता है, उसी पर चलने में भलाई और कामियाबी है, लोगों ने हज़ारों बिद्अतें निकाल रखी हैं और दीन में अदल-बदल कर रखा है, जिनसे उनकी दुनिया भी चलती है और नपस को मज़ा भी आता है और अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग बिद्अतें रिवाज पा गयी हैं, ऐसे लोगों को समझाया जाता है तो उल्टा समझाने वाले ही को बुरा कहते हैं। हम सीधी और मोटी सी एक बात कहे देते हैं कि जो कोई काम करना हो, आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जैसे फ़रमाया, इस तरह करो और जिस तरह आपने किया उसी तरह अमल करो।

दुनियादार पीर-फ़कीर या मौलवी-मुल्ला अगर कहें कि पलां काम में सवाव है और अच्छा है तो उनसे सबूत मांगो और पूछो कि बताओ आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया है या नहीं ? और हदीस शरीफ़ की किस किताब में लिखा है कि आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ऐसा करना पसंद था या आपने इसको अंजाम दिया है।

मरने-जीने और व्याह-शादी में औरतों ने और दुनियादार पीरों-फ़कीरों ने बड़ी बिद्अतें और ग़ैर शरीफ़ी रस्में निकाल रखी हैं, सोयम,

१. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, २. मिशकात शरीफ़, ३. मिशकात,

चेहलूम, कन्न पर चादर, कन्न का गुस्ल, संदल, उर्स, पक्की कन्न और इसी तरह की बहुत सी बातें जो कन्नों पर होती हैं, विद्वत् हैं, ऐसा करने वाले अंजाम सोच लें, होजे कौसर से हटाये जाने को तैयार रहें और कन्न का तवाफ़ और कन्न को या पीर को सज्दा यह तो शिकं है, जो गुनाह में विद्वत् से कहीं ज्यादा बड़ा हुआ है।

अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जायेंगे

हजरत अबुद्दुर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्, फ़रमाते हैं कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि तुम क्रियामत के दिन अपने नामों के साथ और अपने बापों के नामों के साथ बुलाये जाओगे, इसलिए तुम अपने नाम अच्छे रखो। आम तौर से मशहूर है कि क्रियामत के दिन लोग अपनी माओं के नामों के साथ पुकारे जाएंगे, यह सही नहीं है, बनायी हुई बात है।

क्रियामत बुलन्द और पस्त करने वाली होगी

क्रियामत के वारे में अल्लाह का इशदि है—

إِذَا نَفَخَ الْوَاخِةُ لَيْسَ وَتَقْبَحُ كَاذِبَةً خَافِضَةً وَارِغَةً

(सूरा वाह)

इजा व क अतिल वाकिअतु लै स लिबक् अतिहा काजिवनुन खाफ़ि-जतुरा फ़िअः—

—सूरः वाकिअः

‘जिस वक्त होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी, नहीं है उसके होने में कुछ झूठ, वह पस्त करने वाली है और बुलन्द करने वाली।’

क्रियामत के दिन अमल के मुताबिक़ ख़ुबों में फ़र्क़ होगा और

१. अहमद, अबूदाऊद,

२. इमाम बुखारी ने अपनी जामे सहीह में बाव ‘मा युद्अन्नामु यौमल क्रियामति बि आ बा इहिम’ कायम करके सही हदीस से साबित किया है कि क्रियामत के दिन बापों के नाम से बुलावा होगा। मअलिमुत्तंजील में माओं के नामों के साथ पुकारने की तीन वजहें बतायी गयी हैं, लेकिन ये सब मन गढ़त हैं जो सिफ़ रिवायत के मशहूर होने की वजह से तजवीज़ किये गये हैं, चुनावे साहिबे मअलिमुत्तंजील ने तीनों वजहों का जिक्र करके फ़रमाया है कि सही हदीस इस तर्ज़ के खिलाफ़ है।

छोटाई-बड़ाई का मेयार नेकी-बदी होगा। यहां दुनिया में जो छोटा-बड़ा होने के मेयार हैं यहीं रह जाएंगे बड़े-बड़े घमंडी, जो दुनिया में बहुत घमंडी और सर बुलंद समझे जाते थे, क्रियामत के दिन दोख़ख के गहरे गहरे में ढकेल दिए जाएंगे और उनकी बड़ाई और चौधराहट धूल में मिल जाएगी, वहां ये मद्द कहेँगे—

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَا رَبَّيْتُ هَٰذَا H

मा अस्ना अन्नी मालियः ह ल क अन्नी सुल्तानियः—०

‘मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, जाती रही मेरी हुकूमत।’

और यह कहना और हाथ मलना कुछ काम न आयेगा, और बहुत से लोग ऐसे होंगे जो दुनिया में नर्म बनकर रहते थे, लोग उनको नीचता की नज़र से देखते थे और नीची जात का समझते थे और उनको अपनी बड़ाई का ख्याल न था लेकिन चूंकि उन्होंने अल्लाह से अपना ताल्लुक सही रखा और अल्लाह के हुक्मों पर अमल करते रहे, इसलिए क्रियामत के दिन उनमें से कोई मुश्क के टीले पर बैठा होगा, कोई नूर के मिबर पर होगा, अर्श के साए में मजे करते होंगे, फिर बहुत से तो बे-हिसाब और बहुत से तो हिसाब के बाद जन्नत में दाखिल होंगे और उसके साफ़-सुथरे कोठों में चैन से रहेंगे—

उलाइ क युज्जौ न ल गुफ़्त विमा स व रू व यलक्त्रौ न फ़ीहा तहीयतव्व सलामा ०

सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि खबरदार! बहुत से लोग जो दुनिया में खाते-पीते और नेमतों में रहने वाले हैं, आखिरत में नंगे-भूखे होंगे, फिर फ़रमाया कि खबरदार! दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपने को इफ़ज़तदार बना रहे हैं और हकीकत में वे अपने को ज़लील कर रहे हैं (जिसका पता आखिरत में चल चाएगा) और बहुत से लोग दुनिया में ऐसे हैं जो (नर्मी की वजह से) अपने को ज़लील कर रहे हैं। सच तो यह है कि वे अपने को इफ़ज़तदार बना रहे हैं (क्योंकि उनकी नर्मी उनको जन्नत में पहुंचा देगी)।

हजारत अबू हुदैर रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जरूर ऐसा होगा कि क्रियामत के दिन (भारी भरकम) मोटा-ताजा आदमी आयेगा, जिसका वजन अल्लाह के नज़दीक मच्छर के बराबर भी न होगा यानी उसकी हैसियत और पोज़ीशन उस दिन न होगी) फिर आपने

१. तर्गिब व तर्हीब,

फरमाया कि तुम चाहो तो (मेरी बात की तस्दीक में) इस आयत को पढ़ लो—

لَا تَقْدِرُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَرَثَةٌ

फ़ ला नुक्कीमु लहुम यौमल क़ियामति वर्रता०

(तो हम क़ियामत के दिन उनके लिए ज़रा वज़न भी कायम न करेंगे।)

आज दुनिया में बहुत से आक्रा हैं, जिनके नौकर-चाकर और खादिम हैं। इन नौकरों को गालियाँ देते हैं, मारते-पीटते हैं और बहुत से लोग दीलत या ओहदे के नशे में कम-हैसियत लोगों से बेगारें लेते हैं और बात-बात में लात-धूँसा दिखाते हैं, लेकिन क़ियामत का दिन सही फ़ंसले और वाकई इंसान का होगा, वहाँ बहुत से नौकर-चाकर और कम हैसियत लोग बुलन्द हो जाएंगे और घमंड करने वाले, दीलत व पोज़ीशन वाले, जो खुदा के बागी थे, पस्त हो जाएंगे, उन पर ज़िल्लत सवार होगी और दोख़ का रास्ता देखेंगे। क्या हाल बनेगा उन लोगों का जो बड़ाई के लिए एलेक्शन पर एलेक्शन लड़ चले जाते हैं और बड़ाई की उम्मीद में या बड़ाई मिलने के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों के खिलाफ़ करते रहते हैं, ऐसे लोग अपना अज़ाम सोच लें।

नेमतों का हाल

क़ियामत के दिन नेमतों का सवाल होगा। क़ुरआन शरीफ़ में इशार्द है—

ثُمَّ لَنَسْأَلَنَّهُ يَوْمَئِذٍ عَنْ تَعْمِيرِهِ

सुम्म ल तुस्अ लुन्न यौ म इज़िन अनिअईम०

(फिर अल-वत्ता ज़रूर तुम से उस दिन नेमतों की पूछ होगी।)

हज़रत अबू हुदैर रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि विला शुवहा क़ियामत के दिन नेमतों में से सब से पहले (तन्दुरुस्ती और ठंडे पानी का सवाल होगा और) यों पूछा जाएगा कि क्या हमने तेरे जिस्म को ठीक न रखा था और क्या तुझे हमने ठंडे पानी से तर नहीं किया था।

१. तिमिज़ी शरीफ़,

अल्लाह तआला ने जो कुछ भी इनायत फरमाया है, वग़ैर किसी हक़ के दिया है, उनको यह हक़ है कि अपनी नेमत के बारे में सवाल करें और यह पकड़ करें कि मेरी नेमतों में तुम रहे, बोलो, इन नेमतों का क्या अद़ा किया और मेरी इबादत में कितना लगे और इन नेमतों के इस्तेमाल के बदले क्या लेकर आये ? यह सवाल बड़ा ही कठिन होगा। मुबारक हैं वे लोग जो खुदा की नेमतों के शुक्रिए में नेक अमल करते रहते हैं और आखिरत की पृष्ठ से कांपते हैं, इसके खिलाफ़ वे बद-क़िस्मत हैं जो अल्लाह की नेमतों में पलते-बढ़ते हैं और नेमतों में डूबे हुए हैं, लेकिन खुदा की तरफ़ उनका ज़रा ध्यान नहीं और खुदा के सामने झुकने का ज़रा ख्याल नहीं ! अल्लाह तआला फी अनगिनत नेमतें हैं। क़ुरआन मजीद में इशार्द है—

وَأَن تَعْلُوا زَاغِمَةً وَاللَّهُ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ

व इन तअुदु निअमतल्लाहि ला तुहसूहा

(अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनोगे, तो गिन नहीं सकते।)

फिर साथ ही यह भी फरमाया—

إِنَّ الْإِنْسَانَ كَذَلُّومٌ كَفَّارٌ

इन्नल इन्सा न ल जल्लुम कफ़फ़ार०

(बिला शुवहा इन्सान बड़ा जालिम (और) ना-शुका है।)

बिला शुवहा यह इंसान की बड़ी नादानी और जुल्म है कि मख़लूक के ज़रा से भी एहसान का भी शुक्रिया अद़ा करता है और जिससे कुछ मिलता है, उससे दक़ना है और उसके सामने बा-अदव खड़ा होता है, हालांकि ये देने वाले मुफ़्त नहीं देते, बल्कि किसी काम के बदले या आगे किसी काम के मिलने की उम्मीद में देते-दिलाते हैं। अल्लाह तआला, पैदा करने, वाले मालिक, गनी और गनी बनाने वाले हैं, वे वग़ैर किसी शरज़ के देते हैं, लेकिन उनके हुक्मों पर चलने और उनके आगे सज्दा करने से इंसान भागता-फिरता है, यह बड़ी बद-क़िस्मती है। अल्लाह की नेमतों को कोई कहां तक गिनेगा, जो नेमत है हर एक का मुहताज है, एक-बदन की सलामती और तन्दुरुस्ती ही को ले लीजिए, कौसी बड़ी नेमत है, जब प्यास लगेगी है तो गटा गटा ठंडा पानी पी जाते हैं, यह पानी किसने पैदा किया है ? इस पैदा करने वाले के हुक्मों पर चलने और शुक्रगुज़ार बनना बनने की भी फ़िक्र है या नहीं ? यह गौर करने की बात है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के क़दम (हिमाव की जगह

से) न हट सकेंगे, जब तक कि उससे पांच चीजों का सवाल न हो जाएगा—

१. रश्म का सवाल होगा कि किन चीजों में खत्म कर दी?
२. जवानी का सवाल होगा कि कहां बर्बाद कर दी?
३. माल का सवाल होगा कि कहां से कमाया?
४. और कहां खर्च किया?

५. इल्म का सवाल होगा कि (दीन और दीनियात का) जो इल्म था उस पर क्या अमल किया?

हजरत अनसर रजियल्लाहु तश्आला अन्हु ने फरमाया कि आहज़रत सयदे आलम सल्लल्लाहु तश्आला अलैहि व सल्लम ने इशादि फरमाया कि क्रियामत के दिन इंसान के तीन दफ्तर होंगे। एक दफ्तर में उसके नेक अमल लिखे होंगे, दूसरे दफ्तर में उसके गुनाह दर्ज होंगे और एक दफ्तर में अल्लाह की वे नेमतें दर्ज होंगी जो उसको खुदा की तरफ से दुनिया में दी गयी थीं। अल्लाह अज़्ज व जल्ल सब से छोटी नेमत से फरमायेंगे कि अपनी क़ीमत उसके नेक अमल में से ले ले, चुनांचे वह नेमत उसके तमाम नेक अमल को अपनी क़ीमत में लगा लेगी और इसके बाद अर्ज़ करेगी कि (ऐ रब!) आप की इज़्ज़त की क़सम! अभी मैंने पूरी क़ीमत वसूल नहीं की है। अब इसके बाद गुनाह वाक़ी रहे और नेमतें भी वाक़ी रहीं (जिन की क़ीमत अदा नहीं हुई है) रहे नेक अमल! सो वे सब खत्म हो चुके, क्योंकि सबसे छोटी नेमत अपनी क़ीमत में तमाम नेक अमल को लगा चुकी है, पस जब अल्लाह तश्आला किसी बन्दे पर रहम करना चाहेंगे (यानी मरिफ़रत फ़रमा कर जन्नत अता फ़रमाना चाहेंगे) तो फ़रमायेंगे कि ऐ मेरे बन्दे! मैंने तेरी नेकियों को बढ़ा दिया और तेरे गुनाहों से आखें बचायीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि शायद आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर खुदा-ए-पाक का इशादि गरामी नक़ल फ़रमाते हुए यह भी फ़रमाया कि मैंने तुझे अपनी नेमतें (यों ही बग़ैर किसी बदले में) बख़्श दीं।

हजरत अनसर रजियल्लाहु तश्आला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशादि फ़रमाया कि क्रियामत के रोज़ इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (बे-हक़ीक़त और बे-हैसियत होने की हालत में) लाया जाएगा फिर अल्लाह के सामने खड़ा कर दिया

१. तिमिज़ी शरीफ़, २. तर्गीब अनिल बख़्शार,

जाएगा। अल्लाह तश्आला फ़रमायेंगे कि मैंने तुझे दिया और नेमतों से माला माल किया, तू ने क्या किया? वह जवाब देगा कि ऐ रब! मैंने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमा कर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था, उससे बहुत ज़्यादा बढ़ाकर छोड़ आया हूँ, इसलिए आप मुझे इज़ाज़त दीजिए, मैं सारा आपके दरबार में लाकर हाज़िर कर देता हूँ। अल्लाह का इशादि होगा (यहां से वापस जाने का क़ानून नहीं है) जो पहले से यहां भेजा था वह दिखाओ। इस फ़रमान के जवाब में वह फिर वही कहेगा कि ऐ रब! मैंने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमा कर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था उससे बहुत ज़्यादा बढ़ा कर छोड़ आया, पस मुझे वापस भेज दिए, मैं सारा माल लाकर आपके दरबार में हाज़िर कर देता हूँ।

ख़ुलासा यह कि वह यही जवाब देगा और चूँकि कुछ पहले से वहां के लिए इस दुनिया से न भेजा था, इसलिए वह नतीजे के तौर पर ऐसा शख्स निकलेगा जिसने ज़रा भलाई (अपने लिए) पहले से न भेजी थी, चुनांचे उसको दोज़ख़ की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा।

पैग़म्बरों से सवाल

क़ुरआन शरीफ़ में इशादि है—

كَانَ لِكُلِّ نَبِيٍّ مِّنْكُمْ نَسِيبٌ مِّمَّا كَسَبَتْ اَيْدِيكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا لَعْنَةٌ اَوْسَعُ (اورات)

फ़ ल नस्अल न्न ललज़ी न उसिल इलैहिम व ल नस्अलन्नल मुसलीन०

—सूर: आराफ़

'सो हम को ज़रूर पूछना है उन से जिनके पास पैग़म्बर भेजे गये और ज़रूर पूछना है पैग़म्बरों से।'

इसकी तशरीह (व्याख्या) दूसरी आयतों में इस तरह फ़रमायी—

وَكُلُّكُمْ لِرَبِّكُمْ كَافٍ مَّا اَرْسَلْنَا مِنْكُمْ رُسُلًا فَصَبَّحْتَ عَلَيْهِمُ الْاَنْبَاءُ

كُلُّكُمْ لِرَبِّكُمْ كَافٍ مَّا اَرْسَلْنَا مِنْكُمْ رُسُلًا فَصَبَّحْتَ عَلَيْهِمُ الْاَنْبَاءُ

व यो म युनादीहिम फ़ यकूलु मा ज़ा अज़वतुमुल मुसलीन फ़ अमियत अलैहिमुल अंबाउ यो म इजिन फ़हुम ला य त सा अलून०

—सूर: क़सस, पारा, २०

१. तिमिज़ी शरीफ़,

‘और जिस दिन उन से पुकार कर पूछेगा कि तुमने पैगम्बरों को क्या जवाब दिया, सो उस दिन उन से सब मजामीन गुम हो जाएंगे, पस वे आपस में भी पूछ-पाछ न कर सकेंगे।’

यानी रिसालत के बारे में सवाल होगा कि तुम पैगम्बरों के समझाने पर समझे या नहीं ? पैगम्बरों को तुम ने क्या जवाब दिया ?

इस सवाल का कोई जवाब न बन पड़ेगा।

दूसरी जगह इर्शाद है—

يَوْمَ يَجْعَلُ اللَّهُ الْوَسْلَ قَيْسُونَ مَاذَا أَجَبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِنَّكَ
أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ (مائدة)

यो म यजूम उल्लाहुर् सुल फ यकू लु मा जा उजिबुतुम कालू ला अिल्म लना इन्न क अन्त अल्लामुल गुयूबि० —माइदः पारा ७

‘जिस दिन अल्लाह तआला जमा फरमायेंगे सब पैगम्बरों को फिर सवाल फरमायेंगे कि तुम को क्या जवाब मिला। वे कहेंगे हम को खबर नहीं ! बेशक आप छिपी बातों के जानने वाले हैं।’

यह सवाल अबिया किराम अल्लहिमुस्सलानु वस्सलामु से उनकी उम्मतों के सामने होगा कि जब तुम उनके पास हक की दावत ले गये तो उन्होंने क्या जवाब दिया। उस वक्त अल्लाह की वड़ाई जाहिर होगी, उसके क्रहर से सब डर रहे होंगे, वे-इ-तिहा डर की वजह से अल्लाह तआला के सामने जवाब में ‘ला इल्म लना’ (हमको कुछ खबर नहीं) से ज्यादा कुछ न कर सकेंगे।

सूरः निसा में फरमाया—

كَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ
شَهِيدًا

फ कै फ इजा जिअना मिन कुल्लि उम्मतिन विशहीदिब् जिअना वि क अला हा उलाइ शहीदा०

‘फिर उस वक्त क्या हाल होगा, जब बुलाएंगे हम हर उम्मत में से (उसका) हाल बताने वाला और तुमको उन (लोगों) के मुताल्लिक गवाही देने वाला बनाकर लाएंगे।’

इससे हर उम्मत का नबी और हर जमाने के नेक और मोतबर लोग मुराद हैं कि वह क्रियामत के दिन लोगों की ना-फरमानी और फरमा-बरदारी बयान करेंगे और सबके हालात की गवाही देंगे, यह जो फरमाया, ‘व जिअना वि क अलाहा उलाइ शहीदा०’ (कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु

तआला अल्लहि व सल्लम तुमको उनके मुताल्लिक देने गवाही वाला बना कर लाएंगे) इसका मतलब यह है कि दूसरे नबियों की तरह आप भी अपनी उम्मत के हालात व आमाल के बारे में गवाही देंगे और यह भी हो सकता है कि ‘हा उलाइ’ का इशारा नबियों की तरफ हो, जिसका मतलब यह होगा कि सय्यदे आलम हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्लहि व सल्लम हजरत अबिया-ए-किराम की सच्चाई पर गवाही देंगे, जब कि उनकी उम्मतें उनको झूठा बताएंगी। एक बात यह भी हो सकती है कि ‘हा उलाइ’ का इशारा काफिरों की तरफ हो, जिनका जिक्र पिछली आयत ‘योम इजिय्य वददु ल्लजी न क फ रू’ में हो चुका है। इस शकल में मतलब यह होगा कि जिस तरह पिछले नबी अपनी उम्मत के फासिकों व काफिरों के फिस्क व कुफ़ की गवाही देंगे, ऐसे ही आप भी ऐ मुहम्मद ! इनकी वद-आमाली पर गवाह बनेंगे, जिससे उनकी खराबी व बुराई और ज्यादा साबित होगी।

फरिश्तों से खिताब

सूरः सबा में इर्शाद फरमाया—

وَيَوْمَ يُنْفَخُ سُورَةُ الْجِبْرِائِلَ قُلُوبُ الْوَالِدِ وَالْكَافِرِ
يُضْطَرُّونَ

व यो म यहशुरु हुम जमीअन मुम्म यकूलु लिल मलाइकति अ हाउलाइ इय्याकुम कानू यअ-बुदू न०

‘और जिस दिन (अल्लाह तआला) जमा फरमायेगा इन सबको फिर फरिश्तों से सवाल फरमायेगा, क्या ये लोग तुमको पूजा करते थे।’

दुनिया में बहुत से मुशिरक फरिश्तों को खुदा की बेटियां बताते थे और उनके हैकल बनाकर पूजते थे, कुछ उलेमा का कहना है कि बुत परस्ती की शुरूआत फरिश्तों की पूजा से हुई। क्रियामत के दिन मुशिरकों को सुना कर अल्लाह जल्लशानुह फरिश्तों से सवाल फरमायेंगे, क्या ये लोग तुमको पूजते थे, शायद सवाल का मतलब यह हो कि तुम ने तो उनसे ऐसा नहीं किया और तुम इनके इस काम से खुश तो नहीं हुए ? और इस सवाल से यह मकसद भी हो सकता है कि फरिश्तों का यह जवाब मुशिरकों के सामने सुनवा दिया जाए कि न हमने उनको शिक की तालीम दी, न उनकी इस हरकत से खुश हुए ! ताकि मुशिरकों को यह यकीन हो जाए कि अपने

अमल के हम खुद अकेले जिम्मेदार हैं।

फ़रिश्तों का जवाब

आगे इसी आयत के बाद फ़रमाया—

مَا لَكُمْ بِمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ إِلَّا أَنْتُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ وَإِنَّكُم مِّنْكُمْ
يُحْكُمُونَ ۝

कालू सुब्हा न क अन्त वलीयुना मिन हुनिहिम व ल कानू यअबुद
नल जिअ अक्सरुहुम बिहिम मुअ्मिनून०

‘फ़रिश्ते जवाब में अज़ करेंगे कि तेरी जात पाक है, तू ही हमारा
वली है न कि वह, बल्कि वह पूजा करते थे जिन्नों की, उनमें अक्सर उनकी
को मानते थे।’

यानी आपकी जात इससे पाक है कि किसी दज में भी कोई आपका
शरीक हो, हम क्यों ऐसी बात कहते और क्यों शिकिया हरकतों से खुश
रहते, हमारी खुशी आपकी खुशी में है, इन नालायकों से हमको क्या
वास्ता, ये बद-वस्त हकीकत में हमारी पूजा करते भी न थे, नाम हमारी
पूजा का लेते और पूजते शैतानों को थे ! शैतान उनको जिस तरफ़ मोड़ते,
उधर ही मुड़ जाते थे, चाहे फ़रिश्तों का नाम लेकर, चाहे किसी नबी का,
किसी वली और शहीद, पीर-फ़कीर का।

आगे फ़रमाया—

فَالْيَوْمَ لَا يَخْلُفُ عَمَلُكُمْ فِي غُيُوبٍ نَّفَعًا وَلَا ضَرًّا وَتَقُولُ الْكَافِرِينَ
كَلَّا مُزَادُوا وَمُؤَاعَدًا ابْنِ النَّارِ إِنِّي كُنْتُ مِمَّنْ يَتَّبِعُونَ ۝

फ़ल् यौ म ला यम्लिकु वअ् जुकुम लिबअजिन नफ़अन्व ला जरन्व
नकूल लिल्लखी न ज ल मू जूकू अजावम्रा रल्लती कुन्तुम बिहा
तुकजिजबून०

‘सो, आज मालिक नहीं तुम में से कोई एक दूसरे के नफ़ा का, न
नुक्सान का और हम कह देंगे यह ज़ालिमों से कि चखो उस आग का
अजाब जिसे तुम झुठलाते थे।’

हज़रत नूह अलैहिस्सलातु वस्सलामु की उम्मत के खिलाफ़ उम्मत मुहम्मदिया की गवाही

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले
करीम अलैहिस्सलाम ने इश्ाद फ़रमाया कि क्रियामत के दिन
(हज़रत) नूह अलैहिस्सलाम को लाया जाएगा और उनसे सवाल होगा
कि क्या तुमने तब्लीग (प्रचार) की ? वे अज़ करेंगे कि या रब ! मैंने
सच में तब्लीग की थी ! उनकी उम्मत से सवाल होगा कि बोलो क्या
उन्होंने तुमको हुक्म पहुंचाये ? वे कहेंगे कि नहीं ! हमारे पास तो कोई
नज़ीर (यानी डराने वाला) नहीं आया। इसके बाद (हज़रत) नूह
अलैहिस्सलाम से पूछा जाएगा कि तुम्हारे दावे की तस्दीक की
गवाही देने वाले कौन हैं ? वे जवाब देंगे कि (हज़रत) मुहम्मद सल्लल्लाहु
तआला अलैहि व सल्लम और उनके उम्मती हैं। यहां तक वाकिआ नक़ल
करने के बाद आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम
ने अपनी उम्मत को खिताब करके फ़रमाया कि इसके बाद तुमको लाया
जाएगा और तुम गवाही दोगे कि बेशक हज़रत नूह अलैहिस्सलाम
वस्सलामु ने अपनी क़ौम को तब्लीग की थी, इसके बाद आहज़रत सय्यदे
आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने (सूरः बक़रः की) नीचे
की आयत तिलावत फ़रमायी—

وَكُنْ لَّكَ جَعَلْنَاكُمْ آئَةً وَسَطًا وَكُنُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونُ الرَّسُولُ
عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۝

व कज़ालि क जअल्लाकुम उम्मतव्व स तल्लितकून शु ह दा अ
अलनासि व यकूनरसूलु अलैकुम शहीदा०

‘और हमने तुमको एक ऐसी जमाअत बना दी है जो बहुत दमियानी
है ताकि तुम दूसरी उम्मतों के लोगों के मुकाबले में गवाह बनो। और
तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम गवाह बनें।’

यह बुखारी शरीफ़ की रिवायत है। मुस्नद इमाम अहमद रह०
की एक रिवायत से जाहिर होता है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम वस्सलामु
के अलावा दूसरे नबी सल्ल० की उम्मतें भी इंकारी होंगी और कहेंगी
कि हमको तब्लीग नहीं की गयी, उनके नबियों से सवाल होगा कि तुमने
तब्लीग की। वे कहेंगे कि जो हमने तब्लीग की थी, इस पर उनसे गवाह

मांगे जाएंगे तो वे हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उनकी उम्मत को गवाही में पेश करेंगे, चुनांचे हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाहु अल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उनकी उम्मत से सवाल होगा कि इस बारे में आप हजरत क्या कहते हैं। जवाब में अर्ज करेंगे, जी, हम पैगम्बरों के दावे की तस्दीक करते हैं। उम्मते मुहम्मदिया से सवाल होगा कि तुमको इस मामले में क्या खबर है? वे जवाब में अर्ज करेंगे कि हमारे पास हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और उन्होंने खबर दी कि तमाम पैगम्बरों ने अपनी अपनी उम्मत की तब्लीग की।

आयत का आम होना 'लि तकून शुहदाअ अलन्नासि' भी इसको चाहता है कि हजरत नूह अलैहिस्सलामु वस्सलामु के अलावा दूसरे नबियों की उम्मतों के मुकाबले में भी उम्मते मुहम्मदिया गवाही देगी।

यहां एक शुब्हा किया जा सकता है और वह यह कि उम्मते मुहम्मदिया नबियों से ज्यादा सच्ची और एतबार के क़ाबिल तो नहीं है, फिर नबियों की सच्चाई को उम्मते मुहम्मदिया की गवाही से साबित करने का क्या मतलब होगा? जवाब यह है कि ज्यादा एतबार के और सच्चे तो हजरत अब्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलामु वस्सलामु ही हैं लेकिन चूँकि इस मुक़दमे में फ़रीक़ हो गये, इसलिए दूसरे गवाहों की ज़रूरत होगी, भले ही वे गवाह नबियों से कम-दर्जे के होंगे। और उनके

१. कुछ रिवायतों में यह भी आया है कि जब उम्मते मुहम्मदिया दूसरी उम्मतों के मुकाबले में उनके नबियों की ताईद में गवाही देगी तो सय्यदे आलम हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सवाल होगा कि क्या तुम्हारी उम्मत इस लायक़ है कि उनकी गवाही मोतबर मानी जाए? आं हजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत की अदालत की गवाही देंगे, यानी यह फ़रमायेंगे कि हां, ये सच कहते हैं और इनकी गवाही मोतबर है। बेशक़ इस उम्मत का बड़ा मर्तबा है और बहुत बढ़ाई है, जिसका हजर के मंदान में अगलों-पिछलों के सामने ज़हर होगा। उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० की गवाही पर हजरत अब्बिया किराम अलै० के हक़ में अल्लाह के दरबार में फ़सला होना और अब्बिया किराम अलैहिमुस्सलामु वस्सलामु के मुख़ालिफ़ों का मुज़िम क़रार पा कर सज़ा पाना इस उम्मत के लिए बड़े ऊँचे दर्जे की इज़त है।

—बयानुल कुरआन

२. यहां एक सवाल और पैदा होता है और वह यह है कि जब उम्मते मुहम्मदिया नबियों की तब्लीग के वक़्त मौजूद न थी तो उनकी गवाही कैसे एतबार

एतबार वाला होने की गवाही प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दे देंगे जैसे कोई तहसीलदार (जो खुद भी साहिबे इज़्ज़ास होता है) किसी गुस्ताख़ चपरासी के मुक़दमे में फ़रीक़ बन जाए तो हाकिम आला के इज़्ज़ास में तहसीलदार से गवाह तलब किये जाएंगे, भले ही वे रुबे में तहसीलदार से छोटे दर्जे के हों और फिर उन गवाहों की सच्चाई को देख कर फ़सला किया जाएगा, यहीं से एक और शुब्हा का जवाब भी साफ़ हो जाता है। शुब्हा यह है कि रिसालत व तब्लीग़ के इंक़ारी इस मौक़े पर यह कह सकते हैं कि जब हमने नबियों को सच्चा न माना तो उनकी उम्मत (यानी उम्मते मुहम्मदिया) को क्यों सच्ची मानें? जवाब यह है कि ऐसा कहने का उनको हक़ न होगा, क्योंकि मुद्ई जब गवाह पेश कर दे तो मुद्आ अनैह अगर उन गवाहों को झूठा साबित कर दे तो वे गवाह रद्द होंगे, गवाह पेश हो जाने के बाद मुद्आ अनैह की तरफ़ से सिर्फ़ यह कह देना काफ़ी न होगा कि हम इनको सच्चा नहीं मानते। साथ ही इस हकीक़त में भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मुद्आ अलैहि गवाहों को सब्च माने या न माने, फ़सला देने के लिए हाकिम के नज़दीक़ उनका सच्चा होना काफ़ी है।

को होगी? जवाब यह है कि गवाही का भरोसा सिर्फ़ यक़ीन पर है और महसूस-साते ग़र साबित ज़िल वल्ल (वल्ल के अलावा की महसूस चीज़ों) में यक़ीन हासिल होना बग़ैर देखे मुम्किन नहीं, इसलिए गवाही का मदार (आश्रय) मुशाहदा (देखना) को बना दिया गया है और नबियों की तब्लीग़ व रिसालत का वाक़िआ अग़ब महसूस भी है और मुशाहदा (जिसे देखा जाए) भी है, लेकिन उम्मते मुहम्मदिया की गवाही का एतबार के क़ाबिल होना देखने की वजह से नहीं, बल्कि वल्ल से साबित होने की वजह से होगा और वल्ल से मुशाहदे जैसा, बल्कि उससे भी ज्यादा यक़ीन हासिल होता है और यक़ीन ही असल गवाही का मदार है जैसे कोई डाक्टर किसी मुर्दा को जिसके वदन पर कोई जाहरी निशानी (जल्म वगैरह न हो) देखकर अननी महारत के ज़रिए यह इशहार कर दे कि यह शस्स मर्ज से नहीं बल्कि किसी भारी चोट से मरा है और इज वजह से क़ातिल की इन्वाइरी का हक़म हो जाए, तो इसके वावजूद कि डाक्टर उसकी मौत के वक़्त मौजूद न था, चूँकि सेहत के क़ायदों की वजह से 'भारी चोट' वजह बतायी गयी, इसलिए इसका एतबार किया गया।

—बयानुल कुरआन

मुशिरकों का इन्कार कि हम मुशिरक न थे

सूर: अन्शाम में फरमाया—

وَيَوْمَ نَبْعَثُكُمْ فِيهِمَا لَشِقْمَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْاۤ اِنَّ
شُرَكَاءَكُمْ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ثُمَّ كَفَرْتُمْ عَنْ
اٰتِآءِ الْوَاوِلٰٓءِ وَاللّٰهُ رَءِیْسُ مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ

व यौ म नहशुरुहुम जमीअन मुम्म नकालु लिल्लजी न अशूरकू ऐ न
शुर का उकुमुल्लजी न कुन्तुम तज्जुभू न मुम्म लम तकुन फिल तुहुम
इल्ला अन् कालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुशिरकीन०

‘और वह वक्त भी याद करने के काबिल है जिस दिन हम इन सब
को जमा करेंगे, फिर मुशिरकों से कहेंगे कि तुम्हारे वे शरीक, जिनके माबूद
होने के तुम मुद्ई थे, कहाँ गये, फिर उनके शिकं का अंजाम वस यही
होगा कि यों कहेंगे कि अल्लाह की कसम ! जो हमारा परवरदिगार है,
हम मुशिरक न थे।’

इसके बाद फरमाया—

اُنْظُرْ كَيْفَ كُنَّا بِرَاۤءِیِّ اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ

उन्जुर कै फ क ज बू अला अन्शुसिहिम व जल्ल अन्हुम मा कानू
यफनरून०

‘जरा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर और जिन
चीजों को वे झूठ-मूठ तराशा करते थे, वे सब गायब हो गयीं।’

इन्कार तो करेंगे मगर इन्कार से निजात कहाँ मिलेगी, आमाल-
नामों और ग्वाहों के जरिए इल्जाम साबित हो ही जाएगा।

जिनकी पूजा करते थे, वे भी इन्कारी होंगे

सूर: यूनुस में फरमाया—

وَكَانَ شُرَكَاءُ هٰٓؤُلَآءِ مَا كُنْتُمْ اِيَّآكَ تَعْبُدُوْنَ تَكْفُرُ بِاللّٰهِ شُرَكَآءُ اِيْنٰٓءِ
وَكُنْتُمْ اِيْنٰٓءِ اَعْدَآءِ اٰلِهٰٓتِكُمْ لَظٰلِمِيْنَ

व काल शुर काउहुम मा कुन्तुम इय्याना तज्जुदु न फ कफा
बिल्लाहि शहीदम बै न ना व बै न कुम इन कुन्ना अन अिबादतिकुम ल
गाफिलीन०

‘और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे,

तो हमारे तुम्हारे दमियान खुदा काफ़ी गवाह है कि हम को तुम्हारी
इबादत की खबर भी न की।’

हजरत ईसा अलैहिस्सलातु

वस्सलाम से सवाल

क्रियामत के दिन हजरत ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम से यही
सवाल होगा जैसा कि सूर: माइद: में फरमाया—

وَاذْكُرْ اَللّٰهُ يٰعِیْسٰی اِبْنَ مَرْیَمَ اَنْتَ كُنْتَ لِلنَّاسِ اَحْسَنُ وُفٰی وَاٰتٰی الْاٰیٰتِ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

व इज का लल्लाहु या ईसबन मर्यम अ अन्त कुल्ल लिन्नासित्त ख
जूनी व उम्मि य इलाहैनि मिन दूनिल्लाहि०

‘और जबकि अल्लाह तआला फरमायेंगे कि ऐ ईसा बिन मरयम!
क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी मां को खुदा के
अलावा माबूद बना लो।’

हजरत ईसा अलैहिस्सलातु

वस्सलाम का जवाब

قَالَ سُبْحٰنَ مَا یَكُوْنُ بِيْ اَنْ اَكُوْلَ مَا لَیْسَ بِيْ حَیٍّ اِنْ كُنْتُ قُلْتُ
فَقَدْ عَلِمْتُمْ اَنَّكُمْ مَا فِیْ نَفْسِیْ وَلَا اَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ اِنَّكَ اَنْتَ
عَلَمُ الْغُیُّوْبِ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَا اَمَرْتَنِيْ بِهٖ اَنْ عِبُدُ اللّٰهَ سَرِیّ
وَسَرِیُّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِیْدًا مَّا دُمْتُ فِیْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِيْ كُنْتُ
اَنْتَ الرَّقِیْبَ عَلَيْهِمْ وَاَنْتَ عَنِ كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ اِنْ لَّعَنَ الْمُشْرِكُ
فَاَنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الْكَرِیْمُ

का ल सुब्हा न क मा यकूनु ली अन अकू ल मा लैस ली बिहयिवान
इन कुन्तु कुल्लुह फकद अलिम्तह तज्जुलमु मा फ्री नपसी व ला अश्लमु मा
फ्री नपिस क इन्न क अन्त अल्लामुल गुयूवि मा कुल्लु लहुम इल्ला मा
अमर्तनी बिही अनिअबुदुल्ला ह रब्बी व रब्बुकुम व कुन्तु अलैहिम शही-
दम्मा दुम्तु फ्रीहिम फ लम्मा तवफफतनी कुन्त अन्तरकी व अलैहिम व
अन्त अला कुल्लि गैइन शहीद इन तुअजिजवहुम/ फ इन्नहुम अिबादुक व

इन तस्फिर लहुम फ इन्न क अन्तल् अजीजुल हकीम०

‘(हजरत) ईसा (अलैहिस्सलाम) जवाब देंगे कि मैं तो आप को (हर ऐब) से बरी जानता हूँ। मुझे किसी तरह मनासिब न था कि ऐसी बात कहूँ जिस के कहने का मुझे हक नहीं मगर (अल्लाह की पनाह!) मैं ने कहा होगा तो आप जानते होंगे, आप तो मेरे दिल की बात जानते हैं और मैं आप के इल्म में जो कुछ है, उसको नहीं जानता। बेशक आप नमाम ऐवों को खूब जानते हैं। मैंने उनसे सिर्फ वही कहा जिसका आप ने मुझे हुक्म दिया (और वह) यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी और मैं जब तक उनमें रहा, उन पर मुत्तला रहा। फिर जब आप ने मुझे उठा लिया तो आप ही उन पर मुत्तला रहे और आप हर चीज की पूरी खबर रखते हैं। अगर आप उनको सजा दें तो यह आप के बन्दे है और अगर आप इन को माफ़ फरमा दें, तो आप अजीज व हकीम हैं।’

लेकिन काफिर और मुशिरक की मग़फ़रत का क़ानून नहीं है, जरूर ही ईसाई दोज़ख में जाएंगे, अपने पैग़म्बर की हिदायत को छोड़कर खुद गुमराह और काफिर हुए, यकीनन अज़ाब झेलेंगे।

हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान

وَوَفَيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ

व वुफ़ियत कुल्लु नफ़िस मा अमिलत०

‘और हर जान को उसके अमल का पूरा बदला दिया जाएगा।’

नीयतों पर फ़ैसले

हजरत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहरत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन जिन लोगों के बारे में सबसे पहले फ़ैसला दिया जाएगा, उनमें से एक शख्स वह होगा जो (जिहाद में क़त्ल हो जाने की वजह से) शहीद समझ लिया गया था, उस को क़ियामत के दिन लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआला उसको नेमतों की पहचान कराएंगे जिन को वह पहचान लेगा (यानी उसे वे नेमतें याद आ जाएंगी जो अल्लाह ने दुनिया में उसको दी थीं) अल्लाह जल्ल शानुहु उस

से सवाल फ़रमायेंगे कि तूने उन नेमतों को किस काम में लगाया ? वह जवाब में अर्ज करेगा कि मैं ने आप के रास्ते में यहां तक लड़ाई लड़ी कि शहीद हो गया। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि तूने झूठ कहा (तेरा यह कहना ग़लत है कि तूने मेरे लिए लड़ाई लड़ी) बल्कि तूने इसलिए लड़ाई की कि तुझे बहादुर समझा जाए सो (इसका फल तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरा नाम हो चुका। इसके बाद हुक्म होगा कि इसे मुंह के बल खींच कर दोज़ख में डाल दिया जाए, चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक वह आदमी भी उन लोगों में से होगा, जिसके बारे में सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा, जिसने इल्म (दीन) सीखा और सिखाया और कुरआन पढ़ा। उसे (क़ियामत के दिन) लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआला उसको अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे। चुनांचे वह पहचान कर लेगा। उससे अल्लाह तआला सवाल फ़रमायेंगे कि तूने इन नेमतों को किस तरह काम में लगाया ? वह जवाब देगा कि मैं ने इल्म हासिल किया और दूसरों को सिखाया और आपकी खुशी के लिए कुरआन पढ़ा। अल्लाह जल्ल शानुहु फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला, (मेरे लिए तूने न इल्म हासिल किया, न कुरआन पढ़ा) बल्कि तूने इल्म इसलिए हासिल किया कि तुझे लोग आलिम कहें और कुरआन तूने इसलिए पढ़ा कि लोग तेरे मुताल्लिक यह कहें कि यह तो कुरआन पढ़ता रहता है (और इसका फल तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरे मुताल्लिक वह कहा जा चुका जिसका तू चाहने वाला था। इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीट कर दोज़ख में डाल दिया जाए। चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक वह शख्स भी उन लोगों में से होगा जिनके मुताल्लिक सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा, जिसे अल्लाह तआला ने बहुत कुछ दिया था और तरह-तरह के माल उसे दिए गए थे, क़ियामत के दिन उसे लाया जाएगा, इसके बाद अल्लाह तआला अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे, चुनांचे वह उनको पहचान लेगा। अल्लाह जल्ल शानुहु का सवाल होगा कि तूने इन नेमतों को किस चीज में लगाया ? वह कहेगा कि कोई ऐसा भला काम, जिसमें खर्च करना आप को महबूब हो, मैंने नहीं छोड़ा, हर भले काम में मैं ने आप की खुशी के लिए अपना माल खर्च किया। अल्लाह जल्ल शानुहु फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला (मेरे लिए तूने खर्च नहीं किया) बल्कि तूने यह काम इसलिए किया कि तेरे बारे में यह कहा जाएगा कि वह सखी है, चुनांचे कहा जा चुका (और तेरा मन्सूद पूरा हो गया) इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीट कर दोज़ख में

डाल दिया जाए, चुनांचे इसे भी पूरा कर दिया जाएगा।'

तिमिजी शरीफ में भी यह हदीस मौजूद है, इसमें यही जिक्र किया गया है कि इसके बयान करने का हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु ने इरादा फरमाया तो (हजरत के मैदान के इस मंजर के ख्याल से) बेहोश हो गए। होश आने पर फिर बयान करने लगे तो दोबारा बेहोश हो गये। फिर होश आने पर तीसरी बार बयान करने का इरादा फरमाया तो तीसरी बार भी बेहोश हो गए और इसके बाद होश आने पर हदीस बयान फरमायी। जब यह हदीस हजरत मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु को सुनायी गयी तो फरमाया कि जब इन तीनों आदमियों के साथ ऐसा होगा तो इनके अलावा दूसरे बद-नीयत इन्सानों के बारे में अच्छा मामला होने की क्या उम्मीद रखी जाए, इसके बाद हजरत अमीर मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु इतना रोये कि देखने वालों ने यह समझ लिया कि आज उनकी जान निकल कर रहेगी।'

हजरत अबू सईद बिन फुजाला रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब अल्लाह क्रियामत के दिन लोगों को जमा करेंगे, जिसके आने में जरा शक नहीं है तो एक पुकारने वाला जोर से पुकारेगा कि जिसने कोई अमल अल्लाह के लिए किया और इस अमल में किसी दूसरे को दिखाने की नीयत करके इस दूसरे को भी शरीक कर लिया तो उस को चाहिए कि इस अमल का सवाब अल्लाह के सिवा (इस ग़ैर से) ही ले ले।'

दूसरी हदीस में है (जिसकी रिवायत बहक्की ने शाबुल ईमान में की है) कि जिस दिन अल्लाह तआला बन्दों को आमाल का बदला देंगे। दिखावा करने वालों से फरमायेंगे, जाओ दुनिया में तुम जिनको दिखाने के लिए अमल करते थे, उन ही के पास जाओ, फिर देखो कि उनके पास तुम्हें कुछ सवाब या भलाई मिलती है।'

नमाज़ का हिसाब और नफ़लों का फ़ायदा

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि बेशक क्रियामत के

१. मिश्कात (मुस्लिम शरीफ), २. मिश्कात अन अहमद,
३. मिश्कात शरीफ, ४. मिश्कात शरीफ,

दिन बन्दे के आमाल में से पहले उसकी नमाज़ का हिसाब किया जाएगा, पस अगर नमाज़ ठीक निकली तो कामियाब और वा-मुराद होगा और अगर नमाज़ खराब निकली तो ना-मुराद और टोटा उठाने वाला होगा, पस उसके फ़ज्रों में कोई कमी रह जाएगी तो अल्लाह तआला फरमायेंगे कि देखो, क्या मेरे बन्दे के कुछ नफ़ल भी हैं? पस (अगर नफ़स निकले तो) जो फ़ज्रों में कमी होगी, नफ़लों के जरिए पूरा कर दी जाएगी, फिर (नमाज़ के बाद) उसके बाक़ी अमलों का इसी तरह हिसाब होगा।'

एक रिवायत में है कि फिर (नमाज़ के बाद) इसी तरह ज़कात का हिसाब होगा। फिर (दूसरे) आमाल इसी तरह से (हिसाब में) लिए जाएंगे।'

बे-हिसाब जन्नत में जाने वाले

अस्मा विन्त यज़ीद रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क्रियामत के दिन लोग एक ही मैदान में जमा किए जायेंगे, उस वक़्त एक पुकारने वाला जोर से पुकार कर कहेगा कि वे लोग कहाँ हैं, जिनके पहलू विस्तरों से अलग रहते थे (क्योंकि वे रातों को नमाज़ों में वक़्त गुज़ारते थे)। यह सुनकर इस ख़ूबी के लोग पूरे मज्मे में से निकल कर खड़े होंगे जो तायदाद में (बहुत कम) होंगे। ये लोग जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाखिल हो जायेंगे, फिर उनके बाद बाक़ी लोगों का हिसाब शुरू करने के लिए हुक्म होगा।'

हजरत अबू उमामा रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि आं-हजरत संयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि मेरे रब ने मुझ से वायदा फरमाया है कि तेरी उम्मत से सत्तर हज़ार विला हिसाब-किताब जन्नत में दाखिल होंगे, जिन पर कोई अज़ाब न होगा। हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे (जो इसी बड़ाई से नवाजे जायेंगे और तीन लप मेरे रब के लप^१ भर कर (भी) जन्नत में दाखिल

१. तानी फ़ज्र नमाज़ों की तक्मील नफ़लों से (ग़ैर नमाज़ में भी) की जाएगी,
२. मिश्कात शरीफ, ३. बहक्की शोबुल ईमान,
४. अल्लाह हाथ, लप, कदम और बेहरे से पाक है। कुरआन व हदीस में जहाँ कहीं इन चीज़ों का जिक्र आया है, उन पर ईमान लाओ कि उनका जो मतलब

होंगे।'

शफ़ाअत वाली हदीस में है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं अर्श के नीचे अपने रब के लिए सज्दे में जा पड़ूंगा, फिर अल्लाह मुझे अपनी वे हम्दे और उम्दा तारीफ़ बता देगा जो मुझसे पहले किसी को न बताई होगी, फिर अल्लाह का इशारा होगा कि ऐ मुहम्मद ! अपना सर उठाओ और सवाल करो, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और सिफ़ारिश करो, तुम्हारी सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी। चुनांचे मैं सर उठाऊंगा ! और 'या रब्बि उम्मती ! या रब्बि उम्मती ! या रब्बि उम्मती ! (ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत) कहूंगा। इसलिए मुझसे कहा जाएगा कि ऐ मुहम्मद ! अपनी उम्मत के उन लोगों को जन्नत के दरवाज़ों में से दाहिने दरवाज़े से जन्नत में दाखिल कर दो, जिनसे कोई हिसाब नहीं है। (फिर आपने फ़रमाया कि) कसम उस ज्ञात की, जिसके कब्जे में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़े इतने चौड़े हैं, जितना कि मक्का और हिज्र के दरमियान फ़ासला है।'

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रिवायत फ़रमाती हैं कि मैंने एक नमाज़ में आंहुज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को यह दुआ करते हुए सुना कि—

अल्लाहुम्म हासिबनी हिसाबंयसीरा०

(ऐ अल्लाह ! मुझ से आसान हिसाब लीजियो) मैंने अर्ज किया ऐ अल्लाह के नबी ! आसान हिसाब का क्या मतलब है ? इशारा फ़रमाया, आसान हिसाब यह है कि आमालनामे से आखें बचा कर मुंह फेर लिया जाए। (और छान-बीन न की जाए) यह सच है कि जिससे छान-बीन करके हिसाब लिया गया, वह हलाक हुआ।'

सख्त हिसाब

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह भी रिवायत है कि नबी अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशारा फ़रमाया कि

अल्लाह के नजदीक है, यही हमारे नजदीक है और इनका जाहिरी मतलब लेकर अल्लाह के लिए जिसम तज्बीज़ कभी न करो।

१. मिशक़ात शरीफ़,
२. हिज्र अरब के एक शहर का नाम था, जो मक्का से काफी दूर था,
३. मिशक़ात शरीफ़, ४. अहमद,

क्रियामत के दिन जिससे (सही मानी में) हिसाब लिया गया, वह बरबाद होकर रहेगा, यह सुनकर मैंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, 'फ़ सी फ़ युहासबु हिसाबंयसीरा०' (कि जिसके दाहिने हाथ में आमालनामा दिया गया, सो उससे बहुत जल्द आसान हिसाब होगा, इससे मालूम हुआ कि कुछ हिसाब देने वाले ऐसे भी होंगे, जो निजात पा जाएंगे।) आंहुज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस सवाल के जवाब में फ़रमाया (आसान हिसाब से सही मानी में ख़ोद-कुरेद और छान-बीन वाला हिसाब मुराद नहीं है, बल्कि आसान हिसाब से यह मुराद है कि बन्दे के सामने सिर्फ़ आमालनामा पेश करके छोड़ दिया जाए, लेकिन जिसकी छान-बीन हुई, वह तो बर्बाद ही होकर रहेगा।'

मोमिन पर अल्लाह का खास करम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहुज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बेशक (क्रियामत के दिन) अल्लाह तआला मोमिन को अपने करीब करेगा और (महशर वालों से उसे छिपा करके) फ़रमायेंगे कि क्या तुझे प्लां गुनाह याद है ? क्या तुझे प्लां गुनाह याद है ? वह जवाब में अर्ज करेगा कि, हां, ऐ रब ! याद है, यहां तक कि अल्लाह तआला उससे गुनाहों का इक्क़रार करा लेंगे और वह अपने दिल में यक़ीन कर लेगा कि मैं बर्बाद हो चुका। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मैंने दुनिया में तेरे ऐबों को छिपाया और उन गुनाहों को न जाहिर होने दिया और अब मैं बख़्शिश कर देता हूं। इसके बाद उसकी नेकियों का आमालनामा उसे इनायत कर दिया जाएगा, लेकिन काफ़िर और मुनाफ़िक़ लोगों का प्रोपगंडा किया जाएगा। सारी मख़लूक के सामने उसके मुताल्लिक़ जोर से पुकार दिया जाएगा कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूठी बातें गढ़ी थीं। ख़बरदार अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।'

बग़ैर किसी वास्ते के और पर्दे के

अल्लाह को जवाब देना होगा

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत

१. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़,

फरमाते हैं कि आंहुजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है, जिससे उसका रब खुद (हिसाब लेने के सिलसिले में) बात न करे। बन्दे के और उसके रब के दमियान कोई वास्ता और कोई पर्दा न होगा। उस वक्त बन्दा अपने दाहिनी तरफ नजर करेगा तो अपने आमाल के अलावा कुछ नजर न आयेगा और अपने बाएं तरफ नजर करेगा तो जो पहले से करके भेजा था, वह नजर आयेगा और अपने सामने नजर करेगा तो सामने दोख ही पर नजर पड़ेगी (इसके बाद इशार्द फरमाया) इसलिए तुम दोख से बचो, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही (अल्लाह के रास्ते से) खर्च करने को तुम्हारे पास हो।

किसी पर जुल्म न होगा और भलाई और बुराई की एक-एक बात मौजूद होगी
कुरआन शरीफ में इशार्द है—

لَا يُؤْزِلُكُمْ تِلْكَ الْأُمُورُ إِلَّا جَزْئًا وَلَا تُلْظِمُكُمْ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

फल यौ म ला तुजलमु नफ्सुन नैअव्व ला तुज्जौ न इल्ला मा कुनुम तअ मलून०

‘यानी उस दिन किसी जान पर जुल्म न होगा और तुमको वस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे।’

और इशार्द है—

فَمَنْ يَكُنْ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَكُنْ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ

फ मंय्यअ मल मिस्का ल जरंतिन खैरंय्यरह व मंय्यअ मल मिस्का ल जरंतिन शरं य्यरह०

‘सो जो शरूत (दुनिया में) जर्रा बराबर नेकी करेगा वह (वहां) उसको देख लेगा और जो शरूत जर्रा बराबर बदी करेगा वह (भी वहां) उसको देख लेगा।’

सूर: मोमिन में फरमाया—

الْيَوْمَ نُجْزِي كُلُّنَا بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنْتُمْ فِي الْمَصَابِلِ

الحساب

अल् यौम तुज्जा कुल्लु नफिसम विमा क स वत ला जुल्मल यौम

१. बुखारी व मुस्लिम,

इअल्ला ह सरीअुल हिसाब०

‘आज हर शरूत को उसके कामों का बदला दिया जाएगा। आज (किसी पर) जुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।’

बंदों के हक

क्रियामत के दिन अल्लाह के हकों (नमाज, रोजा, जकात, हज वगैरह) का भी हिसाब होगा और बंदों के हकों का भी हिसाब होगा। दुनिया में जिसने किसी का हक मारा हो या किसी भी तरह जुल्म या ज्यादती की हो, सब का हिसाब और फंसला होगा। बुजुर्गों ने फरमाया है कि अल्लाह का मुज्जिम होना क्रियामत के दिन के लिए इतना खतरनाक नहीं है, जितना बंदों के हकों को मारने और बंदों के सताने व जुल्म करने में खतरा है, क्योंकि अल्लाह तआला वे-नियाज है। उन की तरफ से अपने हकों की बख्शिश कर देने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन बन्दे चूंकि जरूरतमंद होंगे और एक-एक नेकी से काम निकलने और निजात पाने की उम्मीद होगी, इसलिए बन्दों से माफ करने और अपना हक छोड़ने की उम्मीद रखना ना-मुना-सिब है। क्रियामत के दिन रुपया-पैसा, माल व दौलत कुछ भी पास न होगा, हकों की अदायगी के लिए नेकियों का लेन-देन होगा और हकों की अदाएगी का एहतमाम इतना होगा कि जानवरों ने जो आपस में एक दूसरे पर जुल्म किया था, उसका भी बदला दिलाया जाएगा।

नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा

हजरत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहुजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि जिसने अपने किसी भाई पर जुल्म कर रखा हो कि उसकी बे-आबरूई की हो और कुछ हक मारा हो, तो उसे चाहिए कि आज ही (उसका हक अदा करके या माफ़ी मांग कर) उस दिन से पहले हलाल करा ले, जब कि न दीनार होगा, न दिरहम। (फिर फरमाया) अगर इसके कुछ अच्छे अमल होंगे तो जुल्म के बराबर उस से ले लिए जायेंगे और जिस पर जुल्म हुआ है उसको दिला दिए जायेंगे और अगर उसकी नेकियां न हों तो मजलूम की बुराइयां लेकर उस ज़ालिम के सर डाल दी

जायेंगी ।^१

क्रियामत के दिन सबसे बड़ा गरीब

हजरत अबू हुदैर रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक बार प्रपने सहाबा रज़ि० से सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि गरीब कौन है ? सहाबा रज़ि० ने प्रज किया कि हम तो उसे गरीब समझते हैं कि जिसके पास दरहम (रुपया-पैसा) और माल व प्रस्वाव न हो। इसके जवाब में आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि वेशक मेरी उम्मत में से (हकीमी) मुफ़िलस वह है जो क्रियामत के दिन नमाज़ और रोज़े और ज़कात लेकर आएगा (यानी उसने नमाज़ें भी पढ़ी होंगी और रोज़े भी रखे होंगे और ज़कात भी प्रदा की होगी) और (इन सब के बावजूद) इस हाल में (हज़र के मैदान में) प्रायेगा कि किसी को गाली दी होगी और किसी को तोहमत लगायी होगी और किसी का (ना-हक) माल खाया होगा और किसी का खून बहाया होगा और किसी को (ना-मुनासिब और ना-हक) मारा होगा। (और चूँकि क्रियामत का दिन इसाफ़ और सही फ़ैसलों का दिन होगा) इसलिए (उस शख्स का फ़ैसला इस तरह किया जाएगा कि जिस-जिस को उसने सताया होगा और जिस-जिस का हक़ मारा होगा सब को उस की नेकियां बांट दी जायेंगी) कुछ नेकियां इस हक़दार को दे दी जाएंगी और कुछ उस हक़दार को दे दी जाएंगी, फिर अगर हक़ पूरा न होने से पहले उसकी नेकियां ख़त्म हो जाएं तो हक़दारों के गुनाह उसके सर डाल दिए जाएंगे, फिर उसको दोज़ख में डाल दिया जाएगा।^१

हजरत अब्दुल्लाह बिन उन्स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्रियामत के दिन अल्लाह (अपने बन्दों) को जमा फ़रमाएगा जो नंगे, बे-ख़त्ना, और बिल्कुल खाली हाथ होंगे, फिर ऐसी प्रावाज़ से पुकारेंगे, जिसे हर दूर, वाले इसी तरह सुनेंगे जैसे करीब वाले सुनेंगे (और उस वक़्त ये फ़रमाएंगे कि) मैं बदला देने वाला हूँ, मैं वादवाह हूँ। (आज) किसी दोज़खी के हक़ में यह न होगा कि दोज़ख में चला

१. बुखारी शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़,

जाए और किसी ज़न्नती पर उसका ज़रा भी कोई हक़ हो जब तक कि मैं उसका बदला न दिला दूँ ? यहां तक कि अगर एक चपत भी जुल्म से मार दिया था तो उसका बदला भी दिला दूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हम ने अज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! बदला कैसे दिलाया जाएगा, हालांकि हम नंगे, बे-ख़त्ना और बिल्कुल खाली हाथ होंगे ? जवाब में सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा।^१

हजरत अबू हुदैर रह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जिस ने अपने खरीदे हुए गुलाम को जुल्म से एक कोड़ा भी मारा था, क्रियामत के दिन उसको बदला दिलाया जाएगा।^१

मां-बाप भी हक़ छोड़ने पर राज़ी न होंगे

हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि हजरत रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि (अगर) मां-बाप का अपनी औलाद पर क़र्ज़ होगा तो जब क्रियामत का दिन होगा, तो अपनी औलाद से उलभ जाएंगे (कि ला हमारा क़र्ज़ अदा कर)। वह जवाब देगा कि मैं तो तुम्हारी औलाद हूँ। वे इस जवाब का कुछ असर न लेंगे और मांग पूरी करने पर इस्रार करते रहेंगे, बल्कि यह तमन्ना करेंगे कि काश ! इस पर हमारा और भी ज़्यादा क़र्ज़ होता।^१

सबसे पहले मुद्दई व मुद्दा अलैहि

हजरत उक्बा बिन प्रामिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि क्रियामत के दिन सब से पहले मुद्दई व मुद्दा अलैहि दो पड़ोसी होंगे।^१

जानवरों के फ़ैसले

क्रियामत के दिन सभी का हिसाब होगा। हर मज़लूम के हक़ में इसाफ़ होगा। हजरत अबू हुदैर रह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि तुम

१. अहमद, २. तर्मावी, ३. तबरानी, ४. अहमद,

जरूर-ब-जरूर हक वालों को उन के हक कियामत के दिन अदा करोगे, यहां तक कि कि बे-सींगों वाली बकरी को (जिसे दुनिया में सींगों वाली बकरी ने मारा था) सींगों वाली बकरी से बदला दिलाया जाएगा।^१

सूर: नवा के आखिर में इशारा है—

ذَٰلِكَ الْيَوْمَ الَّذِي تَصْنَعُ الْإِنَّمَاءَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ بِمَا تَعْمَلُ وَكَافٍ
تَبَرُّبًا يَوْمَ تَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاؤُهُ وَتَقُولُ الْكَافِرُ لَيْسَ بِي

بِشَيْءٍ مُّرْءٍ

जानिकल यौमुल हक्कु फ मन शाअत ख ज इला रब्बिही मफावा० इन्ना अन्जनाकुम अजावन करीबयौ म यन्जुरल मउ मा कद्दमत यदाहु व यकूलुल काफिर या लै त नी कुन्तु तुरावा०

‘वह दिन यकीनी है, सो जिस का जी चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना रखे। बेशक हम ने तुम को एक नजदीक आने वाले अजाव से डरा दिया है, जिस दिन हर शख्स अपने अमल को देख लेगा, जो उस ने पहले से आगे भेज दिए थे और काफिर कहेगा, काश मैं मिट्टी हो जाता।’

दुरें मंसूर में इस आयत की तफसीर में बहुत-सी हदीस की किताबों के हवाले से हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु से नकल किया है कि कियामत के दिन सारी मखलूक जमा की जाएगी, चौपाए भी और (इनके अलावा) जमीन पर चलने वाले भी और परिदे भी और इनके मलावा हर चीज। उस वक्त अल्लाह की अदालत से जो फ़ैसले होंगे, उनमें यह भी होगा कि बे-सींगों वाले जानवरों को सींगों वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा, फिर उनसे कह दिया जाएगा कि मिट्टी हो जाओ (चुनांचे जानवर मिट्टी हो जाएंगे) उस वक्त काफिर की जुबान से (बड़ी हसरत से) यह निकलेगा कि काश मैं मिट्टी होता।^१

मशहूर तफसीर लिखने वाले हजरत मुजाहिद रजि० ने फरमाया कि जिस जानवर के चोंच मारी गयी थी उसे चोंच मारने वाले जानवर से और जिस जानवर के लात मारी गयी थी, उसे लात मारने वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा। यह माजरा इंसानों के सामने होगा जिसे वे देखते रहेंगे, इसके बाद जानवरों से कह दिया जायगा कि मिट्टी हो जाओ, न तुम्हारे लिए जन्नत है, न दोज्ख है। उस वक्त काफिर (जानवरों की यह खलासी बल्कि हमेशा के अजाव से बचने की कामियाबी को देखकर उन पर रश्क करेगा और) कह उठेगा कि मैं (भी)

१. मुस्लिम शरीफ, २. दुरैमंसूर,

मिट्टी हो जाता।

दुनिया काम करने की जगह है, सोचने की जगह है, तक्लीफ की जगह है, दुख की जगह है, इस दुनिया में जो आदमी दुनिया ही के लिए अमल और मेहनत करेगा और दुनिया ही के रंज व फ़िक्र में घुलेगा, यकीनी तौर पर आखिरत में खाली हाथ पहुंचेगा। जिसने यहां अपने को न सिर्फ जानवरों से अच्छा बल्कि नेक बन्दों से भी अच्छा समझा और अल्लाह व रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बात को ठुकराया और आखिरत से बे-फ़िक्र रहा, आखिरत में बरबाद और बे-आबरू होगा और न सिर्फ नेक बन्दे उससे-अच्छे साबित होंगे, बल्कि जानवर भी नतीजे के तौर पर उससे अच्छे रहेंगे और उस वक्त बड़ी हसरत और ना-उम्मीदी के साथ पुकार उठेगा कि काश ! मैं भी मिट्टी हो जाता, हिसाब न लिया जाता, दोज्ख में न गिरता, काश ! जमीन फट जाती और मैं हमेशा के लिए जमीन का पैंवद हो जाता जैसा कि सूर: निसा में फरमाया—

يَوْمَئِذٍ يَكْفُرُونَ بِالَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا الرُّسُلَ وَلَوِ اسْتَوَىٰ بَيْنَهُمُ الْأَرْضُ

यो म इजिन यवदुल्लजी न क फ रू व अ स उरंसू ल लो तुसव्वा बिहिमुल अजं०

‘जिन लोगों ने कुफ़ किया और रसूल की नां-फरमानी की, उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश ! हम जमीन का पैंवद हो जाएं।’

इस के खिलाफ़ कि जिन लोगों ने दुनिया को आखिरत के अमल की जगह समझ कर वहां के लिए फ़िक्र किया और वहां की फ़िक्र में घुला वे वहां कामियाब होंगे, दुनिया में उन का यह हाल था कि खुदा के डर से कहते थे कि काश हम मिट्टी हो जाते। मतलब यह कि ईमान वाले यहां अपने को दूसरी मखलूक से कम समझ कर आखिरत की कामियाबी हासिल करेंगे और हक के इकारी कियामत के दिन अपने को जानवरों से बद-तर यकीन करेंगे और ना-काम होंगे।

جَعَلَتِ اللَّهُ مِنَ النَّاسِ خَلْقًا كَمَا كَانُوا يُفَكِّرُونَ

ज अ ल नल्लाहु मिनन्सालिही न ह श र ना मअ हुम० (आमीन)

मालिकों और गुलामों का इन्साफ़

हजरत प्राइशा रजियल्लाहु तआला अन्हा रिवायत फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में एक शख्स आकर

बैठ गया। उसने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल! विला शुब्हा मेरे कुछ गुलाम हैं, जो मुझ से झूठ बोलते हैं और मेरी खियानत करते हैं और मेरी नाफरमानी करते हैं (यह तो उनकी तरफ से है) और (मेरी तरफ से यह है) कि उनको गालियां देता हूं और सजा में मारता भी हूं। अब मुझे आप यह बताएं कि आखिरत में मेरा और उनका क्या मामला होगा? आप ने इशार्द फर्माया कि जब क्रियामत का दिन होगा तो तेरे गुलामों की खियानत और ना-फरमानी और झूठ बोलने का और तेरे सजा देने का हिसाब होगा, मगर तेरी सजा उनके कुसूरों के बराबर होगी तो मामला बराबर रहेगा, न तुझे कुछ उनकी तरफ से मिलेगा, न तुझ पर कुछ बोझ पड़ेगा और अगर तेरी सजा उनकी हरकतों से ज्यादा होगी तो उस ज्यादा सजा का उनको तुझ से बदला दिलाया जाएगा।

हजरत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि नबी का यह इशार्द सुनकर वह शस्स रोता और चीखता हुआ वहां से हट गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से फरमाया क्या तू अल्लाह तआला का यह इशार्द नहीं पढ़ता (जिसमें तेरे मामले का साफ जिक्र किया गया है।)

وَكَضَعِ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ

व न ज उल म बाजी नल किस्त लि यौमिल क्रियामति फला तुजलमु नपसुन शैअं व इन कान मिस्का ल हव्वतिम मिन खरदलिन अतैना बिहा व कफा बिना हासिबीन०

‘और हम क्रियामत के दिन इसाफ की तराजू कायम करेंगे, जो किसी पर जरा-सा भी जुल्म न होगा और अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे हाज़िर करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफी हैं।’

यह सुनकर उस शस्स ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने और इन गुलामों के हक में इस से बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको अपने से जुदा कर दूं। आप को गवाह बना कर कहता हूं कि वे सब आज़ाद हैं।’

जिन्नों से खिताब

जिन्नों को खिताब करके अल्लाह जल्ल शानुह सवाल फरमाएंगे, जैसा कि सूर: अन्आम में फरमाया—

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبَابًا نَحْشُرُ الْإِنْسَانَ قَدْ اسْتَكْبَرَ ثُمَّ مِنَ الْآسْرِ

व यो म नहशुरुहुम जमीअन या मअ शरल जिन्नि कदिस्तक्सतुं म मिनल इन्सि०

‘और जिस दिन अल्लाह इन सब को जमा करेगा (और फरमायेगा) ऐ जिन्नों की जमाअत! तुमने इसानों में से बड़ी जमाअत बस में कर ली थी।’

आगे फरमाया—

وَقَالَ أُولِي الْأَلْبَابِ مِنَ الْإِنْسَانِ أَسْمِعْ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَكَفَعْنَا أَعْيُنًا عَنْ الْآيَاتِ أَنْ يَتَوَفَّوْا عَنْهَا

व काल ओलियाउहु म मिनल इन्सि रव्व नस्तम्त अ बअजुना बिबअ ज़िब्व बलसना अ ज लनल्लजी अज्जल्ल लना०

‘और कहेंगे जिन्नों के दोस्त आदमियों में से कि ऐ हमारे रब! कायदा उठाया हम में एक ने दूसरे से और हम पहुंच गये अपने उस मुकर्रर वक्त को जो आपने हमारे लिए मुकर्रर फरमाया।’

दुनिया में जो लोग बुरत वगैरह पूजते हैं, वे सच में खबीस जिन्न व शैतान ही की पूजा करते हैं, इस ख्याल से कि वे हमारे काम निकालेंगे, उन की नियार्जे बढ़ाते हैं और उनके आस-पास नाचते और गाते-बजाते हैं। इस्लाम से पहले यह भी कायदा था कि आड़े वक्त में जिन्नों से मदद तलब किया करते थे, जब आखिरत में जिन्न और उनकी पूजा करने वाले पकड़े जाएंगे तो मुद्दिरक कहेंगे कि हमारे परवरदिगार! वह तो हमने वक्ती कार्रवाई करली थी और मौत का वायदा आने से पहले-पहले दुनिया की जरूरतों के लिए हम एक-दूसरे से काम निकालने के कुछ उपाय कर लिया करते थे।

आगे फरमाया—

قَالَ النَّارُ مَثُورٌ لِكُلِّ دِينٍ فِيهَا إِلَّا مَلَائِكَةً اللَّهُ أَنْزَلَ رَيْكَ حَكِيمٌ

عَلَيْكُمْ وَكَذَلِكَ نُوِي بَعْضُ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

कालन्नाह मस्वाकुम खालिदीन फ्रीहा इल्ला मा शाअल्लाहु इन्न
रब्ब क हकीमुन अलीम व कजालिक मुवल्ली बश्जजालिमी न
बश्जम बिमा कानू यक्सिबन०

‘अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि दोजख है तुम्हारा ठिकाना,
उसमें हमेशा रहोगे मगर हाँ, जो अल्लाह चाहे।’ बेशक तेरा रब
हिक्मत वाला और जानने वाला है और इसी तरह हम साथ मिला देंगे
गुनहगारों को एक-दूसरे से उनके अमाल की वजह से।’

फिर आगे फरमाया—

بَشِّرِ الْإِنْسَانَ الْإِنْسَانَ الَّذِي يَرْسُلُ رُسُلًا يَنْفَعُونَ عَلَيْهِ كَلِمَةً
إِنِّي وَبَيْنَ رُسُلِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ هَذَا الشَّاهِدُ نَأْخُذُ بِهَا
وَعَزَّيْنَاهُمُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنْفُسُكُمْ
كَانُوا أَكْفَرِينَ ۝

या मश्शरल जिन्नि वल इंसि अ लम यश्तिकुम रुसुलुम मिन्
कुम यकुसूनुन अलकुम आयाती व युन्जिरूनु कुम लिक्काअ योमिकुम हाजा
कालू शहिदना अला अन्फुसिना व शरंतहुमुल हयातुदुन्या व शहिद
अला अन्फुसिहिम अन्नहुम कानू काफिरीन०

‘ऐ जिन्नों और इंसानों की जमाअत ! क्या तुम्हारे पास तुम में
से रसूल नहीं आये थे जो तुम को मेरी आयतें सुनाते थे और उस दिन के
पेश आने से डराते थे, जिन्ने व इंसान इकरार करते हुए अर्ज करेंगे कि
हमने अपने गुनाह का इकरार कर लिया और उन को दुनिया की ज़िदगी
ने धोखा दिया और इकरारी होंगे कि वे काफिर थे।’

इस आयत से साफ़ जाहिर है कि जिन्नों और इंसानों से इकट्ठा
खिताब और सवाल होगा कि रसूल तुम्हारे पास पहुंचे या नहीं ? सवाल
के जवाब में जुर्म का इकरार करेंगे और यह मानेंगे कि हाँ, रसूल हमारे
पास आये थे। सच में हम ही मुजरिम हैं। इस आयत में है कि अपने
काफिर होने का इकरार करेंगे और कुछ आयतों में है कि ‘भा कुन्ना
मुशिरकीन’० (हम मुशिरक न थे) कहेंगे। इस शुद्धे का जवाब यह है कि

१. दोजख का अर्जाव काफिरों के लिए हमेशा है अल्लाह के चाहने से, अगर
अल्लाह चाहे तो खत्म कर दे, लेकिन इसका फ़ैसला हो चुका कि काफिर व
मुशिरक की बख्शिश नहीं। ये लोग हमेशा दोजख में रहेंगे। पंगम्बरों के जरिए
इसकी खबर दी जा चुकी है।

पहले इकार करेंगे और फिर आमालनामों और गवाहियों के जरिए
इकरार कर लेंगे और यह इंसान का कायदा है कि पहले जुर्म मानने से
इकार करता है, फिर जब इस तरह जान छूटती नज़र नहीं आती तो
यह समझ कर शायद इकरार करने ही से खलागी हो जाए, इकरार कर
लेता है (लेकिन वहां काफिर व मुशिरक की खलासी न होगी।)

जुर्म ने मानने पर गवाहियां

बदन के अंगों की गवाही

इंसान बड़ा भगड़ालू है और उसकी बहस की तबीयत क्रियामत के
दिन भी अपना रंग दिखायेगी और अल्लाह तआला से भी हुज्जत करेगा,
उस वक्त गवाहों के जरिए उसकी हुज्जत खत्म कर दी जाएगी, खुद
इंसान के अंग उसके खिलाफ गवाही देंगे, जैसा कि सूरः यासीन में
फरमाया—

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَنَشَهِدُ

أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

अल् यी म नख्तिमु अला अफवाहिहिम व तुकलिमुना ऐरीहिम व
तशहदु अर्जुलुहुम बिमा कानू यक्सिबून०

‘आज हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से
कलाम करेंगे और उनके पांव उन कामों की गवाही देंगे।’

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रिवायत बयान
फरमायी कि (एक बार) आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की
खिदमत में हम बैठे हुए थे कि उसी बीच अचानक आप को हंसी आ गयी
और (हमसे) फरमाया, क्या तुम जानते हो मैं क्यों हंस रहा हूँ ? हमने
अर्ज किया कि अल्लाह और उसका रसूल ही खूब जानते हैं। फरमाया
कि (क्रियामत के दिन) वन्दे जो अल्लाह से सवाल व जवाब करेंगे, इस
मंजर को याद करके मुझे हंसी आ गयी। वंदा कहेगा कि ऐ रब ! क्या
आप ने मुझे जुन्नम में (वचाने का एलान फरमा कर) मुत्मइन नहीं
फरमाया है। अल्लाह तआला फरमाएंगे कि हाँ, मैं ने यह वायदा किया
है। इसके बाद वंदा कहेगा कि मैं अपने मामले में किसी की गवाही न
मानूंगा, हाँ, अगर मेरे ही अंदर से कोई गवाही देदे तो एतबार कर सकता
है। अल्लाह तआला फरमायेंगे कि आज अपने बारे में तेरा खुद गवाह

होना काफी है और लिखने वालों की गवाही भी काफी है। (आं हजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने) फरमाया कि इसके बाद उसके मुंह पर मुहर लगा दी जाएगी (और अल्लाह की तरफ से) उसके अंगों को हुक्म होगा कि बोलो, चूनांचे उसके अंग उसके अमल को जाहिर कर देंगे। यह क्रिस्ता देख कर बंदा अपने अंगों से कहेगा कि दूर! दूर! तुम ही को अजाब से बचाने के लिए तो मैं बहस कर रहा था।

एक हदीस में है कि उस की रान और गोश्त और हड्डियां उस के अमल की गवाही देंगे।

जमीन की गवाही

हजरत अबूहुरैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आं हजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आदत 'यी म इजिन तुहदिसु अरब्बा रहा' (उस दिन जमीन अपनी खबरें बयान कर देंगी) तिलावत फरमा कर सवाल फरमाया, क्या तुम जानते हो जमीन के खबर देने का क्या मतलब है। सहाबा रजि० ने अजें किया कि अल्लाह और उस का रसूल ही खूब जानते हैं। आं हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जमीन के खबर देने का मतलब यह है कि हर मर्द व औरत के खिलाफ उसके आमाल की गवाही देगी जो उस की पीठ पर किये थे। वह कहेगी कि (उसने) मुझ पर पलां पलां दिन पलां-पलां अमल किया था। यह है जमीन का खबर देना।

आमाल नामे

क्रियामत के दिन आमालनामे पेश किये जाएंगे। किरामन कातिवीन जो दुनिया में बंदों के आमाल रिकार्ड करते हैं, आमाल नामे की शक्ल में पेश कर दिए जाएंगे। सूर: जासिया में फरमाया—

وَيَوْمَئِذٍ كُلُّ امَّةٍ جَائِيَةٌ كُلُّ امَّةٍ تَدْعِي إِلَى كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ هَذَا كِتَابُنَا عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسُخْ

१. मुस्लिम शरीफ,

२. मुस्लिम शरीफ अन अबी हुरैरह,

३. अहमद व तिमिजी शरीफ

مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

व तरा कुल्लु उम्मतिन जासियतिन् कुल्लु उम्मतिन तुद्आ इला किताबिहा अल यी म तुज्जीन मा कुनुम तअमलून हाजा किताबुना यन्तिकु अलकुम विल्हविक इन्ना कुन्ना नस्तन्सिखु मा कुनुम तअमलून० और (उस दिन) आप हर फिक्र को देखेंगे कि (खोफ की वजह से) जानू के बल गिरे पड़े होंगे, हर फिक्र अपने नामा-ए-आमाल की तरफ बुलाया जाएगा (और उनसे कहा जाएगा) कि आज तुम को तुम्हारे कामों का बदला दिया जाएगा। यह हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे मुकाबले में ठीक-ठीक बोल रहा है और हम तुम्हारे आमाल को लिखवा लिया करते थे।

सूर: बनी इस्राईल में फरमाया—

وَكُلُّ اِنْسَانٍ اِلَى رُؤْسِهِ طَائِفَةٌ فِي عَمَلِهِمْ وَنُخْرِجُهُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
كِتَابًا يَكْفِيهِ مَنُشُورًا اِنْ اَرَادْتُمْ حَقَّ يَنْفُسِكُمُ الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ
حَسِيبًا

व कुल्लु इन्सानिन अन्जम्नाहु ताइ र हू फ्री अनुकिही व नुख्रिजु लहु यौमल क्रियामति किताबं यल्काहु मन्सूरा० इकरअ किताब क कफा विनपिस कल यी म अलै क हसीवा०

और हम ने हर इंसान का अमल उसके गले का हार कर रखा है और क्रियामत के दिन हम उसका आमालनामा निकाल कर सामने कर देंगे जिनको वह खुला हुआ देख लेगा (और उससे कहेंगे) पढ़ ले अपना आमालनामा, आज तू खुद अपना हिसाब लेने वाला काफी है।

आमालनामों में सब कुछ होगा और मुज्रिम

डरे हुये हैरत और हसरत करेंगे

आमालनामों में सब कुछ होगा और बद-अमल आमालनामों को देख कर डर जाएंगे और जो भी दुनिया में किया था, सब मौजूद पाएंगे। सूर: कहफ में इशार्द है—

وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَلْمِذُومِينَ مُشْفِقِينَ وَمَنَافِقِينَ وَيَقُولُونَ
يَا وَيْلَتَنَا مَا لَ هَذَا الْكِتَابِ لَا يَغْنَأُ فِيهِ صَغِيرَةٌ وَلَا كَبِيرَةٌ اِلَّا اُحْصَاهُ
وَوَجِدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا

व बुझिअल किताबु फ तरल मुजिमीन मुस्फिकी न मिम्मा फ्रीहि व यकूल न या व ल त ना मालि हाजल किताबि ला युगादिरु सगीरतव्व ला कबीरतन इल्ला अहसाहा व व ज दू मा अमिलू हाजिरव्व ला युजिल्लिमु रब्बु क अ ह दा०

और आमाल नामा रख दिया जाएगा तो आप मुजिमीनों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ होगा उससे डर रहे होंगे और कहते होंगे कि हाय ! हमारी कम-बस्ती ! इस नामा-ए-आमाल की अजीब हालत है कि वगैर कलमबंद किए हुए उसने न कोई छोटा गुनाह छोड़ा, न कोई बड़ा गुनाह छोड़ा और जो कुछ उन्होंने किया, सब कुछ मौजूद पाएंगे और आपका रब किसी पर जुल्म न करेगा ।'

आमालनामों की तक्सीम

हर शख्स का आमालनामा उसके सुपुर्द किया जाएगा, जो लोग नेक और निजात पाने वाले होंगे, उनके आमालनामे दाहिने हाथ में दिए जाएंगे और जो लोग बद-अमल और दोखख में गिरने वाले होंगे, उनके आमालनामे बाएँ हाथ में और पीठ के पीछे से दिए जाएंगे—

सूर: इन्शिकाक में फरमाया—

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًّا حَافِلًا فَبِمَا مَنَ
أَوْفَىٰ كِتَابِهِ يَمِينُهُ تَسْوَفُ ۚ يَخَاسِبُ حَسَابًا يَسِيرًا وَثَقِيلًا
إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا وَأَمَّا مَنْ أَوْفَىٰ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ تَسْوَفُ
يَدْعُوا ثُبُورًا وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۚ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مُسْرُورًا إِنَّهُ
كَانَ يَخُورُ يُخَبِّلِي إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

या ऐयुहल इंसानु इन्न क कादिहुन इला रब्बि क कद्हन फ मुला- फ्रीहि फ अम्मा मन ऊति य किता व ह वियमीनिही फ सोफ़ युहासबु हिसाबय्यसीरव्व यं कलिबु इला अहिलही मस्रूरा व अम्मा मन ऊति य किता व ह वरा अ जहिरही फ सो फ यद्अ सुवूरव्व यस्ला सईरा इन्नहू का न फ्री अहिलही मस्रूरा इन्नहू जन्न अल्लय्यहू र बला इन्न रब्बहू का न विही वसीरा०

ऐ इंसान ! अपने रब के पास पहुंचने तक काम में कोशिश कर रहा है, फिर (उस काम के बदले) से तू मिलेगा सो वह शख्स जिसका

आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दे दिया गया सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा और वह (हिसाब से फारिश होकर) अपने मुताल्लिक लोगों के पास खुश-खुश आएगा और जिस शख्स का आमालनामा (बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा सो वह मोत को पुकारेगा और जहन्नम में दाखिल होगा । दुनिया में उस का यह हाल था कि (आखिरत में बे-फिक्र होकर) अपने बाल-बच्चों में खुश-खुश रहा करता था और यह ख्याल कर रखा था (उसको खुदा की तरफ) लौटना नहीं है, लौटना क्यों न होता, उस का रब उस को खूब देखता था ।'

जो शख्स दुनिया में खुश-खुश रहा, दुनिया की ज़िदगी को असल समझ कर उसी में मस्त रहा और आखिरत की ज़रा फिक्र न की और आखिरत की बातों को झूठा समझा, क्रियामत के दिन सख्त मुसीबत और रंज व शम में पड़ा रहेगा । इसके खिलाफ़ जो लोग दुनिया में रहते हुए, आखिरत की फिक्र में धुले जाते थे और मरने के बाद वाली हालत का उन को फिक्र लगा रहता था, वे क्रियामत के दिन दाहिने हाथ में आमालनामा लेकर खूब खुश होंगे, बद-अमल यहां खुश हैं और नेक अमल वहां खूश होंगे ।

आमालनामों के मिलने पर नेक बन्दों की बे-हद खुशी और बुरों का बेहद रंज

सूर: हाक्का में इसे और ज्यादा खोल दिया गया है, चुनंजे इशदि है—

يَوْمَئِذٍ تَعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

योम इजिन तुअ रजू न ला तस्फा मिन्कुम खाफियः०

'उस दिन तुम लोग पेश किये जाओगे और तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा ।'

इस के बाद दाहिने हाथ में किताब मिलने वालों के लिए फरमाया—

فَأَمَّا مَنْ أَوْفَىٰ كِتَابِهِ يَمِينُهُ فَيَقُولُ هَٰؤُلَاءِ أَتُوبُهُ لِكِتَابِيَةِ ۚ إِنِّي كُنتُ
إِلَىٰ مُلَاقٍ حَسَابِيَةٍ ۚ هُمُ فِي عَيْشَةٍ رَّاحِيَةٍ ۖ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ
تَطُورُهَا دَانِيَةٌ ۚ كَلَّا ۚ وَاشْرَبُوا هَنَاءًا مِّنْ أَسْفَلِ فِي الْأَيَّامِ الْعَالِيَةِ

फ अम्मा मन ऊति य किता व ह वियमीनिही फ यकूल हाउ मुक-रऊ कितावियह इन्नी जनन्तु अन्नी मुलाकिन हिसाबियः फ हु व फ्री शीशतिराजियः फ्री जन्नतिन आलियतिन कुतुफुहा दानियतिन कुलू वदरवू

हनीअम बिमा अस्लपतुम फ़िल अय्यामिल खालियः०

‘सो जिनके दाहिने हाथ में किताब दी जाएगी तो (खुशी में कहेगा) लीजियो, पढ़ियो मेरा आमालनामा। मेरा तो अक़ीदा ही था कि वेशक मेरा हिसाब मिलना है, सो वह शस्स बड़ी पसंदीदा ज़िदगी में होगा, बुलंद वहिश्त में होगा, जिसके मेवे झुके हुए होंगे और उनसे कहा जाएगा कि खाओ और पियो रच कर। यह बदला है उन (नेक) कामों का जो तुम ने पिछले दिनों में पहले से (आगे) भेज दिए थे।’

दाहिने हाथ में आमालनामे का मिलना निजात पाने और मक्बूल होने की निशानी होगी, ऐसा आदमी मारे खुशी के हर एक को दिखाता फिरेगा, कि लो आओ मेरा आमालनामा पढ़ो और यह भी कहेगा कि मैं ने दुनिया में यह समझ रखा था कि हिसाब पेश होना है, इस ख्याल से मैं डरता रहा और फ़िक्र में घुलता रहा। आज उसका दिल खुश करने वाला नतीजा देख रहा हूँ।

इसके बाद बाएं हाथ में किताब मिलने वालों की हालत का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया—

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ يَقُولُ لِمَ أُوتِيَ كِتَابِي وَكَمْ أَدْرِمَا
حَسْبِيَ يَلَيْكُمَا كَانَتِ الْعَاصِيَةُ مَا أَعْنَى عَنِّي مَا لِي هَلَكْتُ عَنِّي
سُئِلْتُ بِهِ ۝

व अम्मा मा ऊति य किता बहू बिशिमा लिहि फ़ यकूलु या लै तनी लम ऊति य किताबियह व लम अदरि मा हिसाबियह या लै त हा कानतिल काज़ियह मा अन्ना अन्नी मालियः ह ल क अन्नी मुल्तानियः०

‘और जिसके बाएं हाथ में किताब दी जाएगी, सो वह कहेगा कि काश! मुझे मेरा आमालनामा न मिलता और मुझे खबर ही न होती कि मेरा क्या हिसाब है। काश! वही मौत (मेरा) काम तमाम करने वाली होती (और मुझे दोबारा ज़िदगी न मिलती) कुछ मेरे काम न आया मेरा माल, मुझ से जाती रहे मेरी हुकूमत।’

सूरः इन्शिकाक़ में फ़रमाया कि पीठ के पीछे से बद-अमलों को आमालनामे दिए जाएंगे और सूरः हाक्का में फ़रमाया कि बद-अमलों को बाएं हाथ में आमालनामे दिए जाएंगे, दोनों का मिलाने से मालूम होता है कि बाएं हाथ में जिनको आमालनामे दिए जायेंगे, सो पीछे से दिए जाएंगे, गोया फ़रिश्ते उनकी सूरत देखना पसंद न करेंगे और मुम्किन है कि मशकें बंधी हों, इस लिए आमालनामा पीठ की तरफ़ से बाएं हाथ में देने की नीयत आये।

अमल का वज़न

अल्लाह तआला हमेशा से सारी मख़लूक के अमल को जनता है, अगर क्रियामत के मैदान में सिर्फ़ अपनी जानकारीयों की बुनियाद पर अमल का बदला व सज़ा दें तो उनको इस का भी हक़ है, लेकिन हशर के मैदान में ऐसा न किया जाएगा, बल्कि बन्दों के सामने उनके आमालनामे पेश कर दिए जाएंगे, वज़न होगा, गवाहियां होंगी, मुज़िम इंकारी भी होंगे और दलील से जुर्म भी साबित किया जाएगा ताकि सज़ा भुगतने वाले यों न कह सकें कि हम पर जुल्म करके बे-वजह अज़ाब में डाला गया।

सूरः अन्आम में फ़रमाया—

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَالَّذِينَ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ كَانُوا أَهْلًا لِلْآخِرَةِ
وَمَنْ حَقَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ كَانُوا
بِآيَاتِنَا كَاطِبِينَ

बल् वज़न यो म-इजि-निल-हक्कु फ़ मन सकुलत मवाज़ीनुह फ़ उलाइ क हुमुल मुफ़िलहून व मन खफ़क़त मवाज़ीनुह फ़ उलाइ क लज़ी न खसिरू अन्फ़ुसहुम बिमा कानू बिआयातिना यज़िलमून०

‘और तौल उस दिन ठीक होगी सो जिन की तौलें भारी पड़ें, वही लोग बा-मुराद होंगे और जिनकी तौलें हल्की पड़ें, सो वही हैं, जिन्होंने अपना आप नुवसान किया, इस वजह से कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे।’

हज़रत सल्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आं-हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्रियामत के दिन (आमाल तौलने की) तराजू रख दी जाएगी (और वह इतनी ही लम्बी-चौड़ी होगी कि) अगर उसमें सारे आसमान व ज़मीन रख कर वज़न किए जाएं तो सब उसमें आ जाएं। उसको देखकर फ़रिश्ते खुदा के दरबार में अर्ज़ करेंगे कि यह किस के लिए तौलेगी। यह सुनकर फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! आप पाक हैं, जैसा इबा-दत का हक़ है, हमने ऐसी इबादत आप की नहीं की।’

१. अन्तर्गति वतर्हीव,

हजरत अनस रजियल्लाहु तआला अन्हु आहजरत सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने इशदि फरमाया (क्रियामत के दिन) तराजू पर एक फरिश्ता मुकर्रर होगा (अमल का वजन करने के लिए) इसान इस तराजू के पास लाये जाते रहेंगे, जो आएगा, तराजू के दोनों पलड़ों के दमियान खड़ा कर दिया जाएगा, पस अगर उस के तौल भारी हुए, तो वह फरिश्ता ऐसी बुलंद आवाज से पुकार कर एलान कर देगा, जिसे सारी मखलूक सुनेगी कि पलां हमेशा के लिए सआदतमंद हो गया, अब कभी इसके बाद बद-नसीब न होगा और अगर उसके तौल हल्के रहे, तो वह फरिश्ता ऐसी बुलंद आवाज से पुकार कर एलान कर देगा, जिसे सारी मखलूक सुनेगी कि पलां हमेशा के लिए नामुराद हो गया, अब कभी इसके बाद खुश-नसीब न होगा।^१

हजरत शाह अब्दुल कादिर साहब रहमतुल्लाह अलैहि 'मुजिहूल कुरआन, में लिखते हैं कि हर शरू के अमल वजन के मुवाफिक लिखे जाते हैं, एक ही काम है, अगर इस्लास व मुहब्बत से शरअी हुक्म के मुवाफिक किया गया और सही मौके पर किया गया तो उसका वजन बढ़ गया और दिखावे को किया या हुक्म के मुवाफिक न किया या ठिकाने पर न किया तो वजन घट लिया, आखिरत में वे कागज तुलेंगे, जिसके नेक काम भारी हुए तो बुराइयों से माफ़ी मिली और (जिसके नेक काम) हल्के हुए तो रकड़ा गया।

कुछ उलेमा का कहना है कि क्रियामत के दिन आमांल को जिस्म देकर हाजिर किया जाएगा और ये जिस्म तुलेंगे और इन जिस्मों के वजनों के हल्का या भारी होने पर फ़सले होंगे, कागजों का तुलना या आमांल को जिस्म देकर तौला जाना भी ना-मुम्किन नहीं है और आमांल को वगैर वजन दिए यों ही तौल देना भी कादिर मुतलक की कुदरत से बाहर नहीं है। आज जब कि साइंस का दौर है और नई-नई ईजादे हर दिन तरक्की पर हैं, आमांल का तौल में आ जाना बिल्कुल समझ में आ जाता है, ये आजिज वन्दे, जिन को अल्लाह जल्ल जलालुहु व अम्म नबालुहु ने थोड़ी सी समझ दी है, थरमापीटर के जरिए जिस्म की गर्मी की मिक्दार बता देते हैं और इसी तरह के बहुत से आले हैं जो जिस्मों के अलावा दूसरी चीजों की मिक्दार मालूम करने के लिए बनाए गए हैं, तो उस एक ही खुदा की कुदरत से यह कैसे बाहर माना जाए कि अमल तौल में न आ सकेंगे। अगर किसी को यह

१. सौभाग्यवान. २. अनर्गुन वनर्हीव, ३. यंत्र,

शुद्ध हो कि अमल तो महसूस होने वाला वजूद नहीं रखते और वजूद में आने के साथ ही फना होते रहते हैं, फिर उनका आखिरत में जमा होना और तौला जाना क्या मानी रखता है? तो इसका जवाब यह है कि जिस तरह तकरीरों का रिकार्ड कर लिया जाता है और वह रेडियो स्टेशन से फंलायी जाती रहती हैं, हालांकि बंद कमरे में जब मुकर्रर (वक्ता) तकरीर करता है तो एक दम आन की आन में सब नहीं कह देता, बल्कि एक-एक हर्फ अदा करता है और जब एक हर्फ जुवान से निकल कर खत्म हो जाता है, तब दूसरा हर्फ अदा होता है, इसके बावजूद भी सारी तकरीर महफूज (सुरक्षित) हो जाती है, तो जबकि अल्लाह जल्ल जलालुहु ने अपने बन्दों को लफ्जों और बातों को पकड़ में लाकर इकट्ठा करने और रिकार्ड में लाने की ताकत दी है तो वह खुद इसकी कुदरत क्यों न रखेगा कि अपनी मखलूक के अमल व हरकत का पूरा रिकार्ड तैयार रखे, जिसमें से एक जरा और शोशा भी गायब न हो और महसूस तौर पर क्रियामत के दिन उन का वजन सब के सामने जाहिर हो जाए—

يُجْزَى اللَّهُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

लि यजिजयल्लाहु कुल्लु नफिसम्मा क स बत इन्नल्ला ह सरीअुल हिसावि०

एक बंदे के अमल का वजन

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहजरत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया कि विला शुद्धा क्रियामत के दिन सारी मखलूक के सामने अल्लाह तआला मेरे एक उम्मत को (पूरे मज्मे से) अलग करके उस के सामने निन्नानवे दफ्तर खोल देंगे। हर दफ्तर वहां तक होगा जहां तक निगाह पहुंचे। (इन दफ्तरों में सिर्फ गुनाह होंगे) इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहु उससे सवाल फरमाएंगे कि क्या तू इन आमांलनामों में से किसी चीज का इंकार करता है? क्या मेरे (मुकर्रर किए हुए) लिखने वालों ने तुझ पर कोई जुल्म किया है (कि कोई गुनाह किए वगैर लिख लिया हो या करने से ज्यादा लिख दिए हों)? वह अर्ज करेगा कि ऐ परवरदिगार! नहीं!! (न इंकार है, न जुल्म का दावा है) इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहु सवाल फरमाएंगे कि क्या तेरे पास इन बद-आमांलियों का कोई उज्र है? वह अर्ज करेगा कि ऐ परवरदिगार! मेरे पास

कोई उज़्र नहीं !

इसके बाद अल्लाह का इशार्द होगा कि हां बेशक तेरी एक नेकी हमारे पास महफूज़ है (वह भी तेरी सामने आती है) इसके बाद एक पुर्जा निकाला जाएगा जिसमें—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुह व रसूलुह०

लिखा होगा और उस बन्दे से फ़रमाया जाएगा कि जा, अपने आमाल का वज़न होता देख ले। वह बन्दा अर्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब ! (तौलना-न-तौलना बराबर है। मेरी हलाकत जाहिर है, क्योंकि) इन दफ़्तरों की मौजूदगी में इस पुर्जे की क्या हकीकत है ? अल्लाह जल्ल शानुह फ़रमायेंगे कि यक़ीन जान ! तुझ पर आज जुल्म न होगा (तौलना जरूरी है)। चुनांचे वह सारे दफ़्तर (इंसाफ़ की तराजू के एक पलड़े में और वह पुर्जा दूसरे पलड़े में रख दिया जाएगा और (नतीजे के तौर पर) वे दफ़्तर हल्के रह जाएंगे और वह पुर्जा (इन सब दफ़्तरों से) भारी निकलेगा, इसके बाद सयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बात (असल यह है कि) अल्लाह के नाम की मौजूदगी में कोई चीज़ वज़नी न हो सकेगी।

यह इस्लास और दिल में अल्लाह का डर और अल्लाह तआला से मुहब्बत व ताल्लुक के साथ पढ़ने की बरकत है, अल्लाह का नाम लेना भी उसी वक़्त नेकी बनता है जबकि ख़ुलूस के साथ पढ़ा जाए, यों काफ़िर भी कभी-कभी कलमा पढ़ देते हैं, लेकिन उनका यह नाम इलाही ख़ाली जुवान से ले लेना आख़िरत में उन को निजात न दिलायेगा, ईमान भी हो, इस्लास भी, तब ही नेकी में जान पड़ती है और वज़नदार बनती है।

सबसे ज़्यादा वज़नी अमल

हज़रत अबुद्दुर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, आंहुज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि विला शुद्हा सबसे ज़्यादा वज़नी चीज़ जो क़ियामत के दिन मोमिन की तराजू में रखी जाएगी, वह अच्छे अख़लाक़ होंगे, फिर फ़रमाया कि विला शुद्हा अल्लाह

१. तिमिज़ी, इन्ने माज़ा,

गंदगी और बेहयाई वाले से बुरज़ (कपट) रखते हैं।

काफ़िरों की नेकियां बे-वज़न होंगी

सूरः कहफ़ के आख़िरी रकूअ में इशार्द है—

ثُمَّ لَنَنْبِئَنَّكَ بِالْأَشْرَارِ أَعْمَالًا الَّذِينَ صَدَقُوا لَهُمْ أَجْرُهُمْ قِطْعَةً مِّنَ الْجَزَاءِ وَلَهُمْ فِيهَا نِسَبَةٌ كَثِيرَةٌ لَّهُمْ فِيهَا رِزْقٌ وَرِزْقٌ

कुल हल उनव्विउकुम विल् अख़सरी न अम् माला० अल्लजी न जल्ल सम् युहुम फ़िल हयातिदुन्या व हुम यह्सबू न अन्नहुम युहिसनू न मुन्श्रा उलाइकल्लजी न क फ़रू बिआयाति रव्विहिम व लिकाइही फ़ हबितत अम् मालुहुम फ़ ला नुकीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़ना०

‘आप फ़रमा दीजिए, क्या हम तुम को ऐसे लोग बताएं जो आमाल के एतबार से बड़े घाटे में हैं (ये) वे लोग हैं जिनकी कोशिश अकारथ गयी दुनिया की ज़िदगी में और वे समझते रहे कि ख़ूब बनाते हैं काम ! ये वही हैं, जो इंकारी हुए अपने रब की आयतों के और उसकी मुलाक़ात के सिवा अकारथ गए उनके अमल, पस हम क़ियामत के दिन उनके लिए तौल कायम न करेंगे।’

यानी सब से ज़्यादा टोट और ख़सारे वाले हकीकत में वे लोग हैं, जिन्होंने वर्षों दुनिया में गुज़ारे और मेहनत व कोशिश करके नफ़ा कमाते रहे और दुनिया जोड़ कर खुश हुए और यह यक़ीन करते रहे कि हम बड़े कामियाब और वा-मुराद हैं। कल हज़ारपति थे, आज लखपति हो गए, पिछले साल म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर थे, इस चुनाव में मेम्बर पार्लिया-मेंट बन गये, शरज़ कि इसी फेर में ज़िदगी गुज़ारी, अल्लाह को न माना, उसकी आदतों का इन्कार किया, क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने हाज़िरी से झुठलाया, मरने के बाद क्या बनेगा, इसको कभी न सोचा, सिर्फ़ दुनिया की तरक्कियों और कामियाबियों को बड़ा क़ामाल समझते रहे, जब क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो कुफ़ और दुनिया की मुहब्बत और दुनिया की कोशिश ही उनके आमालनामों में होगी, वहां ये चीज़ें बे-वज़न होंगी और दोज़ख में जाना पड़ेगा, उस वक़्त आंखें खुलेंगी कि कामियाबी क्या है ?

१. मिशक़ात शरीफ़,

यहूदी और ईसाई, मुशिरक और काफिर, जो दुनिया की ज़िंदगी में अपने ख्याल में नेक काम करते हैं, जैसे पानी पिलाने के लिए जगह का इतिजाम करते हैं और मजदूर की मदद कर गुजरते हैं या अल्लाह के नामों का विर्द (बार-बार पढ़ना) रखते हैं 'इला गैरि जालिक'। इस क्रिस्म के काम भी आखिरत में उनको निजात न दिलाएंगे। साधू और राहिव (योगी, संसार-त्यागी) जो बड़ी-बड़ी रियाजतें (तपस्या) करते हैं और मुजाहदा करके नफ़स को मारते हैं और यहूदियों और ईसाइयों के राहिव और पादरी जो नेकी के ख्याल से शादी नहीं करते, इस क्रिस्म के तमाम काम बे-फ़ायदा हैं, आखिरत में कुफ़्र की वजह से कुछ न पाएंगे, काफिर की नेकियां मुर्दा हैं, वे क्रियामत के दिन नेकियों से खाली हाथ होंगे। सूर: इब्राहीम में इशादि है—

مَنْ الْكَافِرِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ كَمَا كَفَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ فِي الدُّنْيَا
عَاصِينَ لَا يُقْدِرُونَ وَمَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا نَفْعًا هُوَ الضَّلَالُ الْبَیِّنَةُ

म स लल्लजी न क फ़रू बिरब्विहिम अम् मालुहुम क र मादि-
निश-तहत बिहिरिहु फ़ी योमिन आसिफ़िन ला यक्दिहू न मिम्मा क स व
अला शैइन जालिक हुवज़ालुल वईद०

यानी (इन काफ़िरो को अगर अपनी निजात के मुताल्लिक यह ख्याल हो कि हमारे आमांल हमको नफ़ा देंगे तो इसके मुताल्लिक सुन लो कि) जो लोग अपने परवरदिगार के साथ कुफ़्र करते हैं, उनकी हाजत (अमल के एतबार से) यह है कि जैसे कुछ राख हो, जिसे तेज़ आंधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए (कि इस शकल में राख का नाम व निशान न रहेगा, इसी तरह) इन लोगों ने जो अमल किए थे, उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा, (बल्कि राख की तरह सब जाया व बर्बाद हो जाएंगे और कुफ़्र व गुनाह ही क्रियामत के दिन साथ होंगे। यह काफ़ी दूर की गुमराही है) कि गुमान तो यह हो कि हमारे अमल नफ़ा देने वाले होंगे और फिर ज़रूरत के वक़्त कुछ काम भी न आएंगे।

साहिबे तपसीरे मजहरी 'फ़ ला नुकीमु लहुम योमल क्रियामति वजना' की तपसीर में लिखते हैं कि अल्लाह तआला के नज़दीक काफ़िरो के अमल का कोई एतबार या अहमियत न होगी। फिर हज़ूरे अब्दस सल्लल्लाहु तआला अन्ही व सल्लम का इशादि, हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल फ़रमाया है (जो इस किताब में पहले

गुजर भी चुका है) कि (क्रियामत के दिन) कुछ लोग भारी-भरकम (पोजी-
शन के एतबार से या जिस्म की मोटाई के लिहाज़ से) मोटे-ताजे आएंगे,
जिनका वजन अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पैर के बराबर भी न होगा।
इसके बाद सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अन्ही व सल्लम ने इशादि
फ़रमाया कि (मेरी ताईद के लिए) तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो—
'फ़ ला नुकीमु लहुम योमल क्रियामति वजना०'

फिर साहिबे तपसीरे मजहरी आयत के इन लफ़्ज़ों की दूसरी
तपसीर करते हुए फ़रमाते हैं कि या यह मानी हैं कि इन (काफ़िरो) के
लिए तराजू खड़ी भी न की जाएगी और तौलने का मामला उनके साथ
होना ही नहीं, क्योंकि उनके (नेक) अमल वहां पर अकारय हो जाएंगे,
इसलिए सीधे दोज़ख में डाल दिए जाएंगे। आयत में आये लफ़्ज़ों के
तीसरा मानी बयान करते हुए फ़रमाते हैं, या यह मानी हैं कि काफ़िर
अपने जिन अमल को नेक समझते हैं, क्रियामत की तराजू में उनका कुछ
वजन न निकलेगा। (क्योंकि वहां इसी नेक काम में वजन होगा जिन्हें
ईमान की दोलत हासिल करते हुए, इस्लास के साथ (अल्लाह की खुशी
हासिल करने के लिए) दुनिया में किया गया था।

इसके बाद अल्लामा सुयूती रह० से नक़ल फ़रमाते हैं कि इल्म
वालों का इसमें इस्तिस्नाफ़ है कि ईमान वालों के अमल का सिर्फ़ वजन
होगा या काफ़िरो के अमल भी तौले जाएंगे। एक जमाअत का कहना है
कि सिर्फ़ मोमिनो के अमल तौले जाएंगे (क्योंकि काफ़िरो की नेकियां तो
अकारय हो जाएंगी, फिर जब नेकी के पलड़े में रखने के लिए कुछ न रहा
तो एक पलड़ा क्या तौला जाए ?) इस जमाअत ने 'फ़ ला नुकीमु लहुम
योमल क्रियामति वजना' से दलील ली है। दूसरी जमाअत कहती है कि
काफ़िरो के अमल भी तौले जाएंगे। (लेकिन वह बे-वजन निकलेंगे)।
उनकी दलील आयत 'व मन खफ़कत मवाजीनुहू फ़ उलाइ कल्लजी न
खसिरू अन्फु मुहुम फ़ी जहन्नम खालिदून०' से है, जिसका तर्जुमा यह
है, 'और जिनकी तौल हल्की निकली, तो ये वे लोग हैं जो हार बँड अपनी
जान, ये दोज़ख में हमेशा रहेंगे, दलील 'हुम फ़ी हा खालिदून' से है। मत-
लब यह है कि अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा में हल्की तौल निक-
लने वालों के बारे में फ़रमाया है कि वह दोज़ख में हमेशा रहेंगे। इससे
मालूम हुआ कि काफ़िरो के आमांल भी तौले जाएंगे, क्योंकि इस पर सब
का इत्तिफ़ाक़ है कि मोमिन कोई भी दोज़ख में हमेशा न रहेगा।

इसके बाद साहिबे तपहरी मजहरी अल्लामा कर्तबी का कौल नक़ल फ़रमाते हैं कि हर एक के आमाल नहीं तोले जाएंगे (बल्कि इसमें तपसील है और वह यह कि) जो लोग बग़ैर हिसाब ज़न्नत में जाएंगे या जिनको दोज़ख़ में बग़ैर हिसाब हज़र का मैदान कायम होते ही जाना होगा इन दोनों जमाअतों के आमाल न तोले जाएंगे और इनके अलावा बाकी मोमिनों व काफ़िरों के अमल का वज़न होगा।

साहिबे तपसीरे मजहरी इसके बाद फ़रमाते हैं कि अल्लामा कर्तबी का यह इशार्द दोनों जमाअतों के मरलकों और दोनों आयतों (आयत सूरः कहफ़ और आयत सूरः मूमिनून) के मतलबों को जमा कर देता है।

हज़रत हकीमुल उम्मत क़हस (बयानुल कुरआन में) सूरः आराफ़ के शुरू में एक मुफ़्तीद तम्हीद के बाद इशार्द फ़रमाते हैं कि, 'पस इस मौज़ान में ईमान व कुफ़्र भी वज़न किया जाएगा और इस वज़न में एक पलड़ा खाली रहेगा और एक पलड़े में अगर वह मोमिन है तो ईमान और अगर काफ़िर है तो कुफ़्र रखा जाएगा। जब इस तौल से मोमिन व काफ़िर अलग-अलग हो जाएंगे (तो) फिर खास मोमिनों के लिए एक पल्ले में उनके हसनात और दूसरे पल्ले में उनके सय्यिआत रखकर उन अमल का वज़न होगा और जैसा कि दूरें मंसूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया गया है कि अगर हसनात ग़ालिब हुए तो जन्नत और अगर सय्यिआत ग़ालिब हुए तो दोज़ख़ और अगर दोनों बराबर हुए तो आराफ़ तज्वीज होगी, फिर चाहे शफ़ाअत से पहले सज़ा या सज़ा के बाद मग़फ़रत हो जाएगी (और दोज़ख़ वाले और आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।)

अल्लाह की रहमत से बख़शे जायेंगे

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हरगिज़ कोई जन्नत में अल्लाह की रहमत के बग़ैर दाख़िल न होगा? सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने सवाल किया किया रसूलल्लाह! आप भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाएंगे? इसके जवाब में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपना मुबारक हाथ सर पर

रखकर फ़रमाया और न मैं जन्नत में दाख़िल हूँगा, मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत में ढाँप ले।^१

इस हदीसे मुबारक में नेक अमल करने वालों को और खास तौर से उन इबादत करने वालों, दुनिया से चाव न रखने वालों, अल्लाह का ज़िक्र करने वालों, और जिहाद करने वालों को तंबीह फ़रमायी गयी है जो हर वक़्त भलाई और नेकी में लगे रहते हैं कि अपने अमल पर नाज़ न करें और न समझें कि हम जन्नत के हक़दार बाजबी तौर पर हो चुके बल्कि चाहिए कि अपने आमाल को कमतर समझते रहें और डरते रहें कि शायद कुवूल न हों। अगर अल्लाह तआला आमाल कुवूल न फ़रमाये तो किसी की उन पर क्या ज़बरदस्ती है? जो नेक अमल लोग करते हैं, उनको कुवूल फ़रमा कर सवाब से नवाज़ें और जन्नत में दाख़िल फ़रमाएं, यह उनकी सिर्फ़ रहमत है, उनकी मामूली नेमत का बदला भी सारी उम्म के अमल नहीं हो सकते हैं (जैसा कि नेमतों के सवाल के सिलसिले में रिवायत गुज़र चुकी है) जब आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि कोई भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल न होगा, तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने यह समझ कर कि आप तो अल्लाह तआला के हुक्मों पर पूरी तरह कायम हैं और सख्त मेहनत और मुजाहदा इबादत और तब्लीग़ के लिए बरदाश्त करते हैं और आपके किसी भी अमल में ज़रा ख़ोट का शुब्हा भी नहीं हो सकता, तो तबरीह (व्याख्या) चाही कि आप जन्नत में आमाल की वज़ह से जा सकेंगे या नहीं। आपने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं भी अल्लाह की रहमत का मुहताज हूँ, उसकी रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाऊँगा, है तो अल्लाह के आप बन्दे ही, आखिर आप रहमत के मुहताज क्यों न होंगे। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा पर बे-इतिहा रहमत व रिज़वान की वारिधें हों, जिन्होंने सवाल करके बाद में आने वालों के लिए अच्छी तरह दोन समझने के लिए नबी सल्ल० के इशार्दात का ज़ख़ीरा जमा कर लिया और फिर उसको बाद वालों के मुपुर्द कर गये। जो लोग हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को खुदाई मस्नियारात देते हुए कहते हैं कि जो लेना है, वह लगे मुहम्मद से, इस मुबारक हदीस को ग़ौर से पढ़ें।

हर एक शर्मिदा होगा

हजरत मुहम्मद विन अबी उमैरा रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि बिला शुब्हा अगर कोई बन्दा पैदाइश के दिन से मौत आने तक अल्लाह की फरमाबंददारी में चेहरे के बल गिरा पड़ा रहे तो वह (क्रियामत के दिन इस सारे अमल को हकीर (तुच्छ) समझेगा और यह तमन्ना करेगा कि उसको दुनिया की तरफ वापस कर दिया जाए ताकि और ज्यादा बदला व सवाब (भले काम करके) हासिल करे।

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि तुम में से जिसको भी मौत आएगी, जरूर शर्मिदा होगा। सहाबा रजि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! किस चीज की शर्मिंदगी होगी, फरमाया, अगर अच्छे अमल करने वाला था, तो यों सोच कर शर्मिन्दा होगा कि और अमल कर लेता तो क्या अच्छा होता और अगर बुरे अमल करने वाला था, तो यों सोचेगा कि काश मैं बुराइयों से अपनी जान को बचाये रखता।

शफाअत

क्रियामत में शफाअत भी अल्लाह जल्ल शानुह कुबूल फरमाएंगे और उससे ईमान वालों को बड़ा नफा पहुंचेगा। आहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया है कि क्रियामत के दिन तीन गिरोह शफाअत करेंगे—

(१) अबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलामु, (२) फिर उलेमा, (३) फिर शुहदा। लेकिन शफाअत वही कर सकेगा, जिसे अल्लाह तआला की तरफ से शफाअत करने की इजाजत होगी, जैसा कि फायतल कुसी में फरमाया—

مَنْ ذَاكَ الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَ اللَّهِ إِلَّا بِإِذْنِهِ۔

मन जल्लजी यशफअु अन्द हू इल्ला बिइज्निही०

‘कोई है जो उसके दरबार में शफाअत करे वगैर उसकी इजा-

जत के।

और सूर: ताहा में फरमाया—

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ
وَرُفِعَ لَهُ قَوْلًا۔

यो म इजिल्ला तन्फअुशफाअतु अन्द हू इल्ला मन अजि न लहुर-
हमानु व रजि य लहू कौला०

‘उस दिन सिफारिश नफा न देगी, मगर ऐसी शरूस को जिसके वास्ते अल्लाह ने इजाजत दे दी हो और इसके वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो।’

जिसको अल्लाह जल्लशानुह की तरफ से शफाअत की इजाजत होगी, वही शफाअत कर सकेगा और जिसके लिए शफाअत की इजाजत होगी, उसी के बारे में शफाअत करने वाले शफाअत करने की हिम्मत करेंगे।

काफ़िरो के हक में शफाअत करने की इजाजत न होगी और न कोई उनका दोस्त और सिफारिशी होगा। अल्लाह का इर्शाद है—

مَّا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَافِيٍّ وَلَا شَافِعٍ۔ (سورة)

मा लिज्जालिमी न मिन हमीमिव्व ला शफीअियुताअु

—मोमिन, पारा २४

‘जालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारिशी, जिसका कहा माना जाए।’

मिर्जात शरह मिश्कात में लिखा है कि क्रियामत के दिन पांच तरह की शफाअतें होंगी। सबसे पहली शफाअत हजर के मैदान में जमा होने के बाद हिसाब-किताब शुरू कराने के लिए (जिसका जिक्र तफसील से गुजर चुका है) तमाम नबी अल्लाह के दरबार में शफाअत करने से इंकार कर देंगे और आहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तमाम अगले-पिछले मुस्लिमों और काफ़िरो के लिए शफाअत फरमाएंगे। दूसरी शफाअत बहुत से ईमान वालों को जन्नत में वगैर हिसाब दाखिल कराने के बारे में होगी। यह सिफारिश भी आहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाएंगे। तीसरी शफाअत उन लोगों के लिए होगी जो बद-आमानियों की वजह से दोख के हकदार हो चुके होंगे। यह शफाअत आहजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी फरमाएंगे और आपके अलावा मोमिन और शहीद आलम भी उनकी शफाअत करेंगे। चौथी शफाअत उन गुनाहगारों के

बारे में होगी जो दोजख में दाखिल हो चुके होंगे, उनको दोजख से निकालने के लिए नबियों और फ़रिश्ते शफ़ाअत करेंगे। पांचवीं शफ़ाअत ज़फ़रियों के दर्जे बुलन्द कराने के लिए होगी।

हज़रत अफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि मेरे रब के पास से एक कासिद ने आकर (अल्लाह तआला की तरफ़ से) मुझे यह पंगाम दिया कि या तो मैं इस बात को अस्तियार कर लूँ कि मेरी आधी उम्मत बिला हिसाब व अज़ाब ज़न्नत में दाखिल हो जाए या इसको अस्तियार कर लूँ कि (अपनी उम्मत में से जिसके लिए भी चाहूँ, शफ़ाअत कर सकूँ, इस लिए मैंने शफ़ाअत को प्रस्तियार कर लिया और यह मेरी शफ़ाअत उन लोगों के लिए होगी, जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करते।^१

चूँकि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उम्मत का ज़यादा नफ़ा उसी में समझा कि हर शल्स के लिए शफ़ाअत करने का हक़ ले लें, इस लिए आपने उसी को अस्तियार फ़रमाया।

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (अल्लाह तआला की तरफ़ से हर नबी को) एक मक्बूल दुआ दी गयी, पस हर नबी सल्ल० ने दुनिया ही में वह दुआ मांग कर कुबूल करा ली और मैंने (इस दुआ को दुनिया में मांग कर ख़त्म नहीं कर दी, बल्कि इस दुआ को क्रियामत के दिन तक के लिए छिपा रखी है, ताकि उस दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत में उसको काम में लाऊँ। पस मेरी शफ़ाअत इन् शफ़ाअतों मेरे हर उस उम्मती को जरूर पहुंचेगी जो इस हाल में मर गया हो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता था।^१

इस मुबारक हदीस के अन्दाज़ से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह जल्ल शानुहु की यह आदत थी कि हर नबी को खास तौर पर यह अस्तियार देते थे कि एक दुआ जरूर ही कुबूल होगी, चाहे कुछ ही मांग लें, यों तो नबियों की हर दुआ कुबूल होती ही थी, लेकिन खास एजाज़ के लिए अल्लाह जल्ल शानुहु ने हर नबी को अस्तियार दिया कि एक बार तुम जो चाहो, मांग लो। प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि वह खास दुआ हर नबी ने दुनिया ही में मांग ली। मैंने यहां नहीं मांगी, बल्कि क्रियामत के दिन के लिए रख छोड़ी है, उसे अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिए

१. भिक्कात शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़,

इस्तेमाल करूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अफ़ बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िस्ते को मानने वालों में इतनी ज़यादा तायदाद दोजख में दाखिल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है (और यह दोजख का दाखिला) अल्लाह की नाफ़रमानियों की वजह से और नाफ़रमानियों पर जुअत (दुस्साहस) करने और अल्लाह के हुक्म के खिलाफ़ चलने की वजह से (होगी), पस मैं सज़्दा में पड़कर अल्लाह की तारीफ़ में लग जाऊंगा जैसा कि खड़े होकर उसकी तारीफ़ बयान करूंगा। इसके बाद (अल्लाह तआला की तरफ़ से) हुक्म होगा कि अपना सर उठाओ और सवाल करो, तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और शफ़ाअत करो, तुम्हारी शफ़ाअत मानी जाएगी।^१

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअत करता रहूंगा और अल्लाह मेरी शफ़ाअत कुबूल फ़रमाते, रहेंगे यहां तक कि अल्लाह तआला मुझसे पूछेगा कि ऐ मुहम्मद क्या राज़ी हो गये, मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब मैं राज़ी हो गया।^१

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नबियों के लिए (क्रियामत के दिन) नूर के भिबर रख दिए जाएंगे, जिन पर वे तदरीफ़ फ़रमा होंगे और मेरा भिबर खाली रहेगा। मैं उस पर इस डर से न बैठूंगा कि कहीं जन्नत में मुझे न भेज दिया जाए और मेरे बाद मेरी उम्मत (शफ़ाअत से महरूम) न रह जाए। मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब ! मेरी उम्मत !! मेरी उम्मत !!! अल्लाह जल्ल शानुहु फ़रमाएंगे कि ऐ मुहम्मद ! तुम अपनी उम्मत के बारे में मुझ से क्या चाहते हो ? मैं अर्ज़ करूंगा कि उनका हिसाब जल्दी कर दिया जाए। चूनांचे उम्मत को बुला कर उनका हिसाब शुरू हो जाएगा। नतीजे के तौर पर कुछ तो उनमें से अल्लाह की रहमत से और कुछ मेरी शफ़ाअत से जन्नत में दाखिल होंगे, मैं सिफ़ारिश करता ही रहूंगा, यहां तक कि जो लोग दोजख में भेज दिए गए होंगे, उनके निकालने के लिए भी (अल्लाह तआला की तरफ़ से) मुझे (उनके लिखे हुए नामों की) एक किताब दे दी

१. मुस्लिम शरीफ़, २. तर्गीब व तर्हीब,

जाएगी, यहां तक कि (मालिक अल-हिस्सलाम) दोऊख के दारो मुझसे कहेंगे कि आपने अपनी उम्मत में से किसी को भी अल्लाह के गुस्से के लिए नहीं छोड़ा जो अज़ाब में पड़ा रहा चला जाता (बल्कि सबको निकलवा लिया)।

तंबीह

आहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत जरूर होगी और हदीसों में जो कुछ आया है, सब सही और दुस्त है, लेकिन शफ़ाअत के भरोसे पर भले काम न करना और गुनाहों में पड़े रहना बड़ी नादानी है, यह तो शफ़ाअत की हदीसों से ही मालूम हुआ और आगे आने वाली हदीसों से भी यह बात साफ़ हो जाएगी कि इस उम्मत के आदमी बहुत बड़ी भारी तायदाद में दोऊख में जाएंगे, दोऊख में जाने और फिर कितनी मुद्त अज़ाब भुगतने के बाद शफ़ाअत से निकलना होगा, यह खुदा ही बेहतर जाने ! अब कौन-सा गुनाहगार और नेक अमल से खाली यह कह सकता है कि मैं दोऊख में हर गिज़ न जाऊंगा और बे-अज़ाब व हिसाब जन्नत में पहुँच जाऊंगा ? कोई भी यह दावा नहीं कर सकता, फिर गुनाहों पर जुअरत करना और नेकियों से खाली हाथ रहना कौन सी समझदारी है ? इन ही सफ़ाओं (पृष्ठों) में अभी करीब ही गुज़र चुका है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िवले को यामने वालों में से इतनी बड़ी तायदाद दोऊख में दाखिल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है और यह दोऊख का दाखिला अल्लाह की नाफ़रमानियों और नाफ़रमानियों पर जुअरत करने और खुदा के हुक्म के खिलाफ़ करने की वजह से होगा।

मोमिनों की शफ़ाअत

आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत उम्मत के लिए रहमत होगी और आप के तुफ़ल में आप के बहुत से उम्मतियों को भी शफ़ाअत करने का एजाज़ (श्रेय) मिलेगा। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत

१. तर्गीब व तर्हीब,

२. दस से चालीस तक की तायदाद के ग़िरोह को उस्बा कहते हैं,

सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिना खुदा मेरी उम्मत के कुछ लोग पूरी जमाअत के लिए शफ़ाअत करेंगे और कुछ एक क़बीले के लिए और कुछ लोग उस्बा के लिए और कुछ एक शस्स के लिए सिफ़ारिश करेंगे, यहां तक कि सारी उम्मत जन्नत में दाखिल हो जाएगी और एक हदीस में है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के एक शस्स की शफ़ाअत से क़बीला व नू तमोम के आदमियों से भी ज्यादा जन्नत में दाखिल होंगे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (जन्नतियों के रास्ते में) दोऊख में जाने वालों की लाइन बनी खड़ी होगी। इसी बीच एक जन्नती वहां को गुज़रेगा। दोऊखियों की लाइन वालों में से एक शस्स उस जन्नती से कहेगा कि ऐ साहब ! क्या आप मुझे पहचानते नहीं ? मैंने आप को दुनिया में एक बार पानी पिलाया था, इस लिए मेहरबानी फ़रमा कर मेरी शफ़ाअत कर दीजिए और दोऊखियों की इन लाइन वालों में से कोई गुज़रने वाला जन्नती से कहेगा कि मैंने आप को बुज़ू का पानी दिया था, (मेहरबानी फ़रमा कर शफ़ाअत कर दीजिए) चुनांचे जन्नती शफ़ाअत करके जन्नत में दाखिल करा देगा।

लानत करने वाले शफ़ाअत नहीं कर सकेंगे

हज़रत अबुद्दुर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया कि लानत करने की आदत वाले क्रियामत के दिन न गवाह बनेंगे, न शफ़ाअत करने के अहल होंगे यानी उन की इस बुरी आदत की वजह से गवाही और शफ़ाअत का ओहदा न दिया जाएगा जो बड़ी सभ्रा-दत और इज़ज़त का ख़ूबा है।

मुजाहिद की शफ़ाअत

तिमिज़ी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में है, जिसे हज़रत मिक्दाम बिन मादीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रिवायत की है कि

१. मिश्कात शरीफ़, २. इब्ने माजा, ३. मुस्लिम शरीफ़,

रोज़ा और कुरआन की शफ़ाअत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रोज़े और कुरआन बन्दे के लिए शफ़ाअत करेंगे। रोज़े अज़ा करेंगे कि ऐ रब ! मैंने उसको दिन में खाने से और दूसरी स्वाहिशों से रोक दिया था, इसलिए इसके हक़ में मेरी शफ़ाअत कुबूल फ़रमाइए और कुरआन अज़ा करेगा कि ऐ रब ! मैंने उस को रात को सोने से रोक दिया था, क्योंकि यह रात को मुझे पढ़ता या सुनता था, इस लिए मेरी शफ़ाअत उसके हक़ में कुबूल फ़रमाइए। इसके बाद सय्यदे आलम सल्ल ने फ़रमाया कि आखिर में दोनों की शफ़ाअत कुबूल कर ली जाएगी।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आंहुज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि कुरआन शरीफ़ पढ़ो, क्योंकि वह क्रियामत के दिन अपने आदमियों के लिए शफ़ाअत करने वाला बन कर आएगा, (फिर फ़रमाया कि) दोनों सूरतों बक्ररः और आले इम्रान को पढ़ा करो, जो बहुत ज्यादा रोशन हैं, क्योंकि वे क्रियामत के दिन दो बादलों या दो सायबानों या परिदों की दो जमाअतों की तरह जो साइन बनाये हुए हों, आयेंगी और अपने पढ़ने वालों के लिए बड़ी जोर से सिफ़ारिश करेंगी।

तजल्ली-ए-साक्र, पुल सिरात, तक्सीम नूर

काफ़िरों, मुशिरकों और मुनाफ़िकों की बे-पनाह मुसीबत

क्रियामत का दिन इंसान का दिन होगा। हर शख्स अपनी आखों से अपने अमल का वज़न देख कर जन्नत या दोज़ख में जाएगा, किसी को यह कहने की ताकत होगी ही नहीं कि मुझ पर जुल्म हुआ, मैं बे-वजह दोज़ख में जा रहा हूँ।

१. मिष्कात,

२. मुस्लिम शरीफ़,

وَوَقَّيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا تَعَيْتُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ

व दुपिफ़यत कुल्लु नपिसम मा अमिलत व हु व अअलमु बिमा यफ़अलून०

अल्लाह जल्ल शानुह ने ईमान और भले कामों के बदले के लिए जन्नत तैयार फ़रमायी है और कुफ़ व शिर्क और दूसरे गुनाहों की सज़ा के लिए ज़हनन तैयार फ़रमाया है, अपने आमाल के नतीजे में इन दोनों में से जिस को जहाँ जाना होगा, जाएगा। जन्नत में जाने के लिए दोज़ख के ऊपर से रास्ता होगा, जिसे हदीसों में 'सिरात' फ़रमाया गया है और आम तौर से हमारे देश वाले उसे पुल सिरात कहते हैं। खुदा से डरने वाले मोमिन अपने-अपने दर्जे के मुताबिक सही सलामत उस पर से गुज़र जाएंगे और बद-अमल चल न सकेंगे और दोज़ख के अंदर से बड़ी-बड़ी संडासियां निकली हुई होंगी जो गुज़रने वालों को पकड़ कर दोज़ख में गिराने वाली होंगी, उनसे छिल-छिला कर गुज़रते हुए बहुत से (बद-अमल) मुसलमान पार हो जाएंगे और जिन को दोज़ख में गिराना ही मंज़ूर होगा वे संडासियां उन को गिरा कर छोड़ेंगी। फिर कुछ मुद्त के बाद अपने-अपने अमल के मुताबिक और नबियों और फ़रिश्तों और नेक बंदों की शफ़ाअत से और आखिर में सीधे-सीधे अल्लाह तआला की मेहरबानी से वे सब लोग दोज़ख से निकाल लिए जाएंगे, जिन्होंने सच्चे दिल से कलमा पढ़ा था और दोज़ख में सिर्फ़ काफ़िर व मुशिरक व मुनाफ़िक ही रह जाएंगे।

नूर की तक्सीम

पुल सिरात पर गुज़रने से पहले नूर तक्सीम होगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि ईमान वाले मर्दों और औरतों को उनके अपने-अपने आमाल के बराबर नूर तक्सीम होगा (जिस की रोशनी में) पुल सिरात पर गुज़रेंगे और यह नूर अल्लाह तआला की तरफ़ से जन्नत का रास्ता बताने वाला होगा। उन में से किसी का नूर पहाड़ के बराबर होगा और किली का नूर खज़ूर के पेड़ के बराबर होगा और सब से कम नूर उम शख्स का होगा, जिस का नूर सिर्फ़ अंगूठे पर (टिमटिमाते चिराग की तरह) होगा, जो कभी

बुझ जाएगा और कभी रोशन हो जाएगा ।'

सूर: हदीद में अल्लाह जल्ल शानुह ने फरमाया—

يَوْمَ تَبْزَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتُ كَيْفَ تُوْزَنُ الْمُؤْمِنَاتُ بِأَيْدِيهِمْ
بِأَيْدِيهِمْ كَيْفَ تُوْزَنُ الْمُؤْمِنَاتُ بِأَيْدِيهِمْ كَيْفَ تُوْزَنُ الْمُؤْمِنَاتُ بِأَيْدِيهِمْ

وَمَا ذَلِكَ الْقُوْرُ الْعَظِيْمُ

यौ म तरल मुश्मिनी न वल् मुश्मिनाति यस्या नूर हुम व न ऐदीहिम व विए मानि हिम बुश्रा कुमुल यौ म जन्नातुन तजरी मिन तहिलहल अन्हार खालिदी न फ्रीहा जालि क हुवल फ्रीजुल अज्जीम०

'जिस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगे कि उन का नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा (और फरिश्ते उनसे कहेंगे कि) आज तुम को खुशखबरी है ऐसे बागों की जिन के नीचे नहरें जारी होंगी (वे) उनमें हमेशा रहेंगे। यह बड़ी कामियाबी है।'

नूर मिलने के बाद मोमिन मर्द और औरतें पुले सिरात पर गुजने लगेँगे और उन के नूर की रोशनी में मुनाफ़िक़ मर्द व औरत भी पीछे-पीछे हो लेंगे लेकिन जब मोमिन मर्द व औरत आगे बढ़ जाएँगे और मुनाफ़िक़ मर्द व औरत पीछे रह जाएँगे तो ईमान वालों को आवाज दे कर कहेंगे कि ज़रा इतिज़ार करो, हम भी आ रहे हैं तुम्हारी रोशनी से हमें भी फ़ायदा पहुँच जाएगा और हम भी आगे बढ़ चलेंगे। ईमान वाले जवाब देंगे (यहाँ अपना ही नूर काम देता है, दूसरे के नूर से फ़ायदा पहुँचाने का क़ानून नहीं है, जाओ) वापस अपने पीछे जहाँ नूर तबसीम हुआ था, वहीं दूँडो, चुनाँचे मुनाफ़िक़ मर्द व औरत नूर लेने के लिए वापस होंगे, लेकिन वहाँ कुछ न मिलेगा, इसलिए फिर ईमान वालों का सहारा लेने के लिए दौड़ेंगे लेकिन उनको प्रा न सकेंगे। एक दीवार दोनों फ़रीक़ के दमियान रुकावट बन जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में (जिधर मुसलमान होंगे) रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (जिधर मुनाफ़िक़ होंगे) उस का ज़िक़ ऊपर की आयत के बाद सूर: हदीद में इस तरह है—

يَوْمَ يَقُوْنُ الْمُصْٰفِقُوْنَ وَالْمُفٰفِقُوْنَ وَلٰكِنْ اَمْوَالُهُمْ وَانْفُسُهُمْ مِنْ

يَوْمَ تَكُوْنُ الْاَرْجُفُ رَاۤءَكُمْ فَالتَّسْوِيَةُ اَنْتُمْ وَابْنُ السَّبْتِ
بِسُوْرَتِهِ بِاَبْطَانِهِ وَفِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرٌ مِنْ قَبْلِ الْعَذَابِ

यौ म यकूलुल मुनाफ़िक़ कून वल मुनाफ़िकातु लिलज़ीन आमनुन बुरुना नक्तबिस मिन नूरिकुम क्रीलर जिअ वराअ कुम फल तमिसू नूर फ़ ज़ुरि व व न हुम विसूरिल्ल ह बाव वातिनुह फ्रीहिरहमतु फ़ ज़ाहिरूह मिन कि व लिहिल अज़ाबु०

'जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमारा इतिज़ार कर लो ताकि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करें, उन को जवाब मिलेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ, फिर (वहाँ से) रोशनी तलाश कर लो, फिर दोनों फ़रीक़ के दमियान एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा भी होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा।'

इस बे-पनाह मुसीबत और हैरानी व परेशानी में फंस कर कोई बचने की शक़ल मुनाफ़िक़ न पाएँगे और ईमान वालों को आवाज देकर मेहरबानी करने की दलील बयान करते हुए कहेंगे कि हम तो दुनिया में तुम्हारे साथी थे, तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ते और रोज़े रखते थे। अब दोस्ती और साथ का हक़ आप हज़रात को अदा करना चाहिए। क़ुरआन मजीद में मुनाफ़िक़ों की इस बात को इस तरह बयान फ़रमाया है—

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا اَمْۤاْرَ الْمُفٰفِقِيْنَ

युनाहू न हुम अ लभ न कुम मअ्र कुम०

'मुनाफ़िक़ ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे।'

मुसलमान जवाब देंगे कि—

بَلٰى وَلٰكِنْ كُنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَوْبِعْتُمْ وَاٰتٰىكُمْ غُرُوْرًا كَمَا اٰتٰى

حَتّٰى جَاۤءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغُرُوْرًا بِاللّٰهِ الْغُرُوْرُ

बला बला किन्नकुम फ़तनुम अन्फु स कुम व तरब्बस्तुम वर्तनुम व गरंत कुमुल अमानियु हत्ता जा अ अम्रुल्लाहि व गरंकुम बिल्लाहिल ग़रूर०

'हां, (यह तो सही है कि तुम दुनिया में हमारे साथ थे) लेकिन (रियासत व मस्लहत की वजह से साथ हो गये, दिल से साथ न थे) तुम ने अपनी जानों को (नफ़ाक़ के) फ़ितने में डाल कर हलाक़ किया और

तुम इतिजार में रहा करते थे कि (देखिए, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथी कब खत्म हों) और तुम को (इस्लाम के हक होने में) शक रहा और तुम को बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था; यहां तक कि तुम तक अल्लाह का हुक्म (यानी मौत) आ पहुंचा और तुम को धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के बारे में धोखा में डाल रखा था।'

आगे इशार्द फरमाया—

لَا يُؤْمَرُ لَا يُؤْخَذُ وَلَا يُؤْتَى وَلَا يَنْفَعُ الْإِنْسَانُ مَا وَكَّلَ النَّارُ
عَنِ مَوْلَى النَّارِ وَيَسْأَلُ الْمَصِيرُ

फल यी म ला युअखजु मिन्कुम फिदयतु व्व ला मिनल्लजी न कफ
रु मा वाकुमुन्नाह हि य मौलाकुम व विअसल मसीह०

'तो आज न कुबूल किया जाएगा, तुमसे जान का बदला और न तुम्हारे अलावा उससे, जो एलानिया काफिर थे, तुम सब का ठिकाना दोजख है, वही तुम्हारा साथी है और वह दुरा ठिकाना है।'

साक्र की तजल्ली

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि हमने रसूल सल्ल० के दरबार में अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या क्रियामत के दिन हम अपने रब को देखेंगे? जवाब में इशार्द फरमाया कि हां, (जरूर देखोगे) क्या दोपहर के वक्त सूरज के देखने में तुम को तक्लीफ होती है, जबकि सूरज बिल्कुल साफ़ हो (और) उस पर ज़रा बादल न हो? और क्या चौदहवीं रात के चांद को देखने में तुम को कई तक्लीफ होती है, जबकि वह बिल्कुल साफ़ हो और उस पर कुछ भी बादल न हो? सहाबा रज़ि० ने जवाब में अर्ज किया, कि अल्लाह के रसूल! नहीं (कोई तक्लीफ नहीं होती, आसानी से देख लेते हैं, फरमाया, इसी तरह क्रियामत के दिन तुम अल्लाह को खूब अच्छी तरह देखोगे और कोई तक्लीफ न होगी जैसा कि चांद-सूरज के देखने में (ज़िफ़ की गयी हालत में) कोई तक्लीफ नहीं होती है। इस के बाद इशार्द फरमाया कि—

'जब क्रियामत का दिन होगा तो एक पुकारने वाला पुकारेगा कि जो जिसको पूजता था, वह अपने माबूद के पीछे लग जाए, पस जो लोग

गैर-अल्लाह यानी बुतों और स्थानों के पत्थरों को पूजते थे, वे सबके सब दोजख में गिर पड़ेंगे (क्योंकि उनके बातिल के माबूद भी दोजख का ई धन वनेंगे) यहां तक कि जब अहले किताब और वे लोग रह जाएंगे जो सिर्फ़ अल्लाह को पूजते थे तो यहूद को बुलाकर सवाल किया जाएगा कि तुम किस की इबादत करते थे, वे जवाब में कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे उज़ैर की पूजा किया करते थे, इस जवाब पर (उन पर डांट पड़ेगी और) उनसे कहा जाएगा कि) यह जो तुमने उज़ैर को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में) तुम झूठे हो। अल्लाह ने किसी को अपनी बीबी या औलाद करार नहीं दिया! इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो? वह अर्ज करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं, हमें पिला दीजिए, उन के इस कहने पर दोजख की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते, चुनांचे वे लोग दोजख की तरफ़ (चलाकर) जमा कर दिए जाएंगे (और वह दूर से ऐसा मालूम हो रहा होगा) गोया कि वह रेत है और हकीकत में वह आग होगी, जिसके हिस्से आपस में एक दूसरे को जला रहे होंगे, पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे, फिर नसारा (ईसाई) को बुलाया जाएगा और उनसे सवाल होगा कि तुम किस की इबादत करते थे? वे जवाब में कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे मसीह की इबादत करते थे। उनके इस जवाब पर (डांटने के लिए) कहा जाएगा कि (यह जो तुमने मसीह को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में) तुम झूठे हो, अल्लाह ने किसी को अपनी बीबी या औलाद करार नहीं दिया, इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो? वह अर्ज करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं, हमको पिला दीजिए, उनके इस कहने पर दोजख की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते? चुनांचे वे लोग दोजख की तरफ़ (चलाकर) जमा कर दीजिए जाएंगे (और वह दूर से ऐसा मालूम होगा) कि गोया रेत है (और हकीकत में वह आग होगी) जिसके हिस्से आपस में एक दूसरे को जला रहे होंगे, पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे (मतलब यह है कि तमाम यहूदी व ईसाई दोजख में गिर पड़ेंगे) यहां तक कि जब सिर्फ़ वही लोग रह जाएंगे, जो अल्लाह ही की इबादत करते थे (यानी मुसलमान) नेक भी और बद भी तो अल्लाह तआला की उनके सामने एक तजल्ली होगी (और)

१. जैसा कि कुरआन मजीद में आया है 'इन्नकुम वमा तथ् बुदून मिन हुनि-ल्लाहि ह स बु जह'नम' (सूर: अंबिया),

२. रेत दूर से देखने में पानी मालूम होता है,

अल्लाह तआला फरमाएंगे कि तुमको क्या इन्जिअर है ? हर जमाअत को उसके माबूद के पीछे जाने का हुक्म है ! मोमिन अर्ज करेंगे कि (जाने वाले जा चुके, हमारा उनका क्या साथ, हमको अपने माबूद का इन्जिअर है, जब तक हमारा माबूद न आए, हम यहीं रहेंगे। जब हमारा रब हमारे पास पहुंचेगा, हम पहचान लेंगे) ऐ परवरदिगार ! हम दूसरी जमाअतों और गिरोहों से दुनिया में अलग रहे, जब कि उनके साथ रहने के बहुत ज्यादा मुहताज थे और (बहुत ज्यादा मुहताज होने की हालत में भी) उनका साथ न दिया (अब उनके साथ कैसे हो सकते हैं) अल्लाह जल्ल शानुह फरमाएंगे कि मैं तुम्हारा रब हूं। मोमिन (चूंकि साक की तजल्ली से अल्लाह को पहचानने के ध्यान में होंगे, इसलिए अल्लाह की उस तजल्ली को, जो उस वक्त होगी, गैर अल्लाह समझ कर जवाब में) कहेंगे कि 'नअजू बिल्लाहि' (हम तुझे अपना रब मान कर क्या मुश्किल हो जाएं) हम अल्लाह के साथ किसी भी चीज को शरीक नहीं बनाते, दो या तीन बार ऐसा ही कहेंगे, उनके इस जवाब पर अल्लाह जल्ल शानुह सवाल फरमाएंगे कि क्या तुम्हारे रब और तुम्हारे दर्मियान कोई निशानी (मुकरर) है जिससे तुम अपने रब को पहचान लोगे ? मोमिन अर्ज करेंगे, जी हां, निशानी जरूर है ! इसके बाद साक की तजल्ली होगी जिसे देख कर तमाम वे लोग जो खुलूस के साथ अल्लाह को सज्दा करते थे, अल्लाह के हुक्म से सज्दा में गिर पड़ेंगे, और जो लोग दिखावे या (मस्लहतों की वजह से दुनिया की मुश्किलों से) बचने के लिए (यानी निफाक के साथ) सज्दा करते थे, अल्लाह उन सब की कमर को तख्ता बना देंगे (जिसकी वजह से सज्दा न कर सकेंगे) जो भी कोई उनमें से जब भी सज्दे का इरादा करेगा, गुट्टी के बल गिर पड़ेगा, फिर मोमिन सज्दों से सर उठाएंगे और अब जो अल्लाह को देखेंगे तो उसी तजल्ली में जो तजल्ली साक से पहले थे, अब अल्लाह फरमाएंगे कि मैं तुम्हारा रब हूं तो मोमिन

१. साक पिडली को कहते हैं और अल्लाह जल्ल शानुह जिस्म और जिस्म के अंगों से पाक-साफ हैं, फिर यहां पिडली का क्या मतलब है ? इसके बारे में उलेमा किराम ने बताया कि यह कोई खास सिफत है, अल्लाह के सिफती (गुणों) में से, जिसको किसी खास मुनासबत से साक फरमाया है, जैसे कुरआन में 'यदुल्लाहि' (अल्लाह का हाथ) 'बज्जुल्लाहि' (अल्लाह का चेहरा) का लफ्ज आया है। ये और ऐसी ही लफ्जों पर, बगैर समझे और अकूल लड़ाए और अल्लाह को जिस्म के होने से पाक समझते हुए बिला शर्त ईमान रखना लाजिम है।

मान लेंगे कि हां, आप हमारे रब हैं।
इसके बाद दोजख की पीठ पर पुल सिरात कायम की जाएगी (उस पर से गुजरने का हुक्म होगा) और उस वक्त (शफाअत के जो अहल होंगे, उनको) शफाअत की इजाजत दे दी जाएगी और 'अल्लाहुम्म सल्लिम सल्लिम' (ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख !) कहते होंगे। अर्ज किया या रसूलल्लाह ! पुल सिरात की क्या खूबी है ? इर्शाद फरमाया, वह चिकनी और फिसलने की जगह है, उसमें (दोजख से निकली हुई) उचकने वाली चीजें और संडासियां होंगी और बड़े-बड़े कांटे भी होंगे, जिन की शकल के कांटे नज्द में होते हैं, जिनको सुदान कहा जाता है। पस मोमिन पुल सिरात पर (जल्दी-जल्दी) गुजरेंगे (और यह गुजरना नेक अमल के बराबर होगा) कोई पल भपकने में और कोई बिजली की तरह और कोई हवा की तरह और कोई परिदों की तरह और कोई बेहतरीन तेज रफ्तार घोड़ों की तरह और कोई ऊंटों की तरह (गुजर जाएगा) और दोजख के अंदर से जो संडासियां और कांटे निकले हुए होंगे, वे खींच कर दोजख में गिराने की कोशिश करेंगे। नतीजा यह होगा कि (बहुत से मोमिन सलामती के साथ निजात पा कर पार हो जाएंगे और बहुत से ईमान वाले (गुजरते हुए) छिल-छिल कर छूट जाएंगे और बहुत से दोजख की आग में धकेल दिए जाएंगे, यहां तक कि जब (नेक) ईमान वाले दोजख से बच जाएंगे तो मैं उस जात की कसम खाकर कहता हूं, जिस के कदजे में मेरी जान है कि तुम यहां (इस दुनिया में) अल्लाह से हक लेने के बारे में ऐसी मजबूती के साथ बात करने वाले नहीं हो, जैसा कि (दोजख से बच कर पुल सिरात पर हो जाने वाले) मोमिन अपने उन भाइयों के लिए जो दोजख में (गिर चुके) होंगे अल्लाह से मजबूती के साथ सिफारिश करेंगे। दूसरी रिवायत में है कि आंहुजरत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस मौके पर यों फरमाया कि (दुनिया में) जो हक तुम्हारा किसी के जिम्मे मालूम हो जाए, तो उस हक को हासिल करने के लिए जैसी सख्ती से मांग करते हो, उस दिन अल्लाह से जो ईमान वाले अपने दोजखी भाइयों के लिए जिस जोर से मांग करेंगे तुम्हारे दुनिया की मांग से बहुत जोरदार होगा, जब कि मोमिन यह देख लेंगे कि हम निजात पा चुके, खुदा के दरबार में अर्ज करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ये लोग (जो दोजख में गुनाहों की वजह से गिर गये) हमारे साथ रोजे रखते थे और हमारे साथ नमाज पढ़ते थे और हज करते थे, (अब भी हमारे साथ उनको जन्नत में दाखिल फरमा दीजिए) इर्शाद होगा कि तुम जिसे पहचानते हो, निकाल लो !

चुनांचे (वे उनको निकालने के लिए रवाना होंगे और (उन के जिस्म दोजख की आग पर हराम कर दिए जाएंगे) (यानी दोजख की आग इन निकालने वालों को न जला सकेगी) नतीजा यह होगा कि वे लोग दोजख से भारी तायदाद में लोगों को निकालेंगे और इन दोजखियों में से किसी को प्राग ने आधी पिडली तक और किसी को घुटने तक पकड़ा होगा।

फिर मोमिन खुदा के दरबार में अर्ज करेंगे कि हमारे रब ! आपने जिन लोगों के निकालने के मुतालिक हुक्म दिया था, उनमें से अब कोई भी दोजख में वाक्की नहीं रहा। अल्लाह फरमाएगा कि जाओ दोजख में कोई ऐसा भी मिले कि जिस के दिल में दीनार^१ के बाबर भी भलाई हो, उस को भी निकाल लो। चुनांचे मोमिन अल्लाह के इस इशार्द के बाद भारी तायदाद में लोगों को निकालेंगे, फिर अर्ज करेंगे कि ऐ रब ! दोजख में हम ने इन में से कोई भी नहीं छोड़ा, जिनके निकालने के बारे में आपने हुक्म फरमाया था, इसके बाद अल्लाह का इशार्द होगा कि जाओ, जिसके दिल में आधे दीनार के बराबर भी भलाई देखो, उसको भी निकाल लो। चुनांचे इशार्द के बाद मोमिन भारी तायदाद में लोगों को दोजख से निकालेंगे, फिर अर्ज करेंगे कि ऐ रब ! हमने दोजख में उनमें से कोई भी नहीं छोड़ा, जिनके निकालने के बारे में आपने हुक्म फरमाया था। इसके बाद अल्लाह का इशार्द होगा कि जाओ, जिसके दिल में जरा बराबर भी भलाई देखो, उसको भी निकाल लो, चुनांचे वे भारी तायदाद में लोगों को निकालेंगे, फिर अर्ज करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने दोजख में (कोई जरा) खैर (वाला) नहीं छोड़ा।

अब अल्लाह जल्ल शानुहू फरमाएंगे कि फरिश्तों ने शफाअत कर ली और नवियों ने शफाअत कर ली और ईमान वालों ने शफाअत कर ली, अब बस अहंमुराहिमीन (अल्लाह) ही वाक्की है। अल्लाह जल्ल शानुहू यह फरमा कर दोजख में से एक मुट्ठी भरेंगे, पस उसमें से ऐसे लोगों को निकाल लेंगे, जिन्होंने कभी कोई भलाई की ही नहीं थी (और ईमान ही की छिपी दौलत उनके पास थी, ये लोग जल कर कोयला हो चुके होंगे)। उनको अल्लाह जल्ल शानुहू एक नहर में डाल देंगे जो जन्नत के शुरू हिस्से में होगी जिसको 'नहरूल हयात' (जिंदगी की नहर) कहा जाता है। (नहर में पड़ कर उनकी हालत बदल जाएगी) पस ऐसे निकलेंगे जैसे बीच बहते पानी के घास-तिनकों पर (बहुत जल्द उग कर) निकल आता है। (फिर फरमाया कि) इस हाल में उस नहर से निकलेंगे

१. दीनार सोने की अशर्फी को कहते हैं जो अरब में होती है।

कि जैसे मोती हैं, उनकी गरदनों की निशानियां होंगी (जिनके जरिए दूसरे) जन्नती उनको पहचानेंगे (कि ये अल्लाह के आजाद किये हुए हैं जिनको अल्लाह ने जन्नत में बगैर किसी (नेक) अमल के और बगैर किसी भलाई के, जो उन्होंने आगे भेजी हो, जन्नत में दाखिल फरमाया।

फिर अल्लाह तआला उनसे फरमाएंगे कि जन्नत में दाखिल हो जाओ, वहां जो नजर पड़े, वह तुम्हारे लिए है। वे अर्ज करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! आपने हम को वह अता फरमाया है जो आपने दुनियाओं में से किसी को भी नहीं दिया। अल्लाह तआला फरमाएंगे कि मेरे पास तुम्हारे लिए इससे भी अफजल नेमत है। वे अर्ज करेंगे, या रब्बना, इससे अफजल कौन होगा ? अल्लाह जल्ल शानुहू फरमाएंगे (कि इससे अफजल) मेरी खुशी है, सो अब मैं तुम पर कभी भी नाराज नहीं हूंगा।

यह एक लंबी हदीस है जो अभी खत्म हुई। इसमें बताया गया है कि साक की तजल्ली के बाद पुल सिरात कायम होगी, इससे यह भी समझ में आता है कि नूर की तक्सीम तजल्ली साक और पुल सिरात पार करने के दमियान होगी, क्योंकि पुल सिरात पार करने के लिए नूर तक्सीम किया जाएगा, लेकिन तर्तीब में हमने पूरी हदीस को एक ही जगह एक सिलसिले से रखने के लिए नूर की तक्सीम को तजल्ली साक से पहले बयान कर दिया है।

इस हदीस मुबारक से पुल सिरात और उस पर से गुजरने वालों का तफसीली हाल मालूम हुआ। दूसरी रिवायतों में और ज्यादा तफसील आयी है। चुनांचे एक हदीस में है कि आहज़रत सयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पैगम्बरों में से सबसे अक्व्वल मैं अपनी उम्मत के साथ पुल सिरात से गुजरूंगा और उस दिन पैगम्बरों के सिवा कोई बोलता न होगा और पैगम्बरों का बोलना उस दिन 'अल्लाहुम सल्लिम सल्लिम'^१ होगा। इसी को बार-बार कहेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि दोजख पर पुल सिरात रखी जाएगी, जो तेज़ की हुई तलवार की तरह होगी।^२ मुस्लिम शरीफ की एक हदीस में है कि (पुल सिरात पर) लोगों के आमांल लेकर चलेंगे (जैसे जिसके अमल होंगे, उसी अन्दाज़ से

१. भिष्कात शरीफ, तर्तीब व तर्हीब (बुखारी व मुस्लिम),

२. ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख,

३. बुखारी व मुस्लिम, ४. तर्तीब,

तेज और सुस्त रफ्तार होगा और सुस्त रफ्तारों की हालत यहां तक पहुंच जाएगी कि कुछ गुजरने वाले इस हाल में होंगे कि घिसटते हुए चलेंगे।

एक रिवायत में है कि दोजख में से जो संडासियां निकली हुई होंगी, उनमें से एक-एक की लम्बाई व चौड़ाई और उनके पकड़ गिराने का यह हाल होगा कि एक ही के जरिए कबीला रबीआ और मुजर' के लोगों से भी ज्यादा पकड़ कर दोजख में डाले जाएंगे।'

प्यारे नबी सल्ल० जन्नत खुलवाएंगे

आहजरत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क्रियामत के दिन तमाम पैगम्बरों से ज्यादा मेरे तरीके पर चलने वाले मौजूद होंगे और मैं सबसे पहले जन्नत का दरवाजा (खुलवाने के लिए) खटखटाऊंगा।¹ यह भी इशाद फरमाया कि मैं क्रियामत के दिन जन्नत के दरवाजे पर आकर खोलने को कहूंगा, जन्नत का दारोगा सवाल करेगा कि आप कौन हैं? मैं जवाब दूंगा कि मुहम्मद हूँ। यह सुनकर वह कहेगा कि मुझे यही हुक्म हुआ है कि आप के लिए खोलूँ (और) आपसे पहले किसी के लिए न खोलूँ।² यह भी इशाद फरमाया कि मैं सबसे पहले जन्नत के (दरवाजे के) हल्कों को हिलाऊंगा, पस अल्लाह मेरे लिए जन्नत खोलकर मुझे दाखिल फरमा देंगे और मेरे साथ फकीर मोमिन होंगे और यह मैं फख्र के साथ नहीं बयान कर रहा हूँ (फिर फरमाया कि) मैं अल्लाह के नज़दीक तमाम अगलों-पिछलों से ज्यादा इज्जत वाला हूँ।³

जन्नत व दोजख में गिरोह-गिरोह जायेंगे

दोज़खियों पर मलामत और जन्नतियों का स्वागत, दोज़ख के दरवाजे जेल की तरह पहले से बन्द होंगे और जन्नत के दरवाजे पहले से खले होंगे।

तमाम काफ़िरों को धक्के देकर बड़ी ज़िल्लत व ख़वारी के साथ दोज़ख की तरफ़ हांका जाएगा और चूंकि क़फ़ की क्रिस्में और दर्जे बहुत

है, इसलिए हर क्रिस्म और हर दर्जे के काफ़िरों का ग़िरोह अलग-अलग कर दिया जाएगा। अल्लाह का इशार्द है—

وَسَيُنْزِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا.

व सीकलजी न क फ रू इला जहन्न म जु म रा०

और जो काफ़िर है, वह ज़हन्नम की तरफ़ ग़िरोह-ग़िरोह बनावकर
हंके जाएंगे।

जब वे दो जख के दरवाजों पर पहुँचेंगे तो दरवाजे खोलकर उस में दाखिल कर दिए जाएंगे और दो जख के दरवाजों पर जो फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे, वह मलामत करने के लिये सवाल करेंगे क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये थे ?

चूनांचे इशादि फ़रमाया है—

حَتَّى إِذَا جَاءُوا أَحَدَهُنَّ ابْنَ بَيْتِهِمْ وَآمَنُوا بِهِمَّكَ وَهُمْ حَزَنٌ أَلَمْ يَأْتِيَكُمُ رَسُولٌ
مِّنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُعِذُّكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا
قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ عَلَيْهِمُ الْعُقُوبَةُ عَلَى الْفُرْقَانِ وَبَيْنَ الْأَحْزَلِ
أَبْوَابُ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِمَا كَفَرْتُمْ مَنَعُوا الْمُكْرِبِينَ

हृता इजा जाऊ हा फुतिहत अन्वाबुहा व काल लहम ख ज ननुहा
प्र लम यातिकुम रसुलुम भिकुम यत्लू न अलैकुम आयाति रब्बिकुम व
युजिरू नकुम लिका अ यौमिकुम हाजा कालू बला व ला किन हक्कत
कलिमतुल अजावि अलल काफिरी न कीलद् खुलू अन्वा व जहन्न म
खालिदीन फीहा फ बिश्र स मस्वल मु त कब्बिरीन०

‘यहां तक कि दोजख के पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उनसे दोजख के निगरां कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम में से पैगम्बर नहीं आये थे, जो तुम को तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाते थे और तुमको आज के दिन पेश आने से डराया करते थे ? दोजखी जवाब देंगे कि हां (पैगम्बर आये थे) लेकिन अज़ाब का वायदा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा (फिर उनसे) कहा जायेगा कि जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो जाओ (और) उसमें हमेशा के लिये रहो, गरज यह कि घमंडियों का बुरा ठिकाना होगा।’

जन्तु वालों के बारे में फ़रमाया—

وَسَيُنْقِئُ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَهْمًا إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ط

व सीकल्लजी न त कौ रब्बहुम इलल जन्नति जु म रा०

१. अरब के दो कबीलों के नाम, २. तर्गिब, बहक्री,

३. मुस्लिम शरीफ, ४. मुस्लिम शरीफ, ५. तिर्मिजी शरीफ,

‘और जो लोग अपने रब ने डरते थे, गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएंगे।’

ईमान व तक्वा के मर्तबे और दर्जे कम और ज्यादा हैं। हर दर्जे और मर्तबे के मोमिनों की जमाअत अलग-अलग होगी और उन सब जमाअतों को एजाज व इकराम के साथ जन्नत की तरफ़ रवाना किया जायेगा। उनके स्वागत के लिए जन्नत के दरवाजे पहले से खुले होंगे और दरवाजों पर पहुंचते ही जन्नत के निगरा उनको सलामती और खुश ज़िंदगी गुज़ारते रहने की खुशख़बरी सुनायेंगे। चूनांचे इशदि है—

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا أَهْلًا وَرُحُلًا قَالُوا لَكُمْ مَزْنٌ مِّنَّا
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوا خَالِدِينَ حَا

हता इजा जाऊहा व फ़तिहत अब्बाबुहा व काल लहुम ख ज न तुहा सलामुन अलैकुम तिब्तुम फ़दखुजूहा खालिदीन०

‘यहां तक कि जन्नत के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाजे खुले होंगे और उसके निगरा कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम मजे में रहे, सो जन्नत में हमेशा रहने के लिए दाखिल हो जाओ।’

दोज़खियों की आपस में एक दूसरे पर लानत

दोज़खी आपस में यहां बड़ी मुहब्बतें रखते थे और एक दूसरे के उकसाने और फुसलाने पर कुफ़ व शिर्क के काम किया करते थे, लेकिन जब सब अपने बुरे किरदार (चरित्र) का नतीजा दोज़ख में जाने की शकल में देखेंगे तो एक दूसरे पर लानत की दोछार करेंगे।

सूर: एराफ़ में इशदि है—

حٰكِمًا وَحٰكِمًا اِنَّكَ لَكُنْتَ اَعْمٰى حَتّٰى اِذَا رَاٰ رُجُلًا مِّنْهُمْ سَبَّ
قَالَ اَحْسَنُ مِنْهُ لَوْ لَمْ يَرِ رَبًّا هُوَ لَا يَفْقَهُ مَا عَلَيْهِمْ عَذَابًا
مِّنْ عَذَابِ النَّارِ

कुल्लमा द ख लत उम्मतुल्ल अ न त उल्ल हा हता इजदा र कू फ़ीहा जमीआ क़ालत उल्लहुम लि उलाहुम रब्बना हा उल्लाइ अज़ल्लूना फ़ आतिहिम अज़ाबन जिअफ़म मिनन्नारि०

‘जिस वक्त भी कोई जमाअत दोज़ख में दाखिल होगी अपनी जैसी दूसरी जमाअत को लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उसमें जमा हो

जाएंगे तो पिछले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे कि ऐ हमारे परवर-दिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था, सो इनको दोज़ख का अज़ाब दो गुना दीजिए।’

दोज़खियों को अनोखी हैरत

दुनिया में काफ़िर ईमान वालों का मज़ाक़ बनाते थे और उन का ठुठ्ठा करते थे। जब दोज़ख में पहुंचेंगे तो अल्लाह के इन करीबी लोगों को अपने साथ न देखकर हैरत में पड़ जाएंगे जैसा कि सूर: साद में फ़रमाया—

وَقَالُوا لَكُلًّا لَّا نَرٰى رِبًّا لَّا كُنَّا مَعَهُمْ مِنَ الْاَشْرَارِ اَتُخَذَ لَكُمْ
سَخِرٌ يَّامُ اٰمَنَّا غَنَتْ عَنْكُمْ الْاَنْبِيَا

व क़ालू भा लनाला नरा रिज़ालन कुन्ना न अदुद्हुम मिनल अश-रारि अतखज़नाहुम सिखरीयन अम जाग़त अन्हुमुल अब्सार०

‘और ये दोज़खी कहेंगे कि क्या बात है, वे लोग हमें दिखायी नहीं देते जिन को हम बुरे लोगों में गिना करते थे। क्या हमने उन लोगों की ग़लती से हंसी कर रखी थी या उनके देखने से आंखें चकरा रही हैं।’

यानी जबकि वे लोग यहां नज़र नहीं आते तो उसके बारे में यही कहा जा सकता है कि हम उनको बुरा समझने और शरारत वाला गिनने और उनका मज़ाक़ बनाने में ग़लती पर थे और वे हकीकत में अच्छे लोग थे जो आज यहां नहीं हैं या यह है कि वे हैं यही, मगर हमारी आंखें चूक गयी हैं, वे लोग देखने में नहीं आ रहे हैं।

अपने मानने वालों के सामने शैतान

का सफाई पेश करना

दुनिया में शैतान ने अपने गिरोह के साथ इन्सानों को खूब बह-काया और हक़ के रास्ते से हटा कर कुफ़ व शिर्क में फांसा, मगर क्रियामत के दिन इन्सानों को ही इल्जाम देगा कि तुम ने मेरी बात क्यों मानी, मेरा तुम पर क्या जोर था, चूनांचे अल्लाह का इशदि है—

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اَللّٰهُ وَدَّكُمْ وَعَدَ اِيَّيْكُمْ وَعَدَّكُمْ
فَاٰخَلَفْتُمْ بَيْنَ يَدَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْتَ دَعَوْتَكُمْ
فَاَسْتَجَبْتُمْ لِيْ وَنٰلَكُمْ مِّنِّيْ وَلَوْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ مَا اَنَا بِمُغْنٍ عَنْكُمْ

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ إِنِّي كُنْتُ بِمَا شَاءَ شَهِيدًا مِّنْكُمْ مِّنْ قَبْلُ إِنَّ
الْعَظَّمَاءَ لَئِيْبِينَ لَّهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (سورة البروج)

व कालशैतानु लम्मा कुजियल अम्मु अल्लाह व अद कुम व अदल हविक व व अतुकुम फ़अरुलफ़तुकुम व मा का न लि य अलैकुम मिनमुल्ता-
निन इल्ला अन् दअतुकुम फ़स्तजब्नुम ली फ़ ला तलूमूनी व लूम अन्फुस-
कुम मा अना विमुस्लिखकुम वमा अन्तुम विमुस्लिखीय इन्नी कफ़तु विमा
अदरवतुमूनि मिन कद्लु इन्नज्जालिमी न लहुम अज़ाबुन अलीम०

—सूरःइब्राहम

‘और जब फ़ैसले हो चुकेंगे, शैतान कहेगा कि (मुझे बुरा कहना ना-हक़ है) क्योंकि बिला शुब्हा अल्लाह ने तुमसे सच्चे वायदे किये थे, और मैं ने (भी) तुमसे वायदे किये थे, सो मैं ने वे वायदे खिलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा कुछ जोर इससे ज्यादा तो चलता न था कि मैं ने तुमको दावतें दी, सो तुम ने (खुद ही) मेरा कहना मान लिया, सो तुम मुझ पर मलामत न करो और अपने को मलामत करो, न मैं तुम्हारा मददगार हूँ न तुम मेरे। मैं तुम्हारे इस फ़ैल (काम) से खुद बेज़ार हूँ कि तुम ने इससे पहले (दुनिया में) मुझे खुदा का शरीक करार दिया। यकीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।’

शैतान के कहने का मतलब यह है कि मैं ने तुम को ब्रह्माया, सच्चे रास्ते से हटाने की कोशिश की। यह तो मेरा काम था, तुम ने मेरी बात क्यों न मानी? तुम खुद मुज़्रिम हो? पैगम्बरों की दावत छोड़ कर जो मोज़ज़ा, हुज्जत और दलील के ज़रिए होती थी, मेरे झूठे और बातिल बुलावे पर तुम ने क्यों कान धरा, कोई ज़बरदस्ती हाथ पकड़ के तो मैं ने तुमसे कुफ़्र व शिर्क के काम कराये नहीं, मुझे बुरा कहने से क्या बनेगा खुद, अपने नफ़्सों को मलामत करो, हम आपस में एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते, अब तो अज़ाब चखना ही है, दुनिया में जो तुमने मुझे खुदा का शरीक बनाया, मैं उससे बेज़ारी ज़ाहिर करता हूँ।

शैतान के कहने पर चलने वाले की हसरत व अफ़सोस का जो उस वक़्त हाल होगा, ज़ाहिर है ‘अ आज़ नल्लाहु मिन तस्वीलिही व शरिहि०

जन्नत में सब से पहले उम्मत मुहम्मदिया दाखिल होगी और सबसे ज्यादा होगी

मुस्लिम शरीफ़ में है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हम दुनिया में आखिर में आये और कियामत के दिन दूसरी मरहूक में पहले हमारे फ़ैसले होंगे और यह भी फ़रमाया कि हम (यहां) आखिर में आये (और) कियामत के दिन पहले होंगे और सबसे पहले जन्नत में हम दाखिल होंगे।
एक रिवायत में है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नतियों की १२० सफ़े होंगी (यानी कियामत के मैदान में) जिनमें ८० इस उम्मत की और ४० सब उम्मतों को मिला कर होंगी।^१

मालदार हिसाब की वजह से जन्नत में जाने से अटके रहेंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तंगदस्त लोग जन्नत में मालदारों से पांच सौ वर्ष पहले दाखिल होंगे।^२ और यह भी इशारा फ़रमाया कि मैंने जन्नत के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो उस में जो दाखिल हो चुके थे ज्यादा तर मिस्कीन लोग थे और माल वाले (हिसाब देने के लिए) अटके हुए थे। मगर दो ज़खियों को दो ज़ख में पहुंचाने का हुक्म हो चुका था और मैं ने दो ज़ख के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा, तो उसमें अक्सर औरतें थीं।^३

इस मुबारक हदीस में आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कियामत के दिन का एक मंज़र बयान फ़रमाया है जो आपको दिखा दिया गया था। इस हदीस पाक से जहां यह मालूम हुआ कि मालदारों को जन्नत में जाने में देर लगेगी, वहां यह भी मालूम हुआ कि तंगदस्ती और तंगी वाले पांच सौ वर्ष मालदारों से पहले जन्नत में जाएंगे। उस दिन तंगी की क़ीमत मालूम होगी, मगर यह भी नहीं भूलना चाहिए कि तंगदस्ती खुद से जन्नत में ले जाने वाली चीज़ नहीं है। इसके ज़रूर ही जन्नती हैं और हमारी बड़ी बड़ाई है। बड़ाई आखिरत में नेक आमांल से होगी। हां, जिसके नेक अमल जन्नत लायक होंगे, वह तंगदस्ती की वजह से मालदार से पहले जन्नत में चला जाएगा, बहुत से लोग तंगदस्त भी हैं और बद-अमल भी, नमाज़-रोज़े से गाफ़िल हैं, गुनाहों में लिथड़े

१. मिशकात शरीफ़, बाबुल जुमुअति, २. मिशकात शरीफ़,

३. तिमिज़ी शरीफ़, ४. बुखारी व मुस्निम शरीफ़,

हुए हैं, ऐसे लोग सख्त नुक्सान में हैं और दोनों जगह को बद-नसीबी के लिए दुनिया गुजार रहे हैं। आहंजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बद-नसीबी का बद-नसीब वह है जो तंगदस्त भी रहा और अखिरत का अज़ाब भी भुगता।^१

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहंजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि (लोग) क्रियामत के दिन जमा होंगे, इसके बाद पुकार होगी कि इस उम्मत के तंगदस्त कहां हैं ? फिर उन से सवाल होगा कि तुम ने क्या किया ? (हिसाब दो) वे अर्ज करेंगे कि आप ने हमको तंगदस्ती देकर जांच में डाला, सो हम ने सब्र किया (और आप की खुशी पर खुश रहे) और आपने माल और हुकूमत हमारे सिवा दूसरों को दे दिया। अल्लाह जल्ल शानुह फरमाये कि तुम ने सच कहा, इसके बाद (और लोगों से पहले) जन्नत में दाखिल हो जाएंगे, हिसाब की सख्ती मालदारों और हुकूमत वालों पर रहेगी। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल ! मोमिन उस दिन कहां होंगे ? नबी सल्ल० का इशार्द हुआ कि उनके लिए नूर की कुसियां रख दी जाएंगी और उन पर बादलों का साया कर दिया जाएगा, (पहाड़ों से भी बड़ा) दिन ईमान वालों के लिए दिन के एक छोटे-से हिस्से से भी कम होगा।^२

दोज़ख में अक्सर

औरतें और मालदार जाएंगे

हजरत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहंजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं ने जन्नत में भांका तो देखा, उसमें अक्सर तंगदस्त हैं और मैंने दोजख में भांका तो देखा कि उसमें अक्सर माल वाले और औरतें हैं।^३

एक रिवायत में है कि आहंजरत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं जन्नत में दाखिल हुआ तो ऊंचे मर्तबे वाले जन्नती, तंगदस्त मुहाजिर और मोमिनों के नावालिश बच्चे थे और जन्नत में सबसे कम मालदारों और औरतों की तायदाद थी। उस वक़्त मुझे बताया गया कि मालदारों का हिसाब दरवाजे पर हो रहा है और उन को पाक व साफ़ किया जा रहा है और औरतों को (दुनिया में) सोने और रेशम ने (खुदा और खुदा के दीन से) ग़ाफ़िल रखा, इसलिए

१. तर्गीब, २. तर्गीब अनित्तवरांनी बन्नि हव्वान, ३. तर्गीब,

यहां उनकी तायदाद कम है।^१

माल बड़े बवाल की चीज़ है, उसको ध्यान करके हलाल के जरिए कमाया और फिर उसमें से अल्लाह के और अल्लाह के बंदों के हुक्क अदा करना और गुनाहों में न खर्च करना बड़ा कठिन काम है। इसमें अक्सर लोग फ़ेल हो जाते हैं और माल होने पर अपनी स्वाहिश या ख़ीनाद व बीबी की फ़रमाइश पर या दुनिया की रस्म व रिवाज में दब कर गुनाह के कामों में रुपए को लगाते हैं, ज़कात सही हिसाब कर के अक्सर मालदार नहीं देते, हज़ारों लोग, जिन पर हज़ फ़र्ज़ हो चुका था, बग़ैर हज़ किए मर जाते हैं और मालदारों के लिए गुनाहों के मोक़े बहुत हैं, जिनमें माल लुटाते और ख़र्चते हैं। दोजख में मालदार ज़्यादा हों और हिसाब की वजह से अटके रहें, इसमें कोई ताज़्जुब की जगह नहीं।

दोज़ख में औरतों की तायदाद भी बहुत भारी होगी, उनके दोजख में जाने की वजह अभी अभी हदीस शरीफ़ से यह मातूम हुई कि दुनिया में रेशम और सोने के फेर में रह कर अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल रहे औरतों में कपड़े और ज़ेवर का लालच जो होता है, इस को कौन नहीं जानता ? कपड़े और ज़ेवर के लिए शौहर को हराम कमाने, रिश्तत लेने, क़र्ज़-उधार करने पर मजबूर करती हैं और दिखावे के लिए पहनती हैं। एक महिफ़ल में एक जोड़ा पहन कर गयी थीं, तो अब दूसरी महिफ़ल में उसी जोड़े को पहन कर जाने में शर्म समझती हैं। ज़ेवर पहन कर कहीं गर्मी के बहाने गला खोल कर दिखाती हैं, कहीं ज़ेवर की डिज़ाइनों पर बहस चला कर अपने ज़ेवर के अनोखा होने की बड़ाई हांकती हैं। दिखावा बहुत बड़ा गुनाह है। इशार्द फ़रमाया नबी अवरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, जो भी औरत दिखावे के लिए सोने का ज़ेवर पहनेगी, अज़ाब पाएगी।^२

जो ज़ेवर हराम कमाई का है, उस का अज़ाब की वजह होना जाहिर है लेकिन जो हलाल कमाई से बनता है, उसकी ज़कात न औरतें अदा करती हैं, न उनके शौहर अदा करते हैं। जिस माल की ज़कात न दी जाएगी, वह अखिरत में बवाल और अज़ाब बनेगा।

बुखारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि औरतों ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह ! औरतें दोजख में ज़्यादा जाने वाली क्यों होंगी। इशार्द फ़रमाया, (इसलिए कि) तुम लानत (फिटकार) भेजने का मशगला (काम) बहुत रक्ता हो और शौहर की ना-शुकी करती हो।^३

१. तर्गीब, २. मिशक़ात शरीफ़, ३. मिशक़ात

जन्नतियों को दोज़ख और दोज़खियों को जन्नत दिखायी जाएगी

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत में जो कोई दाखिल होगा, उस का दोज़ख में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा, जो बुरे अमल करने पर उस को मिलता, ताकि ज्यादा शुक्र अदा करे और जो कोई दोज़ख में दाखिल होगा, उसका जन्नत में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा जो अच्छे अमल करने पर मिलता, ताकि उसको ज्यादा हसरत हो।

जन्नत और और दोज़ख दोनों भर दी जाएगी

सूर: काफ़ में फ़रमाया—

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلْ امْتَلَأْتِ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ

यो म नकूलु लिजहन्न म हलिम्लत अत्ति व तकूलु हल मिम मज़ीद०
'जिस दिन कि हम दोज़ख से कहेंगे कि क्या तू भर गयी, वह कहेगी, क्या कुछ और भी है ?'

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख में दोज़खी डाले जाते रहेंगे और वह कहती रहेगी कि क्या और भी है ? यहां तक कि अल्लाह उसमें अपना क़दम रख देंगे जिसकी वजह से 'सिमट' जाएगी और कहेगी आपकी इज़्जत और करम की क़सम, बस ! बस !! और जन्नत में भी फ़ाज़िल जगह बाकी ही रहती जाएगी, यहां तक कि अल्लाह तआला नयी मख़्लूक पैदा फ़रमा कर उसी फ़ाज़िल जगह में बसा देंगे।'

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुह ने जन्नत व दोज़ख दोनों को भर देने का ज़िम्मा लिया है। दोज़ख खाली रह जाएगी तो नयी

१. अल्लाह तआला हाथ या क़दम तमाम अंग और देहत्व से پاک है। कुरआन व हदीस में जहां ऐसा ज़िक्र आए, उसके मुताबिक़ यही अक़ीदा रखें कि इसका जो मतलब अल्लाह के नज़दीक है, वही हमारे नज़दीक है।

२. बुखारी व मुस्लिम, ३. मिश्कात शरीफ़,

मख़्लूक पैदा फ़रमा कर उसे भरेंगे नहीं, क्योंकि वे बे-क़सूर^१ होंगे और जन्नत में जो जगह बच जाएगी, उसको नयी मख़्लूक पैदा फ़रमा कर भर देंगे। हमारे एक बुजुर्ग से किसी ने कहा कि वही मज़े में रहे जो पैदा होते ही जन्नत में होंगे। उन्होंने फ़रमाया कि उनको क्या खाक मज़ा आएगा, न दुनिया में आये, न दुख-दर्द सहने की मुसीबत पड़ी, अराम का मज़ा उसी को ख़ूब महसूस होता है जिसे दुख के बाद नसीब हुआ हो।

दोज़ख में जाने वालों का अन्दाज़ा

हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत आदम को खिताब करके फ़रमाएंगे, 'ऐ आदम !' वह अर्ज करेंगे—

لَيْلِكَ وَسُغْدَيْكَ وَالْغَدَاةُ فِي يَدَيْكَ

लव्वैक व सअदैक वल खैर कुल्लुह फ़ी यदैक०

'मैं हाज़िर हूँ और हुक्म का ताबेअ हूँ और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है।'

अल्लाह जल्लशानुह फ़रमाएंगे, (अपनी औलाद में से) दोज़खी निकाल दो। वह अर्ज करेंगे, दोज़खी कितने हैं ? इशार्द होगा हर हज़ार में ६६६ हैं। (यह सुन कर आदम की औलाद को सख्त परेशानी होगी और रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग होश खो बैठेंगे, जबकि हकीकत में बेहोश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख्त होगा (जिसकी वजह से होश खो बैठेंगे) यह सुनकर हज़रत सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! वह एक जन्नती हममें से कौन-कौन होगा ? आप ने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) खुश हो जाओ, क्योंकि यह ताय-दाद इस तरह है कि एक तुम में से है और हज़ार याज़ूज माज़ूज हैं।'

मतलब यह है कि याज़ूज-माज़ूज की तायदाद बहुत ही ज्यादा है कि अगर तुम में और उन में मुकाबला हो तो तुम में से एक शख्स के मुकाबले में याज़ूज-माज़ूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम की नस्ल से हैं, उनको मिला कर हर हज़ार में ६६६ दोज़ख में जाएंगे। वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने वाले और खुदा का इन्कार करने वाले हैं।

१. मिश्कात, २. मिश्कात,

कियामत के दिन की लंबाई

कियामत का दिन बहुत लंबा होगा। हदीस शरीफ में इस की लंबाई ५०,००० वर्ष बतायी गयी है।^१ यानी पहली बार सूर फूटने के वक्त से लेकर बहिश्तियों के बहिश्त में जाने और दोजखियों के दोजख में करार पकड़ने तक पचास हजार वर्ष की मुद्दत होगी। इतना बड़ा दिन मुदिरकों, काफिरों और मुनाफिकों के लिए बड़ा सख्त होगा। ईमान वाले बंदों के लिए अल्लाह तआला आसानी फरमा देंगे। चुनावे हदीस शरीफ में है कि आहज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से उस दिन के बारे में सवाल किया गया जिस की लंबाई पचास हजार वर्ष की होगी कि उस दिन की लंबाई का क्या ठिकाना है (भला वह कैसे करेगा ?)

आप ने इशदि फरमाया कि कसम उस ज्ञात की, जिस के कब्जे में मेरी जान है, बिला शुब्हा वह दिन मोमिन पर इतना आसान कर दिया जाएगा कि फर्ज नमाज़ जो दुनिया में पढ़ा करता था, उससे भी हल्का होगा।^२ खट से गुज़र भी जाएगा और होल व मुसीबत होने की वजह से परेशानी भी न होगी।

मौत की मौत

दोज़ख में हमेशा के लिए काफिर और मुदिरक मुनाफिक ही रहेंगे और उनको उसमें कभी मौत न आयेगी, न अज़ाब हल्का किया जाएगा, जैसा कि सूर फ़ातिर में इशदि है—

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَهْلُ الْهَرَمِ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كُفْرُهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا أَكْثَرَ
عِمْيَلًا مِنْ عَذَابِ الْبَاقِيَاتِ يُجْرَىٰ كُلُّ كَفُورٍ ۝

वल्लज़ी न क फ़रू लहुम नारु जहन्नम ला युक्ज़ा अलैहिम फ यमूत व ला युखफ़फ़ु अन्हुम मिन अज़ाबिहा कज़ालि क नज़्ज़ी कुल्ल कफ़ूर० और जो लोग काफिर हैं, उन के लिए दोज़ख की आग है, न तो उनको कज़ा आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा, हम हर काफिर को ऐसी ही सज़ा देते हैं।^१

गुनाहगार मुसलमान जो दोज़ख में जाएंगे, सज़ा भुगतने के बाद

१. देखो मिशकात शरीफ 'क़िताबु अज़कात' पृ० १५६ और पृ० १५७,

२. मिशकात शरीफ,

जन्नत में दाखिल कर दिए जाएंगे, जो जन्नत में दाखिल होगा, उस में हमेशा रहेगा, जन्नत में किसी की मौत न आएगी, न उस से निकाले जाएंगे, न निकलना चाहेंगे।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَمُوتُونَ عَنْهَا حَوْلًا ۝

खालिदी न फीहा ला यमू न अन्हा हि व ला०

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ज़व (सारे) जन्नती जन्नत में और (सारे) दोज़खी दोज़ख में पहुंच चुकेंगे तो मौत हाज़िर की जाएगी, यहां तक कि जन्नत और दोज़ख के दमियान लाने के बाद ज़िब्ह कर दी जाएगी, फिर एक पुकारने वाला जोर से पुकार देगा कि ऐ जन्नतियों ! (अब) मौत नहीं और ऐ दोज़खियों ! (अब) मौत नहीं ! इस एलान की वजह से जन्नतियों की खुशी बढ़ जाएगी और दोज़खियों के रंज पर रंज की बढ़ोतरी हो जाएगी।^१

हज़रत अबू सईद खदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने (सूर: मरयम की आयत) 'व अन्ज़िरहुम यौमल हसरति' पढ़ी (और इसके बाद हसरत की तपसीर में) फरमाया कि मौत (जिस्म व शव ल देकर) लायी जाएगी शीया कि वह शकल व सूरत में सफ़ेद मेंढा होगी जिसमें काले धब्बे भी होंगे और वह जन्नत और दोज़ख के दमियान वाली दीवार पर खड़ी की जाएगी, फिर जन्नत वालों को आवाज़ दी जाएगी कि ऐ जन्नत वालो ! यह सुन कर वे नज़र उठाकर देखेंगे और आवाज़ दी जाएगी कि ऐ दोज़ख वालो ! यह सुनकर वे (भी) नज़र उठाकर देखेंगे। इसके बाद उन (नमाम जन्नतियों और दोज़खियों) से सवाल होगा कि क्या तुम इसको पहचानते हो ? वे सब जवाब देंगे कि हां (पहचानते हैं) यह मौत है। इसके बाद (इन सब के सामने यह सलाम करने के लिए कि अब मौत न आएगी) मौत को लिटाकर ज़िब्ह कर दिया जाएगा (उस वक़्त जन्नत वालों की खुशी और दोज़ख वालों का रंज बहुत ज्यादा होगा) पस अगर जन्नत वालों के लिए हमेशा ज़िन्दा और बाक़ी रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता, तो उस वक़्त की खुशी में मर जाते और अगर दोज़ख वालों के लिए हमेशा के लिए मौत न आने

१. मिशकात शरीफ (बुखारी व मुस्लिम से)

२. और डरा उनको हमरत के दिन से,

और दोजख में हमेशा पड़े ही रहने का फंसला अल्लाह की तरफ से न हो चुका होता, तो उस वक्त के रंज से मर जाते ।^१

आराफ़ वाले

जन्नत वालों और दोजख वालों के दमियान एक आड़ यानी एक दीवार होगी। इस दीवार का या इस दीवार के ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। आराफ़ पर थोड़ी सी मुहत्त के लिए उन मुसलमानों को रखा जाएगा, जिनकी नेकियां और बुराइयां वजन में बराबर उतरेंगी। आराफ़ के ऊपर से ये लोग जन्नती और दोजखी दोनों को देखते और पहचानते होंगे और दोनों फ़रीक़ से बात-चीत करेंगे, जिसकी तफ़सील सूरः आराफ़ में आयी है, चुनांचे अल्लाह का इशारा है—

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَابِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ
وَنَادُوا الْمُصْحَبَ الْبَاقِيَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَيْدُ خُلُوعِهَا وَهُمْ
يَظُنُّونَ ۝

व वैन हुमा हिजाबुव्व अलल आराफ़ि रिजालु ययअ रफू न कुल्लन विसीमाहुम व नादो अस्हावल जन्नति अन् सलामुन अलैकुम लम् यद् वुलूहा व हुम यत्मअ न०

और इन दोनों (फ़रीक़) जन्नतियों और दोजखियों के दमियान एक आड़ (यानी दीवार) होगी और उस दीवार या उसके ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। उस पर से जन्नती और दोजखी सब नज़र आएंगे। आराफ़ के ऊपर बहुत से आदमी होंगे वे (जन्नतियों और दोजखियों में से) हर एक को उनकी निशानी से पहचानते होंगे और ये (आराफ़ वाले) जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि 'अस्सलामु अलैकुम'। अभी ये आराफ़ वाले जन्नत में दाखिल न हुए होंगे और उसके उम्मीद-वार होंगे ।^२

आगे फ़रमाया—

وَإِذَا مَرُوتُ أَبْصَارُهُمْ تَبَقَّاءُ أَصْحَابِ النَّارِ كَالْوَارِثَةِ لَا يَبْجُلُونَ
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

१. तिमिजी शरीफ़, २. बाद में उनकी उम्मीद पूरी कर दी जाएगी।

व इजा गुरिफ़त अस्सरुहुम तिल्का अ अस्हाबिन्नारि कालू रब्बना ना तज्जन्नना मअल कौमिज्जालिमीन०

और जब इन (आराफ़) वालों की निगाहें दोजख वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी, तो उस वक्त (हौल खा कर) कहेंगे कि ऐ हमारे रब ! हम को इन जालिम लोगों के साथ अज़ाब में शामिल न कीजिए ।^१

फिर आराफ़ वालों का दोजख वालों को मलामत करने का जिक्र फ़रमाया—

وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَابِ رِجَالًا لَا يَعْرِفُونَ سِيمَهُمْ قَالُوا أَمَا عَسَى
عَنْكُمْ جَبَلٌ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ
اللَّهُ بِرَحْمَةٍ طَا نُخَلُّوا الْجَنَّةَ لَا نُحْزَنُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ۝

व नादा अस्हाबुल आराफ़ि रिजालु ययअ रफू न हुम विसीमाहुम कालू मा अरना अन्कुम जम्अकुम व मा कुन्तुम तस्तकिवरून अ हाउला-इल्लजी न अवसम्तुम ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह्मतिन उदखुलुल् जन्नत ला खोफ़ुन अलैकुम व ला अन्तुम तहज़नून०

और आराफ़ वाले (दोज़खियों में से) बहुत से आदमियों को जिनको कि वे उनकी निशानियों से पुकारेंगे और कहेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (अब देखो) क्या ये (जो जन्नत में मजे उड़ा रहे हैं) वही (मुसलमान) हैं जिनके बारे में तुम कसमें खा कर कहा करते थे कि इन पर अल्लाह (अपनी) रहमत न करेगा। (हालांकि इन पर रहमत यह हुई कि) इनसे कह दिया गया कि जाओ जन्नत में, तुम पर न कुछ डर है, न ग़म रजोदा होंगे ।^२

आराफ़ वाले आखिर में जन्नत में दाखिल हो जाएंगे ।^३

जन्नत और दोजख दो ही जगहें आमांल के बदले के लिए अल्लाह तआला ने मुक़रर फ़रमाए हैं। जन्नत में जाना सच्ची कामियाबी है और दोजख में जाना असली घाटा और सच्चा नुबसान है, जिससे बड़ा कोई नुबसान नहीं। इस दुनिया में लोग कामियाबी और वा-मुरादी की कोशिश करते हैं और तरह-तरह की मुसीबतों को अलग-अलग इरादों में कामियाब होने के लिए खुशी-खुशी बरदाश्त करते हैं। अल्लाह तआला ने अपने रसूलों और किताबों के ज़रिए हृदर व नशर और हिसाब व

१. बयानुल कुरआन, २. बयानुल कुरआन,

किमास, मीजान, पुलमिरान, जन्नत-दोजख के हालात से और सच्चे नफा-नुकसान और बाकई कामियाबी से खबरदार फरमा दिया है और नेक आमाल के अच्छे बदले से कभी तपसील से, कभी बे-तपसील और इसी तरह बुरे अमल के बुरे बदले से कभी तपसील से, कभी बे-तपसील बताकर भले कामों के करने पर उभारा और उसकी ताकीद फरमा दो है, दुनिया में जो आता है, जरूर मेहनत व कोशिश और अमल करता है, भले-बुरे सभी दौड़-धूप करने और जान व माल और वक्त खर्च करते हैं। उसमें ज्यादा बद-किस्मत कोई नहीं है, जिसने ज़िंदगी की बेहतरीन पूंजी और जान व माल के सरमाए को दोजख के कामों में खर्च करके बे-इतिहा टोटा-धाटा खरीदा और अपनी जान को आखिरत के अजाब में डाला, मरना तो सब ही को है, मगर बेहतर मरने वाले वे हैं जो जन्नत के लिये जीते और मरते हैं। यही बन्दे कामियाब और ना-मुराद हैं।

सूर: आले इम्रान में फरमाया—

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ الْجُؤَرَ كَيَوْمِ الْقِيَامَةِ
فَمَنْ رُخِّصَ : السَّارِ وَأُجِّلَ الْبَقَاءُ فَقَدْ كَارَ وَكَانَ الْخَلْقُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعَ الْوُجُورِ

कुल्लु नफ़िसन जाइक़तुल मौति व इन्नमा तुवफ़्फ़ो न उजूर कुम यौमल क़ियामति फ़ मन जुहज़ि ह अनिन्नारि व उदख़िलल जन्न त फ़ क़द फ़ा ज़ व मल हयातुदुन्या इल्ला मलाय़ल ग़ुलूरि०

‘हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको पूरे बदले क़ियामत ही के दिन मिलेंगे, सो जो आदमी दोज़ख से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया, पस वह कामियाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे के सौदे के सिवा कुछ भी नहीं है।’

अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम व हज़रत हीवा अलै० को ज़मीन में भेजा था, तो फरमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, सो वह गुमराह न होगा, न बद-किस्मत होगा और यह फरमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो ऐसों पर न कुछ डर होगा, न ऐसे लोग दुखी होंगे और जो कुफ़्र करेंगे और झुठलाएंगे हमारे हुक्मों को, ये दोज़ख वाले होंगे, उसमें हमेशा रहेंगे। सूर: ताहा और सूर: वक्कर: में यह एलान मौजूद है। जिसने दुनिया में इस एलान पर कान धरा और अल्लाह की हिदायत को माना, बे-शुद्दा न यहाँ राह से भटका हुआ है, न आखिरत में ना-मुराद और बद-किस्मत होगा और जिसने अल्लाह

की हिदायत को पीठ पीछे डाला, उसने हुक्मों को झुठलाया, दोज़ख में जा कर अपने किरदार (चरित्र) का बदला पाएगा।

أَدْخَلْنَا اللَّهُ الْجَنَّةَ دَارَ النِّعَمِ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ الْجَحِيمِ إِنَّهُ
هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

अदख़ल नल्लाहुल जन्न त दारन्न श्रीमि व अम्मा ज़ ना मिन अज़ाबिल ज़हीमि इन्नहू हुक्मत्तुव्वाबुरहीम० सुब्हान रब्बि क रब्बिल अज़ज़ति अम्मा यसिफू न व सलामुन अलल मुसली न वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आल मीन०

फानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

मुकम्मल तारीखे इस्लाम

आखिरी पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम से लेकर उस्मानी खलीफा
मुलतान सलीम तक के मुकम्मल हालात

तस्नीफ़
अब्दुल्लाह शाह नजीबाबादी

तल्खीस
कौसर यज्जदानी नदवी एम. ए.

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन : 23242427, (मोबाइल) 9312272836 (घर) 25702399

سَابِقُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا
كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ

साबिकू इला मरिफ़ र तिम मिररब्बिक्कुम व
जन्नतितन अर्जु हा क अर्जिस्समाह वल अर्जि०

मरने के बाद क्या होगा? (४) खुदा की जन्नत

जिसमें क़ुरआन मजीद और हदीसों की
रोशनी में जन्नत और जन्नतियों के
तफ़सीली हालात जमा किए गये हैं

लेखक :

मौलाना आशिफ़ इलाही बुलन्द शहरी

अनुवादक :

कौसर यज्जदानी नदवी एम. ए.

प्रकाशक :

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन : 23242427, (मोबाइल) 9312272836 (घर) 25702399

विषय-सूची

क्या ?

१. जन्नत किस चीज़ से बनी है ?
२. जन्नत का फैलाव
३. जन्नत के दरवाजे
४. जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों की दो जमाअतें
५. दाखिले के बाद मुबारकवादी
६. जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़्ज़
७. जन्नतियों का पहला नाश्ता
८. जन्नतियों का जिस्म और खूबसूरती
९. जन्नतियों की तन्दुरुस्ती और जवानी
१०. जन्नतियों की उम्रें
११. जन्नतियों के बाग़ और पेड़
१२. जन्नत के फल और मेवे
१३. जन्नत में खेती
१४. जन्नत की नहरें
१५. नहरे कोसर
१६. जन्नत के चश्मे
१७. जन्नत में पीने की चीज़ें
१८. जन्नत के परिन्दे
१९. जन्नती पूरी इज़्ज़त से खाएं-पिएंगे
२०. जन्नतियों के बर्तन
२१. जन्नत की शराब से नशा न होगा
२२. जन्नतियों की सवारियां
२३. जन्नतियों की आपस में मुहब्बत
२४. जन्नतियों की दिल्लगी
२५. जन्नतियों का कपड़ा-गहना
२६. जन्नतियों के ताज
२७. जन्नतियों के विछौने
२८. जन्नतियों के तल्ल
२९. विल्दान और ग़िल्मान
३०. जन्नत में पाकीज़ा बीवियां
३१. जन्नती बीवियों की खूबसूरती और दूसरी बातें

कहां ?

- २५१
- २५१
- २५२
- २५५
- २५६
- २६०
- २६१
- २६३
- २६५
- २६६
- २६६
- २७०
- २७५
- २७५
- २७७
- २७७
- २७८
- २८२
- २८२
- २८४
- २८५
- २८७
- २८७
- २८८
- २८८
- २८९
- २९२
- २९३
- २९४
- २९६
- २९८
- २९८

क्या ?

३२. हरे ईन
३३. जन्नत में हरे का तराना
३४. मर्दों के लिए बहुत सी बीवियां
३५. मर्दाना क़वत
३६. जन्नत का बाज़ार
३७. जन्नत की सबसे बड़ी नेमत
३८. गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख से निकलना
३९. जन्नत में सबसे आखिर में जाने वाला
४०. जन्नत में हमेशा रहेंगे
४१. जन्नत में वह सब कुछ होगा, जिसकी चाह होगी
४२. जन्नती न जन्नत से निकाले जायेंगे
४३. अल्लाह की तरफ़ से रज़ामन्दी का एलान
४४. जन्नत के दर्जे
४५. जन्नत के बालाख़ाने
४६. जन्नत के खेमे और कुम्बे
४७. जन्नत का मौसम
४८. जन्नत में आराम ही आराम है
४९. जन्नतियों की मज़िलें
५०. तहीयतुहुम फ़्रीहा सलाम
५१. जन्नत की नेमतों को दुनिया में नहीं समझा जा सकता
५२. जन्नत की खुशबू
५३. क्या कोई जन्नत के लिए तैयारी करने वाला है ?

कहां ?

- ३०२
- ३०५
- ३०५
- ३०६
- ३०८
- ३११
- ३१३
- ३१६
- ३२१
- ३२३
- ३२३
- ३२४
- ३२५
- ३२७
- ३२८
- ३२९
- ३३१
- ३३२
- ३३४
- ३३५
- ३३७
- ३३७

कससुल अंबिया

जिसमें

- हजरत आदम अलै० से लेकर हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के हालान,
- आखिरी नबी हजरत मुहम्मद सल्ल० के तफ्सीली हालान,
- खुलफा-ए-राशिदीन यानी हजरत अबूबक रजि०, हजरत उमर रजि०, हजरत उस्मान रजि०, हजरत अली रजि० के हालान,
- फिरोह के चार इमाम, इमाम अबू हनीफा रह०, इमाम मानिक रह०, इमाम अहमद बिन हंबल रह०, इमाम शाफई रह० के हालान,
- हिंद व पाक के मशहूर औलिया-ए-किराम के हालान, और
- हदीस के मशहूर जानकार जैसे इमाम बुखारी, इमाम मुस्लिम वगैरह के हालान,

शामिल हैं

फानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, अटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

खुदा की जन्नत

जन्नत किस चीज़ से बनी है?

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं ने अर्ज किया ऐ अल्लाह के (रसूल)! जन्नत किस चीज़ से बनी है? इसके जवाब में आहजूरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि एक ईंट सोने की है और एक ईंट चांदी की है और उस का मसाला (जिस से ईंटें जोड़ी गयी हैं) तेज़ खुशबूदार मुस्क है, उसकी कंकारियां मोती और याकृत हैं और उस की मिट्टी जाफ़रान है। जो शख्स जन्नत में दाखिल होगा, हमेशा नेमत में रहेगा और (कभी किसी चीज़ का) मुहताज न होगा, हमेशा (जिंदा) रहेगा, और मौत न आएगी, न जन्नतियों के कपड़े बोसीदा (फटे-पुराने) होंगे, न उन की जवानी खत्म होगी।

जन्नत का फैलाव

सूर: हदीद में इशाद है—
سَاقُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
أَعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ

साबिकू इला मासिकरतिम मिररिबिकुम व जन्नतिन अर्जुहा व अजि ससमाइ वल अजि उमिदत लिल्लजी न आ म नू बिल्लाहि व खुलिही०

अपने परवरदिगार की मासिकरत की तरफ और जन्नत की तरफ दौड़ो जिसका फैलाव आसमान व ज़मीन के फैलाव के बराबर है, उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं।

जन्नत बहुत बड़ी जगह है, इस के फैलाव का अन्दाज़ा छोटे दर्जे के

१. अहमद व तिमिज़ी शरीफ.

जन्नती को जो कुछ मिलेगा, उसके फँलाव के सामने रख कर लगाया जा सकता है। कुछ रिवायतों में है कि छोटे दर्जे के जन्नती को जो जगह मिलेगी, पूरी दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगह के बराबर होगी। यह सब सामने के लोगों के समझाने के लिए हैं।

सूरः हदीद में है, आम इंसानों के जेहन और समझ के करीब लाने के लिए जन्नत के फँलाव को आसमान व जमीन के फँलाव के बराबर बताया गया है और सूरः आले इम्रान में 'अर्जुहस्समावातु वल अर्जु' फरमाया है, जिसमें समाअ (एक आसमान की जमा इस्तेमाल की गयी है (यानी जन्नत का फँलाव तमाम आसमानों और जमीन के बराबर है)।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नत में सी दर्जे हैं, सारी दुनियाएं अगर उनमें से एक में जमा हो जाएं तो सब समा जाएं।^१

जन्नत के दरवाजे

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि तुम में से जो भी कोई मुसलमान बुजू करे और अच्छी तरह पानी पढ़ावे (और) फिर (बुजू के बाद) यों कहे—

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ
لَهُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी कलहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिए जाएंगे, जिससे चाहे दाखिल हो जाए।^१

इस हदीस से जन्नत के आठ दरवाजे मालूम हुए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

१. इसकी और ज्यादा तथरीह और इसके बारे में सवाल व जवाब कम दर्जे के जन्नती के जिक्र में देखें,

२. तिमिजी शरीफ, ३. मुस्लिम शरीफ,

रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में (यानी अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए) एक क्रिस्म की दो चीजें (जैसे दो दिरहम, दो दीनार, दो रुपये, दो कपड़े) खर्च किए, तो जन्नत में उसको बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे ! यह बेहतर है। जो शख्स नमाज़ वाला था, उसे नमाज़ के दरवाजे से बुलाया जाएगा और जो शख्स जिहाद वाला था, वह जिहाद के दरवाजे से बुलाया जाएगा और जो शख्स सद्का वाला था, उसे सद्के के दरवाजे से बुलाया जाएगा और जो शख्स रोज़े वाला था, वह बाबुर्रय्यान से बुलाया जायेगा। यह सुन कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, सब दरवाजों से किसी को पुकारा जाए, इसकी ज़रूरत तो है नहीं (क्योंकि असल मक़सद यानी जन्नत में दाखिला तो एक दरवाजे से दाखिल होने में हासिल हो जाता है, लेकिन फिर भी पूछता हूँ कि) क्या कोई ऐसा भी होगा जिसे (इज़्ज़त देने के लिए) तमाम दरवाजों से बुलाया जाये।

आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हां ! (ऐसे भी लोग होंगे) और मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम उन ही में से होगे।^१

साहिबे फ़तहूल बारी लिखते हैं कि इस हदीस से चार दरवाजों का इल्म हुआ—

१. बाबुस्सलात (नमाज़ का दरवाजा),
२. बाबुस्सद्का (सद्का का दरवाजा),
३. बाबुल जिहाद (जिहाद का दरवाजा),
४. बाबुर्रय्यान। इसके बाद लिखते हैं कि एक बाब (दरवाजा)

अल-हज़्ज यक़ीनी तौर पर होगा और एक दरवाजा उन लोगों के लिए होगा जो गुस्से को पी जाते हैं, जिसके बारे में मुस्तद अहमद में एक हदीस आयी है और एक दरवाजा (अल-बाबुल ऐमन) तवक्कुल (अल्लाह पर पूरा भरोसा) करने वालों के लिए होगा, जो बग़ैर हिसाब और बग़ैर

१. यानी वह शख्स जो फ़र्जों के अदा करने के साथ-साथ नमाज़ (फ़र्ज, नफ़ल सुन्नत) का खास ध्यान और एहतमाम रखता था, उसे नमाज़ के दरवाजे से बुलाया जाएगा, यह मतलब नहीं है कि सिर्फ़ नमाज़ पढ़ता था और बाक़ी फ़र्ज छोड़े हुए था, इसी तरह 'जिहाद वाले' और 'सद्क' वाले और 'रोजों वाले' का मतलब समझ लो,

२. तिमिजी शरीफ,

अज्ञाव उस दरवाजे से दाखिल होंगे। और एक वाबुज्जिक्र (जिक्र यानी अल्लाह की याद का दरवाजा) होगा जिसकी तरफ़ तिमिजी (की एक हदीस) में इशारा है और यह भी हो सकता है कि वाबुज्जिक्र न हो, बल्कि वाबुल इल्म हो। (खुदा ही बेहतर जानता है।)'

फिर लिखते हैं कि (यह भी) हो सकता है कि हज़रत अबू बक्र की बड़ाई में जिन-जिन खूबियों का जिक्र है, ये जन्नत के असल (शुरू के बड़े) फाटकों के अलावा अंदर के दरवाजे हों, क्योंकि नेक अमल घाठ से बहुत ज्यादा हैं। हर (नेक अमल) का अगर एक दरवाजा हो तो बहुत दरवाजे होने चाहिए, इसलिए ज्यादा सही अन्दाज़ा यही होता है कि नेक अमलों के दरवाजे अंदरूनी दरवाजे हों।

एक बार बसरा के अमीर (गवर्नर) हज़रत उत्बा बिन गजवान रज़ि० ने खुदा देते हुये इशार्द फ़रमाया कि बिला शुद्धा तुम ऐसी दुनिया की तरफ़ कूच करने वाले हो, जहां से और कहीं जाना न होगा, इसलिये तुम यहां से बेहतरीन अमल लेकर रवाना होना। फिर फ़रमाया कि हमको यह बताया गया है कि जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के दमियान चालीस साल के सफ़र की दूरी है और यह यकीनी बात है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि दाखिल होने वालों की भीड़ की वजह से इतना बड़ा दरवाजा (भी) तंग पड़ जायेगा।'

बुखारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के दमियान इतनी दूरी है, जितनी शहर मक्का और हिज़र के दमियान है।'

साहिबे मज़मूल बिहार लिखते हैं कि हिज़्र बहरैन की राजधानी है।

दोनों हदीसों से जन्नत के दरवाजों का फैलाव और चौड़ाई मालूम हुई। पहली हदीस में दोनों किवाड़ों के दमियान की दूरी चालीस साल की दूरी बतायी जाती है और दूसरी हदीस में मक्का और हिज़्र की दूरी बतायी है। मौजूद लोगों की समझ के करीब लाने के लिये उन ही के मुहावरे और बोल-चाल में कभी इस तरह फ़रमाया और कभी उस तरह समझाया। इससे यह बात पक्की है कि दरवाजों का फैलाव बहुत ही ज्यादा है। जैसा मकान है, वैसे ही दरवाजे हैं।

हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रकूले

१. फ़तहूल बारी, २. मुस्लिम, ३. अल्लुगीबि बतर्हीब,

अब हम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जरूर ही ऐसा होगा कि मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या (फ़रमाया) सात लाख आदमी आपस में एक दूसरे को पकड़े हुये दाखिल होंगे। उनकी (लाइन) का पहला शरस दाखिल न होगा, जब तक कि उनका आखिरी शरस न दाखिल हो जाये (मतलब यह कि एक ही वक़्त में उनकी पूरी लाइन की लाइन दाखिल होगी) फिर फ़रमाया कि उनके चेहरे इस तरह चमकते होंगे जैसे बौदहवी का चांद होता है।'

जन्नत में दाखिल होने वाले लोगों की दो जमाअतें

सूर: वाकिअ: में तीन जमाअतों का जिक्र फ़रमाया है यानी यह बताया है कि क़ियामत के दिन तीन जमाअतों में लोग बंट जाएंगे—

१. अस्थाबुल यमीन दा अस्थाबुल मैमन: (दाहिने हाथ वाले),
२. मुकर्रबीन (खुदा के खास करीबी बन्दे यानी नबी, और सच्चे बली, शहीद और तक्वा वाले लोग),
३. अस्थाबुशिशमाल या अस्थाबुल मशअम: (बांये हाथ वाले),

जिन के बांये हाथ में आमाल नामे दिये जाएंगे। पहले दो गिरोह तो जन्नती होंगे, लेकिन उनके दर्जों में फ़र्क होगा। 'मुकर्रबीन' खास बड़े दर्जों वाले होंगे और 'अस्थाबुल यमीन' यानी आम मोमिन उनसे कम दर्जों में होंगे और तीसरा गिरोह यानी 'अस्थाबुशिशमाल' दोखियों का गिरोह होगा।

पहले अल्लाह तआला ने 'मुकर्रबीन' के बदले का जिक्र फ़रमाया है और यह बताया है कि उनमें का एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और एक छोटी सी जमाअत पिछले लोगों में से होगी। ये 'अगले लोग' कौन हैं और 'पिछले लोगों' का मतलब क्या है? इसके बारे में साहिबे 'बयानुल कुरआन' लिखते हैं कि अगलों का मतलब पहले वाले लोग हैं यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूरे अब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक और पिछलों से मुराद हुज़ूरे अब्दस के उम्मतों (यानी आपके जमाने से लेकर क़ियामत तक आने वाले मुसलमान) मुराद हैं।'

फिर लिखते हैं कि—

शुरू के लोगों में भलाई में आने जाने वालों की ज्यादाती और बाद

१. बुखारी व मुस्लिम (तर्गीब के हवाले से) २. दुर,

के लोगों में आगे जाने वालों की कमी की वजह यह है कि खास लोग हर जमाने में कम होते हैं और शुरू के लोगों का जमाना बेशक उम्मेद मुहम्मदिया के जमाने से बहुत लंबा है, पर जितने खास लोग उस लम्बे जमाने में हुए हैं, जिनमें लाख या दो लाख या कम व ज्यादा नबी भी हैं, इसलिए होना भी यही चाहिए कि छोटी मुद्त में उनसे कम ही होंगे।

मुफ़ास्सिर (तफ़सीर लिखने वाले) इब्ने कसीर ने अगलों और पिछलों के बारे में दूसरा कौल भी नक़ल फ़रमाया है।

अब करीबी लोगों का बदला मालूम कीजिए। खुदा का इशार्द है—

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ۚ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۚ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۚ ثَلَاثَةٌ ۚ مِنَ الْأُولَىٰ ۚ وَثَلَاثٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۚ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۚ مَقْدُورِينَ ۚ عَلَيْهِمْ مَتَابِلُونَ ۚ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ زُرُّكَانٌ ۚ وَلَا كَوَافٍ ۚ وَأَبَاقٍ ۚ وَكَأَنَّهُمْ فِي مَعِينٍ ۚ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُزْفُونَ ۚ وَكَأَنَّهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا نَجْوَىٰ ۚ وَلَا تَأْثِيمًا ۚ إِلَّا قَهِيلًا سَلَامًا ۚ

वस्साविकूनस्साविकून० उलाइकल मुकर्रबून फ़ी जन्नातिन्नईमि मुल्लतुम मिनल अव्वलीन व कलीलुम मिनल आखिरीन अला मुशरिफ मौजूनतिम मुत्किईन अलैहां मुत फ़ाविली न यतूफ़ु अलैहिम विल्दानु-म्मुखल्लदून बिअक्वाविव्व अवा री क व कासिम मिम् मश्रीनिल्ला युसह्रू न अन्हुमा व ला युन्जिफू न व फ़ाकि हतिम मिम्मा य त खय्यरून व लाहिम तैरिमिम्मा यस्तहून व हूरून श्रीनुन क अम्सालिल लु अलु इल मकनून जज़ाअम विमा कानू यश्मलू न ला यस्मअन फ़ीहा लखव्व ला तासीमा इल्ला क़ीलन सलामन सलामन०

‘और सवक़त ले जाने वाले, वे तो सवक़त ले जाने वाले हैं। वे (खुदा से खास) कुर्व रखने वाले हैं। ये लोग आराम के बाग़ों में होंगे। उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और छोटी सी जमाअत उन में पिछले लोगों में से होगी। वे लोग (सोने के तारों से) बने हुए तख़्तों पर तकिया लगाये ग्रामने-सामने बैठें होंगे, उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। ये चीज़ें लेकर आया जाया करेंगे, आवख़ोर और आपनाने और ऐसी शराब का जाम जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा, न इससे उनको सर-दर्द होगा और न अचल में फ़तर आएगा और मेवे,

जिनको वे पसन्द करेंगे और परिदों का गोश्त जो उनको पसन्द हो और उनके लिए बड़ी आख़ों वाली हूरें होंगी जैसे छिपा कर रखा हुआ मोती, यह उनके अमल के बदले में मिलेगा। वहां न बक-बक सुनंगे और न कोई और बेहदा बात, बस सलाम ही सलाम की आवाज़ आयेगी।’

इसके बाद ‘अरहाबुल यमीन’ का जिक्र फ़रमाते हुए इशार्द है—

أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۚ وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ۚ وَظِلٍّ مَّسْدُودٍ ۚ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۚ وَكَأَنَّهُمْ كَشِيرَةٍ لَا مَقْطُوعَةٍ ۚ وَلَا يَمُوتُ عَذَّةٌ ۚ وَقُرْشٍ مَّرْجُومَةٍ ۚ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۚ فَجَعَلْنَهُنَّ أَكْبَارًا ۚ عُمَرَاءَ ۚ بَاثِرًا ۚ إِنَّا لَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ ثَلَاثَةٌ ۚ مِنَ الْأُولَىٰ ۚ وَثَلَاثَةٌ ۚ مِنَ الْآخِرِينَ ۚ

व अरहाबुल यमीनि मा अरहाबुल यमीनि फ़ी सिद्रिम्मख़ू दिव्व तल्हिम मंजू दिव्व ज़िल्लिम मम्दूदिव्व भाइम मस्कूविव्व फ़ाकिहतिन कसीर-तिल्ला मक्कूअतिव्व ला मम्नूअतिव्व फ़ुरुशिम मफ़ूअ इल्ला इन्शाहुन्न इन्शाअन फ़ जम्लून हुन्न अक्कारन उरुवन अत्रावल्लि अरहाबुल यमीनि मुल्लतुम मिनल अव्वलीन व मुल्लतुम मिनल आखिरीन०

‘और जो दाहिने हाथ वाले हैं, वे दाहिने हाथ वाले कैसे हैं, वे उन बाग़ों में होंगे, जहां बेकांटे की बेरियां होंगी और तह-ब-तह केले होंगे और लम्बा-लम्बा साया होगा और चलता हुआ पानी होगा और खूब ज्यादा मेवे होंगे, जो ख़तम न होंगे और न उनकी रोक होगी और ऊंचे-ऊंचे बिछीने होंगे। हमने इन आख़ों को खास तौर पर बनाया है कि वे कु-वारियां हैं, शौहरों के लिए प्यारी हैं और उन की हम-उम्र हैं। ये सब कुछ ‘अरहाबुल यमीन’ के लिए है, उनका एक बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा और एक बड़ा गिरोह पिछले लोगों में से होगा।’

इसके बाद कुरआन शरीफ़ में ‘अरहाबुल यमीन’ (यानी दोऊल वालों) का और उनकी सज़ा का जिक्र है।

फ़ायदा—मुकर्रबीन (करीबी लोगों) के बदले में आराम के उन सामानों का ज्यादा जिक्र किया गया है जो शहर वालों को ज्यादा पसन्द हैं और ‘अरहाबुल यमीन’ के बदले में आराम के उन सामानों का ज्यादा जिक्र है, जो देहात वालों को ज्यादा पसन्द हैं, पर इशारा इस तरफ़ हो गया कि उनमें इतना फ़र्क़ हो, जैसा शहर वालों और गांव वालों में होता है।

यानी यह मतलब नहीं कि 'मुकर्रिबीन' के बदले में, जिन नेमतों का जिक्र है, उन से 'अस्हाबुल यमीन' महरूम रहेंगे और 'अस्हाबुल यमीन' के बदले में जिन चीजों का जिक्र है, वे 'मुकर्रिबीन' के लिए न होंगे, क्योंकि नेमतों में तो सभी शरीक होंगे और बिल्दान और गिल्मान और शराब का जाम, फल, मेवे वगैरह सभी को मिलेंगे, हां, मगर 'मुकर्रिबीन' और 'अस्हाबुल यमीन' के दर्जे और रूबे में अलग-अलग तरीकों में फर्क होगा, जिसकी तरफ बयान के अन्दाज़ में इशारा फरमाया गया है।

दूसरा फायदा —आम जन्नती मोमिनों को 'अस्हाबुल यमीन' फरमाया है, क्योंकि उन के दाहिने हाथ में आमालनामा दिया जाएगा और चाहे यह मतलब 'मुकर्रिबीन' के लिए भी हो, लेकिन आम मोमिनों को खास तौर से इस नाम से जिक्र करने में इशारा है कि उन में 'अस्हाबुल यमीन' होने की खूबी से ज्यादा कोई खूबी 'खास नजदीकी' की नहीं पायी जाती।

जन्नत में इज़्ज़त के साथ दाखिला और फरिश्तों की तरफ के सलाम और मुबारकबाद, साथ ही अमन व सलामती के साथ हमेशा-हमेशा के लिए ठहरने का सलाम

सूर: हिज्ज में फरमाया—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ أَدْخُلُوهُمْ سَلَامًا ۖ أَمِينٌ ۝

इन्तल मुत्तकी न फ्री जन्नातिव्व उयूनिन उदखुलूहा बिसलामिन आमिनीन०

'बिला शुब्हा खुदा से डरने वाले बागों और चश्मों में होंगे। उनसे कहा जाएगा कि तुम उन में सलामती और अमन व अमान के साथ दाखिल हो जाओ।'

सूर: जुमर में इशार्द है—

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ وَهَارُوا ۖ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي هَٰؤُلَاءِ أَمَا عَالِمُ الْغَيْبِ ۚ ۝

हत्ता इज्जा जाऊहा व फुतिहत अन्वाबुहा व का लहुम ख ज न तुहा

१. जन्नती लड़के और सेवा करने वाले. २. बयानुल कुरआन,

सलामुन अलैकुम तिव्तुम फदखुलूहा खालिदीन०

'यहां तक कि जब वह जन्नत के पास पहुंचेंगे और उस के दरवाजे (पहले से स्वागत के लिए) खुले होंगे और वहां के हिफाजत करने वाले फरिश्ते उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम हो। खूब-खूब मजे से रहो, पस हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ।'

यानी जन्नतियों को जन्नत में क्रियाम करने के लिए पूरी इरजत के साथ दाखिल किया जाएगा, उन के स्वागत के लिए पहले से दरवाजे खुले होंगे और जन्नत के हिफाजत करने वाले फरिश्ते सलाम करेंगे और आराम की जिंदगी की मुबारकबादी देंगे और यह सुना देंगे कि आप लोग ऐसी जगह ठहर रहे हैं जहां अमन व अमान और सलामती ही सलामती है। यहां हमेशा और चैन के साथ रहोगे, न डर होगा, न किसी तरह की घबराहट होगी। रंज व गम, दुखन, घुटन और थकन का नाम न होगा।

दाखिले के बाद मुबारकबादी

सूर: राद में इशार्द है—

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ الشَّيْءَ ۚ ۝
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۚ جَنَّاتٌ عِدْنُ يَدْخُلُونَهَا ۖ
وَمَن صَلَحَ مِن آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ فِيهَا يُدْخِلُونَ
عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۖ سَلَامٌ عَلَيْهِمْ يَبَاصِرُونَ ۖ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۚ

वल्लजी न स व हव्तिगा अ वजिह रब्बिहिम व अक्रामुस्सला त अन्फिकू मिम्मा रजकनाहुम सिरव्व अलानियतन व यदरऊन बिल ह स न तिस्सय्यद त उलाइ क लहुम उक्वहारि जन्नातु अद्नियद खलू न हा व मन स ल ह मिन आवाइहिम व अज्वाजिहिम व जुरी यातिहिम वल मलाइकतु यदखुलू न अलैहिम मिन कुल्लि बाविन सलामुन अलैकुम बिमा सबतु म फनिअ म उक्वहारि०

'और ऐसे लोग हैं (जिनका ऊपर से आयत में जिक्र है) कि जिन्होंने अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए सब्र किया और नमाज कायम किया और यह हमने जो उन को दिया, उस में से खले और छिपे तरीके

पर खर्च करते हैं और अच्छे सुलूक के ज़रिए बुरे सुलूक को दूर करते हैं, उनके लिए इस दुनिया में अच्छा अन्जाम है यानी हमेशा रहने की जन्नत है, जिनमें वे दाखिल होंगे और उनके भां-बाप और अज्वाज (यानी बेटियाँ) और औलाद में से जो लायक होंगे, वे भी दाखिल होंगे और हर दरवाजे से उनके पास फ़रिश्ते (यों) कहने को आएंगे कि तुम पर सलाम हो, इसकी वजह से कि तुम ने दुनिया में सब किया, सो इस दुनिया में तुम्हारा अन्जाम बहुत अच्छा है।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि जन्नत वालों की जन्नत में दाखिल की मुबारकबादी देने के लिए हर तरफ़ से फ़रिश्तों की जमाअतें सलाम करती हुई दाखिल होंगी, उनको अल्लाह के करीब होने, इनाम पाने में और सुकून के घर (दास्त-सलाम) में ठहरने और नवियों और सिद्दीकों (सच्चों) के पड़ोस में रहने की जो बड़ाई हासिल होगी, उस पर मुबारकबादी देंगे।

जन्नत में दाखिले पर जन्नतियों के शुक्रिए के लफ़ज़

सूर: जुमर में फ़रमाया—

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَّقَنَا وَعْدًا وَأَوْفَىٰ الرَّحْمَنُ نَدْبُوا
مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ شَاءَ يُفْعِلُ مَا يَشَاءُ أَجْرُ الْعَمَلِ

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स द क़ ना व अ द हू व और स नल अज़ न त व व्वउ मिनल जन्नति हैमु नशाउ फ़ निअ्म अजल अमिलीन०

‘और जन्नती (जन्नत में दाखिल होकर) कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने हम से अपना वायदा सच्चा किया और हम को इस धरती का मालिक बनाया कि जन्नत में जहां चाहें, ठहरें, सो अच्छा बदला है अमल करने वालों का।’

‘जहां चाहें जन्नत में ठहरें’ इसका मतलब यह है कि अल्लाह पाक ने हर जन्नती को बहुत बड़ी लंबी-चौड़ी जगह दी, जिसमें पूरा-पूरा अस्तियार हासिल है कि जहां चाहे ठहरे, कोई रोक टोक नहीं है और कोई जगह ऐसी भी नहीं है जो ठहरने के काबिल न हो और अपनी जगह से जब किसी दूसरे जन्नती से मिलने का इरादा करेंगे तो उस का भी अस्तियार होगा।

सूर: आराफ़ में फ़रमाया—

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ ذَنْبٍ يَوْمَئِذٍ وَكَانُوا
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا
اللَّهُ ۚ لَقَدْ جَاءَتْ رَبَّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَلَوْ دُرِّدُوا أَن تُلْكَمُ الْبَشَرُ
أَوْ رَأَيْتُمْ هَٰذَا إِذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

व नज़अना मा फ़ी सुदूरहिम मिन तज़ीरि मिन तह्ति-हिमुल अन्हारु व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा व मा कुन्ना लिन हतदि य ली ला अनहदानल्लाहु लकद जाअत रैमुलु रब्बिना बिल हक्क व नूद अन तिल्कुमुल जन्न तु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम तथ्मलून०

और उनके दिलों में (जो एक दूसरे की तरफ़ से कुछ) शुब़ार (दोष भाव) था, उसे हम निकाल देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे कहेंगे कि सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने हमको इस जगह तक पहुंचाया और हमारी पहुंच न होती, अगर हम को अल्लाह तआला न पहुंचाते। वाकई सच तो यह है कि हमारे रब के पंगम्बर हक लेकर आए थे और उनको पुकार कर कहा जाएगा कि जन्नत तुम को तुम्हारे आमाल के बदले दी गयी है।

दाखिले के बाद जन्नतियों का पहला नाश्ता

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलु खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि क्रियामत के दिन जमीन एक रोटी बन जाएगी जिसको जव्वार (व क़हहार) अपने ताक़त भरे हाथ में लेकर उलटे-पलटेंगा, जैसे तुम में से कोई शख्स सफ़र में रोटी को उलटता-पलटता है, (उलट-पलट हमवार बना कर) अल्लाह तआला जमीन को जन्नत वालों की पहली मेहमानी करार देगा।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया था कि एक यहूदी आ पहुंचा और कहने लगा, ऐ अबुल कासिम! 'खुदा आप पर बरकत नाज़िल फ़रमाये, क्या आप को यह बताऊं कि क्रियामत के दिन जन्नतियों की पहली मेहमानी किस से होगी? आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां बता दे, उस ने इसी तरह बयान

१. अबुल कासिम आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहते हैं।

किया, जिस तरह आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि ज़मीन की एक रोटी बन जाएगी (जिसे जन्नत वाले सबसे पहले नाश्ते की जगह खाएंगे) रिवायत करने वाले कहते हैं कि उस यहूदी की बात सुनकर आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व अलिही व सल्लम हमारी तरफ़ देखकर इस तरह हंसे कि आपकी आखिरी दाढ़ें जाहिर हो गयीं (यह हंसना इस खुशी में था कि अल्लाह तआला ने जो इल्म पिछले नवियों को दिए थे, मुझे भी दिए, जिनमें से कुछ चीज़ें नक़ल पर नक़ल होकर यहूदियों में मशहूर हैं।) इसके बाद उस यहूदी ने कहा, क्या आपको यह (भी) बताऊँ कि जन्नतियों का सालन क्या होगा ? (जिससे पहली मेहमानी की वह रोटी खाएंगे जो ज़मीन से बनी हुई होगी) आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया (वह भी) बता दे। उस यहूदी ने कहा कि बेल होगा और मछली होगी, जिसकी कलेजी के ज्यादा हिस्से से सत्तर हजार आदमी खाएंगे।^१

जन्नत में खाने-पीने के लिए बे-इतिहा नेमतें होंगी, जब जन्नत में रहने लग जाएंगे, तो बराबर खाते-पीते रहेंगे, मगर सबसे पहले शुरू के मेहमान के तौर पर जो नाश्ता पेश किया जाएगा। वह ज़मीन की रोटी का होगा और उस नाश्ता के खिलाने में यह मसलहत है कि ज़मीन में तरह-तरह के मजे देखे हैं जो अलग-अलग इलाकों और मुल्कों में फलों, शल्लों, तरकारियों और दूसरी चीज़ों में पाये जाते हैं और चूँकि किसी भी आदमी ने ज़मीन से पैदा होने वाली हर नेमत नहीं खायी है, बल्कि कोई इस फल से महरूम है और किसी को वह फल नसीब नहीं हुआ है, इसलिए ज़मीन की रोटी बनाकर जन्नत वालों को पहले उसके तमाम मजे मिला कर एक साथ चखा दिए जाएंगे, ताकि जन्नत की नेमतों को जब खाएँ-पिएँ तो हर आदमी का यकीन इस तरह का यकीन हो जाए कि दुनिया में जो कुछ भी मैंने या किसी दूसरे ने खाया-पिया है, वह सब जन्नत की हर नेमत के सामने कुछ भी नहीं।^१

फायदा—यहूदी ने जो रोटी के साथ मछली और बेल का नाश्ता बताया, हुज़ूरे अब्दुस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कुछ नहीं फ़रमाया, जिससे मालूम हुआ कि उसने सही बात कही है। यह जो कहा कि मछली की कलेजी के बड़े हिस्से से सत्तर हजार आदमी खाएंगे। इसके बारे में मुस्लिम की शरह लिखने वाले अल्लाम नववी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं कि जिगर में एक टुकड़ा लटका हुआ होता है जो खाने में बेह-

१. जमउन फ़वाइद (बुखारी व मुस्लिम),

तरतीब हिस्सा है। कलेजी का ज्यादा हिस्सा इसी को फ़रमाया है।

सवाल—ज़मीन की रोटी किस तरह खाई जा सकेगी, हम तो देखते हैं कि ज़मीन के ज़र्रे (कण) खाने में मिल जाते हैं, तो खाया नहीं जाता और किरकिरापन जाहिर हो जाता है ?

जवाब—दुनिया में जितने भी गल्ले, फल, मेवे, सब्जियाँ, तरकारियाँ और खाने हैं, सब ज़मीन ही से निकलते हैं। जिस कुदरत वाले ने ज़मीन से ऐसी लज्जतदार चीज़ें निकाल दीं, उसको कुदरत है कि खास ज़मीन ही को खाने की चीज़ बना दे और उसमें ऐसी बात भर दे, जिससे जुवान भी मज़ा ले और हलक़ में भी आसानी से उतर जाए। इन्हू अला कुल्लि शैइन क़दोर०

जन्नतियों का जिस्म और खूबसूरती

हज़रत अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत कि है रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि पहला ग़िरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा, उन की शक्लें चौदहवीं रात के चांद की तरह (चमकती-दमकती) होंगी और जो लोग उनके बाद (दूसरे नम्बर पर) दाख़िल होंगे, उनकी शक्लें बहुत ज्यादा रोशन सितारे की तरह से (रोशन) होंगी। सब जन्नतियों के दिल एक ही दिल पर होंगे। (यानी उन के आपस में ऐसी मुहब्बत होगी जैसे जिस्म बहुत हों और दिल एक हो) उन में आपस में इस्तिलाफ़ होगा, न कपट होगा। हर एक के लिए (बड़ी आंखों वाली हूरो में से कम से कम) दो बीवियाँ होंगी। उन में से हर बीवी की पिडली का गूदा खूबसूरती की वजह से (हड्डी और) गोشت के बाहर से नज़र आएगा। ये लोग सुबह-शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करेंगे, न बीमार होंगे, न नाक से रेंट आएगा और न थूकेंगे। उनके बर्तन सोने-चांदी के होंगे और उन की कंधियाँ सोने की होंगी, उनकी अंगीठियों में खुशबू फ़ैलने के लिए जो चीज़ जलेगी वह भूद होगी और उन का पसीना मुश्क (की तरह खुशबूदार) होगा।^१

इस हदीस से जन्नतियों के हुस्न व जमाल और उनकी बीवियों की खूबसूरती का हाल मालूम हुआ, साथ ही उन की सफ़ाई-सुथराई का भी पता चला कि उन को न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी और न थूकने

१. बुखारी शरीफ़,

की जरूरत होगी।

दूसरी रिवायतों में यह भी है कि 'ला यवूलू न व ला य त गव्व न' (यानी जन्नती न पेशाब करेंगे, न पाखाने की जरूरत होगी) पसीना जो आएगा, वह गर्मी की वजह से न होगा, बल्कि खाना हज्म हो जाने का जरिया होगा (जिस का वयान आगे आयेगा) और वह पसीना खुशबूदार और खुशगवार होगा।

ऊपर की हदीस में है कि जन्नतियों की अंगीठियों में जलने वाली ऊद होगी। जेहन में लाने के लिए 'ऊद' को अगर की लकड़ी समझ ली जाए जिस के बुरादे से अगर बत्तियां बनती हैं। चूंकि अगर कीमती चीज है, इस लिए दूसरी लकड़ी की पतली पतली सलाइयों पर उसका बुरादा लपेट कर अगर बत्ती बनायी जाती है। जन्नत में किसी चीज की कमी न होगी, इसलिए खुशबू के लिए ऊद ही मुलग रहा होगा (उसके बुरादे की बत्तियां बनाने की जरूरत न होगी और यह वहां का ऊद होगा। यहां के ऊद पर इसे न सोचें। ये अंगीठियां आग से जल रही होंगी या किसी दूसरी चीज से? इस के बारे में कोई तस्वीर नहीं देखी।

फायदा — बुखारी शरीफ में है कि जब अल्लाह तआला ने हजरत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फरमाया तो उन का कद साठ हाथ का था और जन्नत में जो भी दाखिल होगा, आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल पर साठ हाथ का होगा।

सवाल — इतने लंबे-लंबे आदमी भला अच्छे क्या मालूम होंगे?

जवाब — जब सब ही एक ही कद के होंगे तो किसी का कद भी दमियानी कद से बाहर मालूम न होगा और सब ही को पसंद आएगा।

दूसरा फायदा — हदीस में जो लफ्ज 'बुकरतब्ब अशीया' (सुबह व शाम) फरमाया, उस के मुताल्लिक हदीस की शरह (टीका) लिखने वाले लिखते हैं कि इस से सच्ची सुबह व शाम मुराद नहीं है, क्योंकि वहां न निकलना होगा, न डूबना होगा, बल्कि एक ही तरह का मंजर होगा, रात-दिन का आना-जाना न होगा। फत्हुल बारी में एक कमजोर रिवायत नकल की है कि अर्थ इलाही के नीचे एक परदा लटका हुआ होगा, उस का लपेट दिया जाना शाम का निशान होगा और उसका फल जाना सुबह की निशानी होगी, यानी मुकरर की हुई मुद्त गुजर जाने पर उस परदे से सुबह व शाम की निशानी जाहिर हुआ करेगी और यह अल्लाह की तस्वीर में लगे रहने के वक्त होंगे। और अगरचे जन्नत में हर

वक्त बे-अस्तियार सांस की तरह तस्वीर जारी होगी, मगर अपने अस्तियार से भी सुबह व शाम तस्वीर में लगे रहने को पसंद करेंगे।

जन्नतियों के दाढ़ी न होगी और उन की सुरमई आंखें होंगी

हजरत अबू हुरैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नती 'अज़रद और अम्रद' होंगे। उन की आंखें ऐसी खूबसूरत होगी, कि (बाग़र मुर्मा लगाये ही) सुरमई मालूम होंगी, न उनकी जवानी खत्म होगी, न कपड़े पुराने होंगे।

जन्नती 'अज़रद व अम्रद' होंगे, यानी उन के जिस्म पर बाल न होंगे और सब (मर्द व औरत) बे-दाढ़ी होंगे। जिस्म पर बाल न होने के दो मतलब हो सकते हैं—एक तो यह कि सर के बालों के अलावा किसी भी जगह बाल न हों और दूसरा मतलब यह कि जिन जगहों के बालों को दूर करना पड़ता है (जैसे नाफ़ के नीचे के बाल और बगलें, वहां तो बिल्कुल ही बाल न होंगे और सीने और पिडलियों बाग़रह पर जो बाल होंगे, बहुत हल्के होंगे, खूब भरे हुए न होंगे, जिन से खाल की खूबसूरती दब जाए। सर के बालों का अलग से जिक्र किसी रिवायत में नहीं पाया गया, लेकिन बुखारी शरीफ की रिवायत में जो यह फरमाया कि उन की कंधियां सोने की होगी, इससे साफ़ जाहिर है कि उन के सर पर बाल होंगे।

चेहरे पर दाढ़ी न होने की तमन्ना जन्नत में पूरी हो जाएगी। हमारे एक बुजुर्ग से किसी ने सवाल किया कि दाढ़ी न होने से क्या फायदा होगा? फरमाया कि इस का जवाब उनसे मालूम करो जो दाढ़ी मुडाते हैं। बहरहाल जन्नत में तो हर चीज खूबसूरत होगी दाढ़ी न होने पर भी मर्दों की खूबसूरती बढ़ी हुई होगी और अंदर से बाल निकल कर न आएंगे, जिनको मूडनापड़े और उसकी वजह से खाल खराब हो।

जन्नतियों की तंदुरुस्ती और जवानी

हजरत अबू सईद खुदरी और हजरत अबू हुरैरह रजियल्लाहु

तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि एक (खुदाई) मुनादी (जन्नतियों में) पुकार कर एलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालों! तुम्हारे लिए यह बात तै है कि हमेशा तंदुरुस्त रहोगे, कभी बीमार न होगे और यह (भी) तै है कि हमेशा जिंदा रहोगे, कभी मौत न आएगी और (यह कि) हमेशा जवान रहोगे, कभी बूढ़े न होगे और (यह कि) हमेशा नेमतों में रहोगे, कभी मुहताज न होगे।^१

जन्नतियों की उम्रें

हजरत अबू सईद रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नत में जाने वाला जो शल्स इस दुनिया से विदा होगा, छोटा हो या बड़ा (जन्नत में दाखिले के वक़्त) सब तीस साल के कर दिए जाएंगे, इस से कभी आगे न बढ़ेंगे।^२

तीस साल की उम्र दमियानी उम्र है, उसमें न बचकाना नादानी होती है, न जवानी दोबानी होती है, न बुढ़ापा आता है, न बुढ़ापे की निशानियां होती हैं। उस उम्र में पूरी जवानी और पूरी समझ दोनों होते हैं। होश-हवास बजा और अंग सही-सालिम होते हैं। इसी लिए यह उम्र जन्नतियों के लिए रखी गयी है, छोटा हो या बड़ा, हर शल्स तीस साल का कर दिया जाएगा यानी तीस की उम्र की जो खूबियां व हालात होते हैं (जिन का जिक्र ऊपर हुआ) तमाम जन्नत वाले उनके मालिक होंगे, हमेशा-हमेशा जन्नत में रहेंगे, मगर न बुढ़ापा आएगा, न जवानी में कमजोरी आएगी, न होश व हवास में खलल पैदा होगा, न दांत उखड़ेंगे, न रोशनी में फर्क आएगा। कुछ रिवायतों में जन्नतियों की उम्र ३३ साल भी आयी है।

जन्नत के बाग़ और पेड़

सूरः नवा में फरमाया—

لَنَّ السَّعْدَيْنِ مَغَارًا حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا

وَكُنُوسًا يَهْرَاقًا

१. मुस्लिम शरीफ, २. तिमिजी,

इन्न लिल मुत्तीकी न मफाज्ज न हदाइ क व अन्नबाबव्व क वाअि व अत्राबव्व का सन दिहाका०

‘वेशक परहेजगारों के लिए बड़ी कामियाबी है, बाग हैं और अंगूर हैं और नयी हम-उम्र औरतें हैं और लबालब भरे हुए शराब के जाम हैं।’ और सूरः जारियात में इर्शाद है—

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ آخِذِينَ مَا أَرْتَمُوا رَبُّهُمْ

إِنَّهُمْ كَانُوا ثَبَلًا ذَلِكُمْ مُحْسِنِينَ

इन्नल मुत्तीकी न फ्री जन्नातिव्व अयुनिन आखिजी न मा आता-हुम रव्वुहुम इन्नहुम कानू कदल जालि क मुहिसनीन०

‘वेशक परहेजगार लोग बागों और चश्मों में होंगे। उन के रब ने उन को जो अता फरमाया होगा, वे इसे ले रहे होंगे। बिला शुद्धा वे इस से पहले (दुनिया) में अच्छे काम करने वाले थे।’

हजरत अबू सईद खूदरी रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि वेशक जन्नत में एक पेड़ है, जिस के साए में बेहतरीन तेज़ रफ़्तार हल्के-फुल्के घोड़े पर सवार हो कर गुज़रने वाला सौ वर्ष तक चलता रहेगा, तो उसके साए को तै न कर सकेगा।^३

इसके बाद फरमाया, ‘व जालि कज्जिल्लुल मम्दूद,’ यानी सूरः वाकिअः में ‘वजिल्लिम मम्दूद’ (फैला हुआ साया) फरमाया है, वह यही (पेड़ वाला साया है) है।^४

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नत में कोई पेड़ ऐसा नहीं जिस का तना सोने का न हो।^५

हजरत जरीर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु का वयान है कि मैं हजरत सल्मान फारसी रजि० के पास गया। उन्होंने बात जारी रखते हुए एक बहुत छोटा सा लकड़ीका टुकड़ा लिया, जो उनकी उंगलियों के बीच में ठीक तरह दिखायी भी न देता था। उस को हाथ में ले कर फरमाया कि ऐ जरीर! अगर तुम जन्नत में इतनी-सी लकड़ी भी तलाश करोगे तो न पाओगे। मैं ने अर्ज किया कि नखल और शजर कहां जाएंगे (जिन का कुरआन व हदीस में जिक्र है?) फरमाया, नखल व शजर तो

१. बुखारी व मुस्लिम, २. अतर्गाव बत्तर्हीब, ३. तिमिजी शरीफ,

४. खज़ूर का पेड़, ५. पेड़,

वहाँ होंगे, लेकिन लकड़ीके न होंगे, उनके तने मोतियों के और सोने के होंगे और ऊपर खजूरे लगी होंगी ।

सूरः रहमान के तीसरे रुकूअ के पहले आधे में दो वागों का जिक्र है जो खास मुक़र्रिबों के लिए होंगे यानी हर मुक़र्रिब के लिए दो-दो वाग होंगे, फिर दूसरे आधे में दूसरे वागों का जिक्र है जो आम ईमान वालों के लिए होंगे और हर आदमी को दो-दो मिलेंगे, मगर मुक़र्रिबों के वागों से दर्ज में कम होंगे । चूनांचे इशार्द है—

وَلَيْسَ لَكَ مَقَامٌ مِّمَّنْ جَنَّةٍ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ
وَأَنْتَ أَتَانِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ فَيُفِيهِمَا عَيْبَانِ
تَجْرِيَانِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ فَيُفِيهِمَا مِنْ كُلِّ
فَاكِهَةٍ سَرُوجَانِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ مُتَكَبِّرَيْنِ
عَلَىٰ قُورَشٍ ۖ بَطَرَتُهُمَا مِنْ أَسْتَرِي ۖ وَجَنَّا الْجَنَّتَيْنِ دَانِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ
رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ فَيُفِيهِمَا قَصِيرَاتُ الطَّرَبِ ۖ لَمْ يَطْمِئِنَّ رَأْسٌ قَبْلَهُ
وَلَا جَانِبٌ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ كَأَنَّ الْيَابُوتَ وَالْمَرْجَبَاتِ
فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ فَيُفِيهِمَا الْإِحْسَانَ إِلَّا الْإِحْسَانَ ۖ
فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ

व लिमन खाफ़ मक्का म रबिबही जन्नतानि फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि निवा ता अपनानि फ़वि अय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि फ़ी हिमा ऐनानि तज़िरयानि फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि फ़ी हिमा मिन कुल्लि फ़ाकिहतिन जौजानि फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि मुत्तकिई न अला फ़ुरुशिम बताइनुहा मिन इस्त-वरकिन व जनल जन्नतैन दानिन फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि फ़ी हिमन कासिरा तुत्तफ़िलम्यलिमस हुन्न इन्नुन क़दलहुम व ला जाल फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि क अन्न हुन्न ल याकू त बल मर्जानु फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि हल जज़ाउल एह-सानि इल्लल एहसानु फ़विअय्य अलाइ रबिबकुमा तुकज़िजवानि ०

‘और जिस ने अपने रब के सामने खड़े होने से खौफ़ रखा, उस के लिए (यानी हर परहेज़गार के लिए) दो वाग होंगे, सो ऐ इस व ज़िन्न

तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे । वे दोनों वाग ज्यादा शाखों वाले होंगे, सो ऐ इस व ज़िन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे, इन दोनों वागों में दो चरमे होंगे जो बहते चले जाएंगे, सो ऐ ज़िन्न व इस ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे ? इन दोनों वागों में हर मेवे की दो-दो किस्में होंगी, सो ऐ इस व ज़िन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे ? वे लोग तकिया लगाये हुए ऐसे विछौनों पर बैठे होंगे, जिन के अस्तर खूब मोटे रेशम के होंगे और इन दोनों वागों का फल नज़दीक होता, सो ऐ इस व ज़िन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे ? उन में नीची निगाह वालियां होंगी, जिन पर इन लोगों से पहले न किसी इंसान ने तसरफ़ किया होगा, न किसी ज़िन्न ने, सो ऐ इस व ज़िन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे । गोया वे याकूत और मरजान हैं, सो ऐ इस व ज़िन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इकारी हो जाओगे ? भला एहसान का बदला एहसान के सिवा क्या है ? सो ऐ इस व ज़िन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन से नेमतों के इकारी हो जाओगे ।

यह जो फ़रमाया कि इन वागों में हर मेवे की दो किस्में होंगी । इन के मुताल्लिक ‘मआलिमुत्तज़ील’ में कुछ उलेमा का कौल नक़ल किया है कि एक किस्म तर मेवों की (यानी फलों की) और एक किस्म सूखे मेवों की होगी ।

इसके बाद आम मोमिनों के वागों का जिक्र है । चूनांचे इशार्द है—

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّاتٌ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ مُمْدَحَاتَيْنِ
فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ فَيُفِيهِمَا عَيْبَانِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا
تُكْذِبَانِ ۖ فَيُفِيهِمَا فَاكِهَةٍ ۖ وَتُحَلُّ ۖ وَتُحَلُّ ۖ وَتُحَلُّ ۖ وَتُحَلُّ ۖ
فَيُفِيهِمَا حَبِيرَاتُ حَسَانِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ هُوَ وَتُحَلُّ ۖ وَتُحَلُّ ۖ
فِي الْحَبِيرَاتِ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ لَمْ يَطْمِئِنَّ رَأْسٌ قَبْلَهُ ۖ وَلَا
جَانِبٌ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ مُتَكَبِّرَيْنِ ۖ عَلَىٰ قُورَشٍ
خُصْرٍ ۖ وَغَبَرَةٍ ۖ فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكَمَا تُكْذِبَانِ ۖ تَبَرُّكَ

اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ.

व मिन दूनिहिमा जन्नतानि फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुक-
ज़िजवान मुद् हम्मतानि फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़िजवान फ़ोहिमा
ऐनानि नज़ाखतानि फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़िजवान फ़ोहिमा
फ़ाकिहतुं व नल्लुं व रुम्मान फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़िजवान
फ़ोहिन्न खैरातुन हिसान फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़िजवान हूम
मक्सूरानुन फ़िल खियामि फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़िजवान लम
यत्मिस्तुहन्न इन्सुन क़वल्हुम व ला जान्न फ़विअय्यि आलाइ रब्बि मा
तुकज़िजवान मुत्तकिई न अला रपरफ़िन ख़ुज़िब अव्करीयिन हिमान
फ़विअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़िजवान तवारकस्मु रब्बि क जिल
जलालि बल इकरामि०

‘और उन बाग़ों से कम दर्जे के दो बाग़ और होंगे, सो ऐ जिन्न व
इंस ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ?
वे दोनों बाग़ गहरे हरे होंगे। सो ऐ जिन्न व इंस ! तुम अपने रब की
कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? इन दोनों बाग़ों में मेवे
और खजूरें और अनार होंगे। सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की
कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? इन में अच्छे अल्लाक़ वाली
ख़ूबसूरत औरतें होंगी, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन
सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? वे हरे होंगी, जो खेमों में हिफ़ाजत से
होंगी, सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के
इंकारी हो जाओगे ? इन लोगों से पहले इन पर न तो किसी इंसान ने
तसरफ़ किया होगा, न किसी जिन्न ने। सो ऐ इंस व जिन्न ! तुम अपने
रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ? वे लोग बेल-बूटे
वाले अजीब ख़ूबसूरत हरे कपड़ों पर तकिए लगाए होंगे, सो ऐ इंस व
जिन्न ! तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों के इंकारी हो जाओगे ?
बड़ा बरकत वाला नाम है तेरे रब का जो जलाल और इक़्राम वाला है।’

जन्नत के फल और मेवे

जन्नती मजे और स्वाद लेने के लिए फल और मेवे खाएंगे। कुरआन
शरीफ़ में जगह-जगह इसका जिक्र आया है। सूरः स्वाद में इर्शाद है—

مَكْكَيْنِ فِيهَا يَدْعُونَ نَمِطًا يَفْكُكُنْ كَثِيرًا وَشَرَابًا

मुत्तकिई न फ़ोहा यद्भू न फ़ोहा बिफ़ाकिहतिन कसीरतिव्व
साराव०

‘वे उन बाग़ों में तकिए लगाए होंगे (और) वहां बहुत मेवे और
पीने की चीज़ें मंगावेंगे।’

सूरः यासीन में फ़रमाया—

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مِنْهَا يَدْعُونَ.

लहुम फ़ोहा फ़ाकिहतुं व लहुम मा यद्भू न०

‘उनके लिए वहां मेवे हैं और जो कुछ तलब करें, वह सब है।’

यानी हर क्रिस्म के मेवे उनके लिए मौजूद होंगे और लज्जत व
स्वाहिश की चीज़ों में से जो कुछ भी तलब करेंगे सब हाज़िर कर दिया
जाएगा।’

सूरः वाक्किअः में मेवे का जिक्र फ़रमाते हुए इर्शाद है—

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ.

व फ़ाकिहतिन कसीरतिल्ला मक्तूअतिव्व ला ममनूअः०

‘और (अस्हाबुल यमीन) अक्सर मेवों में होंगे, जो न खत्म होंगे, न
उनकी रोक-टोक पोगी।’

सूरः दह में इर्शाद है—

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالٌ وَدُلُوكُ فُجَاهٍ يَوْمَئِذٍ.

व दानियन्न अलैहिम जिलालुहा व जुलिललत कुतूफ़हा तज़लीला०

‘और वहां यह हालत होगी कि उन पर साए झुके होंगे और जन्नत
के फल उनके अस्तिनयार में दे दिए जाएंगे।’

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ‘व जुलिललत कुतू-
फ़हा तज़लीला’ का मतलब बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जन्नती
नोग जन्नत के फल खड़े और बैठे और लेटे खाएंगे।’

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० लिखते हैं कि जब कोई जन्नती फल
लेना चाहेगा तो फल उसके करीब आ जाएगा और टहनी से इस तरह
लटक आयेगा कि गोया वह सुनने वाला फ़रमावरदार है। जन्नती खड़ा
होगा तो फल उसके साथ ऊपर को उठ जाएंगे और अगर बैठे या लेटेगा
तो उसके साथ चने आएंगे।

साहिबे मआलिमुत्तज़ील ‘व जनल जन्नतैनि दान’ की तफ़सीर
में लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने

फरमाया कि जन्नत में फल का पेड़ अल्लाह के दोस्तों (यानी जन्नतियों) के करीब खुद आ जायेगा, चाहेंगे तो खड़े होकर फल तोड़ेंगे चाहेंगे तो बैठे ही बैठे ले लेंगे।

हज़रत क़तादा रज़ि० ने फरमाया कि जन्नतियों के हाथ न तो दूरी की वजह से फलों से महसूस होंगे, न कांटों की वजह से (क्योंकि पेड़ खुद करीब आ जायेंगे) और कांटेदार भी न होंगे 'ला युरदु ऐदीहिम अन्हा बुअ्दुन व ला शौकुन। क़ुरआन शरीफ़ में जन्नती खजूरों, अंगूरों, अनारों, केलों और बेरों का जिक्र तो नाम लेकर आया है, और इनके अलावा बे-इतिहा फलों की किसमें होंगी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फरमाया कि दुनिया का कोई भी मीठा और खट्टा फल ऐसा नहीं जो जन्नत में न हो, यहां तक कि हंजल (यानी इन्दराइन का फल जो सख्त कड़वा होता है) वह भी होगा, मगर वह वहां मीठा होगा।

सूर: मुहम्मद में इशार्द है—

وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ لِمَنْ شَاءَ

व ल हम फ़ीहा मिन कुल्लिस्त म राति व मग़्फ़िर तुम मिर्रिब्बिहिम०

यानी उनके लिए वहां हर किसम के फल होंगे और उनके सब की तरफ़ से बहिश्त होगी।

सूर: बक्रर: में इशार्द फरमाया—

وَنَبِّئُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَنْدَادٌ مِثْلُهَا وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

बवशिरिल्लज़ी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति अन्न लहुम जन्ना-तिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हार कुल्लमा रज़िक्कू मिन्हा मिब सम रतिन रिज़क़न क़ालू हाज़ल्लज़ी रज़िक्कना मिन क़ब्लु व उलू बिही मु तशाबिहा व लहुम फ़ीहा अज़वाजुम मुतसहतु व्व लहुम फ़ीहा ख़ालिदून०

‘और आप खुशख़बरी सुना दें ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए, इस बात की (खुशख़बरी) कि इनके लिए बहिश्त है, जिन के नीचे नहरें चलनी होंगी, जब भी कोई फल इन बहिश्तों में से

उनको खाने को मिलेगा, तो हर बार कहेंगे कि यह (तो) वही है जो इससे पहले हमको मिल चुका है और इनके पास (शबल व सूरत में) मिलते-जुलते फल लाए जाएंगे और इनके लिए वहां पाकीज़ा बीवियां होंगी और वहां वे हमेशा रहेंगे।

साहिबे बयानुल क़ुरआन लिखते हैं कि अक्सर मज़े के लिए ऐसा होगा कि दोनों बार के फलों की शबल एक जैसी होगी, जिस से वे यों समझेंगे कि यह पहली ही किसम का फल है, मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिस से लज़्ज़त, और मस्ती कई गुना होगी।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर रह० ने इसकी तपसीर में हज़रत इब्ने अब्बास और दूसरे सहाबा रज़ि० से यह क़ौल भी नक़ल किया है कि जन्नती हज़रात फल की शबल देख कर कहेंगे कि यह फल तो हमने दुनिया में देखा है, लेकिन जब इसको खाएंगे तो माज़ूम होगा कि सिर्फ़ शबल व सूरत में मिलते-जुलते हैं और मज़ा कुछ और ही है।

मिशक़ात शरीफ़ में ‘सलानुल खुसूफ़ के बाब में’ बुखारी व मुस्लिम के हवाले से नक़ल किया है कि हुज़ुरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सूरज गरहन हो गया। आप ने गरहन की नमाज़ पढ़ायी जो बहुत लंबी नमाज़ थी। जब आपने सलाम फेरा तो सूरज साफ़ हो चुका था। सलाम के बाद फरमाया कि बेशक सूरज और चांद अल्लाह की निशानियों में से हैं। किसी के मरने-जीने की वजह से उनको गरहन नहीं होता है, पस जब तुम चांद-सूरज का गरहन देखो तो अल्लाह का जिक्र करो। सहाबा रज़ि० ने अज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम ने देखा कि (नमाज़ पढ़ाते में) आपने अपनी उसी जगह (खड़े-खड़े) कुछ लेना चाहा। फिर हमने देखा कि आप पीछे हटे (यह क्या बात थी) आंख़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फरमाया कि मैंने (यहीं खड़े-खड़े) जन्नत देखी, इसलिए मैंने उसमें से एक खोशा लेने का इरादा किया और अगर मैं एक खोशा ले लेता तो जब तक दुनिया बाक़ी रहती तुम उस में से खाते रहते। इस हदीस से अन्दाज़ा हो सकता है कि जन्नत के फल कितने बड़े-बड़े हैं।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूल शक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि मेरे सामने जन्नत पेश की गयी तो मैंने तुमको दिखाने के लिए अंगूर का एक खोशा लेना चाहा, पस (खुदा की हिकमत) ऐसी हुई कि मेरे और खोशे के दमियान

आड़ लगा दी गई, इसलिए मैं न ले सका। एक शख्स ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! (जन्नत के) अंगूर के एक दाने का रस कितना होगा? फरमाया कि तेरी मां ने सबसे बड़ा डोल जो (कभी) चमड़ा काट कर बनाया हो (उसको जेहन में ला कर गौर करले) यानी एक दाना से बहुत बड़ा डोल भर सकता है।^१

हजरत अब्दुल्लाह बिन अबिल हुजैल रजि० का बयान है कि हम हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु के साथ मुल्क शाम में या अमान में थे। आपस में जन्नत का जिक्र होने लगा तो हजरत अब्दुल्लाह रजि० ने फरमाया कि बेशक जन्नत के अंगूरों में से एक अंगूर इतना बड़ा है जितनी दूर यहां से सुन्ना (शहर) है।^२

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि जन्नत की खजूरों की लम्बाई बारह हाथ है (और) इनमें गुठली नहीं है।^३

एक बार आहजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में एक सहाबी आये जो देहात के रहने वाले थे। उन्होंने अर्ज किया, ऐ सल्लाह के रसूल ! (कुरआन शरीफ में) अल्लाह तआला ने एक ऐसे पेड़ के बारे में जो तकलीफ देने वाला है, यह खबर दी है कि वह जन्नत में होगा। आहजरत सल्ल० ने फरमाया कि वह कौन सा पेड़ है? उन्होंने अर्ज किया कि बेरी का पेड़ (जिसका सूरः बाक़िशः में जिक्र है) चूंकि बेरी के पेड़ में कांटे होते हैं, इसलिए तकलीफ देता है और फल तोड़ने में मुसीबत होती है! यह सुनकर सय्यदुल मुसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, क्या अल्लाह तआला ने 'फ्री सिद्दरिम मलूद' (बगैर कांटों की बेरियां) नहीं फरमाया? बिला शुब्हा इन बेरियों से ऐसे फल निकलते हैं जिनके फट जाने से बहत्तर रंग के खाने निकल पड़ते हैं, एक रंग दूसरे से मिलता नहीं।^४

मुफस्सिर इब्ने कसीर सूरः राद की आयत 'उकुलुहा दाइमु'ब जिल्लुहा' की तफसीर में लिखते हैं 'ऐ फ्रीहल फ़वाकिह वल मुतामिमु वल मशरिबु ला इन्किता अ वला फ़ना अ०' यानी जन्नत में मेवे और खाने-पीने की चीजें हमेशा रहेंगी, न खत्म होंगी, न फ़ना होंगी। फिर एक रिवायत तबरानी के हवाले से नक़ल की है कि जब कोई जन्नती जन्नत से फल लेगा तो उसकी जगह दूसरा फल लग जाएगा।

१. २. ३. तर्माब,

४. इब्ने अबिदुन्या,

जन्नत में खेती

हजरत अबूहुरैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में गांव के रहने वाले एक सहाबी बैठे हुए थे और आप यह बात बयान फरमा रहे थे कि जन्नतियों में से एक शख्स अपने परवरदिगार से खेती करने की इजाजत तलब करेगा। अल्लाह तआला फरमायेंगे कि क्या तू उन (भरपूर) नेमतों में नहीं है जो ख्वाहिश के मुताबिक तुझे मिली हुई हैं? वह अर्ज करेगा कि हां (है तो सब कुछ) मगर मेरा दिल चाहता है (चूनांचे उसको इजाजत दे दी जाएगी) वह जमीन में बीज डालेगा तो पलक भरफ़ने के पहले ही सब्जा उग जाएगा और बढ़ जाएगा और खेत तैयार हो जाएगा और कट भी जाएगा और पहाड़ों के बराबर अंबार लग जाएंगे। अल्लाह तआला फरमायेंगे कि ऐ आदम के बेटे! यह ले ले। तेरे लोभ का पेट कोई चीज नहीं भरती। हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद सुनकर गांव वाले सहाबी रजि० ने अर्ज किया कि खुदा की क़सम वह शख्स कुरैशी या अंसारी होगा, इसलिए कि यही लोग खेती-पेशा हैं। हमारा पेशा तो खेती नहीं है। भला हम क्यों ऐसी दख्वास्त करने लगे? यह बात सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हंसी आ गयी।^१

जन्नत की लहरें

सूरः मुहम्मद में अल्लाह तआला का इर्शाद है—

مَنْ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ
وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ
لِلشَّيْبَانِ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ

मसलुल जन्नतिल्लती वुअिदल मुत्तकू न० फ्रीहा अन्हारुम मिम माइन गौर आसिन व अन्हारुम मिल्ल व निल्लम य त शय्यर तअमूह व

१. बुखारी शरीफ,

अन्हारुम मिन खनरिल्लज्जतिल लिशारिवोन व अन्हारुम मिन अ स लिम मुसफ्फा व लहुम फ्रीहा मिन कुल्लिस्स म राति व मसिफ़ र तुम मिरंजिबहिम०

‘जिस जन्नत का मुत्तकियों से वायदा किया जाता है, उसकी हालत यह है कि उसमें बहुत नहरें ऐसे पानी की हैं जिन में ज़रा भी तबदीली न होगी और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिसका स्वाद ज़रा न बदला होगा और बहुत सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों के लिए बहुत लजीज होंगी और बहुत सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ होगा और उनके लिए हर किसम के फल होंगे और उनके रस की तरफ़ से बख़्शिश होगी।

हज़रत उबाद: बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अवरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं। हर दो दर्जों के दमियान इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दमियान है और फ़िर्दौस सबसे ऊपर है, उसी से जन्नत की चारों नहरें निकली हैं और उसके ऊपर अल्लाह का शर्श होगा, इसलिए जब तुम अल्लाह से (जन्नत का) सबाल करो तो जन्नतुलफ़िर्दौस मांगो।’

इस हदीस से मालूम हुआ कि चार नहरें जन्नतुलफ़िर्दौस से निकली हैं। फिर हर नहर से बहुत सी नहरें निकलती चली गई हैं जिनका मूर मुहम्मद की आयत में जिक्र हुआ। इन चार बड़ी नहरों को एक हदीस में चार नदी बताया गया है। चूनांचे मिशकात शरीफ़ में तिमिज़ी के हवाले से हुज़ूर अब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इशार्द नक़ल किया है कि बेशक जन्नत में पानी का दरिया है और शहद का दरिया है और दूध का दरिया है और शराब का दरिया है, फिर उनसे और नहरें फूटी हैं।

कुरआन मजीद में जगह-जगह जन्नत और जन्नत वालों के जिक्र में ‘तजरी मिन तह्तिहल अन्हारु’ और ‘तजरी मिन तह्ति हिमुल अन्हारु’ फ़रमाया है, जिससे साफ़ जाहिर है कि जन्नत में बहुत ज़्यादा नहरें होंगी जो जन्नत वालों के बाग़ों और कोठों में वह रही होंगी।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों के नीचे से निकलती हैं। यानी नहरों का मक़ज और निकलने की जगह मुश्क के पहाड़ों की जड़ है।

हज़रत सिमाक रज़ि० (अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के शगिर्द) फ़रमाते हैं कि मैंने मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु से मुलाक़ात की और अज़ किया कि जन्नत की ज़मीन कैसी है ? उन्होंने फ़रमाया कि चांदी की ज़मीन है जो खूब सफ़ेद है, गोया कि आईना है। मैंने सवाल किया कि उसकी रोशनी कैसी है ? फ़रमाया, क्या तुने वह वक़्त नहीं देखा, जिस वक़्त सूरज निकलने (के करीब) होता है (उस वक़्त जो दमियानी रोशनी होती है) वस वही रोशनी जन्नत में है, लेकिन उस रोशनी में न धूप का असर है, न ठंडक है। मैंने अज़ किया, उसकी नहरों का क्या हाल है ? क्या वह गढ़ों के अंदर चलती हैं ? फ़रमाया नहीं, (गढ़ों में नहीं चलती हैं) बल्कि वे (हमवार) ज़मीन पर चलती हैं और बिना निचान के अपनी जगह पर इस तरह जारी हैं कि (अपनी हद से) इधर उधर नहीं फैलती हैं। अल्लाह तआला ने इन नहरों से फ़रमाया कि (तैयार) हो जाओ। पस जारी हो गयी। मैंने पूछा कि जन्नत में कपड़ों के जोड़े कैसे हैं ? फ़रमाया, जन्नत में एक पेड़ है, जिसमें अनार की तरह के फल हैं। जब अल्लाह तआला का दोस्त (यानी जन्नती) उसमें से लिबास लेने का इरादा करेगा तो उसमें से टहनी उसके पास आकर फट जाएगी, जिसमें से रंग-बिरंग के सत्तर जोड़े निकल आएंगे। फिर वह टहनी जुड़ जाएगी और अपनी जगह लौट जाएगी।

नहरे कौसर

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अवरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि (मेराज की रात को) मैं जन्नत में गुज़र रहा था, एक ऐसी नहर सामने आयी जिसके दोनों किनारों पर मोतियों के कुब्बे थे। फ़रिश्ता (जो मेरे साथ था), उससे मैंने पूछा, यह क्या है ? उसने जवाब दिया कि यह कौसर है, जो अल्लाह ने आप को इनायत फ़रमायी है। इसके बाद फ़रिश्ते ने उस की मिट्टी में अपना हाथ मार कर मुश्क नि...ला, फिर मेरे सामने ‘सिद्-रतुल मुतहा’ बुलंद किया गया। पस मैंने उसके पास बहुत बड़ा नूर

१. तर्गोब

२. ‘सिद्-र’ कहते हैं बेरी के पेड़ को और ‘मुतहा’ के मानी हैं इन्तिहा की जगह। हदीस में आया है कि यह एक पेड़ है बेरी का सातवें आसमान में, उपरी दुनिया से जो (हुक्म व रोज़ियां वगैरह) आती है, वे पहले सिद्रतुल मुतहा तक पहुंचते हैं, फिर वहां से फ़रिश्ते ज़मीन पर लाते हैं, इसी तरह जो आमा

देखा।' हजरत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह भी रिवायत है कि हुजूर अवदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि कौसर क्या है ? आप ने फरमाया कि वह एक नहर है जो अल्लाह तआला ने मुझे इनायत फरमायी है—दूध से ज्यादा सफ़ेद और शहद से ज्यादा मीठी है।'

जन्नत के चश्मे

सूर: मुर्सलात में इशदि है—

إِنَّ التَّقِيْنَ فِي ظِلَالٍ وَعِيُونٌ وَكُؤَاكِبٌ مِّمَّا يَشْتَبُونَ ۝

— इन्नाल मुत्तकी न फ़ी ज़िलालिब्व उयूनिब्व फ़वाकिह मिम्मा यशतहून०

यहां से चढ़ते हैं, वे भी सिद्रतुल मुंतहा तक पहुंचने हैं, फिर वहां से उठाये जाते हैं।' (बयानुल कुरआन)

हदीसे मेराज में है कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं सिद्रतुल मुंतहा की तरफ़ उठाया गया तो देखता हूं कि उसके फल (यानी बेर) हिज्र के मटकों के बराबर हैं और उसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर हैं (मिशकात पृ० ५२७) साथ ही आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सिद्रतुल मुंतहा की शाख के साए में सौ वर्ष सवार चल सकता है या यों फरमाया कि उसके साए में सौ सवार साया ले सकते हैं। (तिमिजी शरीफ़ बाब 'मा जा अ फ़ी सिफ़रति मिमारि जन्नति')।

१. तिमिजी, २. तिमिजी,

फायदा—नहरे कौसर अल्लाह पाक की खास देन है जो जन्नत में है और सिफ़ अखिरी नबी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मिला है और किसी नबी को नहरे कौसर नहीं मिली। हां, तिमिजी शरीफ़ की कुछ रिवायतों में है कि क्रियामत के मैदान में हर नबी के लिए होज होगा, जिससे अपनी-अपनी उम्मत को पिलाएंगे। उलेमान-किराम ने लिखा है कि क्रियामत के मैदान में होज का होना आंहजरत सल्ल० के लिए कोई नयी बात नहीं है, क्योंकि हर नबी के लिए होज होने की रिवायत मौजूद है, हां, जन्नत में नहरे कौसर सिफ़ हुजूर सल्ल० ही के लिए खास है। साथ ही यह भी लिखा कि आंहजरत सल्लम के होज के लिए जो कौसर कहा गया है, वह इसलिए है कि जन्नत की नहर कौसर से उसमें पानी आएगा।

बेशक मुत्तकी लोग सायों में और चश्मों में और ख्वाहिश के मुताबिक़ मेवों में होंगे।

सूर: शाशिय: में फरमाया—

وَبُؤُةٌ يُّؤَمِّنُونَ تَأْمِنُهُ سَاعِيَةٌ رَّحِيمَةٌ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ لَا تَسْخَعُ فِيهَا لَاحُظَةٌ وَفِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝

वजूहुंय्यो म इजिन नाश्मिनुल्लि सअयिहा राज़ियतुन फ़ी जन्नतिन मलियतिल्ला तस्मअ फ़ीहा लाशिय: फ़ीहा अंनुन जारिय:०

'बहुत से चेहरे उस दिन रौनक वाले होंगे, अपने आमाल की वजह से खुश होंगे, ऊंची जन्नत में होंगे, जिसमें कोई बकवास न सुनें, उसमें बहते हुए चश्मे होंगे।'

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर 'अंनुन जारिय:' की तपसीर करते हुए लिखते हैं, 'इन्नामा हाज़ा जिनुन, यानी फ़ीहा अयूनिन जारियात।' मतलब यह हुआ कि जन्नत में बहुत ज्यादा चश्मे जारी हैं। अंन वाहिद (एक वचन) जो आया है, इससे जिस मुराद है, जो कम व ज्यादा सब के लिए बोला जाता है। जन्नत के चश्मों का जिक्र जन्नत के बाग़ों के तपिकरे में गुज़र चुका है और अभी 'पीने की चीज़ों के बयान' में भी आता है।

फायदा—सूर: शाशिय: की आयत में फरमाया है कि जन्नत में कोई बकवास न सुनें। यह मज़मून दूसरी आयतों में भी आया है। सूर: नबा में है—'ला यस्मअ न फ़ीहा लखव्व ला तासीमा' (कि वहां न कोई बेहूदा बात सुनें, न झूठ) और सूर: वाकिअ: में इशदि है, 'ला यस्मअ न फ़ीहा लखव्व ला तासीमा०' (यानी वे हज़रात न वहां बक-बक सुनें, न कोई बेहूदा बात)। हासिल सब का यह है कि जन्नतियों का दिल व दिमाग़ और जिस्म के तमाम हिस्से हर तरह के अमन में होंगे। ना-गवारी लाने वाली कोई भी चीज़ न नज़रों के सामने आएगी, न कानों में पड़ेगी, न वहां बक-बक, भक-भक का कुछ काम होगा, न लड़ाई-भगड़े का मौक़ा आएगा, आपस में न तू-तू, मैं-मैं होगी, न कोई किसी पर जुम्ले कसेगा, न ताने करेगा।

जन्नत में पीने की चीज़ें

सूर: दह्ल में फरमाया है—

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۖ وَعَيْنٌ

يَسْرَبُ بِعَارِبٍ إِلَى اللَّهِ يَفْرُوجُهُمَا تَجْرِيًا

इन्नल अररा र यशरबु न मिन कासिन का न मिजाजुहा काफूरा
अनय्यशरबु बिहा अिवादुल्लाहि युफज्जिरु न हा तपजीरा०

‘वेशक नेक लोग ऐसे जाम से (शराबें) पिएंगे, जिस में काफूर की मिलावट होगी, ऐसे चश्मे से, जिस से खुदा के (खास) करीबी बन्दे पिएंगे और जिस को वे (खुदा के खास बन्दे जहां चाहेंगे) बहा कर ले जाएंगे।’

तपसीरे दूरें मंसूर में इन्ने शौजब से रिवायत है कि जन्नतियों के हाथ में सोने की छड़ियां होंगी और इन छड़ियों से जिस तरफ इशारा करेंगे, नहरें उसी तरफ को चलेंगी।

तपसीर मग़ालिमुत्तज्जील में ‘युफज्जिरु नहा तपजीरा०’ की तपसीर करते हुए लिखा है ‘अय यकूदू न हा हैसु शाऊ मिम् मनाजिलिहिम व कुसूरिहिम’ यानी जन्नती हजरात अपनी मंजिलों और मुहल्लों में जहां चाहेंगे, ले जाएंगे।

यह जो फरमाया है शराब के जाम में काफूर की मिलावट होगी, उस से दुनिया की काफूर न समझ लिया जाए, वह जन्नती काफूर होगा, जो दिल व दिमाग को तपरीह करने और कूबत पहुंचाने के लिए और शराब में एक तरह की खास हालत और लज्जत लाने के लिए मिलाया जाएगा। फिर कुछ आयतों के बाद इशार्द है—

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَتْ مِنْ أَرْجَائِهِمْ عَيْنًا

فِيهَا تَسْمَى سَلْسَبِيلًا

व युस्कौ न फ्रीहा कासन का न मिजाजुहा जन्जबीला अनन फ्रीहा तुसम्मा सल्सबीला०

‘और वहां उन को ऐसा जाम पिलाया जाएगा, जिसमें सोंठ की मिलावट होगी यानी ऐसे चश्मे से उन को पिलाया जाएगा, जिसका नाम ‘सलसबील’ है।

इस आयत से मालूम हुआ कि जन्नतियों की शराब में सोंठ की भी मिलावट होगी, लेकिन इस से दुनिया की सोंठ न समझ ली जाए, यह वहां की सोंठ होगी जो शराब के मजे को दोगुना कर देगी और इससे शौक व खुशी की हालत पैदा होगी। यहां एक चश्मे का नाम ‘सल्सबील’

फरमाया है। कतादा रह० का कौल है कि उस को सल्सबील कहने की वजह यह है कि जन्नतियों की मर्जों के मुताबिक जिधर को वे चाहेंगे, जारी होगा। हजरात मुजाहिद रह० ने फरमाया कि खूब तेजी के साथ बहने की वजह से उस का नाम यह तज्वीज हुआ। जुज्जाज का कौल है कि उस को सलसबील इस लिए कहा जाएगा कि उस की शराब निहायत ही आसानी और रवानी से सलामती के साथ हलक में उतर जाएगी। (मग़ालिमुत्तज्जील) मुफस्सिर इन्ने कसीर ‘तुसम्मा सलसबीला’ की तपसीर करते हुए लिखते हैं कि ‘अय अज्जजबीलु ऐनुन फिल जन्नति तुसम्मा सल्सबीला’ यानी जज्जबील जन्नत में एक चश्मा है, जिसे सल्सबील कहा जाता है।

सूर: तत्फोफ में इशार्द है—

إِنَّ الْبَرَّاءَ لَفِي نَعِيمٍ عَلَى الْأَسْرَائِلِ يَنْظُرُونَ وَتَعْرِتْ
بِي وَجْهِهِمْ تَفَرُّقَ التَّعْلِيمِ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ
خِتَامُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ
مِرَاجَةً مِنْ تَسْنِيمٍ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ

इन्नल अररा र ल फ्री नअमीमिन अलल अराइकि यन्जुरू न तअ-
रिफुकी वज्जिहिम नजरतन्नअीम युस्कौ न मिरही किम मखूम खितामुह
मिस्क व फ्री जालि क फलू य त नाफ सिल मु त नाफिसू न व मिजाजुह
मिन तस्नीम अनय्यशरबु बिहल मुकर्रवून०

‘दिला शुद्धा नेक लोग नेमतों में होंगे, मसहरियों पर देखते होंगे।
ऐ मुखातब ! तू उन के चेहरों में नेमतों की वशाशत (खुशी) पहचानेगा।
उन को पीने के लिए खालिस शराब सर ब-गुहर मिलेगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी, और लालच करने वाले को ऐसी चीज का लालच करना चाहिए और इस शराब की मिलावट तस्नीम से होगी यानी ऐसे चश्मे से जिस से मुकर्रब बन्दे पिएंगे।’

‘रहीकिम मखूम’ यानी खालिस शराब में तस्नीम की मिलावट होगी। तस्नीम जन्नतियों की सब से ज्यादा बेहतर और उम्दा शराब होगी। उस का चश्मा बहता होगा, उस चश्मे से मुकर्रबीन पिएंगे और ‘अस्हादुल यमीन’ की शराब में उस चश्मे से मिलावट की जाएगी।’

जन्नत के परिंदे

जन्नतियों के खाने के लिए परिंदों का गोشت भी मिलेगा, जैसा कि सूर: बाकिअ: में 'व लहिम तैरिमिम्मा यश्तहून०' फरमाया है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में लंबी-लंबी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर परिन्दे हैं जो जन्नत के पेड़ों में चलते-फिरते हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! वह तो बड़ी ही अच्छी ज़िन्दगी में हैं। आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व अल्लिही व सल्लम ने फरमाया कि उन के खाने वाले उन से ज्यादा बेहतरीन ज़िन्दगी में होंगे। तीन बार यों ही फरमाया (फिर अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु को बशारत देते हुए इर्शाद हुआ कि) मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम उन लोगों में से होगे जो इन परिन्दों को खाएंगे।^१

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि (जब) किसी जन्नती को परिन्द (खाने की) भूख होगी, तो (खुद-ब-खुद) परिंद आ कर उस के सामने गिर जाएगा जो पका हुआ होगा और उस के टुकड़े बने हुए होंगे। एक हदीस में है कि परिंद जन्नती के दस्तरख्वान पर खुद-ब-खुद गिर पड़ेगा, जो वगैर आग और धुएँ के (भुना और पका हुआ) होगा, जन्नती उस में से इतना खाएगा कि उस का पेट भर जाएगा। बाद में वह परिंद उड़ जाएगा।^२

**जन्नती पूरी इज़्ज़त के साथ खाएं-पियेंगे,
खाने-पीने में भरपूर लज़्ज़त महसूस
करेंगे और उनके खाने-पीने का
पेशाब-पाखाना न बनेगा**

सूर: साफ़ात में फरमाया—

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۖ كَوَالِهٖ ۚ وَهُمْ فِيهَا مُنُونَ ۚ فِي جَنَّاتِ الْاَعْلٰی
عَلٰی سُرُرٍ مَّتَابِلِیْنَ ۝

उलाइ क लहुम रिज़्कुम मअलूमून फ वाकिहु व हुम मुबिरमून

फ्री जन्नातिन्न श्रीम अला सुरुरिम मु त काबिलीन०
'उन के लिए रोज़ी मालूम है यानी मेवे और वे बड़ी इज़्ज़त से आराम के बागों में आमने-सामने तख्तों पर होंगे।'
सूर: तूर में फरमाया—

إِنَّ الْمَتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعِلْمٍ ۖ فَاصْبِرْ لَهُمْ رِزْقَهُمْ
وَرَوْحَهُمْ بِبَعْدِ عَذَابٍ مُّجِيمٍ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا وَاعْبُدُوا ۚ إِنَّا كُنَّا
نَعْبُدُونَ ۝

इन्नल मुत्तकी न फ्री जन्नातिन्न व न श्रीम फाकिही न बिमा आता-
हुम रब्बुहुम व वकाहुम रब्बुहुम अज़ाबल जहीम० कुलू वशरबू हनीअम
बिमा कुन्तुम तअमलून०

'बिला शुब्हा मुत्तकी लोग बागों में और ऐश के सामानों में होंगे। उन का परवरदिगार जो कुछ उन को इनायत फरमाएगा, इस से खुश होंगे और उन का रब उन को दोख के अज़ाब से बचाए रखेगा। (उन से कह दिया जाएगा) कि मजे के साथ खाओ-पियो, उन (नेक) आमाल के बदले जो तुम दुनिया में करते थे।'

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि बिला शुब्हा जन्नती जन्नत में खाएंगे, पियेंगे, और न थूकेंगे, न पेशाब-पाखाना करेंगे, न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी। सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, खाने का क्या होगा ? (यानी जब पेशाब-पाखाना न होगा तो हज़म होकर फुजला (गंदा हिस्सा) कैसे निकलेगा ?) आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि डकार आएगी और मुश्क की तरह (खुशबूदार) पसीना आएगा। (इस डकार और पसीना से पेट खाली हो जाएगा), अल्लाह की तस्बीह और तारीफ़ इस तरह बे-अस्तियार जारी होगी, जैसे तुम को बे-अस्तियार सांस आता है।^१

कुछ रिवायतों में तस्बीह के साथ तक्वीर का भी जिक्र है।^२

यानी जिस तरह दुनिया में सांस लेने के लिए तुम को न कोई तक्वीर होती है, न सांस लेने का इरादा करना पड़ता है और न दूसरे कामों में लगा रहना सांस लेने से रोकता है, इसी तरह जन्नती लोग अल्लाह की तस्बीह और तहमीद में हर वक़्त लगे होंगे। नेमतों और लज़्ज़तों में लगा रहना उन को अल्लाह की तस्बीह व तहमीद से शायिल

न करेगी, बे-अख्तियार तस्बीह और तहमीद जारी होगी और तस्बीह व तहमीद से न थकेंगे, न मन को बोझ होगा।

साँचे फलूल बारी लिखते हैं कि जन्नतियों की जिदगी का जरिया अल्लाह की तस्बीह को बना दिया गया है। जिस तरह दुनिया में साँस लेकर जीते हैं, इसी तरह वहाँ खुदा की तस्बीह से जिदा रहेंगे और वजह इस की यह है कि जन्नती लोगों के दिल अल्लाह तआला की मारफ़त से रोशन होंगे और उस की मुहब्बत से भरपूर होंगे। यह मुहब्बत महबूब की याद का ऐसा नशा पिलाएंगी कि बे-अख्तियार जिक्र में लगे रहेंगे।

फायदा—बुखारी शरीफ की एक रिवायत में है (जो पहले गुजर चुकी है) कि 'युसब्बिहूनल्लाह बुकरतव्व अशिया' यानी जन्नती सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करेंगे और यहाँ फरमाया कि साँस जी तरह-हर वक़्त तस्बीह जारी होगी। इसके बारे में हदीस के कुछ शरह लिखने वालों से यह नक़ल किया गया है कि सुबह-शाम के जिक्र करने से हर वक़्त जिक्र करना ही मुराद है। इसलिए दोनों का मतलब यही हुआ, लेकिन हदीस के बयान का ढंग बताता है कि अपने अख्तियार से तो सुबह-शाम तस्बीह में लगे होंगे और बे-अख्तियार तस्बीह हर वक़्त जारी रहेगी और इस की ताईद व तस्दीक इस से होती है कि जहाँ सुबह व शाम का जिक्र है, वहाँ फ़ले (क्रिया) 'युसब्बिहून' इस्तेमाल फरमाया है, जिस का फ़ायज़ (कर्ता) जन्नती है और जहाँ बे-अख्तियार साँस की तरह तस्बीह का जिक्र है, वहाँ 'युल् हम्न' फ़ले मज़हूल (कर्मवाच्य) जिक्र किया गया है।

यों समझिए कि गो बे-अख्तियार भी तस्बीह जारी होगी, लेकिन खुद अपने अख्तियार से भी सुबह-शाम में लगे होंगे, ताकि अपनी तबियत से अपनाई गई तस्बीह की लज़ज़त से महरूम न रहें और अगरचे वहाँ इबादत और जिक्र व फ़रमांवरदारी के जिम्मेदार न होंगे, मगर उन की शराफ़त और सम्मदत (सौभाग्य) यह ग़बारा न होने देगी कि अपने महबूब और इनाम देने वाले और एहसान करने वाले की याद के लिए वा-फ़ायदा, जान-बूझ कर वक़्त न निकालें।

जन्नतियों के बर्तन

सूर: जुहुरफ़ में फरमाया—

لَيُطَافُ عَلَيْكُمْ بِمِصْبَاحٍ مِنْ نَارٍ وَالْأُكُوفُ لَكُمْ مَا تَشْتَهُونَ

الْأَنْفُسُ وَكَذَلِكَ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

युताफ़ु अन्नैहिम विसिहाफ़िम मिन ज ह बिब्व अबवाबिन व फ़ीहा मा तश्तहीहिल अन्फ़ुमु व तलज़ज़ुल अन्नयुनु व अन्तुम फ़ीहा ख़ालिदून०

'उन के पास सोने के प्याले और गिलास लाए जाएंगे (जिन में खाने-पीने की चीज़ें होंगी और वहाँ वे चीज़ें होंगी दिलों को जिन की स्वाहिश हो और जिन से आँखों को लज़ज़त हो और (उन से कह दिया जाएगा) कि तुम यहाँ हमेशा रहोगे।'

सूर: दह में फरमाया—

وَيُطَافُ عَلَيْكُمْ بِأَنْبِيَاءٍ مِنْ نَصَةِ وَأَكُوفٍ كَانَتْ

قُورًا بِرَأْسِ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ نَصَةِ تَذَرُوهَا تَقْدِيرًا

व युताफ़ु अन्नैहिम बिअन्नानियतिम मिन फ़िज़ज़तिव्व अबवाबिन कानत क़वारीरा क़वारीर मिन फ़िज़ज़तिन क़दरूहा तज़दीरा०

'और उन के पास (खाने-पीने की चीज़ें पहचाने के लिए) चांदी के बर्तन लाए जाएंगे और आबख़ोरे (भी लाए जाएंगे) जो शीशे के होंगे (और) वे शीशे-चांदी के होंगे, जिन को भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा।'

यानी इन आबख़ोरों में इस ढंग से पीने की चीज़ें भर कर पेश की जाएंगी कि उस वक़्त की स्वाहिश के बिल्कुल मुताबिक़ होंगी, न कुछ बचेगा, न कमी पड़ेगी।

ऊपर की आयत से मालूम हुआ कि जन्नतियों के बर्तन सोने और चांदी के होंगे।

फायदा—सूर: जुहुरफ़ की आयत से मालूम हुआ कि जन्नत में जो भी कुछ होगा, उस का अंदर-बाहर नफ़ीस और हसीन होना। दिलों को खुशगवार और आँखों के लिए मज़ेदार होगा, कोई भी ऐसी चीज़ न होगी, जिस की शक्ल आँखों को भली न लगे।

जन्नत की शराब से नशा

न होगा और न सर-दर्द होगा

जन्नती हज़रात लज़ज़त के लिए शराब पिएंगे, लेकिन यह शराब वहाँ की शराब होगी, जो साफ़ सुथरी होगी और जिस से न अक्लों में

खराबी आएगी, न नशा होगा, न पेट में दर्द होगा, न गाली-गुफ्तार की नीबत आएगी। सूर: साफ़क़ात में इशार्द है—

يُطَاتُّ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ يَتَضَاءُ كَذَّةً لَشَارِبِينَ
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ۝

युताफु अलैहिम बिकासिम मिम मअरीन वैज़ा अ लज़ज़तिल्लिश्शा रिबीन ला फ़ीहा ग़ौलुन व ला हुम अन्हा युन्ज़फ़ून०

‘उन के पास शराब का ऐसा जाम लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा हुआ होगा। वह शराब सफ़ेद होगी, पीने वालों के लिए लज़ज़तदार होगी, न उसमें सरदर्द होगा और न उस से अक्ल में खराबी आएगी।’

सूर: तूर में ‘ला लरबुन फ़ीहा व ला तासीम’ फ़रमाया है, यानी इस शराब की वजह से न बक-बक करने और बेकार की बकवास करने की नीबत आएगी, और न गुनाह के काम होंगे।

सूर: दह में फ़रमाया—

وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُرًا ۝

व सक़ाहुम रब्बहुम शराबन तहूरा०

‘और उन का रब खूब पाकीज़ा शराब पिलायेगा।’

साहिबे मआलिमुत्तज़ील ‘तहूरा’ की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि—

طاهر من الاذرة والاقذار ولم يذسه الايدى والارجل كخمر الدنيا

ताहिरुम मिनल अज़ज़ारि वल् अज़ज़अिलम तदनसहुल्गेदी वल अर्ज़ुल क खिअद्दुन्या०

यानी ‘वह शराब धिनीने और नापाक हिस्सों से पाक होगी और दुनिया की शराब जो हाथ वगैरह पड़ने से मैली हो जाती है, इस मनेपन से वह शराब महफूज़ होगी।’

फिर अबूकुलाबा और इब्राहीम का क़ौल नक़ल करते हैं कि जन्नत की शराब को ‘तहूर’ इस लिए फ़रमाया कि उसका पेशाव न बनेगा, बल्कि मुश्क की तरह खुशबूदार पसीना बन जाएगी और इस की शक्ल यह होगी कि जन्नतियों के पास खाना लाया जाएगा, उसे खा कर फ़ारिग हो जाने के बाद शराब तहूर लायी जाएगी, उस को पी कर उन के पेट पाक व साफ़ हो जाएंगे और उस वक़्त का खाना हुआ खाना उन की खानों से पसीना

बन कर निकल जायगा जो तेज़ खुशबूदार मुश्क से ज्यादा उम्दा होगा, जिस से उन के पेट खाली हो जाएंगे और स्वादिष्ट फिर वापस आ जाएगी। मुक्कातिल कहते हैं कि शराब तहूर जन्नत के दरवाज़ों के बाहर पानी का एक चश्मा है, जो शस्स इस में से पीएगा अल्लाह जल्ल शानुह उसके दिल को कीना, कपट, खोट, गंदगी और जलन से पाक व साफ़ फ़रमा देंगे।

जन्नतियों की सवारियां

हज़रत बुर्रदा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक शस्स ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? आप ने फ़रमाया, अगर अल्लाह तआला ने तुम्ह को जन्नत में दाखिल फ़रमा दिया और तू ने वहां सुख याक़ूत के घोड़े पर सवार होने की स्वादिष्ट की तो ऐसा ही कर दिया जाएगा, वह घोड़ा तुझे ले कर जन्नत में उड़ेगा, जहां तू जाना चाहेगा, ले जाएगा, फिर एक शस्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल ! जन्नत में ऊंट भी होंगे ? आप ने उस शस्स को वह जवाब नहीं दिया जो पहले सवाल करने वाले को दिया था, बल्कि यह फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला ने तुम्ह को जन्नत में दाखिल फ़रमा दिया तो तुम्ह को हर वह चीज़ मिलेगी जिस को तेरा दिल चाहेगा और जिस से तेरी आंखों को लज़ज़त हासिल होगी।

देहात के रहने वाले एक सहाबी रज़ि० ने हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं घोड़ों को बहुत पसंद करता हूं, क्या जन्नत में घोड़े होंगे ? आप ने फ़रमाया अगर तुम्ह को जन्नत में दाखिल किया गया तो तुम्ह को याक़ूत का घोड़ा दिया जाएगा जिस के दो बाजू होंगे, फिर तुम्ह को उस पर सवार किया जाएगा और जहां तू जाना चाहेगा, यह घोड़ा तुम्ह को उड़ा कर ले जाएगा।

जन्नतियों की आपस में मुहब्बत

सूर: हिज्ज में फ़रमाया—

१. तिमिज़ी शरीफ़, २. तिमिज़ी, अबूअय्यूब की रिवायत,

وَلَكُمْ فِيهَا مَائِدٌ وَفِيهَا زُفُفٌ فِي الْأَشْجَارِ وَأَنْتُمْ فِيهَا يُخَافُونَ يَوْمًا لَا تَصِلُ إِلَيْهِ إِلَّا فِي سَحَابٍ مُمَطِّلٍ ۝

व नज्जना मा फ्री सुदूरहिम मिन गिल्लिन इस्वानन अला सुरिम मु त क़ाविलीन०

‘और उन के दिलों में जो दुनिया का कपट था, हम उस को निकाल देंगे, सब भाइयों की तरह रहेंगे, तस्ती पर आमने-सामने बैठा करेंगे।’

यानी दुनिया में अगर किसी वजह से आपस में कपट था, तो जन्नत में दाखिल से पहले ही निकाल कर अलग कर दिया जाएगा ताकि जन्नत जैसी पाक जगह कपट और जलन से पाक व साफ रहे। बुखारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि—

قُلُوبُهُمْ عَلَى قُلُوبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ لَا يَخْلُفُونَ بَيْنَهُمْ وَلَا يَبَاغِضُونَ

कुलूबहुम अला क़ल्वि रजूलिन वाहिदिन ला इख़िलाफ़ वैन हुम व ला तबाग़ुज़०

‘यानी जन्नतियों के दिल एक हीशख्स के दिल की तरह होंगे, आपस में न कोई इख़िलाफ़ होगा और न कपट होगा।’

दिल अलग-अलग होंगे, मगर दिल की हालत एक ही जैसी होगी यानी सब एक दूसरे को चाहते होंगे और आपस में बे-मिसाल एका व मुहब्बत होगी। हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआला सीनों का कपट न निकाल देगा, कोई मोमिन जन्नत में दाखिल न होगा, जिस तरह हमलावर दरिदे को हटा कर दूर कर दिया जाता है, इसी तरह अल्लाह तआला मोमिनों के दिलों से कपट को निकाल देंगे।’

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन बदे (पुलसिरात से पार हो कर) दोज़ख से निजात पा जाएंगे, तो जन्नत-दोज़ख के दमियान एक पुल पर उन को रोक दिया जाएगा और आपस में जो एक दूसरे पर दुनिया में जुल्म किए थे, उन का किसास (बदला) दिला दिया जाएगा, यहां तक कि जब जुल्म व ज्यादती से (विल्कुल) पाक व साफ़ हो जाएंगे तो उन को जन्नत में दाखिल होने की इजाज़त दे दी जाएगी, सो क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्जे में मुहम्मद की जान है इन में से हर आदमी जन्नत वाली जगह को उस से ज्यादा जानेगा,

जितना कि अपने दुनिया के घर के रास्ते को जानता था।’

जबकि जन्नत में दाखिल होने से पहले ही आपस में हक़ों और जुल्म व ज्यादतियों का फ़ैसला हो जाएगा और दिलों में जो खोट और कपट था, वह बाहर निकाल दिया जाएगा, तो दुश्मनी की कोई वजह बाकी न रहेगी और जबकि मामूली जन्नती भी इस स्थान में होगा कि मुझे वह कुछ मिला है, जो किसी को भी न मिला, तो जलन की कोई वजह न होगी।’

जन्नतियों की दिल्लगी

सूर: तूर में फ़रमाया—

يَبْتَاعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّكْوٍ فِيهَا وَلَا تَأْتِيهِمْ ۝

य त ना ज़ अ न फ्रीहा कासल्ला लक्वुन फ्रीहा व ला तासीम०

‘वहां आपस में शराब के जाम की छीना भपटी करेंगे, उस शराब में (नशा न होगा, इस लिए उस के पीने से) बक-बक न होगी और न कोई बेहूदा बात (अज़ल व संजीदगी के खिलाफ़ निकलेगी)।’

यह छीना भपटी हंसी-मजाक़ के तौर पर होगी, क्योंकि वहां किसी के लिए कुछ भी किसी चीज़ की कमी न होगी। दोस्तों में छीन-भपट कर खाने से मज़ा दो गुना हो जाता है, जिसे एक साथ मिल कर रहने वाले खूब अच्छी तरह जानते हैं।

जन्नतियों का कपड़ा-गहना

सूर: कहफ़ में इर्शाद फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نَنْفِيهِمْ أَجْرًا مَنْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَدَّتْ عِلْدٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُخَلِّفُونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَبَسُوتُ تَتَابِعًا خَضِرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَاسْتَبْرَقٍ مُتَّبِعِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ مَا يَشَاءُ مِنَ الثَّوَابِ وَمَا كُنْتُمْ مُرْتَقًا ۚ

१. बुखारी शरीफ़,

२. जैसा कि मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जो जन्नत में आखिर में पहुंचेगा, वह रत्ने के एतबार से सबसे मामूली होगा।

इन्नल्लजी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुजोभु अजर मन अहस न अ म ला उलाइ क लहुम जन्नतु अदनिन तजरी मिन तह्तिहिमुल अन्हार युहल्ली न फ्रीहा मिन अ सावि र मिन जह बिब्व यल्बसू न सियावन खुजरम मिन सुन्दुसिब्व इस्तवरक्रिम मुत्किई न फ्रीहा अलल अराइकि निअमस्सवाबु व हसुनत मुर्त फ का०

‘बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए तो ऐसे लोगों का बदला हम बरबाद न करेंगे। जो अच्छे तरीके पर काम करे, ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग हैं, उन के नीचे नहरें जारी होंगी, उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और ये लोग हरे रंग के कपड़े पहनेंगे जो सुन्दुस और इस्तवरक के होंगे और वहां मसहरियों पर तकिए लगाए बैठेंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी आराम की जगह है।’

इस आयत में एक तो जन्नती बन्दों के कंगनों का जिक्र फरमाया कि उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। सूरः दह में फरमाया, उन को चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। दोनों आयतों को मिलाते से माजूम हुआ जन्नतियों के कंगन सोने के भी होंगे और चांदी के भी। दूसरे जन्नतियों के कपड़े का जिक्र फरमाया कि सुन्दुस और इस्तवरक के हरे कपड़े पहनेंगे। सुन्दुस बारीक रेशम की और इस्तवरक मोटे रेशम की कहा जाता है यानी दोनों तरह के रेशम के कपड़े होंगे। ख्वाहिश के मुताबिक बारीक और मोटे पेश कर दिए जाएंगे, जिस कपड़े को भी चाहेंगे पहन लेंगे।

मुफस्सिर बंजावी लिखते हैं कि दोनों किस्म के कपड़े का जिक्र फरमाया है ताकि मालूम हो जाए कि वहां नपस की ख्वाहिश और आंखों की लज्जत के मुताबिक सब होगा। और यह जो फरमाया कि हरे रंग के कपड़े होंगे, उस के बारे में मुफस्सिर बंजावी लिखते हैं, ‘हरे रंग को इस लिए चुना गया कि वह सब रंगों में बेहतर है और उस में दूसरे रंगों के मुकाबले में ताजापन ज्यादा मालूम होता है। और यह बात भी जिक्र के क़ाबिल है कि दूसरे रंगों का इंकार नहीं किया गया है। एक रंग का जिक्र है, बाकी रंगों के जिक्र से खामोशी है। अगर बंदों की ख्वाहिश होगी तो अल्लाह तआला दूसरे रंगों के कपड़े भी इनायत फरमाएंगे।

सूरः हज में फरमाया—

إِنَّ اللَّهَ يَخْلُقُ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ مَا يَشَاءُ وَيُعْطِيهِمْ مِنْهُ
مِمَّا يَشَاءُ وَيُعْطِيهِمْ مِنْهُ مِمَّا يَشَاءُ وَيُعْطِيهِمْ مِنْهُ

وَيَسْأَلُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝

इन्नल्ला ह युदखिलुल्लजी न आ म नू व अमिलुस्सालिहाति जन्नातिन तजरी मिन तह्तिहल अन्हार युहल्ली न फ्रीहा मिन अ सावि र मिन जह बिब्व लुअलुअव्व लिबासुहुम फ्रीहा हरीर०

‘बेशक अल्लाह तआला उन लोगों को बागों में दाखिल फरमायेगा जो ईमान लाये और नेक अमल किए। उन बागों के नीचे नहरें जारी होंगी, उन लोगों को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उन लोगों का लिबास रेशम का होगा।’

इस आयत से माजूम हुआ कि जन्नती सोने के कंगनों के अलावा मोतियों का जेवर भी पहनेंगे।

हजरत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया कि मोमिन का जेवर वहां तक पहुंचेगा जहां तक बुजू का पानी पहुंचता है। माजूम हुआ कि हाथों पर जेवर सिर्फ पहुंचे ही पर न होगा बल्कि जहां तक बुजू का पानी पहुंचता है, वहां तक होगा।

हजरत साद विन अबी वक्कास रज़ि० से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया कि जन्नत जो में कुछ है, उसमें से अगर इतनी सी मिक्दार (इस दुनिया में) जाहिर हो जाए जिस को एक नाखून उठा ले, तो इस की वजह से आसमान व जमीन के दमियान जो कुछ है, रौनकदार हो जाए और अगर जन्नतियों में से एक मर्द और (दुनिया की तरफ) भांक ले, जिसकी वजह से उसके कंगन जाहिर हो जाएं तो सूरज की रोशनी को इस तरह बे-नूर कर दे जैसे सूरज-सितारों की रोशनी को बे-नूर कर देता है।

सवाल— कंगन तो औरतों के हाथों में अच्छे लगते हैं, मर्दों पर भला क्या सजेंगे ?

जवाब— किसी भी लिबास या जेवर का सजना और सजाना हर जगह के रस्म व रिवाज पर त होता है। दुनिया में अगरचे आमतौर से मर्द कंगन नहीं पहनते, मगर जन्नत में ख्वाहिश करके पहनेंगे और सभी को देखने में भले मालूम होंगे। घड़ी की चेन ही को ले ली जाए, तरह-तरह की बनावट और चमक और सजावट वाली पहनी जानी हैं और मर्दों के हाथों में अच्छी लगती है, बल्कि कुछ क़ौमों में तो ब्याह-शादी के मौके पर दूल्हा

को कंगन पहनाते हैं और बिरादरी के सब लोग देख कर खुश होते हैं।
चूँकि रिवाज है, इस लिए सब की नज़र भी कुबूल करती है और सब के
दिल भी अच्छा समझते हैं और इस रिवाज पर इस क्रूर अइं हुए हैं कि
शरीअत के मना करने का भी स्याल नहीं करते।

सवाल— पहुंचे से लेकर कुहनी तक जेवर ही जेवर होना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता ?

जवाब—यह भी दुनिया के रिवाज में बुरा मालूम होता है, वहां सबको पसंद आयेगा और स्वाहिश करके पहनेंगे। कुछ क्लोमों में यहां भी रिवाज है कि उनकी औरतें कुहनी तक चूड़ियां पहنتी हैं, जो उनकी पूरी क्लोम में पसंद की जाती हैं।

फायदा— कुरआन मजीद में जन्नती के जेवर के जिक्र में फरमाया है कि उनको जेवर पहनाया जाएगा (युहल्लो न फ्रीहा) और लिबास के बारे में मुस्तजिबल (मुजारेफ़) का सेगा (पल्वसून) लाया गया है यानी वे खुद पहनेंगे। यह तरीका इस बात के समझाने के लिए अपनाया गया है कि जेवर तो उनको खादिम लोग पहनाएंगे, जैसा कि दुनिया के बादशाहों को ताज वगैरह खादिम लोग पहनाते हैं और लिबास जन्नती खुद पहनेंगे, क्योंकि वह अपने ही हाथ से पहनना ठीक मालूम होता है, खास तौर से वह लिबास जो छिपाने की जगह को ढांकने के लिए हो।

हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नत में जो शख्स दाखिल होगा (हमेशा) नेमतों में रहेगा और (कभी) मुहताज न होगा, न उसके कपड़े पुराने होंगे और न जवानि फना होगी।'

कपड़े न पुराने होंगे, न मैले होंगे, हाँ जब बदलने को जी चाहेगा, तो बदल लेंगे, लेकिन यह बदलना फटने या मैला होने की वजह से न होगा।

जन्मतियों के ताज

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल
अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि जन्नतियों के

१. मुलिम,

सूर्य पर ताज होंगे, जिन में से मामूली मोती (की चपक) इतनी ज्यादा होगी कि वह पूरब व पच्छिम के बीच (की खाली जगह) को रोशन कर सकता है। यानी इन ताजों में से अगर मामूली मोती इस दुनिया में आ जाए तो पूरब से पच्छिम तक पूरी फ़ज़ा को रोशन कर दे।

जन्मतियों के बिछौन

सूरः रहमान में फ़रमाया—

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ مَعْرُومَةٌ—
مُنْكَيْنِ عَلَى نَوْشٍ بَطَانَتُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَاجْنَابُ الْجَنَّتَيْنِ دَانٌ
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

मुत्किई न अला फुकेशिम बताइनुहा मिन इस्तबरक व जनल
जनतैन दान फ बि अय्यि आलाइ रबिबकुमा तुकजिजवान०
'वे ऐसे फ़र्शों पर तकिया लगाये हुए होंगे जिनके अस्तर मोटे रेशम
के होंगे और दोनों बागों का फल नज़दीक होगा, सो ऐ ज़िन्न व इस ! तुम
पाने उन की कितन-कितन नेमतों को झुल्लाओगे ?'

इस्तबरक मोटे रेशम को कहते हैं। इसके बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इशार्द फ़रमाया कि 'उख़िबतुं म बिल बताइन फ़ क़ै फ़ बिज़ज़हाइर' (यानी यह तो तुमको बिस्तरों के अस्तर यानी नीचे के कपड़े के बारे में ख़बर दी गयी है कि वह इस्तबरक का होगा, पस इसी पर सोच लो कि उनके अबरे यानी ऊपर के कपड़े कैसे ख़ब्सूरत और ऊँचे होंगे।)

फिर सूरः रहमान के खत्म पर क्ररमाया—

مُتَمِّلِينَ عَلَى رُفُوفِ حُضْرٍ وَعَقَبَةٍ حَسَنَةٍ فَيَأْتِي الْأَعْرَابَ رِيَاءُكُمْ تَكْبِيرًا
تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ.

मुक्तकिईन अला रफरफिन खुजिरव्व अव्करीयिन हिसान० फ्रवि-
प्रथिय आलाइ रन्विकुमा तुकज्जिवान० त वारकस्मु रन्विक क जिल जलालि
वल इकरामि०

वे लोग हरे रंग की चादरों पर (जो पलंग पोश की तरह) बिस्तरों पर होंगी और अजीब खूबसूरत विछीनों पर तकिया लगाये होंगे, सो ऐ इस व जिन ! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे । वरकत वाला है नाम तेरे रब का जो जलाल और इकराम वाला है ।'

१. तिर्मिजी धारीफ,

ऊपर की आयतों में बुलंद दर्जों वाले जन्नतियों के बिस्तरों का जिक्र था, इस लिए वहां फरमाया कि उनके बिस्तरों के अस्तर इस्तरक के होंगे और ऊपर के अवरों का जिक्र छोड़ दिया ताकि अस्तर पर सोच करके समझ लें। यहां कम दर्ज वाले बिस्तरों का जिक्र है जिनमें अस्तर का जिक्र नहीं है, ऊपर ही के कपड़ों को बता दिया है।

सूर: शाशिय: में फरमाया—

يُنَاسِرُ مَرْفُوعَةً وَكَوَاكِيبُ مَوْصُوعَةٍ
وَنَارُ مَصْفُوعَةٍ وَزَلَّالِي مَبْشُوعَةٍ

फ्रीहा मुरु रुम मफू अतु व्व अक्वावुम मौजू अतु व्व नमारिकु
मस्फूफतु व्व जरावीयु मव्सूसः०

‘इसमें ऊंचे-ऊंचे तख्त हैं और रखे हुए आबखोरे हैं और बराबर-बराबर लगे हुए गद्दे हैं और सब तरफ कालीन फले पड़े हैं।’

सूर: वाकिअ: में ‘अस्हाबुल यमीन’ की नेमतों के जिक्र में फरमाया है, ‘व फुरुशिम मफूअ: (ऊंचे-ऊंचे बिछीनों में होंगे)। इसकी तफसीर में हजरत अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशाद फरमाया कि इन बिछीनों की बुलंदी इतनी है जैसे आसमान व जमीन के बीच फासला है, जो पांच सौ वर्ष की दूरी है।’

जन्नतियों के तख्त

सूर: वाकिअ में इशाद है—

وَالشَّيْقُونَ السَّيْقُونَ هَـ أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ هَـ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ هَـ
مِّنَ الْأَوَّلِينَ هَـ وَفَلْيَلْبَسُوا مِنَ الْأَخْيَرِينَ هَـ عَلَى سُرُرٍ مَّوْصُولَةٍ هَـ مَّتَابَعِينَ هَـ عَلَيْهَا

वस्साविकूनस्साविकून उलाइ क ल मुकरं वून फ्री जन्नातिन्नओम
सुल्ल तुम मिनल अव्वली न व कलीनुम मिनल आखिरीन अला मुरुरिम
मौजूनतिम मुत्किई न अलैहा मु न काबिलीन०

‘और सबकत ले जाने वाले, वे (तो) सबकत ले जाने वाले हैं, वे

मुकरंवीन (खास) है, वे नेमतों के बागों में होंगे, उनकी बड़ी जमाअत अगले लोगों में से और थोड़े लोग पिछले लोगों में से होंगे (सोने के तारों से) बुने हुए तख्तों पर तकिए लगाए आमने-सामने बैठें होंगे।

सूर: तूर में ‘मुत्किईन अला मुरुरिम मस्फूफतिन’ फरमाया है यानी सफ़ों के तरीके पर बराबर-बराबर बिछे हुए तख्तों पर तकिए लगाये बैठें होंगे और ये सफ़ें आमने-सामने होंगी जैसा कि ‘मुत्काबिलीन’ से ज़ाहिर है। मुरुरिम ‘सरीर’ (यानी तख्त) की जमा (बहुवचन) है। ‘मौजूनतिन’ यानी मंसूजतिन यानी वे तख्त बुने हुए होंगे।

हजरत इब्ने अब्बास: रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि उनकी बनावट सोने के तारों से होगी, जैसे दुनिया में कुसियां बांस वगैरह की खपच्चियों से या चारपाइयां बानों से बुनी हुई होती हैं। मुफस्सिर मुदी ने फरमाया, ममूलतुन बिज्ज ह बि वल्लुअ लु इ’ (यानी वे तख्त सोने से और मोतियों से बने हुए होंगे)। सूर: यासीन में इशाद है—

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ لَّا يَمُوتُونَ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ

عَلَى الْأَرْشَادِ مَتَّكُونَ هـ

इन्हें अस्हाबल जन्नतिल यी म फ्री शुगुलिन फाकिहून हुम व अक्वा-
जुहुम फ्री ज़िलालिन अलल अराइकि मुत्किऊन०

‘बिला शुब्हा जन्ती उस दिन अपने कामों में खुशदिल होंगे। वे और उनकी वीवियां पर्दे वाले सजे-सजाए तख्तों पर तकिए लगाए होंगे।’ ‘अराइकि’ ‘अरीकतुन’ की जमा (बहुवचन) है। अरीका उस सजे-सजाये तख्त को कहते हैं, जिस पर परदा लटका हुआ हो। साहिबे तफसीरे मज्हरी ‘अराइक’ की तफसीर में लिखते हैं, यानी ‘अस्सुरर फिल हिजालि’ (दुल्हन को विठाने के लिए जो परदा ढाल कर खास कोनों की सजावट करते हैं, इसमें जो तख्त सजा करके बिछाया जाता है, वह अरीका है) दोनों आयतों के मिलाने से मालूम हुआ कि जन्नतियों के बैठने के लिए तख्त भी होंगे और अराइक भी होंगे। यहां यह बात और के क़ाविल है कि कुरआन शरीफ में ‘मुरुरिम मुत् काबिलीन’ भी फरमाया है जिस में खाली ‘तख्त’ का जिक्र है। (यह सूर: आराफ और सूर: साफ़ात में है) और ‘अला मुरुरिम मौजूनतिन’ भी फरमाया है, जिसमें मुरुर की सिफ़त (गुण) ‘मौजूनतिन’ बयान हुई है। हो सकता है कि ‘मुरुरिम मौजूनतिन’ सिर्फ मुकरंवीन के लिए खास हों और उनके अलावा दूसरे तख्त आम जन्नत

वालों के लिए हों और यह भी मुम्किन है कि सभी के लिए 'सुखरिम मौजू-नतिन' हों और एक जगह सिफत जिक्र कर देने पर बस कर लिया गया हो।

बहरहाल जैसे भी तस्त हों, अजीब व गरीब और पसंद और चाव के होंगे। उनकी खूबसूरती का अन्दाजा यहां नहीं लगाया जा सकता। यह जो फरमाया 'अला सुखरिम मुतकाबिलीन' कि 'तस्तों पर आमने-सामने बैठेंगे', इसके बारे में मुफस्सिर इब्ने कसीर, हजरत मुजाहिद (ताबई) से नक़ल फरमाते हैं कि 'ला यंजुरु बअज़हुम फी कफ़ा बअज़' (यानी जन्नती आपस में एक दूसरे की पीठ न देखने पाएंगे) मतलब यह है कि उठने-बैठने में और साथ देने और मज्लिस जमाने में किसी के पीछे बैठने का मौका न होगा, वहां रहने-सहने का ढंग ऐसा होगा कि किसी को पीठ नजर न आएगी। आपस में जब किसी को देखेंगे तो चेहरों ही पर नजर पड़ेगी। मज्लिस में बैठेंगे तो दुनिया वालों की तरह (आगे-पीछे) न बैठेंगे, दुनिया में जगह की कमी है, वहां कमी न होगी और दूरी व नज़दीकी भी बे-हकीकत होगी। हर शख्स हर जगह से दूसरे की बात सुन लेगा। साहिबे तफ़सीरे मज़हरी 'मुतकाबिलीन' की तफ़सीर में लिखते हैं, 'व स फ़ हुमुल्लाहु तअला विहुस्निल अशीरति व तहज़ीविल अल्लाकि व सफ़ाइल मुअदति' (यानी अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नतियों के अच्छे रहन-सहन खुलूस, मुहब्बत और संवरे अल्लाक का जिक्र फरमाया है) उनकी मुहब्बत और मेल-जोल की खूबी इसको ग़वारान करेगी कि कोई एक-दूसरे के पीछे बैठे।

विल्दान और ग़िल्मान

जन्नतियों की खिदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान होंगे, जिन का जिक्र कुरआन शरीफ़ में कई जगह आया है—

सूर: तूर में इशार्द है—

وَيُطَوَّنُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَافَّةً لِّوَلْوٍ مُّكْرُوتٍ ۝

व यतूफ़ु अलैहिम ग़िल्मानुल्लहुम क अन्नहुम लुभ लुउम मक्नून०
'और उनके पास (मेवे वगैरह लाने के लिए) ऐसे लड़के आएँ-जाएँ जो खास उन्हीं की खिदमत के लिए होंगे (और बेइ-तिहा खूबसूरती की वजह से ऐसे होंगे कि) गोया वह हिफ़ाजत से रखे हुए मोती हैं।'

सूर: दह्र में इशार्द है—

وَيُطَوَّنُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانِ مُكْرَمَيْنِ ۝ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مِّنْ ثَوَابٍ ۝

व यतूफ़ु अलैहिम विल्दानुम मुखल्लदून इज़ा रऐतुहुम हसिब्तुहुम लुभ लुअम मंसूरा०

'और उनके पास (खिदमत के लिए) ऐसे लड़के आएँ-जाएँगे जो हमेशा एक ही हाल पर रहेंगे। ऐ मुखातब ! जब तू उनकी देखे तो यों समझे कि मोती हैं, जो बिखेर दिए गए हैं।'

'विल्दान' 'वलद' की जमा है और 'ग़िल्मान' 'ग़ुलाम' की जमा है, दोनों लगभग एक ही मानी रखते हैं। जन्नतियों के जोड़े के लिए अल्लाह दोनों लगभग एक ही मानी रखते हैं। जन्नतियों के जोड़े के लिए अल्लाह तअला ने 'हर ईन' पैदा फरमायी हैं जो हैं तो मुअन्नस (स्त्री) मगर उनकी पैदाइश इन्सानों की पैदाइश की तरह नहीं है, बल्कि अल्लाह ने सिर्फ अपनी क़दरत से उनको पैदा फरमाया है। इसी तरह जन्नतियों की खिदमत के लिए ग़िल्मान व विल्दान यानी ऐसे लड़के पैदा फरमाये हैं (या जन्नत में दाखिले से पहले पैदा फरमायेंगे), जो हमेशा नव-उम्र रहेंगे। यह भी बिल्कुल नयी मख़लूक (जीव) है, जिनकी पैदाइश इन्सान की तरह नहीं हुयी, बल्कि अल्लाह तअला ने अपनी क़दरत से पैदा फरमा दिया है। कुरआन शरीफ़ में उन लड़कों की सिफत 'मुखल्लदून' बयान फरमायी है। साहिबे तफ़सीरे मज़हरी उसकी 'तफ़सीर करते हुए लिखते हैं, 'ला यमूतून व ला यहरमून व ला यत ग़रू न व यक्नून अ ब दन अला शक़िलल विल्दान (यानी वे लड़के न मरेंगे, न बूढ़े होंगे, न उनकी तब-उम्र में तब्दीली आयेगी (बल्कि) हमेशा लड़कों की शक़ल पर रहेंगे। इब्ने कसीर लिखते हैं, 'ला तज़ीउ अअ्राहुम अन तिल्कस्सिन्नि' (यानी उनकी उम्र लड़कपन की उम्र से आगे न बढ़ेगी)

सूर: दह्र की तफ़सीर में विल्दान की तशरीह करते हुए साहिबे मज़हरी लिखते हैं कि 'यन्शाहुमुल्लाहु तअला लिखिद मतिल मुअमिनीन अब विल्दानुल क फ़ रति यज़अनुहुमुल्लाहु खुदामतिल अहिल जन्नति' (यानी उन विल्दान को अल्लाह तअला मोमिनों की खिदमत के लिए पैदा फरमाएँगे या ये काफ़िरों की ना-बालिग़ औलाद होगी जिनको अल्लाह तअला जन्नतियों का खिदमतगार बना देंगे।)

इससे मालूम होगा कि विल्दान के बारे में दो क़ौल हैं, एक यह कि नयी मख़लूक होगी, दूसरे यह कि दुनिया में काफ़िरों के जो नाबालिग़ लड़के मर गये हैं, वे 'विल्दानुम मुखल्लदून' होंगे जो जन्नतियों की खिदमत में लगा दिए गये हैं, लेकिन इस दूसरे क़ौल की खोज-पड़ताल करने वालों

ने इसे माना नहीं है, चुनांचे बयानुल कुरआन के लिखने वाले लिखते हैं कि 'विल्दान' यानी 'गिल्मान' के बारे में तर्जिह देने के क़ाबिल क़ौल, जिसको खाजिन ने सही और हक़ को उस ख़्याल के तहत शामिल किया है, यह है कि वे एक मुस्तक़िल मख़लूक हैं जैसे हर और गिल्मान में मानी विलादत (पैदा होने) के नहीं और हिकमत उनके खादिम बनाने में सिर्फ़ सुकून व खुशी है बे-शहत ।'

सूर: तूर में गिल्मान को 'लुम् लुउम मक्नून' कहा है यानी वे लड़के हुसुन और चमक में और रंग की सफ़ाई-सुथराई में उस मोती की तरह होंगे जो सीपी में छिपा रहता है, जिस पर धूल-मिट्टी का गुज़र नहीं होता और सूर: दह्र में 'लुम् लुअम मंसूरा' फ़रमाया है यानी वे लड़के बिखरे हुए मोतियों की तरह होंगे, क्योंकि खिदमत में लगे हुए हर तरफ़ चल फिर रहे होंगे। हज़रत हुसुन और क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि कुछ सहाबा रज़ि० ने प्यारे नबी सल्ल० से अर्ज़ा किया कि खादिम (की खूब-सूरती) का यह हाल है तो मख़दूम (जिसकी खिदमत की जाए) का क्या हाल होगा? इसके जवाब में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मख़दूम को खादिम पर उस जैसी बड़ाई होगी जैसी चौदहवीं के चांद को तमाम सितारों पर होती है ।'

जन्नत में पाकीजा बीवियां

सूर: आले इम्रान में फ़रमाया—

لَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ
وَاللَّهُ يَخْتَارُ مَا يَسِّرُ لِلْعِبَادِ

लिल्लज़ीन तत्क़ौ अिन्द रब्विहिम जन्तातुन तजरी मिन तह्तिहल अन्हार ख़ालिदी न फ़ीहा व अस्वाजुम मुतह्हरतु व्व रिस्वानुम मिनल्लहि वल्लाहु बसीरुम विल अिबादि०

'ऐसे लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते हैं, उनके रब के पास ऐसे वाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, इनमें वे हमेशा रहेंगे और (इनके लिए यहां पाकीजा बीवियां हैं और अल्लाह की खुशी है और अल्लाह तमाला बंदों को देखते हैं ।'

१. तफ़सीर वाकिअ: (बयानुल कुरआन), २. तफ़सीरे मजहरी.

'पाकीजा बीवियां' यानी ऊपरी मेल-कुचैल और भीतरी बुराइयां (धोखा-फ़रेब) से और हर तक्लीफ़ देने वाली आदत और बात से और हैज़ व निफ़ास वग़ैरह से बिल्कुल पाक व साफ़ होंगी ।'

हज़रत मुजाहिद (ताबई) ने पाक बीवियों की तफ़सीर करते हुए फ़रमाया कि वे हैज़ से और पाख़ाना-पेशाब से और बलग़म व थूक से और मनी से और बच्चा जनने से पाक होंगी (जब जनना न होगा तो उसके बाद निफ़ास का खून भी न आयेगा) हज़रत क़तादा (ताबई) ने फ़रमाया कि 'मुतह्हरतुम मिनल अज़ा वल मासिम' (यानी वह तक्लीफ़ देने वाली हर चीज़ से और नाफ़रमानी करने से पाक होंगी)।

ख़ुलासा यह है कि जन्नत की बीवियां ऊपरी और भीतरी ऐवों से पाक होंगी, उनको न थूक आएगा, न पाख़ाने की ज़रूरत होगी, न पेशाब की, न मनी निकलेगी, न हैज़ आएगा, न निफ़ास होगा, न बदन और कपड़े पर मेल होगा। इस जाहिरी सुथरेपन और पाकीज़गी के साथ उनकी आदतें और उनके अल्लाक़ भी बहुत ही अच्छे होंगे, दिल व जान से शौहरो पर न्यौछावर होंगी, उनमें नाफ़रमानी का नाम नहीं, बद-तमीज़ी करने का काम नहीं, धोखा-धड़ी, दगा, बे-वफ़ाई से ख़ाली होंगी, दुनिया की औरतों, जिनका ईमान पर ख़ात्मा होगा, मोमिनो की बीवियां होंगी और उनके अलावा दूरे ईन में से बीवियां दी जाएंगी, दोनों क्रिस्म की बीवियां हुसुन व जमाल और भीतरी-बाहरी अच्छाई, बेहतर अल्लाक़ और प्रेम व मुहब्बत में और सफ़ाई-सुथराई में (जिसका बयान अभी हुआ) बहुत ही ऊंची होंगी ।

जन्नती बीवियों की खूबसूरती और दूसरी बातें

सूर: वाकिअ: में फ़रमाया—

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنْسَاءً فَخَلَقْنَا لَهُنَّ مِنْ لَدُنْهُنَّ أَوْسَادًا مُّطَهَّرَةً ۖ وَلَهُنَّ فِيهَا زُجْجٌ ۖ وَلَهُنَّ فِيهَا نَضْرَجٌ مُّطَهَّرٌ ۖ وَلَهُنَّ فِيهَا مَعِينٌ ۖ وَلَهُنَّ فِيهَا مَعِينٌ ۖ

इन्ना अन्शअ ना हुन्न इन्शानन फ़ ज अल्ला हुन्न अक्कारन अरुबन अत्रावल लि अस्हाविल यमीनि०

'हमने इन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारियां हैं, (शौहरो के लिए) प्यारी हैं, (उनकी) हम-उम्र हैं। (यह सब जो ऊपर बयान हुआ) अस्हावल यमीन के

१. २. इब्ने कगीर,

लिए है।'

दुनिया वाली मोमिन औरतें जिस हाल और जिस उम्र में भी दुनिया से इतिकाल कर गयी हों वहर हाल जन्नत में जवान उम्र और कुंवारी बना दी जाएंगी और वहां के हुस्न व जमाल से सजा दी जाएंगी। हदीस शरीफ में है कि एक बड़ी बी आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुई। और अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल। दुआ फरमा दीजिए, अल्लाह जल्ल शानुहु मुझे जन्नत में दाखिल फरमा दे। आपने इर्शाद फरमाया कि ऐ फलां की मां ! जन्नत में कोई बुढ़िया दाखिल न होगी। यह सुन कर वह रोती हुई रवाना हो गयीं। आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाजिर लोगों से फरमाया, उससे कह दो कि मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम जन्नत में न जाओगी, बल्कि बात यह है कि वह जन्नत में दाखिल होते वक्त बूढ़ी न होगी (क्योंकि उस वक्त जवानी दे दी जाएगी) बिला शुब्हा अल्लाह तआला फरमाते हैं कि, 'इन्ना अन्शअ ना हुन्न इन्शाअन फ जअल्लाहुम अब्कारा' आहजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दिल्लगी के तौर पर ऐसे लफ्ज फरमाये, जिससे वह दूसरा मतलब समझ गयीं। कभी-कभी आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मजाक भी फरमा लेते थे, जिसका एक वाकिया यह भी है जो ऊपर बयान हुआ। मजाक में भी आप सही और सच बात फरमाते थे। 'अब्कारा' बिक्र की जमा है, यानी कुंवारी जब भी उनके शीहर करीब होंगे, हम-बिस्तर होंगे तो हमेशा कुंवारी ही पाएंगे।'

साहिबे बयानुल कुरआन लिखते हैं कि क़रीब होने के बाद फिर कुंवारी हो जाएंगी, हसीन व जमील और प्यारी औरतें। यह 'ऊरूब' की जमा है। 'अत्रावा' हम उम्र और हमजोली औरतें मुराद हैं, इसका वाहिद (एक वचन) तुरुब है। जिस तरह मर्द सब तीस-तीस वर्ष के होंगे, (जिसका मतलब बयान हो चुका है) इसी तरह उनकी बीवियां भी उन ही की उम्र की होंगी। क्रुद और जिस्म में और उम्र में बराबर होंगी, दोनों तरफ से दिल मिले हुए होंगे। शक़ल व सूरत में एक तरह के होंगे, दुनिया में लोग अपने से कम उम्र वाली लड़की से विवाह करना पसंद करते हैं, क्योंकि कनसिन में हुस्न व जमाल और प्यार का अन्दाज़ ज्यादा होता है, लेकिन चूँकि जन्नत बीवियों में (चाहे वे दुनिया की मोमिन औरतें हों, चाहे वे हरे ईन हों, हुस्न व जमाल और प्यार की हालत पूरी होंगी,

१. शमाहले तिमिजी, २. मिर्कात,

३. इसी तरह अबूअईद से दूर में भी रिवायत आती है।

इस लिए हम उमरी महबूब बनाने में रुकावट न डालेंगी, बल्कि ज्यादा प्यार व मुहब्बत की वजह बन जाएंगी। शीहर व बीवी बचकानापन से भी खाली होंगे और दुहापे से भी बचे रहेंगे, हमेशा दमियानी उम्र रहेगी, जिस में सम्भ-होश पूरा होता है। मुफ़स्सिर सुदी ने अत्रावा की तपसीर बताते हुए इर्शाद फरमाया कि वे आपस में अस्लाक़ और प्यार व मुहब्बत के एतबार से बराबर होंगे, वहनों की तरह मेल से रहेंगी। आपस में जलन, कपट नाम को न होगा, सौकनों वाला तनाव और लड़ाई व दुश्मनी न होगी।'

सूर: साद में फरमाया—

وَعِنْدَهُمْ قُصُورَاتُ الْكَوْكَبَاتِ

व अन्दहुम कासिरातुत्तर फ़ि अत्राबुन०

'और उनके पास निगाह को रोक रखने वाली हम उम्र बीवियां होंगी,' यानी उनकी नज़र सिर्फ़ शीहरों ही पर पड़ेगी और दिलबर शीहरों ही से लगा हुआ होगा। शीहरों के अलावा किसी और की तरफ़ ज़रा नज़र उठा कर भी न देखेंगी।

हजरत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरबरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि एक सुबह या एक शम को अल्लाह के रास्ते में निकल जाना सारी दुनिया से, और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर है और अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत जमीन की तरफ़ को भांक ले, तो आसमान व जमीन के दमियान जो कुछ है, उसको रोशन करदे और खुशू से भर दे। फिर फरमाया कि हां, उसके सर का दोपट्टा सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, उस सबसे बेहतर है।'

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि वेशक जन्नत की औरत की पिडली की सफ़ेदी सत्तर जोड़ों के अन्दर से नज़र आएगी, यहां तक कि पिडली के अन्दर का गोला तक नज़र आएगा और यह (बात) इसलिए (हक़) है कि अल्लाह जल्ल शानुहु फरमाते हैं, 'क अन्नहुन्नल याकूतु वल मर्जानु' (वे औरतें इतनी चमकीली और रंग की साफ़ होंगी कि गोया वे याकूत हैं या मर्जान हैं) फिर फरमाया कि याकूत तो ऐसा पत्थर है कि अगर तू उसमें लड़ी दाखिल करदे और फिर उसको साफ़ तरीक़े पर देखना चाहे, तो पत्थर के बाहर देख सकता है।'

हजरत अबूसईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फरमाते हैं कि

१. इब्ने कसीर, २. बुखारी शरीफ़, ४. तिमिजी,

आंहुजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'क अन्न हुन्नल याकूतु व ल मर्जानु' की तशरीह फरमाते हुए इशार्द फरमाया कि जन्नती मर्द (जो जन्नती औरत का शौहर होगा) उसके चेहरे पर नजर डालेगा तो उसका गाल आईने में ज्यादा साफ नजर आएगा और जन्नती औरत पर जो मोती होंगे, उनमें यह मामूली मोती पूरब-पच्छिम के दरमियान को रोशन कर सकता है और उस पर सत्तर जोड़े होंगे (जो इतने साफ-सुथरे और चमकदार होंगे) कि उनके अन्दर को नजर पार हो जाएगी और जन्नती मर्द उसके कपड़ों के बाहर से उसकी पिंडली का गूदा देख लेगा।^१

हरे ईन

हर जमा है होराउ की यानी वह औरत जिसकी आंख की सफेदी और स्याही खूब गहरी और तेज हो। ईन जमा है ऐनाउ की यानी वह औरत जिसकी आंखें बड़ी-बड़ी और चौड़ी हों। कुरआन और हदीस की जुवान के लिए लफ्ज हर बोला जाता है। जिनको अल्लाह पाक ने अपनी कुदरत से जन्नती मर्दों की बीबी के लिए पैदा फरमाया है। ये औरतें दुनिया वाली मोमिन औरतों के अलावा होंगी। सूर: दुखान में फरमाया है—'वजव्वज्नाहुम विहरिन ईनुन' (और हरे ईन के साथ हम उनका ब्याह कर देंगे)।

सूर: रहमान में फरमाया—

فِي مِثْنِ خَيْرَاتٍ جَسَاءَ هُنَّ الْأَعْيُنُ وَبَيْنَهُنَّ بَابٌ مَكُونٌ مَقْصُورَاتٍ فِي
الْجَنَّةِ هُنَّ الْأَعْيُنُ وَبَيْنَهُنَّ بَابٌ مَكُونٌ مَقْصُورَاتٍ فِي
فِي الْأَعْيُنِ وَبَيْنَهُنَّ بَابٌ مَكُونٌ مَقْصُورَاتٍ فِي

फ्रीहिन्न खैरातुन हिसानुन फ़ विअय्यि आलाइ रबिबकुमा तुकजिज्-
वान हूरुम मक्सूरतुन फिल खियामि फ़ विअय्यि आलाइ रबिबकुमा तुक-
जिज्जवान लम यतिमरहुन्न इन्सून कब्लहुम व ला जान्न फ़ विअय्यि आलाइ
रबिबकुमा तुकजिज्जवान०

'इन (बहिशतों के मुहल्लों) में खूबसूरत, अच्छे अस्लाक वाली औरतें होंगी, सो ऐ इन्स व जिन्न ! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे ? वे हरे खेमों में हिफाजत से होंगी, सो ऐ इस व जिन्न

१. पहमद, इन्ने हन्वान, बेहकी,

तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे ? (वह जिनके लिए चुनी जाएंगी) उनसे पहले किसी इंसान या जिन्न ने उनको न छुआ होगा। सो ऐ इस व जिन्न ! तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे ? सूर: वाकिअ: में फरमाया—

وَحُورٌ عِينٌ كَأَمْثَالِ الْيُزْجَرِ الْمَكْنُونِ

व हूरुन ईनुन क अम्सालिल्लुअलुइल मक्नून०

'और उनके लिए हरे ईन होंगी छिपे रखे हुए मोती की तरह।'

सूर: साफ़ात में फरमाया—

وَعِنْدَهُمْ قَصِيرَاتُ الْطَّرِيقِ عِينٌ كَأَمْثَالِ بَيْضِ مَكْنُونٍ

व अन्दहुम कासिरातुत्तफ़ि अ्रीनुन क अन्न हुन्न बीजुम मक्नून०

'और उनके पास नीचे निगाह रखने वाली बड़ी-बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी (जिनकी रंगत इतनी साफ होगी कि) गोया अण्डे हैं छिपे हुए।'

पहली आयत में छिपे मोती की तरह फरमाया, यानी वे औरतें सफ़ाई और सफेदी में ताजा मोतियों की तरह चमकती होंगी और दूसरी आयत में छिपे हुए अण्डे से तशबीह (उपमा) दी गई है जो धूल-गर्द और दाग से बिल्कुल हिफाजत में रहता है। मुफ़स्सिर इन्ने कसीर रह० ने हजरत हुसैन रह० से 'बीजुम मक्नून' की तफ़सीर में नक़ल किया है कि 'महसूनून ला तम्सकुहुल् ऐदी' (यानी वह अण्डा जो हाथों में पहुंचने से पहले हिफाजत में होता है।)

मुफ़स्सिर वैजावी लिखते हैं कि अण्डे से तशबीह जो दी गई है, वह तशबीह सफ़ाई में भी है और जरदी मिली हुई सफेदी में भी है, जिस सफेदी में किस कदर जरदी मिलाई गई हो, वह वदन का बेहतरीन रंग माना गया है।

हरे ईन की एक खास दुआ और शौहरों से हमदर्दी

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रहमत के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बे-शुव्हा रमजान के लिए शुरू साल से खत्म साल तक जन्नत सजायी जाती है। पस रमजान का पहला दिन होता है तो अर्थ के नीचे हरे ईन पर जन्नत के पत्तों की हवा चलती है, जिसका असर लेकर वे यों दुआ करती हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! अपने बन्दों से हमारे लिए ऐसे शौहर मुकर्रर

फरमा, जिनसे हमारी आंखें ठंडी हों और हम से उनकी आंखें ठंडी हों।

हजरत मुआज रजियल्लाहु अन्हु का यह बयान है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि दुनिया में जो कोई औरत अपने शौहर को तक्लीफ देती है तो हूरे ईन में से उसकी बीवी दुनिया की बीवी से कहती है कि तेरा बुरा हो, उसको तक्लीफ न दे, क्योंकि वे तेरे पास कुछ दिनों तक का मेहमान है, बहुत जल्द तुझसे जुदा हो कर हमारे पास पहुंच जाएगा।^१

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जिस तरह जन्नत और उसकी दूसरी नेमतें उस चक़्त मौजूद व मरलूक हैं। हाफ़िज़ मुजिरी रह० ने 'अत्तर्गीब व त्तेर्हीब' में उम्मुल मोमिनीन हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा से एक लम्बी रिवायत नक़ल किया है, जिसमें यह भी है कि हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! (जन्नत) में दुनिया वाली (मोमिन) और ये अप्पज़ल होंगी या हूरे ईन ? आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में इर्शाद फरमाया कि दुनिया वाली (मोमिन) औरतें हूरे ईन से इतनी अप्पज़ल होंगी जैसे (लिहाफ़) का ऊपर का कपड़ा उसके अंदर वाले अस्तर से बेहतर होता है। हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! यह किस वजह से ? आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, इसलिए कि दुनिया वाली औरतें नमाज़ पढ़ती हैं और रोज़े रखती हैं और अल्लाह (अज़्ज व जल्ल) की इबादत करती हैं। हजरत उम्मे सलमा रजि० ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! कभी-कभी एक औरत दुनिया में (एक के बाद एक) दो या तीन या चार मर्दों से निकाह कर लेती है, फिर उसे मीत आ जाती है, वह जन्नत में दाखिल होगी और उसके शौहर भी उसके साथ जन्नत में होंगे तो (इस शकल में) उनमें से उनका शौहर कौन होगा ? आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि ऐ उम्मे सलमा रजि० ! उस को अस्तिथार दे दिया जाएगा जिसके साथ चाहे रहे, इसलिए वह उसको अस्तिथार कर लेगी जो उनमें अरूलाक़ के एतबार से सबसे अच्छा होता था और कहेगी, ऐ रब ! दुनिया के अंदर यह उन सबसे ज्यादा मेरे साथ अरूलाक़ वाला था, उसी को मेरा जोड़ा बना दीजिए। यह फरमा कर आहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ऐ उम्मे सलमा ! अच्छा अरूलाक़ दुनिया व आखिरत की भलाई ले उड़ी।^१

जन्नत में हूरों का तराना

यह रिवायत सनद के एतबार से मज़बूत नहीं है। कुछ रिवायतों में यह भी मिलता है कि दुनिया में जिस औरत ने शौहर के बाद निकाह कर लिया वह जन्नत में आखिरी शौहर को मिलेगी, जो भी शकल हो, बहर-हाल यह हक़ है कि जन्नती मर्दों और औरतों में कोई ऐसा न होगा जो बग़ैर जोड़े के रह जाए। कुछ लोग अक्सर पूछते-फिरते हैं कि दो शौहरों वाली का क्या होगा ? इस मसूअले पर ईमान तो टिका हुआ है नहीं जो बहस बनाया जाए। अल्लाह तआला जो तज्वीज़ फरमाएंगे, सब के हक़ में बेहतर ही होगा।

मर्दों के लिए बहुत-सी बीवियां

हजरत अली मुर्तज़ा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नत में हूरे ईन के जमा होने की एक जगह है, जिसमें आवाज़ें बुलंद करती हैं और यह कहती हैं कि हम हमेशा रहने वाली हैं, कभी हिलाक़ न होंगी, हम हमेशा आराम व चैन में रहेंगी, कभी मुहताज़ न होंगी। हम (अपने शौहरों में हमेशा) खुश रहेंगी, कभी नाराज़ न होंगी, उसके क्या कहने जो हमारे लिए है और हम उसके लिए हैं (यह तराना ऐसे मन भावन अंदाज़ में गाती हैं कि) ऐसी आवाज़ें मरलूक में किसी ने नहीं सुनी हैं।^१

जन्नत में एक मर्द को कितनी बीवियां मिलेंगी, इसके बारे में बहुत सी रिवायतें आयी हैं। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है, 'लि कुल्लिम रिइन जौज तानि मिनल हूरिल ओन०' (यानी हूरे ईन में से हर शरूस की दो बीवियां होंगी।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़तुलबारी में इस पर तपसूल से बहस की है और बहुत सी रिवायतें जमा की हैं। मुस्नद अहमद की एक रिवायत नक़ल की है कि मामूली जन्नती के लिए दुनिया की बीवियों के अलावा बहत्तर बीवियां होंगी। अबू यअला की एक रिवायत में है कि दो बीवियां बनी आदम में से होंगी और बहत्तर बीवियां वे होंगी जिन्हें अल्लाह तआला (इस दुनिया में) पैदा फरमाएंगे।

इन्ने माजा रह^० की एक रिवायत में है कि बहत्तर बीवियां हरे इन से और बहत्तर दुनिया की औरतों में से मिलेंगी। इनके अलावा और भी रिवायतें साहिबे फ़तुलबारी ने नज़्ज की हैं। इस सिलसिले की रिवायतें सनद के एतवार से मज़बूत भी हैं और कमज़ोर भी हैं। कुल मिलाकर यह ज़रूर मालूम होता है कि जन्नतियों को दूसरी नेमतों के साथ ज़्यादा बीवियों की नेमत से भी नवाज़ा जाएगा और ऐसा तो कोई भी न होगा जिसको कम से कम दो बीवियां न मिलें। बाक़ी रही तायदाद में इस्तिलाफ़ की बात, तो यह अमल की बड़ाइयों के एतवार से सोचा जा सकता है यानी यों कह सकते हैं कि अपने-अपने भले कामों के हिसाब से दर्जों में जो इस्तिलाफ़ होगा, दर्जों के इस इस्तिलाफ़ की वजह से बीवियों की तायदाद भी मुस्तलिफ़ होगी।

कुछ लोग यह भी सवाल किया करते हैं कि एक मर्द को बहुत सी बीवियां मिलेंगी तो एक बीबी को कितने मर्द मिलेंगे ? यह सवाल बहुत बेहूदा है, क्योंकि मर्द के लिए बहुत सी बीवियां होना नेमत है और औरत के लिए बहुत से शौहर होना शरीफ़ों, शरमदारों और ग़ैरत वालों के नज़दीक बहुत ऐब की बात है, जबकि ऐसी बे-इज़्जती दुनिया में नहीं की जाती तो जन्नत में कौन ग़वारा करेगा ? जन्नती औरतों की खूबी कुरआन शरीफ़ में 'क्रासिरातुत्तरफ़ि' बयान हुई है। वे नज़रें पस्त रखने वाली और अपने शौहर के अलावा दूसरे पर नज़र डालने से बचने वाली होंगी। यों कहिए कि वह तो एक ही शौहर पर राज़ी होंगी और दिल व जान से निछावर हो रही होंगी और यहां के लोग ख़ामख़्वाह उनको ज़्यादा शौहर दिलाने की वक़ालत कर रहे हैं, जबकि एक शौहर से जी भरा हुआ है और दिन लगा हुआ है तो दूसरे की ज़रूरत ही क्या ? अफ़सोस कि नादान एतराज़ करने वालों ने जन्नती औरतों को गंदी औरतों पर और यूरोप की नई तहज़ीब वाली हरज़ाई लौंडियों पर सोच लिया। चाहिए तो यह था कि जन्नती औरतों के ढंग पर अपने यहां की औरतों को परदे में बिठा कर 'क्रासिरातुत्तरफ़ि' और 'मकुसूरतुन फ़िज-ख़ियामि' बनाते मगर नादानों ने हूरो से परदे का सबक लेने के बजाए उल्टा यह किया कि जन्नती औरत के लिए बे-इज़्जती तजवीज़ कर दी।

मर्दाना ताक़त

जन्नतियों की बीवियां, चूंकि बहुतसी होंगी, इस लिए उनकी मर्दाना

ताक़त भी बढ़ा दी जाएगी। हज़रत ज़ैद बिन अक्रम रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि किताब वालों (यानी यहूदियों) में से एक शरूस रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने सवाल किया कि ऐ अबुल क़ासिम! क्या आप फ़रमाते हैं कि जन्नत वाले खाएंगे और पिएंगे ? आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हां, कसम उस ज़ात की, जिस के कब्जे में मेरी जान है, एक जन्नती को खाने-पीने और (बीवियों से) हम-बिस्तर होने में सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। यह सुन कर उस यहूदी ने सवाल किया कि जो खाता-पीता है, उस को (पेशाब-पाख़ाने की) ज़रूरत होती है इसलिए जब जन्नती खाएं, पिएंगे तो पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत होती होगी, हालांकि जन्नत ऐसी जगह नहीं है, जिसमें कोई चीज़ तक्लीफ़ देने वाला हो। (फिर वहां पेशाब-पाख़ाना जैसी घिनीनी चीज़ कैसे होगी) इसके जवाब में आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया (खाने-पीने के बाद) उन को पाख़ाना-पेशाब करने की ज़रूरत न होगी, बल्कि भरे हुए पेट को खाली करने की ज़रूरत पसीने से (पूरी) हो जाया करेगी (यानी) उन के खानों से मुश्क की तरह पसीना बहेगा जिस से पेट हल्का हो जाएगा।^१

इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नतियों को सौ मर्दों की ताक़त दे दी जाएगी। तिमिज़ी शरीफ़ में भी इस मज़मून की एक हदीस रिवायत की गयी है, जिस को इमाम तिमिज़ी ने सहीह हदीस फ़रमाया है और साथ ही हज़रत ज़ैद बिन अक्रम रज़ि^० की हदीस का भी हवाला दिया है (जो अभी गुज़र चुकी है) जन्नत चूंकि पाकीज़ा जगह है और वहां के मर्द व औरत सब पाकीज़ा होंगे, इसलिए हर तरह गंदगी और घिनीनी चीज़ से बचे होंगे। जिस तरह पेशाब-पाख़ाना की ज़रूरत न पड़ेगी, उसी तरह मनी भी न निकलेगी। जमउल फ़वाइद में मुहद्दिस तदरानी ने मुअज़मुल कबीर से नक़ल किया है कि जन्नती हमबिस्तर भी होंगे (लेकिन) न तो खास अंग में कमज़ोरी आयेगी, न शहवत ख़त्म होगी और न मर्द की मनी निकलेगी, न औरत की।

इस दुनिया की लज़ज़तों में कदूरतें मिली हुई हैं। जन्नत की लज़ज़त में चूंकि कदूरत न होगी, इस लिए बिस्तर और जिस्म को लथेड़ देने वाला माह्दा^२ निकलेगा नहीं और इज़्जाल के वक्त जो लज़ज़त यहां महसूस होती है, उस से कहीं ज़्यादा बढ़-चढ़ कर बग़ैर इज़्जाल के जन्नत में लज़ज़त

१. यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम,

२. अहमद, नसई, ३. गंदगी, गदलापन, ४. पदार्थ.

महसूस होगी और चूँकि जन्नत में हर चीज नफ़स की स्वाहिश के मुताबिक होगी, इस लिए जब तक जी चाहेगा मुवाशरत (हमबिस्तरी करेगा और जब जी चाहेगा छोड़ देंगे।

फायदा—हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन जब जन्नत में बचने की स्वाहिश करेगा तो उसका हमल और बच्चे की पैदाइश और उस की (पूरी) उम्र जो (जन्नत वालों के लिए) मुकर्रर है यानी ३० साल या ३३ साल, यह सब कुछ स्वाहिश के मुताबिक एक घड़ी में हो जाएगा।^१

कुछ इल्म वालों ने फ़रमाया कि जन्नत में जिमाअ होगा (भगर) ओलाद न होगी। ताऊस, मुजाहिद और इब्राहिम नख्शी रह० से यही रिवायत है। इस्हाक बिन इब्राहीम ने ऊपर भी हदीस नक़ल करके फ़रमाया जन्नती ओलाद की स्वाहिश न करेगा। हज़रत अबूरिज़ीन अक्कीली रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इश़ाद रिवायत किया गया है कि जन्नत में जन्मतियों की ओलाद न होगी। (तिमिज़ी)

मतलब यह है कि जन्नत हर स्वाहिश के पूरा होने की जगह है। अगर जन्मतियों में से किसी की स्वाहिश ओलाद होने के लिए होगी, तो स्वाहिश का क़ानून के मुताबिक पूरा हो जाना ज़रूरी होगा, लेकिन चूँकि जन्नत में बच्चों के पैदा होने का सिलसिला मुनासिब न होगा इसलिए जन्नत वालों के दिलों में अल्लाह तआला ओलाद की स्वाहिश पैदा न फ़रमायेंगे। रही यह बात कि जन्नत में बच्चों का पैदा होना क्यों मुनासिब नहीं है, इस की वजह वहीं मालूम हो सकेगी।

जन्नत का बाज़ार

जिसमें दीदीरे इलाही होगी और हुस्न व ज़माल में बढ़ती होगी

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रह० (ताबई) का वयान है कि मैं ने हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात की, उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह से सवाल करता हूँ कि मुझे और तुझे जन्नत के बाज़ार में इक़्ठा

कर दे। हज़रत सईद रह० ने पूछा, क्या जन्नत में बाज़ार (भी) होगा ? हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हाँ, रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बताया है कि बिला शुब्हा जन्नती जब जन्नत में दाख़िल होंगे, तो अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ दर्जों और मंज़िलों में उतरेंगे। उसके बाद दुनिया के दिनों में से जुमा के दिन की मिक्दाद में उनको इजाज़त दी जाएगी कि अपने रब की ज़ियारत करें। पस वे अपने परवरदिगार की ज़ियारत करेंगे। उस वक़्त अल्लाह तआला अपने अर्श को ज़ाहिर फ़रमा देगा और अपना दीदार कराने के लिए जन्नत के एक बड़े बाग़ में ज़ाहिर होगा (जोलोग दीदारे इलाही के लिए जमा होंगे) उनके लिए नूर के और मोतियों के और याक़ूत के और ज़बरजद के और सोमे के और चांदी के मिबर बिछाए जाएंगे (और रुबों के हिसाब से जन्नती उन पर बैठेंगे (नेमतों और नवाज़िशों की वजह से उन में कोई घटिया और कम दर्ज का तो) न होगा (लेकिन) रुब के एतबार से जो सब से कमतर होंगे, मुश्क और ज़ाफ़रान के टीलों पर बैठेंगे और ये टीलों पर बैठने वाले कुर्सियों पर बैठने वालों को अपने से बेहतर स्थान न करेंगे (क्योंकि अगर ऐसा स्थान आ गया कि हम घटिया हैं तो रंज होगा और जन्नत में रंज का नाम नहीं।)

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम अपने परवरदिगार को देखेंगे? फ़रमाया, हाँ, क्या सूरज को और चोदहवीं रात के चांद को देखने में कोई शुब्हा रखते हो? हमने अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया, इसी तरह तुम अपने परवरदिगार को देखने में कोई शक न करोगे और उस मंज़िल में कोई शक़, ऐसा बाक़ी न होगा, जिस से आमने-सामने होकर अल्लाह तआला की बात-चीत न हो, यहाँ तक कि हाज़िर लोगों में से कुछ को मुखातब कर के अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ फ़लां के बेटे फ़लां! क्या तुझे याद है कि फ़लां दिन तूने ऐसा-ऐसा कहा था। इस तरह अल्लाह तआला उस की कुछ वायदा-खिलाफ़ियां याद दिला देंगे, जो उसने दुनिया में की थीं। वह शक़्स अर्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! क्या आपने मुझे बख़्श नहीं दिया? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, हाँ, मैं ने बख़्श दिया और मेरी बख़्शिश ही के फ़ैलाव की वजह से आज तू इस रुब को पहुँचा है? सब लोग इसी हाल में होंगे कि एक बादल आएगा और उन पर छा जाएगा और ऐसी खुशबू बरसाएगा कि उस जैसी खुशबू उन्होंने कभी न पायी होगी। अल्लाह तआला का इश़ाद होगा कि उठो और उस चीज़ की तरफ़ चलो जो मैं ने इज़ज़त को बढ़ाने के लिए तैयार की है और जो तुम को पसंद आये, उस को ले लो, फिर हम

एक बाजार में आएंगे, जिसको फरिश्तों ने घेर रखा होगा। उस बाजार में वे चीज़ें होंगी कि उन जैसी चीज़ों को न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना, न दिलों पर उन का गुजर हुआ, बस जिस चीज़ को हमारा जी चाहेगा, हमारे लिए उठा लिया जाएगा (और यह सब कुछ बगैर मोल-तोल और बगैर कीमत के होगा), क्योंकि वहाँ न बेचा जाएगा, न खरीदा जाएगा।

बात आगे जारी रखते हुए इशाद फरमाया कि इस बाजार में जन्नती एक दूसरे से मुलाकात करेंगे। ऊँचे रुबे का (एक आदमी) किसी कम रुबे वाले से मुलाकात करेगा, हालाँकि अपने-अपने एहसास के मुताबिक उन में कोई कमतर न होगा, तो उस शख्स को बुलंद मर्तबे वाले का लिबास बहुत पसंद आ जाएगा लेकिन अभी उसकी बात खत्म न होने पायेगी कि उसका लिबास उस बुलंद मर्तबा वाले के लिबास से अच्छा मालूम होने लगेगा और यह इस वजह से कि जन्नत में यह मोका नहीं रखा गया है कि कोई शख्स (जरा भी) रंजीदा हो। इस के बाद हम अपने-अपने मकानों को रवाना हो जाएंगे। वहाँ पहुँचने पर हमारी वीवियाँ हमारा स्वागत करेंगी और 'मरहबा व अहलन' के बाद कहेंगी कि तुम उस हुस्न व जमाल को ले कर वापस हुए हो, जो कि उस वक्त न था, जबकि तुम हम से जुदा हुए थे। हम जवाब में कहेंगे कि आज हम ने अपने परवरदिगार के साथ हम नशीनी की इज्जत हासिल की है और हम उसीशान के साथ आने के लायक हैं।

हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशाद फरमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में एक बाजार है जिस में जन्नती हर जुमा को जाया करेंगे वहाँ उत्तरी हवा चलेगी जो जन्नतियों के चेहरों और कपड़ों को खुशबू से भर देगी और उनके हुस्न व जमाल में बढ़ती हो जाएगी। पस वे खूब ज्यादा हसीन व जमील हो कर अपने घर वालों के पास वापस जाएंगे। घर के लोग कहेंगे कि कसम है खुदा की, हमसे जुदा होने के बाद तुम्हारा हुस्न व जमाल बढ़ गया। इसके बाद वे कहेंगे कि खुदा की कसम! हमारे बाद तुम्हारे हुस्न व जमाल में (भी) बढ़ती हो गयी है।

अमीरुल मोमिनीन हजरत अली मुर्तजा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बिला

१. मुबारक हो, मुबारक हो, २. साथ बैठना,

३. तिमिजी शरीफ़. ४. मुस्लिम शरीफ़,

शुब्हा जन्नत में एक बाजार है जिसमें न खरीद है, न फ़रोख्त है। इस में बस मर्दों और औरतों की शक्लें हैं। उन को देख कर जब कोई आदमी चाहेगा कि फ़लां शक्ल मेरी शक्ल हो जाती तो (उसी वक्त) उसकी वह शक्ल बन जाएगी।

जन्नत की सबसे बड़ी नेमत

हजरत सुहैव रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब जन्नती जन्नत में दाखिल हो जाएगा तो (उन्से) अल्लाह तआला सवाल फरमाएंगे, क्या तुम और कुछ चाहते हो, जो मैं तुम को दूँ? वे अर्ज करेंगे कि (हम को और क्या चाहिए, जो आप ने दिया है बहुत कुछ है) क्या आप ने हमारे चेहरे रोशन नहीं कर दिए? और क्या आप ने हम को जन्नत में दाखिल नहीं फरमा दिया? और क्या हमको दोजख से निजात नहीं दे दी? हुजूर अवदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उन के इस जवाब के बाद परदा उठाया जाएगा, इसलिए वह अल्लाह तआला का दोदार न करेंगे। जो कुछ उन को दिया जा चुका होगा, उस सब से बढ़ कर उनके नजदीक अपने परवरदिगार की तरफ़ देखना प्यारा होगा। इस के बाद आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत तिलावत फरमायी—

लिल्लजीन अट्सनुल हुस्ना व ज़ियादतुन^१

हजरत अबूरिजीन अक्रीमी रजि० फरमाते हैं कि मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! क्या क्रियामत के दिन हम में से हर शख्स अपने रब को इस तौर पर देखेगा कि (इतनी भारी भीड़ में एक साथ सब के देखने की वजह से) किसी के देखने में फ़र्क़ न आये? आप ने फरमाया, हाँ, (हर शख्स) खूब अच्छी तरह से देखेगा! मैं ने अर्ज किया कि दुनिया की मख़लूक में इस की कोई मिसाल है? फरमाया कि ऐ अबू रिजीन! क्या चौदहवीं के चांद को तुम में से हर शख्स (पूरी भीड़ में) वे रोक-टोक नहीं देखता है? मैं ने कहा, हाँ, देखता है। फरमाया, चांद अल्लाह तआला की मख़लूक में से एक मख़लूक है, (जिस को एक साथ सब देख लेते हैं और किसीको देखने में कोई रुकावट नहीं होती) और अल्लाह (तो) बहुत ही वुजुर्गतर और बड़ा है (उस को एक ही वक्त में सब क्यों न देख सकेंगे)।

१. तिमिजी शरीफ़, २. मुस्लिम शरीफ़, ३. अबूदाऊद,

हजरत जाबिर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि इस बीच में कि जन्नती अपनी नेमतों में होंगे, अचानक ऊपर से एक नूर रोशन होगा, चुनांचे सरो को ऊपर उठाएंगे। अचानक क्या देखते हैं किउन के ऊपर परवरदिगारे आनम (जल्लमज्जुह) हैं। इन हजरात के देखने पर रब तबारक व तआला फरमाएंगे कि 'अस्सलामु अलैकुम या अहलल जन्नति, (ऐ जन्नतियो ! तुम पर सलाम हो !) बात आगे बढ़ते हुए फरमाया कि (कुरआन में) जो अल्लाह जल्ल शानुह ने 'सलामुन कोलम मिर्रव्विरहीम' फरमाया है। इसमें इसी का जिक्र है। इसके बाद फरमाया कि (सलाम के बाद) अल्लाह तआला शानुह जन्नतियों को और जन्नती अपने परवरदिगार को देखते रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह तआला परदे में हो जाएंगे और उसका नूर बाक़ी रह जाएगा।

आहजूरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फरमाया कि जन्नती जब तक अपने रब को देखते रहेंगे, दूसरी किसी भी नेमत की तरफ़ ध्यान न देंगे।^१

हजरत इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि जन्नत में रूखे के एतबार से मामूली शरूब वह होगा जो अपने वाशों और तख्त और बीवियों और खिदमत गुजारों और (दूसरी) नेमतों को एक साल की दूरी में फेंका हुआ देखेगा (यानी ये चीज़ें इतनी दूरी में फेंकी हुई होंगी कि दुनिया में कोई आदमी चीज़ों को देखने के लिए निकले तो हजार वर्ष तक चलता रहे) और अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे बड़े रूखे का जन्नती वह होगा जो सुबह-शाम दीदार इलाही का शर्फ़ हासिल करेगा। इसके बाद आप ने यह तिलावत फरमायी 'वजुह्यौ म इजिन नाज़िर तुन इला रन्विहा नाज़िरतुन' (बहुत से चेहरे उस दिन (तरोताज़ा) खुश होंगे, अपने रब की तरफ़ देखते होंगे)।^१

यह सूरः क्रियामः की आयत है। इस की तिलावत से दीदारे इलाही को कुरआन शरीफ़ से साबित करना मक्सूद है। एक हदीस में है कि मामूली दर्जे का जन्नती अपने मुल्क को दो हजार साल की दूरी में फेंका हुआ देखेगा और उसके आखिरी हिस्से को (बे-तेकल्लुफ़ बिल्कुल) उसी तरह देखता होगा जिस तरह उसके करीब वाले हिस्से को देखता होगा।^१

हदीस शरीफ़ में छोटे और ऊंचे जन्नती के मर्तबे का जिक्र है, उसके

१. इब्ने माजा, २. तिर्मिज़ी शरीफ़, ३. अत्तर्गीब वत्तर्हीब,

दमियान में और खुदा जाने कितने दर्जे होंगे और मर्तबों के एतबार से कितनी नेमतों से माला माल होंगे। दीदारे इलाही तो सब ही जन्नतियों को नसीब होगा, लेकिन सबसे ज्यादा एजाज़ व इकराम जिसका होगा, उसको यह सआदत नसीब होगी कि सुबह-शाम दीदारे इलाही से नवाज़ा जाएगा (जअल्लाहु मिन्हुम)

फ़ायदा—अल्लाह तआला को दुनिया में नहीं देख सकते, जन्नत में मोमिन लोग देखेंगे और काफ़िर व मुनाफ़िक़ इस नेमत से मह-रूम होंगे, जिससे बढ़ कर कोई नेमत नहीं, यहां यह जान लेना जरूरी है कि अल्लाह तआला जिस्म और जेहत (दिशा) से پاک है। अल्लाह को जन्नती देखेंगे, यह हक़ है, जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है, लेकिन कैफ़ियत^१ मालूम नहीं।

गुनाहगार मुसलमानों का दोज़ख से निकल कर जन्नत में दाखिल होना

भारी तायदाद में वे मुसलमान भी दोज़ख में चले जाएंगे, जो बड़े बड़े गुनाह करते थे। यह तो जरूरी नहीं है कि बड़े गुनाहों का हर करने वाला दोज़ख में जरूर ही जाए, क्योंकि अल्लाह तआला बहुतों को बरूश देंगे और दोज़ख में डालने से बचाये रख लेंगे और यह भी जरूरी नहीं है कि सब ही बरूश दिए जाएं, क्योंकि रिवायतों से साबित होता है कि बहुत से गुनाहगार मुसलमान दोज़ख में जाएंगे और फिर सज़ा भुगत कर दोज़ख से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिए जाएंगे। जन्नत से कभी कोई न निकलेगा, न निकाला जाएगा और दोज़ख से गुनाहगार मुसलमानों को निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा। और दोज़ख में सिर्फ़ मुशिरक व काफ़िर ही रह जाएंगे, जो हमेशा दोज़ख में रहेंगे—

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

वल्लज़ी न क़ रू व कज़ज़बू बिआयातिना उलाइ क अस्हाबुन्नारि हुम फ़ीहा खालिदून०

बुखारी व मुस्लिम में हजरत अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फरमाया कि दोज़ख की पीठ पर पुल सिरात रख दी जाएगी और रसूलों में से अपनी उम्मत को लेकर, सबसे पहले मैं उसके ऊपर से गुज़रूंगा। उस

१. स्थिति,

दिन रसूलों के सिवा कोई न बोलता होगा और उनका बोलना उस दिन यह होगा कि 'अल्लाहुम्म सल्लिम-सल्लिम' (ऐ अल्लाह ! सलामत रख, सलामत रख) और दोज़ख में सादान' के कांटों की तरह वड़ी-वड़ी संडा-सियां होंगी, जिनकी बड़ाई का अल्लाह ही को इल्म है। (इन संडासियों के सर जंबूर की तरह मुड़े हुए होंगे और दोज़ख से निकल-निकल कर) लोगों को उनके (बद) आमाल की वजह से उचक रही होंगी, पस उनके उचकने की वजह से कोई तो (पुल सिरात से दोज़ख में गिर कर) हलाक हो जाएगा, (ये काफ़िर होंगे) और कोई कट कर दोज़ख में गिर जाएगा, फिर बाद में निजात पाएगा (ये गुनाहगार मुसलमान होंगे)। यहां तक कि जब अल्लाह तआला अपने बंदों के दर्मियान फ़सला फ़रमा कर फ़ारिग हो जाएगा और 'ला इला ह इल्लल्लाहु' की गवाही देने वालों को दोज़ख से निकालने का इरादा फ़रमाएगा, तो फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि जो शख्स अल्लाह को पूजता था, उसको निकाल लो। चुनांचे ऐसे लोगों को फ़रिश्ते निकाल लेंगे और उनके सज्दों के निशानों से पहचानेंगे (क्योंकि) अल्लाह तआला ने दोज़ख की आग पर यह हराम फ़रमा दिया है कि सज्दे के निशानों को जलाए (जो माथे पर होते हैं)।

चुनांचे ये लोग दोज़ख से निकाल लिए जाएंगे, जो जल-भुन चुके होंगे। दोज़ख से निकाल कर उन पर आवेहयात (जीवन-अमृत) डाल दिया जाएगा, जिसकी वजह से वे इस तरह उग जाएंगे जैसे बहते हुए पानी के घास-तिन्के पर (जल्द से जल्द) बीज उग जाता है। मतलब यह है कि यकायकी उनकी हालत ही बदल जाए और एक दम भले-चंगे खूब-सूरत हो जाएंगे।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़ूरे अब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश्राद फ़रमाया कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख वाले दोज़ख में दाखिल हो जाएंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर (भी) ईमान हो, उसको दोज़ख से निकाल लो, चुनांचे निकाल लिए जाएंगे, जो जल कर कोयला हो चुके होंगे, इसलिए उनको फिर नहरूल ह्यात' में डाल

१. सादान अरब के एक पेड़ का नाम है, २. मिश्कात शरीफ़,

३. नहरूल ह्यात पानी ज़िंदगी की नहर। पहली रिवायत से मालूम हुआ कि उन पर 'आवे ह्यात' डाला जाएगा और इस रिवायत से मालूम हुआ कि वे 'नहरूल ह्यात' में डाल दिए जायेंगे, लेकिन यह इस्तिलाफ़ हकीकती नहीं है। दोनों बातें एक ही हैं, जब नहर में पूरा गोता दे दिया जाएगा तो उनका नहर

दिया जाएगा।'

एक हदीस में है कि वे हज़रात मोती की तरह नहरूल ह्यात में निकल कर जन्नत में दाखिल होंगे।'

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अब्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गुनाह करने की सज़ा में बहुत से लोगों को (दोज़ख की आग) के झुलसने का असर पहुंचेगा, फिर अल्लाह तआला अपने फ़रल व रहमत से जन्नत में दाखिल फ़रमा देंगे, पस उनको 'जहन्नमियों' कहा जाएगा।

इन हज़रात को जहन्नमियों कहना इनकी बुराई करने के लिए न होगा, बल्कि अल्लाह तआला की रहमत और मेहरबानी याद दिलाने के लिए होगा ताकि दोज़ख की तबलीक़ को याद करके जन्नत के लुफ़्त में बढ़ती होती रहे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अब्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश्राद फ़रमाया कि दोज़ख में दाखिल होने वालों में से दो शख्स बहुत चीख व पुकार शुरू कर देंगे। अल्लाह तआला हुक्म देंगे कि इनको निकाल लो, फिर उनसे फ़रमायेंगे कि तुम दोनों इतना ज़्यादा क्यों चीख रहे हो? वे अर्ज़ करेंगे कि हमने इसलिए किया कि आप हम पर रहम फ़रमाएं। अल्लाह जल्ल शानुह का इश्राद होगा कि वेशक मेरी रहमत तुम्हारे लिए यह है कि दोज़ख में जिस जगह थे, वही (वापस) जाकर अपनी जानों को डाल दो। चुनांचे उनमें से एक अपनी जान को दोज़ख में डाल देगा, जिस पर अल्लाह तआला दोज़ख को ठंडा और सलामती वाला बना देगा और दूसरा शख्स रह जाएगा जो अपने को दोज़ख में न डालेगा। उससे अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि तुझे इस चीज़ से किसने रोका कि तू अपने को दोज़ख में डाले? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! मैं उम्मीद करता हूँ कि जब मुझे आपने दोज़ख से निकाल दिया तो अब उसमें वापस न करूँगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, (जा) तेरी उम्मीद पूरी कर दी गई। इसके बाद दोनों शख्स अल्लाह की रहमत से जन्नत में दाखिल कर दिए जाएंगे।'

में डाला जाना भी सही हुआ और उन पर पानी का पड़ना भी सही हुआ।

१. अल-हदीस, बुखारी व मुस्लिम, २. वही, ३. तिमिज़ी,

जन्नत में सबसे आखिर में जाने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्कूद रज़ियल्लाहु अन्हु का वयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि मैं उस शख्स को अच्छी तरह जानता हूँ जो सबसे आखिर में दो ज़ख से निकलेगा और जन्नत में जाने वालों में सबसे आखिरी होगा। यह शख्स पेट के बल घसीटता हुआ दो ज़ख से निकलेगा। पस हक़ तआला फ़रमाएगा कि जा, जन्नत में दाखिल हो जा। वह जन्नत के पास आएगा तो उस को ऐसा मालूम होगा कि भरी हुई है, (कहीं जगह नहीं), अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! मैंने इसे भरी हुई पाया (जगह तो नहीं फिर अंदर कैसे जाऊँ ?) हक़ तआला फ़रमाएगा कि जा जन्नत में दाखिल हो जा। (तुझे) दुनिया के बराबर जगह दी गई और उसी क़दर दस गुना जमीन और दी। यह सुनकर वह अर्ज़ करेगा, क्या आप मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं, हालांकि आप (सबके) बादशाह हैं। (हज़रत इब्ने मस्कूद रज़ियल्लाहु अन्हु का वयान है कि) मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा (कि यह फ़रमाकर) हंसे, यहां तक कि आप की आखिरी दाढ़ें जाहिर हो गयीं, (कि बेचारा इतनी भारी देन को, जिसका उसने कभी सपना भी नहीं देखा था, मज़ाक़ समझा) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्कूद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के माहौल में यह बात कही जाया करती थी कि यह शख्स सबसे कम दर्जे का जन्नती होगा, जो सबसे आखिर में दाखिल होगा और दुनिया और दुनिया जैसी दस गुनी जगह पा ली।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्कूद रज़ियल्लाहु अन्हु से आखिरी जन्नती के दाखिले का वाक़िआ इससे ज़्यादा तफ़्सील के साथ भी रिवायत किया गया है, फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि सबसे आखिरी शख्स जो जन्नत में जाएगा, वह होगा, जो दो ज़ख से निकलने की हिम्मत करके (कभी) पांव चलेगा और कभी गिर पड़ेगा और कभी उसको आगे की लपट झुलसेगी। पस जब (गिरता-पड़ता) दो ज़ख से निकल कर आगे बढ़ जाएगा, तो उसकी तरफ़ देख कर कहेगा कि बरक़त वाला है (वह सबसे बड़ा खुदा), जिसने मुझे तुझ से

निजात बरूशी। सच तो यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे वह नेमत दी है जो पहलों-पिछलों में से किसी को भी न दी। इसके बाद एक पेड़ के करीब कर दीजिए, ताकि उसका साया हासिल करूँ और पानी पियूँ (जो इसके नीचे वह रहा है)। हक़ तआला फ़रमाएगा, अर्ज़ नही, अगर मैं तुझे यह नेमत दे दूँ तो इसके बाद तो और कोई दरख़वास्त करने लगे ? वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! नहीं ऐसा न करूँगा और अहद करेगा कि इसके बाद और कुछ न मांगूँगा और अल्लाह उसको मजबूर समझेगा (कि इस वक़्त उसकी नोयत यही है, मगर निवाह न सकेगा) क्योंकि उसको वह चीज़ नज़र आयेगी, जिसके बिना सन्न ही न कर सकेगा, चुनांचे उसको पेड़ के करीब कर दिया जाएगा, वह उसके साए में बैठेगा और पानी पिएगा। इसके बाद उसकी नज़र के सामने दूसरा पेड़ बुलंद कर दिया जाएगा जो पहले पेड़ से बहुत अच्छा होगा। पस (उस पर नज़र पड़ेगी तो) अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! मुझे उसके नज़दीक पहुंचा दे, ताकि उसके नीचे बहने वाला पानी पियूँ और उसके साए में बैठूँ (और उसके अलावा आप से कुछ न मांगूँगा।) इशार्द होगा कि ऐ इब्ने आदम ! क्या तू ने मुझ से अहद नहीं किया था कि और कुछ मांगूँगा और अर्ज़ नही, अगर मैं तुझे उसके करीब कर दूँ तो फिर और कुछ मांगने लगे ? पस वह अहद करेगा कि इसके सिवा और कुछ न मांगूँगा। अल्लाह तआला उसको मजबूर कहेगा, क्योंकि इसके बाद उस चीज़ पर नज़र पड़ेगी, जिस के बग़ैर सन्न ही न कर सकेगा, पस उस पेड़ के पास अल्लाह तआला पहुंचा देगा और वह उसका साया लेगा, और पानी पिएगा। इसके बाद जन्नत के दरवाज़े के करीब एक पेड़ उस के सामने कर दिया जाएगा, जो पहले दोनों पेड़ों से ज़्यादा खूबसूरत होगा। पस वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब ! मुझे उस पेड़ के करीब पहुंचा दीजिए ताकि उस का साया ले लूँ और पानी पी लूँ। इसके सिवा आप से कुछ न मांगूँगा। इशार्द होगा कि ऐ इब्ने आदम ! क्या तूने मुझ से पक्का वायदा न किया था कि और कुछ न मांगूँगा। अर्ज़ करेगा, बेशक ! ऐ रब अहद किया था (मगर इस बार और सवाल पूरा कर दीजिए) इसके सिवा आपसे कुछ न मांगूँगा और हक़ तआला उसे मजबूर कहेगा, क्योंकि उसे वह चीज़ नज़र आयेगी जिसके बग़ैर सन्न कर ही न सकेगा। चुनांचे उस पेड़ के करीब कर दिया जायेगा, जब उसके करीब हो जायेगा तो जन्नतियों की आवाज़ें सुनाई देंगी (फिर ललचाएगा) और कहेगा कि ऐ रब ! मुझे इसके अंदर पहुंचा दीजिए। इशार्द होगा कि ऐ इब्ने आदम ! आखिर

तेरा सवाल करना किसी तरह खत्म भी होगा ? क्या तू इससे राजी होगा कि तुझे दुनिया के बराबर और दे दूँ और उसके साथ उतना ही और दे दूँ। वह अर्ज करेगा, आप मुझ से मजाक़ फ़रमा रहे हैं, हालाँकि आप रब्बुल आलमीन हैं ? इस वाक़िए को बयान करते हुए हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० हंसे और (हाज़िर लोगों से) फ़रमाया कि तुम मुझ से मालूम नहीं करते कि मैं किस लिए हूँसा ? हाज़िर लोगों ने अर्ज किया, फ़रमाइए आप क्यों हंसे ? फ़रमाया कि इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (इस हदीस को बयान करके) हंसे थे। सहाबा रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप क्यों हंसे ? फ़रमाया कि अल्लाह के हंसने पर मुझे हंसी आ गयी, जबकि बन्दे ने कहा, क्या आप मुझसे मजाक़ फ़रमाते हैं, हालाँकि आप पूरी दुनिया के रब हैं। हक़ तआला फ़रमाएंगे कि मैं तुझ से मजाक़ नहीं करता (बल्कि वाक़ई तुझे इतना ही दिया) मैं जो भी चाहूँ उस पर क़ुदरत रखता हूँ।

यह वाक़िआ क़रीब-क़रीब इसी तरह हज़रत अबू हु़रैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी रिवायत है। हज़रत अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के आख़िर में है कि (वह शस्स बार-बार अपने अह्द तोड़कर आख़िरकार जब जन्नत में दाख़िल हो जाएगा तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जो तेरी आरजू हो, ले ले (वह आरजूएँ जाहिर करता जाएगा और मुराद पाता जाएगा) यहाँ तक कि उसकी आरजूएँ खत्म हो जाएंगी। अल्लाह तआला इशार्द फ़रमाएंगे कि (और) तमन्ना कर ले (देख) फ़लां नेमत रह गयी है (उस) की आरजू कर ले (और) फ़लां चीज़ (बाक़ी है उस) की तमन्ना कर ले। इस तरह से अल्लाह तआला उसको आरजूएँ याद दिलाते जाएंगे (और हर आरजू पूरी करते रहेंगे) यहाँ तक कि (जब) आरजूएँ खत्म हो जाएंगी (तो) अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जो कुछ तूने तमन्नाएँ की हैं, वह सब तुझको दिया, और इतना ही और दिया।^१

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि अल्लाह जल्ल शानुह उससे फ़रमाएंगे कि तूने जो-जो कुछ तमन्नाएँ की हैं, वह सब तुझे दिया और उसका दस गुना और दिया। इसके बाद अपने (जन्नती) घर में दाख़िल होगा तो हरे ईन में से उसको दो बीवियाँ उस के पास आएंगी और कहेंगी 'अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्या क लना व अह्याना ल क' सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमारे लिए

१. मुस्लिम शरीफ़, २. मिश्कात (बुख़ारी और मुस्लिम से)

तुझको जन्नत दी, हमेशा की ज़िंदगी बरूश दी और जिसने हम को तेरे लिए ज़िन्दगी दी, वह शस्स कहेगा कि जो कुछ मिला है, किसी को भी नहीं मिला।^१

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा सब से आख़िरी शस्स जो जन्नत में जाएगा, उससे परवर-दिगार फ़रमायेंगे कि खड़ा हो, जन्नत में दाख़िल हो जा ! यह सुन कर वह शस्स गुरसे की तरह मुँह बना कर कहेगा कि (जन्नत में जगह है कहां कि दाख़िल हो जाऊँ ?) मेरे लिए आपने कुछ बाक़ी रखा भी है ? अल्लाह जल्ल शानुह फ़रमाएंगे कि हाँ (तेरे लिए बहुत कुछ है) जितने फ़ैज़ाव और दूरी पर सूरज निकलता या छिपता है, उतना ले ले।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ने इशार्द फ़रमाया कि सबसे कम दर्ज का जन्नती वह होगा, जिसके लिए अस्सी हज़ार खादिम और बहत्तर बीवियाँ होंगी और इसके लिए मोतियों और ज़बरजद व याक़ूत से बनाया हुआ एक कुब्बा होगा, जिस की लंबाई-चौड़ाई इतनी होगी, जितनी जाबिया की जगह से सुन्ना तक की दूरी है। इन दोनों जगहों में मीलों का फ़ासला है।^१

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि बिला शुब्हा मैं उस शस्स को जानता हूँ जो सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा और सबसे आख़िर में दोख़ज़ से निकलेगा, इस शस्स को क्रियामत के दिन लाया जाएगा और कहा जाएगा कि उसके सामने उसके छोटे गुनाह पेश करो और बड़े गुनाहों को छिपाए रखे रहो, चुनांचे उसके छोटे गुनाह उस पर पेश किए जाएंगे और कहा जाएगा कि तूने फ़लां दिन फ़लां-फ़लां अमल किया था। वह इकरार करेगा, इंकार न कर सकेगा और (दिल ही दिल में) डरता रहेगा कि कहीं मेरे बड़े गुनाह न पेश कर दिए जाएँ। पस उससे कहा जाएगा कि (जा) तेरे लिए हर गुनाह के बदले एक नेकी है (यह बश्शिश और नबाज़िश देख कर) वह कह उठेगा कि ऐ रब ! मैंने और बहुत से गुनाह किए हैं जिन को यहाँ (फ़िहरिस्त में) नहीं देख रहा हूँ (उनके बदले में भी एक-एक नेकी मिलना चाहिए)। राबी बयान करते हैं कि मैंने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि इस बात को बयान फ़रमाते हुए आपको हंसी आ गयी जिससे आपकी मुबारक दाढ़ें जाहिर हो गयीं।^१

१. मिश्कात (मुस्लिम), २. तिमिज़ी, ३. मुस्लिम शरीफ़,

पास हमेशा रहने की जन्नतें हैं, जिन के नीचे नहरें जारी होंगी। इन में वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राजी और वे अल्लाह से राजी रहेंगे। (यह जन्नत व रजामंदी) उस के लिए है जो अपने रब से डरता है।)

यह जो फरमाया कि वे अपने रब से राजी होंगे, उस का मतलब यह है कि अपने परवरदिगार की दी हुई नेमतों में मगन होंगे, हर स्वाहिश पूरी होगी। अल्लाह जल्ल शानुह की देन पर दिल की गहराई से खुश और शुरु गुजार होंगे, किसी चीज की कमी न होगी।

सूरः दुखान में इर्शाद फरमाया—

يَنْعَمُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ لَا يَأْتِيهِمُ الْيَأْسُ وَالْهُوْنُ الْيَأْسُ وَالْهُوْنُ
الْأُولَى وَوَدَّعَاهُ عَنْ آبِ الْجَحِيمِ فَضَلَّ عَنْ رَيْبِكَ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

الْعَظِيمُ

यद्भू न फ्रीहा बिकुल्लि फाकिहतिन आ मि नी न ला यजूकून फ्रीहल मौ त इल्लल मौततल ऊला व वज़ाहुम अज़ाबल जहीमि० फ़ल्लम मिररिबि क ज़ालि क हुवल फ्रीजुल अजीम०

‘उस में अन्न-चैन से हर क्रिस्म के भेवे मंगते होंगे (और) वहां मौत का मजान चखेंगे। वह पहली मौत जो दुनिया में आ चुकी (उस के बाद मौत न होगी) और अल्लाह उनको दोजख के अज़ाब से महफूज़ रखेगा यह मेहरबानी है तेरे रब की तरफ़ से, बड़ी कामियाबी यही है।’

एक हदीस में है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि (जब) अल्लाह तआला जन्नतियों को जन्नत में और दोजखियों को दोजख में दाखिल फरमा चुकेगा (और दोजख में ऐसा कोई शख्स न रहेगा, जिसे सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में जाना हो) तो एक एलान करने वाला जोर से पुकार कर एलान कर देगा कि ऐ जन्नत वालो ! मौत नहीं और ऐ दोजख वालो ! मौत नहीं ! हर एक को उसी में रहना है, जिसमें अब है।^१

हज़रत जाविर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख्स ने सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या जन्नती सोएंगे ? आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि नींद मौत का भाई है और जन्नतियों को मौत न आयेगी (इस लिए नींद भी न आयेगी)^२

रोग या कमजोरी या थकन और मेहनत करने की वजह से नींद

१. तर्गीब (बुखारी व मुस्लिम), २. मिशकात धरीफ़,

आती है, चूँकि जन्नत में न मेहनत है, न मर्ज, न थकन है, न कमजोरी, इस लिए नींद आने की ज़रूरत न होगी, न नींद का तक्राजा होगा, दुनिया में भी नींद असली मक्सद नहीं है, चूँकि थकन के बाद सो जाने से तबियत हल्की हो जाती है और इंसान मुस्तैद हो जाता है, इसलिए नींद को पसंद करता है। अगर नींद न आये तो दवा खा कर नींद लाने की कोशिश की जाती है, लेकिन जहां थकन ही न होगी, वहां सोना पसंद न होगा, क्योंकि अगर सो जाएं तो जितनी देर सोएंगे, खामखाह उतनी देर नेमतों से महरूम रहेंगे।

**जन्नत में वह सब कुछ होगा,
जिसकी चाह होगी**

सूरः जुलुफ़ में फरमाया—

وَفِيهَا مَا كُنْتُمْ حَائِلِينَ وَالْأَعْيُنُ وَالْأَنْفُ وَالْأُذُنُ وَالْأَبْصَارُ وَالْأَبْصَارُ وَالْأَبْصَارُ

व फ्रीहा मा तशतहीहिल अन्फुमु व त लब्बुल अन्नयुनु व अन्तुम फ्रीहा खालिदून०

‘और वहां वह है नपसों को जिसकी स्वाहिश होगी और जिससे आंखों को लज्जत होगी और उन से कह दिया जाएगा, तुम उस में हमेशा रहने वाले हो।’

जब सब कुछ नपस की स्वाहिश के मुताबिक होगा, तो किसी तरह की रूह या जिस्म की तक्लीफ़ का नाम भी न होगा। दुनिया में कोई शख्स जितना भी बड़ा हो जाए, बहरहाल उसको तबियत के खिलाफ़ बातें पेश आती हैं, कोई कैसा भी दोलतमंद हो और कितना ही बड़ा बादशाह हो, हर स्वाहिश पूरी नहीं होती, न यह दुनिया इस क़ाबिल है कि इसमें हर स्वाहिश पूरी हो जाए, पाखाना जाने को किस की स्वाहिश होती है, मगर मजबूर हो कर हर शख्स को जाना पड़ता है।

यह जन्नत ही में नवाज़िश होगी कि नपस की स्वाहिश के खिलाफ़ कुछ भी न होगा। ‘व लकुम फ्रीहा मा तशतही अन्फुमुकुम व लकुम फ्रीहा मा तद्भून०’ का एलान कर दिया जाएगा।

**जन्नती न जन्नत से निकाले जाएंगे न
खुद वहां से कहीं पसंद करेंगे**

सूरः हिच्च में इर्शाद है—

لَا يَسْتَأْذِنُ فِيهَا النَّصَبُ وَمَا هُمْ فِيهَا بِمُخْرَجِينَ ۝

ला यमस्सुहुम फ्रीहा न सबु'ब्ब मा हुम मिन्हा विमुल्लजीन०
'न उन को ज़रा कोई तक्लीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे।'

सूरः कहफ़ के आखिर में फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ

الْفُؤَادِ مِنْ تَحْتِ الْأَرْضِ فِيهَا لَا يَدْخُلُونَ عَنْهَا جُلُودٌ

जन्नतलजी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति कानत लहुम जन्नातुल
फ़िदौसि नुजुलन खालिदी न फ्रीहा ला यद्गू न अन्हा हि व ला०

'बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन की मेहमानी के लिए फ़िदौ'स (यानी वहिश्त) के वाग़ होंगे, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, वहां से कहीं जाना न चाहेंगे।'

चूँकि कोई तक्लीफ़ ही न होगी और हर स्वाहिश पूरी की जाएगी, इस लिए वहां से कहीं जाने को जी न चाहेगा और न कहीं जाने की ज़रूरत होगी। सब कुछ वहीं मौजूद होगा, करोड़ों और अरबों मील जन्नत का फ़ैलाव होगा, आपस में मिलना-जुलना होगा, और बे-तकलुफ़ी होगी, नाते-रिश्तेदार दोस्त-अह्बाब सब वहीं मौजूद होंगे, कायनात का पैदा करने वाला राज़ी होगा, फिर इस शकल में वहां से बाहर जाने का इरादा करना बेकार है।

अल्लाह की तरफ़ से रज़ामंदी का एलान

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियाल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक अल्लाह जन्नत वालों से फ़रमाएंगे कि ऐ जन्नत वालो ! वे अर्ज़ करेंगे कि लव्वेक रब्बना व सअदैक वल खैरु फ़ी यदैक (ऐ रब ! हम हाज़िर हैं और हुक्म पूरा करने के लिए मौजूद हैं और सब भलाई आप ही के क़ब्ज़े में है) इस के बाद अल्लाह जल्ल शानुहू उन से मालूम करेंगे, क्या तुम राज़ी हो ? वे अर्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार ! जब कि आप ने हम को वह-वह नेमतें दी हैं जो अपनी मल्लूक में से और किसी को नहीं दी, तो इस के बावजूद हम राज़ी क्यों नहीं होते ? अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाएंगे, क्या तुम को इस से (भी) अपज़ल नेमत दे दूँ ? वे अर्ज़ करेंगे कि (या अल्लाह !) इस से अपज़ल और क्या होगा ? इस के जवाब में अल्लाह शानुहू फ़रमा-

एंगे कि खूब समझ लो, मैं हमेशा के लिए तुम पर रज़ामंदी न बोल करता हूँ, पर कभी भी तुम से नाराज़ न हूंगा।'

जन्नत में जो कुछ होगा, उस से बढ़ कर यह होगा कि अल्लाह तआला उन से राज़ी होंगे और हमेशा के लिए अपनी रज़ामंदी का एलान फ़रमा देंगे। एक शरीफ़ गुलाम के लिए सबसे बड़ी नेमत यह है कि आका उस का राज़ी हो, अगर सब कुछ मौजूद हो और आका नाराज़ हो या उस की नाराज़ी का डर हो, तो नेमतों के इस्तेमाल से कुद्वन होनी है और तबियन में परेशानी रहती है। अल्लाह जल्ल शानुहू अपनी रज़ामंदी का एलान फ़रमा कर जन्नतियों को हमेशा के लिए मुन्मइन फ़रमा देंगे कि हम तुम से हमेशा के लिए राज़ी हैं। इस एलान पर जो खुशी होगी, इस दुनिया में उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती है। 'व रिज्वानुम मिनल्लाहि अक्वरु' क़ुरआन शरीफ़ में जगह-जगह 'रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु' का एलान फ़रमाया है, जिस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला जन्नतियों से राज़ी होंगे और जन्नती अल्लाह तआला से राज़ी होंगे यानी वहां किसी भी चीज़ की कोई कमी न होगी, दिलों पर किसी बात का ज़रा भी मँल न आएगा, जो कुछ भी मिला होगा, उस से नफ़स राज़ी होगी, अल्लाह तआला की देन और इनाम व इक्राम पर दिल व जान से खुश होंगे। जअल्लाहु मिन्हुम०

जन्नत के दर्जे

हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख्स ईमान लाया और नमाज़ कायम की और रोज़े रखे, तो उस के लिए यह ज़रूरी है कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाखिल फ़रमाएंगे, अल्लाह के रास्ते में हिज़रत करे या उसी ज़मीन में क्रियाम किए रहे जहां पैदा हुआ है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! क्या हम इस की खुशखबरी लोगों को सुना दें ? आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिए तैयार फ़रमाए हैं। हर दो दर्जे के दमियान इतना फ़ासला

१. बुखारी व मुस्लिम.

२. तिर्मिज़ी की रिवायत में हज़ और ज़कात का भी ज़िक्र है.

है, जितना कि आसमान व जमीन के दमियान है, उस जव तुम अल्लाह से सवाल करो तो फ़िदौस का सवाल करो, क्योंकि वह जन्नत का सब से बेहतर और बुलंद दर्जा है और उस के ऊपर रहमान का अर्थ है और इस से जन्नत की (चारों) नहरें फूटती हैं।^१

साहिबे फ़तहल बारी लिखते हैं कि इस हदीस में मानूम हुआ कि जन्नत में सौ दर्जे अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के लिए हैं, (लेकिन) इस में उस का इन्कार नहीं है कि ग़ैर-मुजाहिदों के लिए इस सौ दर्जों के अलावा दूसरे दर्जे हों जो मुजाहिदों के दर्जों से कम हों।^२ इस हदीस को बुखारी ने 'किताबुत्तीहीद' में भी जिक्र किया है। वहां साहिबे फ़तहल बारी लिखते हैं कि मिश्रनु दर जतन (यानी सौ दर्जे) जो फ़रमाया है, उस के कहने का ढंग यह नहीं है कि जन्नत के दर्जे सौ ही हैं, क्योंकि सौ दर्जों के जिक्र से सौ से ज्यादा का इन्कार नहीं होता है और इस की ताईद इस हदीस से होती है, जिस की रिवायत अबू दाऊद और निमिजी और इब्ने हब्बान ने की है कि—

يقال لصاحب القرآن اقرأ واسأف ورسلكم كانت شريفة الدنيا
فان منزلتك عند آخر اية تقرأها قال الترمذي حديث حسن صحيح

युक्ता लु लि साहिबिल कुरआन इक़रम् व इन्कि व रत्तिल कमा कुन्त तुरत्तिलु फ़िदुन्या फ़ इन्न मंजिलत क अन्द आखिरि आयतिन तक्र उहा (कालनिमिजी हदीसुन हसनुन सहोहुन)

'कुरआन वाले से (क्रियामत के दिन) कहा जाएगा कि पढ़ता जा और इस तरह तर्तील के साथ तिलावत करता जा, क्योंकि तेरी मंजिल वही है जहां तू आखिरी आयत पढ़ कर खत्म करे।'

इस हदीस से मालूम हुआ कि साहिबे कुरआन (यानी कुरआन की तिलावत से लगाव रखने वाला) जितनी आयतें पढ़ता जाएगा, उतना ही चढ़ता जाएगा और कुरआन शरीफ़ की आयतें ६२०० तो सब के यहां हैं और वक्फ़ व वसल के मौकों में इस्तिलाफ़ होने की वजह से। इस तायदाद पर जो ज्यादाती है, उस में इस्तिलाफ़ हो गया है। बहरहाल यह तो मालूम हुआ कि जन्नत के दर्जे कुरआन की आयतों के बराबर जरूर हैं।

१. बुखारी शरीफ़,

२. फ़तहल बारी, किताबुन जिहाद,

जन्नत के बालाखाने

सूर: फ़ुकन में इशदि है—

أُولَئِكَ يُجْرُونَ أَعْرَافَهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَيُفْتَنُونَ فِيهَا خَيْبَةً وَسَلَامٌ لَهُمْ وَلَهُمْ فِيهَا حَسَنَاتٌ مُسْتَقَرٌّ وَمَقَامٌ غَامٍ

उलाइ क युज्जोनल गुफ़्त बिगा सब रूव युलक्को न फ़ीहा तथीयतव्व सजामन खालिदी न फ़ीहा हमुनत मुस्तकरर व्व मुकामा०

ऐसे लोगों को (जिन का शुरू शुरू से जिक्र चला आ रहा है, बालाखाने (कोठे) मिलेंगे, उन के जमे रहने की दजह से और (फ़रिश्तों की तरफ़ से) बक्का की दुआ और सलाम मिलेगा और इस में वे हमेशा रहेंगे। वह क्या ही अच्छा ठिकाना है और ठहरने की जगह है।

सूर: जुमर में फ़रमाया—

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرُوفٌ مِنْ غُرُوفٍ مَبْنُوتَةٍ لَمْ يَدْخُلْ فِيهَا مِنْ شَيْءٍ مِنْ دُخَانٍ

ला कि निल्लजी न तकी रब्बहुम लहुम गु र फ़ुम मिन फ़ीकिहा गु र फ़ुम मन्नीयतुन तजरी मिन तह्तिहल अन्हा०

'लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उन के लिए कोठे हैं, जिन के ऊपर और कोठे हैं जो बने-बनाये तैयार हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं।'

हजरत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजुरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फ़रमाया कि बेसक जन्नती अपने ऊपर कोठे वालों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम उस रोशन सितारे को देखते हो जो (सुबह को पौ फटने के बाद) आसमान के पूर्वी या पच्छिमी किनारे पर बाक़ी रह जाता है और यह मंजिलों का फ़र्क़ उन के आपसी किनारे पर बाक़ी रह जाता है और यह मंजिलों का फ़र्क़ उन के आपसी मर्तबों के फ़र्क़ की वजह से होगा (कि बुलंद मर्तबे वाले हजरात ऐसे ऊंचे कोठों में होंगे कि आभ जन्नती को बहुत दूर ही पर नज़र आने वाले सितारे की तरह नज़र आएंगे) सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल! ये तो नबियों ही की जगहें होंगी जहां उन के अलावा कोई न पहुंच सकेगा। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां, फ़सम उस जात की, जिसके कब्जे में मेरी जात है (नबियों के अलावा) बहुत से लोग (भी उन कोठों में) होंगे जो अल्लाह पर ईमान लाये और

रसूलों की तस्दीक की, लेकिन इस से यह न समझा जाए कि नबियों को बरतरी न होगी, क्योंकि कोठों में भी दर्जों का फर्क होगा, इस लिए कि कोठों पर भी कोठे होंगे, जैसा कि सूर: जुमर की आयत में गुजरा।

सूर: फुर्कान में पहले नेक लोगों और अल्लाह के डरने वालों की खुशियां बयान फरमायी हैं। आखिर में इन हज़रात के बारे में बालाखानों की खुशखबरी दी है और सूर: जुमर में भी मुत्तकियों के लिए कोठों का जिक्र फरमाया है। मालूम हुआ कि बालाखाने बड़े मर्तबे वाले हज़रात को नसीब होंगे।

हज़रत अबू मालिक अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु मे रिवायत है कि रसूले अवदस सल्लल्लाहु अलैहि व आलहि व सल्लम ने इशदि फरमाया है कि बिला शुब्हा जन्नत में बालाखाने हैं (जो ऐसे चिकने हैं कि) उनका जाहिरी हिस्सा अंदर से और अंदरूनी हिस्सा बाहर से नज़र आता है। (ये बालाखाने) अल्लाह तआला ने उसके लिए बनाये हैं जो नर्मी से बात करे और मेहमानों और जरूरतमंदों को खाना खिलाए और अक्सर रोजे रखा करे और रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़े जबकि लोग सो रहे हों।^१

जन्नत के खेमे और क़ुब्बे

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया कि बिला शुब्हा जन्नत में मोमिन का ऐसा खेमा होगा कि एक ही मोती से बना हुआ होगा (मोती बहुत बड़ा होगा) जो अंदर से खोल की तरह होगा। इस खेमे की लंबाई (और एक रिवायत में है कि इस की चौड़ाई) साठ मील की होगी। इसके हर कोने में मोमिन से मुताल्लिक लोग (बीवियां, नोकर-चाकर) होंगे (और कोनों के दमियानी फ़ासले की वजह से) इस कोने के लोग दूसरे कोनों के लोगों को नज़र न आएंगे। उनके पास मोमिन आया-जाया करेंगे। (इसके बाद फरमाया कि मोमिन के लिए) दो बाग़ ऐसे होंगे कि उन के बर्तन और जो कुछ उन में है, वह सब सोने का है।^१

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अबरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशदि फरमाया कि मामूली जन्नती वह होगा, जिसके अस्सी हज़ार खादिम और बहतर बीवियां होंगी और

१. बुखारी व मुस्लिम, २. बैहकी फ़ी शेबिल ईमान, ३. बुखारी व मुस्लिम,

उसके लिए एक कुब्बा नसब किया जाएगा, जो मोतियों से और ज़बुजंद और याकूत से बना होगा और जितना फासला जाबिया' से सुन्नन तक है, उतनी ही दूरी में उस की लंबाई-चौड़ाई होगी।^१

जन्नत का मौसम

सूर: दहर में इशदि है—

وَجَزَاهُمْ فِيهَا صَبْرًا وَجَنَّةً وَحَرِيرًا مُتَكَئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ
فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمَهْرُومًا

व जज़ाहम विमा स व रू जन्नतव्व हरीरम मुत्तकिईन फ़ीहा अलल
अराइकि ला यरी न फ़ीहा शम्सव्व ला जम्हरीरा०

'और उन का रब सन्न व (जमाव) के बदले में उन्हें बाग़ और रेशमी लिबास अता फरमाएगा और वहां मसहरियों पर तकिया लगाये होंगे। वहां न गर्मी महसूस करेंगे, न सर्दी।'

साहिबे तफ़सीर मजहरी इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं—

لا حَرِّ فِيهَا وَلَا يَرْدٌ لِّدَوِّهَا وَمِنْهَا هَوَاءٌ مُتَدَلِّلٌ

ला हरं फ़ीहा व ला रद लियदू म फ़ीहा हवाउ मुस्तदिल०

यानी 'जन्नत में सर्दी-गर्मी न होगी, ताकि फ़िज़ा (वातावरण)

मोतदिल (समान) रहे।

फिर लिखते हैं कि—

ان الجنة مضيئة بنفسيها ومشرقة بنورها لا يحتاج الشمس ولا القمر

इन्नल जन्न त मुजीअतुन विनफ़िसहा व मुशिरक़तुन विनूरिहा ला
यहताजु इला शम्सिन व ला इला कमर०

'वेशक जन्नत खुद रोशन है और अपने रब के नूर से मुनव्वर है, रोशनी के लिए वहां चांद-सूरज की जरूरत नहीं।'

इसके बाद बैहकी के हवाले से शुऐब विन जैहान का बयान नक़ल किया है कि मैं और अबुल आलिया रह० (फ़ज़ की नमाज़ के बाद) सूरज

१. जाबिया शाम देश में एक जगह है और सुन्ना यमन में एक जगह है, दोनों में मीलों का फासला है, २. तिमिज़ी शरीफ़,

उगने से पहले आवादी से बाहर गये, उस वक्त का मंजर देख कर हजरत अबू आलिया रह० ने फरमाया कि 'यन्सबु इलल जन्नति हाकजा' यानी इस वक्त जो फ़िजा में मस्ती, एतदाल और रोशनी है, जन्नत के बारे में इसी तरह की फ़िजा उयान की जाती है, यह बात कह कर हजरत अबू आलिया रह० ने 'ब अल्लिम मम्दूद०' की तिलावत की।

साहिबे मजहरी लिखते हैं कि हजरत अबुल आलिया रह० ने जो जन्नत की फ़िजा को सुबह का नूर कहा है, तो यह असल रोशनी से मिलाना नहीं हुआ, क्योंकि सुबह की रोशनी कमजोर होती है, जिसमें अंधेरी मिली हुई होती है, बल्कि हजरत अबुल आलिया रह० के इशदि का मतलब यह है कि, 'जिस तरह सुबह की रोशनी हर तरफ़, जहां तक नज़र जाये वहां तक फैली हुई होती है (खास तौर से जबकि आवादी से बाहर निकल कर देखा जाये) इसी तरह जन्नत का नूर बराबर हर तरफ़ फैला होगा।'

लेकिन सही यह है कि यह तस्वीह (उपमा, बराबरी) सुबह के वक्त से है, सुबह की रोशनी से नहीं है और हजरत अबुल आलिया रह० के इशदि का मतलब यह है कि जिस तरह सुबह के वक्त में (निकलने से पहले-पहले) एक सुहानापन और मस्ती होती है और अच्छी दमियानी हवा के भोंके आते हैं और हर तरफ़ रोशनीदार साया ही साया नज़र आता है, मगर रोशनी ऐसी नहीं होती जो आंखों को चुंधिया दे, इसी तरह हर वक्त जन्नत में गहरा साया रहेगा और फ़िजा दमियानी रहेगी और एक अजीब तरह का सुहानापन और मस्ती महसूस होती रहेगी, रोशनी में गर्मी और जलन न होगी और वह रोशनी जितनी भी तेज़ हो, उसकी वजह से साया ख़त्म न होगा और न आंखों को तक्लीफ़ होगी।

सूरः रअद में इशदि है—

مَنْ الْجَنَّةِ الْخَيْرُ وَعِدَ الْمُسْلِمُونَ نَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أَكَلُهَا
دَائِمًا وَظِلُّهَا

म सलुल जन्नतिलती बुअिदल मुत्तकून तजरी मिन तह्तिहल अन्हार उकुलुहा दाइमु'व्व जिल्लुहा०

'जिस जन्नत का मुत्तकियों से वायदा किया गया है, उस का हाल यह है कि उसकी (इमारतों व पेड़ों) के नीचे नहरें जारी होंगी, उसका फल और साया हमेशा रहेगा।'

इस आयत से साफ़ जाहिर है कि जन्नत में हमेशा साया रहेगा। सूरः निसा में जन्नत के साए को 'जिल्ल जलील' फरमाया। चुनावे

इशदि है—

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَمْ يَمُوتْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا شَامُونَ
ظِلًّا ظِلِيلًا

वल्लजी न आमनू व अमिलुस्सालिहाति सनुद् खिलुहुम जन्नातिन तजरी-मिन तह्तिहल अन्हार खालिदीन फ़ीहा अ व दा लहुम फ़ीहा अज्वाजुम मुतह्हर व तु'व्व मुद् खिलुहुम जिल्लन जलीला०

'और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, बहुत जल्द हम उन को ऐसे बागों में दाखिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए पाकीजा बीवियां होंगी और हम उन को गंजान साए में दाखिल करेंगे।'

मुफम्मिर इब्ने कसीर 'जिल्लन जलीला' की तफ़सीर करते हुए लिखते हैं कि 'अय जिल्लन अमीकन कसीरन अजोजन तय्यिवन अनीका' यानी ऐसा साया जो बहुत गंजान, अच्छा और रौनकदार होगा।

जन्नत में आराम ही आराम है, थकन और दुखन का कुछ काम नहीं

सूरः फ़ातिर में इशदि है—

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنْهُ الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ
بِالَّذِينَ أَحْكَمُوا أَرْبَابَهُمْ مِنْهُمْ لَا يَسْتَنْفِئُ فِيهَا كَصْبٌ وَلَا يَنْسِنَا
مِنْهَا نَعُوبٌ

व क़ालुल हम्दु लिल्लाहिल्लजी अजह व अन्नल हज़न इन्न रब्बना लगफ़ूरन शकूर-नि-ल्लजी अहल्लना दारल मुक़ामति मिन फ़जिलही ला यमस्सुना फ़ीहा न स बु'व्व ला यमस्सुना फ़ीहा लुगुव०

'और जन्नती कहेंगे कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए खास हैं, जिसने हमसे ग़म को दूर फरमाया। विला शुब्हा हमारा ख़ब बड़ा बरख़ाने वाला (और) बड़ा क़द्रदा है, जिसने हमको अपने फ़ज़ल से रहने की जगह उतारा, जहां हमको न कोई तक्लीफ़ पहुंचेगी और न ज़रा थकन महसूस हो सकेगी।'

मआलिमुत्तज़ील में लिखा है कि जन्नत में दाखिल होकर जन्नती यह बात कहेंगे, जिसका अभी ऊपर जिक्र हुआ।

'अल्लाह ने हमसे रंज व शम दूर करमा दिया, यानी दुनिया में जो रंज व शम आने की वजहें थीं, वे सब खत्म हो गयीं। यहां कभी किसी वजह से कोई रंजीदा करने वाली बात और चिंता व परेशानी में डालने वाली चीज पेश न आएगी, दुख-तबलीफ के खतरे और उनके मोके सब खत्म हो चुके। अब न रोजी कमाने की चिंता है, न रोजी की खोज है, न मौत का डर है, न बुढ़ापे का खौफ है, न हरज है, न मर्ज है, न क्रब का मरहला सामने है, न हसर के मंदान का होल है, न बुरे खात्मे का खतरा है, न नेमतों के खत्म होने का तरद्दुद है, न दुनिया संवारने के लिए कुछ करना है, न अंजाम बनाने के लिए इबादत में लगने का हुक्म है, वस हर तरह से आराम ही आराम और अमन व इत्मीनान है। दुनिया व आखिरत से मुताल्लिक जो डर व चिंता और नागवारी और परेशानी की वजहें, मोके और मंजिलें थीं, इन सब से गुजर कर 'दारुल मुक़ाम:' में आ गये, जहां न कोई मुसीबत है, न परेशानी है, न मेहनत है, न मशक्कत है, न थकन है, न दुखन है। सच तो यह है कि यही जगह इस क़ाबिल है जिसे 'दारुल मुक़ाम:' (रहने की जगह) कहना मुनासिब है, जहां से न कभी कोई निकलेगा, न निकलने को कभी दिल चाहेगा। हर एक इच्छतदार है, भरपूर लज्जतें हैं, बे-इतिहा नेमत हैं, जो किसी भी खराबी से पाक हैं।

जन्नतियों की मज्लिसें

सूर: साफ़ात में इशार्द है—

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ قَالُوكَ إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي قَرْيَةٍ ثَوْنٍ
كُنَّا الْمَصْدِقِينَ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي قَرْيَةٍ ثَوْنٍ كُنَّا الْمَصْدِقِينَ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي قَرْيَةٍ ثَوْنٍ

फ़ अक्ब ल वअजुहुम अला वअजिन य त साअलून० कालू क़ाइलुम
मिन हुम इन्नहू का न ली करीनुन यकूलू अ इन्न क ल मिनल मुसद्दीकीन०
अ इज्जा मित्ता व कुन्ना तुरावन व अज्जामन अ इन्ना ल मदीनून०

'पस (जब वे एक मज्लिस में बैठेंगे तो) एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात-चीत करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) मेरा एक मुलाकाती था, जो मुझ से (ताज्जुब के साथ यों) कहता था कि क्या तू भी क्रियामत के मानने वालों में से है? क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे तो क्या अपने कामों के बदले पाएंगे?'

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُطْلَعُونَ قَالُوا بَلَىٰ قَالُوا فِي سَوَاءٍ الْحَيِّمِ

का ल हल अन्तुम मुत्तलिअून फ़त्त ल अ फ़ र आ हु फ़ी सवाइल जहीमि०

'(फिर) वह जन्नती अपने साथ बैठने वालों से कहेगा, क्या तुम उसे (दोज़ख) में झांक कर देखना चाहते हो? फिर (खुद ही) झांकेगा और अपने मुलाकाती को दोजख में देख लेगा।'

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है कि जन्नत में रोशनदान की तरह झरोखे होंगे जिनमें जन्नत वाले दोजख वालों को देखेंगे और जन्नती शख्स अपने मुलाकाती को दोजख में देख कर कहेगा कि—

قَالَ تَاللَّهِ إِن كَذَّبْتَ لَتُورِينَ وَلَا نِعْمَةَ رَبِّي كُنْتُ مِنَ الْخَاطِرِينَ

का ल तल्लाहि इन कित्त लतुर्दी न व लौ ला निअमतु रब्बी लकुन्तु मिनल मुहज़रीन०

'खुदा की क़सम! तू तो मुझ को तबाह ही करने को था और अगर मेरे रब का फ़त्ल न होता तो मैं (भी तेरी तरह) दोजख में हाज़िर कर दिए जाने वालों में होता।'

सूर: तूर में जन्नतियों की एक बात-चीत इस तरह नक़ल फ़रमायी है—

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي قَرْيَةٍ ثَوْنٍ
مُشْفِقِينَ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي قَرْيَةٍ ثَوْنٍ كُنَّا الْمَصْدِقِينَ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي قَرْيَةٍ ثَوْنٍ

व अक्बल वअजुहुम अला वअजिय्य त साअ लू न कालू इन्ना कुन्ना क़द्लु फ़ी अह्लिना मुद्दिक्कीन फ़ मन्नल्लाहु अलैना व काना अज़ावस्समूमि इन्ना कुन्ना मिन क़द्लु नदअहु इन्नहू हु बल वरं रंहीम०

और वह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह हो कर बात-चीत करेंगे, कहेंगे कि हम इससे पहले (दुनिया के) घर-बार में रहते हुए (अंजाम-कार से) बहुत डरा करते थे, सो अल्लाह पाक ने हम पर एहसान फ़रमाया और हम को दोजख के अज़ाब से बचा लिया, इससे पहले हम उससे दुआएं मांगा करते थे। सच में वह बड़ा मुह्सिन (एहसान करने वाला) और मेहरबान है।'

तहीयतुहुम फ़्रीहा सलाम!

सूर: यूनुस में इर्शाद फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يُعْطُونَ رُحْمًا يُبَالِغُهُمْ رَبُّهُم بَآيَاتِهِ تَجَرَّى
مِنْ تحتهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتٍ النَّاعِيَةِ دُعَاؤُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ
وَبِحَمْدِكَ فِي سَلَامَةٍ وَأَخْرَجَهُمْ دُعَاؤُهُمْ أَنْ الْمُسَدِّ لِلرَّبِّ
الْعُلَمَاءُ ٥ - (سورة يونس آء ١١)

इन्ल्लजी न आमन् व अमिलुस्सालिहाति यद्दीहिम रब्बुहुम विई-
मानिहिम तजरी मिल तह्तिहद्दिहुमुल अन्हार फ्री जन्नातिन्नीम दय्वाहुम
फ्रीहा सुव्हा न कल्लाहुम्म व तहीयतुहुम फ्रीहा सलामुन व आखिर
दय्वाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्विल आलमीन न०

‘बिला शुब्हा जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किए, उन के ईमान की वजह से उन का रब उन्हें उन के मक्सद को (यानी जन्नत में) पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें जारी होंगी, आराम के बागों में। (और वे जन्नत में) दाखिल होंगे तो यकायक जन्नत की अजीब-अजीब चीजों को देख कर वहां (बे-अख्तियार) यों कहेंगे कि मुब्हानल्लाह! क्या नेमतें हैं और कैसी उम्दा जगह है और फिर एक दूसरे को वहां (देखेंगे) तो उनका आपसी सलाम ‘अस्सलामु अलैकुम’ होगा और जब इत्मीनान से वहां जा बैठेंगे और पुरानी मुसीबतों और परेशानियों का उस वक्त के साफ़-सुथरे हमेशा वाले आराम से मुकाबला करेंगे तो (उन की उस वक्त की) आखिरी बात यह होगी कि ‘अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन’ (यानी सब तरीक़े अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं जो तयाम जहानों का परवर-दिगार है)’

तर्जुन से इस आयात की जो तपसीर भालूम हो रही है, यह सहिबे बयानुल कुरआन की तपसीर है और साहिबे मशालिमुत जौल इसकी तपसीर में लिखते हैं। 'के जन्मती जब खाने की स्वाहिया करेंगे तो, मुहान कल्लाहुम्मा' कह देंगे। इस कलमे को सुन कर उन के खादिम दस्तरखवानों पर खाने लगा देंगे, जब खा कर फारिश हो जाएंगे तो वे 'अलहुम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' कहेंगे और तहीयतुहुम फ्रीहा

१. आपस में मुश्कारकबादी होगी और सलाम होगा,

सलाम' की तपसीर करते हुए लिखा है कि जन्नती हज़रात मुलाकात के वक़्त एक-दूसरे को सलाम करेंगे और यह क़ौल भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते जन्नतियों को सलाम करेंगे और यह भी नक़ल किया है कि फ़रिश्ते उनके पास अल्लाह का सलाम लेकर आएंगे और तीनों तरह 'तहीयतुहुम फ़ीहा सलाम' की तपसीर हो सकती है।

मुफ़्त्सिर इब्ने कसीर इब्ने जुरैज से नक़ल फ़रमाते हैं कि जन्नतियों के पास जब कोई परिदा गुज़रेगा तो वे 'सुव्हानकल्लाहुम्' कहेंगे, इस पर फ़रिश्ते उन की स्वाहिश के मुताबिक़ (परिदे को) लेकर आएंगे और सलाम करेंगे, जिस का वे जवाब देंगे, 'तहीयतुम फ़ीहा सलाम' में इसी का जिक़्र है। जब खाकर उठेंगे तो 'अल हम्दु लिल्लाह' कहेंगे, जिस का 'आख़रुद्दअवाहुम अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' में जिक़्र है। इसके बाद इब्ने कसीर लिखते हैं कि मुफ़्तियात मूरी रह० ने फ़रमाया है कि जन्नती जब किसी चीज़ को मंगाने का इरादा करेंगे तो 'सुव्हान कल्लाहुम्' कह देंगे (पस वह हाज़िर हों जाएगी) इससे मालूम हुआ कि इब्ने जुरैज ने आयत की तफ़सीर फ़रमाते हुए जो परिदे का जिक़्र किया है, मिसाल के तौर पर है, वरना हर नेमत की स्वाहिश के जाहिर करने के लिए जन्नती लोग 'सुव्हान कल्ल हुम्' कहेंगे। यह जो फ़रमाया कि परिदे को फ़रिश्ता ले कर हाज़िर होगा, मालूम होता है कि यह कभी-कभी की बात है, क्योंकि रिवायतों में पहले गुज़र चुका है कि परिदा खुद जन्नतियों के सामने आ गिरेगा।

जन्मत की नेमतों को
दुनिया में नहीं समझा जा सकता

जन्मत के बारे में जो कुछ सुन कर और पढ़ कर समझ में आता है, जब जन्मत में जाएंगे तो इस से बहुत बुलंद और बाला पाएंगे। एक तो इस वजह से कि जन्मत की जिन नेमतों का जिक्र कुरआन व हदीस में मौजूद है, वहां इन के अलावा बहुत ज्यादा नेमतें हैं। दूसरे, इस वजह से कि किसी चीज के देखने और इस्तेमाल करने से जो पूरी जानकारी होती है, वह सिर्फ सुनने से नहीं होती। इसलिए इस दुनिया में रहते हुए जन्मत की नेमतों की सच्ची हकीकत को समझा नहीं जा सकता है।

हजरत अबू हुसैन रहज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू इशार्द

फरमाते हैं कि मैं ने अपने नेक बंदों के लिए वे-वे चीजें तैयार की हैं, जिन को न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल पर उन का गुजर हुआ। फिर आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि (कुरआन) से इस बात की तस्दीक करना चाहो तो यह अयात पढ़ लो, 'फ़ला तअलमु नफ़सुमा उल्फ़ि य लहुम भिन कुरंति अअयुनिन०'

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि हुजरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊपर वाला मज़मून इशार्द फ़रमा कर आखिर में फ़रमाया कि 'बल ह मा अत ल अ कुमुल्लाहु अलैहि' यानी अल्लाह तआला ने कुरआनी आयतों के जरिए या नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुबानी जन्नत की नेमतों का जिक्र फ़रमा दिया है, इनके अलावा जो नेमतें हैं बहुत ज्यादा हैं।

कालन्न व बी फ़ल्लज़ी लमयुत्लिअ कुम अलैहा अअज़म०

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि जन्नत में एक घोंड़ की जगह सारी दुनिया से और दुनिया में जो कुछ है, सब से बेहतर है। साथ ही यह भी इशार्द फ़रमाया कि जितनी जगह आधी कमान रखी जाती है, जन्नत में उतनी सी जगह उन सब चीजों से बेहतर है जिन पर सूरज उगता या डूबता है।

जब सवारी से सवार उतरने लगता है तो जगह पर कब्ज़ा करने के लिए पहले अपना घोड़ा ज़मीन पर गिरा देता है और पैदल चलने वाला जब बैठने लगता है, तो पहले अपनी कमान डाल देता है, फिर बैठता है। आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नत की बड़ाई और क्रीमत समझाने के लिए इशार्द फ़रमाया कि जन्नत की इतनी सी जगह जिस में एक कोड़ा या आधी कमान रखी जा सके, सारी दुनिया की लंबी-चोड़ी और फैली जगह से अपज़ल है, कहां यह कि पूरी जन्नत, जिसके फैलाव के सामने हज़ारों दुनियाएं भी छोटी और कम हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि दुनिया की चीजों में से कोई चीज़ भी जन्नत में नहीं है, सिर्फ़ नाम मिलते-जुलते हैं।

मतलब यह है कि जन्नत की नेमतों के तज़क़रे में जो सोना-चांदी, मोती, रेशम, पेड़, फल, मेवे, तख़्त, गद्दे, कपड़े वगैरह आये हैं, ये चीजें

१. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, २. बुख़ारी व मुस्लिम,

३. बुख़ारी शरीफ़, ४. बहकी,

वहां की चीजें होंगी और इसी के एतबार से उनकी खूबी और बेहतरीन होगी। दुनिया की कोई भी चीज़ जन्नत की किसी भी चीज़ के पासंग के बराबर नहीं है।

जन्नत की खुशबू

जन्नत खुशबू से भरपूर है और उस की खुशबू की हालत इस दुनिया में समझ में नहीं आ सकती है, वहां की खुशबू बे-मिसाल है, और उम्दा, बढ़िया और खूब तेज़ है।

एक हदीस में इशार्द है कि जन्नत की खुशबू सौ साल की दूरी से सूंघी जाती है। दूसरी हदीस में है कि पांच सौ बरस की दूरी से महसूस होती है। दूसरी रिवायतों में इससे कम व बेश दूरी का भी जिक्र आया है।

हदीस के आलिमों ने लिखा है कि दूरी कम व बेश लोगों के रुबों व मंजिलों के फ़र्क के एतबार से हैं।

सुब्हानल्लज़ी वियदि ही म ल कूतु कुल्लि शईन०

क्या कोई जन्नत के लिए

तैयार करने वाला है?

जन्नत के हालात आपने पढ़ लिए। वहां की नेमतों की तफ़सीलात मालूम कर लीं, वहां रहने को दिल भी चाहता होगा। जन्नत में दाखिले के लिए बार-बार अल्लाह तआला से आप ने दुआ भी की होगी और बिला शुब्हा हर मुसलमान के दिल में जन्नत का शौक़ और वहां ठहरने की जगह मिलने की तड़प होना जरूरी है। लेकिन तड़प और तलब और ज़ीक़ व शौक़ के साथ भले कामों की पूंजी का एहतमाम करना भी जरूरी है। जन्नत जैसी चीज़ की तलब रखने वाला भले कामों से खाली नहीं हो सकता। बेवक़ूफ़ हैं वे लोग जो जन्नत की तमन्ना करते हैं मगर गुनाहों में लथ-पथ हैं और भले कामों की पूंजी से शारिक़ हैं। कुरआन मजीद के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने जन्नत के बदले मोमिनों से उन की जानों और मालों को ख़रीद फ़रमा लिया, इस लिए मोमिन बन्दों पर लाज़िम है कि शरीअत के तक्काज़ों पर जान बमाल लगा कर जन्नत के हक़दार बनें।

इन्तला ह शतरा भिनल मुअ् मि नी न अन्फुसहुम व अम्बाल हुम वि अन्न लहुमुल जन्नत०।

नमाज़ के लिए अज्ञान देने वाला पुकारे तो सोते रह जाएं या कारोबार पर नमाज़ को कुर्बान कर डालें। जकात का हुक्म लागू हो तो जान चुराने लगे, रमज़ान आये तो रोज़े खा जाएं, हज़ फ़र्ज़ हो तो माल की मुह्वन में बे-हज़ किए मर जाएं, कारोबार में हराम व हलाल का ज़रा ख्याल न करें, तेरा-मेरा रुपया मार लेने को कमाल जानें, कुरआन व हदीस पढ़ने-पढ़ाने को ऐब का काम समझें, बूढ़ों-कमज़ोरों पर जुल्म करें, तंगदस्तों से बेगारें लें, रिश्तों के लेन-देन को फ़र्ज़ समझें, यतीमों का माल खा जाएं और भोरास शरीअत के मुताबिक़ तक्सीम न करें, नपुलों की अदाएगी से घबराएं और अल्लाह के ज़िफ़ से बचें और फिर जन्नत के बुलंद दर्जों की तमन्ना करें, यह बहुत बड़ी नादानी है। जन्नत के बुलंद मर्तबों के लिए नपस को काबू में करना पड़ता है, शरीअत के हुक्मों पर अमल करने में जो नपस को नागवारी होती है, उसे सहना पड़ता है। हदीस शरीफ़ में इशार्द है कि—

حُفَّتِ النَّارُ بِالسَّهْوَاتِ وَخَفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْكَفَّارَةِ

हुफ़तिन्नारु बिशहवार्ति व हुफ़तिल जन्नतु बिल मकारिहि०
'दोज़ख़ को स्वाहिशों से घेर दिया गया है और जन्नत को नागवारीयों से घेर दिया गया है।'

मतलब यह है कि इबादतों में मेहनत करने और बराबर अल्लाह का फ़रमांवरदार रहने और हराम स्वाहिशों से परहेज़ करने में जो नपस को नागवारी होती है, इसी नागवारी के पीछे जन्नत है। नागवारी को बरदाश्त करना जन्नत में पहुंचने का ज़रिया है और इस के खिलाफ़ जो शरूख़ नपस की स्वाहिशों का पाबंद बन गया और हराम व हलाल के सवाल से बे-नियाज़ हो गया तो शहवतें और स्वाहिशें उसे दोज़ख़ में पहुंचता देंगी।

एक हदीस में इशार्द है—

الْكَيْسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا يُنَادِي الْمَوْتُ وَالْكَافِرُ مَنْ
أَتَى نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَتَّبَعَ عَلَى اللَّهِ

(ترمذی)

१. बिला शुबहा अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानों और मालों को जन्नत के बदले में खरीद लिया है,

अल कय्यसु मन दा न नपसह व अमि ल लिमा बश्रदल मौति बल आज़िज़ु मन अत् व अ नपसह हवाहा व तमन्ना अलल्लाहि० —निर्मिज़ो 'होशियार वह है जो अपने नपस पर काबू करे और मौत के बाद के लिए अमल करे और बेवकूफ़ वह है जो अपने नपस को स्वाहिशों के पीछे लगाये रहे और बे-अमल बन, अल्लाह से उम्मीद रखे।'

जिसे दोज़ख़ से बचने और जन्नत में पहुंचने का फ़िक्र हो, दुनिया को आखिरत पर तर्ज़ीह नहीं देगा और जान व माल को जन्नत के मुकाबले में प्यारा न जानेगा, जितनी नेकियां करेगा, कम समझेगा। और बदलों व दर्जों के बढ़ाने के लिए फ़र्ज़ों व नपुलों का एहतमाम करेगा, हकीक़न में आखिरत की फ़िक्र रही ही नहीं, जन्नत जैसी बे-मिसाल और अनमोल चीज़ का यक्कीन होते हुए ताअत व इबादत में कोताही करना बड़ी ना-समझी है। फ़रमाया रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने कि—

مَا رَأَيْتُ مِثْلَ النَّارِ كَمَا هَارِبُهَا وَلَا مِثْلَ الْجَنَّةِ كَمَا هَارِبُهَا. (ترمذی)

मा रऐतु मिरल न्जारि नाम हारिबुहा व ला मिरलल जन्नति ना म तालिबुहा०

—तिर्मिज़ी शरीफ़

'दोज़ख़ जैसी चीज़ मैं ने नहीं देखी, जिस के (अज़ाब व मुसीबत से) भाग कर बचने वाला सो रहे और (इसी तरह) जन्नत जैसी चाल और मज़े की चीज़ मैं ने नहीं देखी जिस का तलबगार सोता रहे।'

मतलब यह है कि दोज़ख़ की मुसीबतों व तक्लीफ़ों का यक्कीन करने पर दोज़ख़ ही के काम करता चला जाए और जन्नत की नेमतों का चाव रखने वाला शफ़लत की नींद सोया करे और नेक कामों की फ़िक्र न करे यह बड़े ताज्जुब की बात है। यों दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो सुस्ती की वजह से तक्लीफ़ें उठाते हैं और अपनी चाव की चीज़ों को हासिल कर लेने से महरूम हैं, लेकिन दोज़ख़ से बचने का इरादा रखने वाला शफ़लत में पड़ा रहे, और जन्नत का तलब करने वाला सुस्ती में उम्र गुजार दे, यह बहुत ज्यादा ताज्जुब की चीज़ है।

दुनिया की ज़िदगी एक सफ़र है, जिस की आखिरी मंज़िल मोमिन बन्दों के लिए जन्नत है, मगर जन्नत के लिए मेहनत की ज़रूरत है, क्योंकि जो चीज़ जितनी उम्दा और बेहतरीन होती है, उनकी ही कीमत होती है। हदीस शरीफ़ में इशार्द है कि—

مَنْ خَاتَ أَدْرَجَةً وَمَنْ أَدْرَجَ بَعَثَ اللَّهُ إِلَيْهَا

الْإِنْ سَلَعَتْهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ

(ترمذی)

मन खा फ़ मद् ल ज व मन मद् ल ज व ल गल मंजिल अला इन्न सिल्लुअतल्लाहि गालियतुन अला इन्न सिल्लुअतल्लाहिल जन्नतु०—तिमिजी 'जिस शस्त्र को (सफ़र की दूरी और कठिनाई से) खतरा हो, वह शुरू रात ही में रवाना हो जाता है और जो शस्त्र शुरू रात में रवाना होता है, मंजिल को पहुंच जाता है। खबरदार अल्लाह का सौदा मंहगा है। खबरदार अल्लाह का सौदा जन्नत है (जिस के खरीदार बन्दे हैं)

दुनिया की जरूरतों के लिए जब किसी अहम सफ़र पर जाना होता है, तो काफी पहले से चल देते हैं और आराम व राहत को कुर्बान करके ठीक वक्त पर, बल्कि वक्त से पहले मंजिल को जा लेते हैं। आखिरत के मुसाफ़िर को इस से सबक लेना चाहिए और नफ़स की फ़रमांवरदारी के वजाए शरीअत के हुक्मों की खूब अच्छी तरह पाबंदी करके आखिरत के सफ़र को ख़यादा से ख़यादा कामियाब बनाना चाहिए ताकि मंहगा सौदा (गानी जन्नत) हाथ से जाने न पाए। दुनिया के साज व सामान मकान व दूकान पर कितनी रक़में लगती हैं और कौंसो कौंसो जवानियां फ़ना होती हैं और कौंसो-कौंसो तदुरुस्त इंसान बरपाद होते हैं। एक औरत से निकाह करने के लिए खटाराफ़ किए जाते हैं और कितनी दीलतें लुटायी जाती हैं। जब इस बे-क़ीमत दुनिया के लिए धन व दीलत, सेहत व जवानी बरवाद हो रही है और बड़ी-बड़ी कोशिशों की जा रही हैं, हालांकि वह फ़ानी है और उसे छोड़ कर चल देना है तो जन्नत जैसे 'दारुल मुक़ाम' के लिए और वहां की नेमतों और भजों के पाने के लिए तो बहुत ख़यादा जानी व भाली कुर्बानी और हिम्मत व मेहनत की जरूरत है—

बहुत शफ़लत यह तेरी हस्ती नहीं,

देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रहगुज़र दुनिया है यह बस्ती नहीं,

जाए ऐश व इशरत व मस्ती नहीं।

—मवज़ूब

(यह तेरी ज़िदगी शफ़लत करने के लिए नहीं है। समझ ले, जन्नत इतनी सस्ती नहीं है कि तू शफ़लत करे। यह दुनिया एक रास्ता है, इसे आवादी न समझो, यह आराम, सुख और मस्ती की जगह नहीं है।)

व आखिरु दअ्वाना अनिल हम्दु

लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

अब हम किताब को खत्म करते हैं और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं जिस की मेहरबानी और देन से यह किताब पूरी हुई।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें और हमारे मां-बाप और हमारे पीर व उस्ताद और तमाम मुस्लिम मदों और औरतों को जन्नत में दाखिल फ़रमा दे और इस किताब को हुबूल फ़रमाएं, आमीन !

وَمَا يَكُنْ عَلَيْكُمْ مِنْ شَيْءٍ مِنْهُ أَنْ تَسْأَلُوا رَبَّكُمْ عَلَيْهِمْ وَتُؤْتُوا مِنْهُمْ
عَلَىٰ لِلَّهِ سُلَيْبٌ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

व मा जालि क अलैहि विअज़ीज़ सुल्हा न रब्बि क रब्बिल अ़रज़ति अ़म्मायसिफ़ून व सलामुन अलल मुर्सली न वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आल मीन०

हमारे यहां हर किस्म की किताबें, उर्दू, हिन्दी, अरबी और क़ुरआन मजीद नीज़ सिपारह कायदा व रेहल लकड़ी व प्लास्टिक में दस्तियाब हैं। ताजिर हज़रात अपना किमती आर्डर नीचे के पते पर रवाना करें।

फ़ानी बुक डिपो

425/3 उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली
फ़ोन :- 55393669, 23242427 (R) 25702399

وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَكُونُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

'और कायम करो नमाज और अदा करो जकात और रुकूअ करो रुकूअ करने वालों के साथ'

तब्लीगुस्सलात

यानी

आईना-ए-नमाज

जिस में

नमाज की शर्तें, फर्ज और उसके फ़जाइल, मसअले, तपसील के साथ आसान हिंदी जुबान में दर्ज कर दिए गये हैं, साथ ही नमाज के अलावा रोज़ा, हज, जकात के मसअले और ज़रूरी बातें इसमें शामिल कर दी गई हैं। यह किताब तमाम मुसलमानों के पढ़ने की चीज़ है।

लेखक :

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्द शहरी

प्रकाशक

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिररहमानिररहीम०

قُلْ إِنَّمَا أَدِيعُوا اللَّهَ شَأْنِي وَإِنَّمَا أَدِيعُوا اللَّهَ شَأْنِي

कुल इन-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व
ममाती लिल्लाहि रबिबल आ-ल मीन०

मौलाना मुहम्मद इल्यास साहिब की
तब्लीगी तहरीक पर दूसरा नम्बर

अक्सी

मेरी नमाज (हिंदी)

अरबी के साथ

तर्कीबे नमाज हिंदी मतलब

जिस में

नमाज की फ़ज़ीलतें, नमाज छोड़ने पर अज़ाब की धमकियां,
नमाज के अर्कान का फ़लसफ़ा, नमाज पढ़ने का पूरा
तरीका मुहावरेदार आसान हिंदी में लिखा गया है।

लेखक

मौलाना मुहम्मद इद्रीस अन्सारी

फ़ानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23242427, (मोबाईल) 9312272836 (घर) 25702399

हमारी हिन्दी कुतुब

औरतों की नमाज़
 सूरह यासीन पाकिट
 दुआए गनजुल अर्श पाकिट
 पारा आम ३०वां पाकेट
 मरने के बाद किया होगा
 फ़ालनामा ख़्वाब नामा
 राहे जन्नत
 मरने के बाद किया होता है
 रसूलुल्लाह की सुन्नतें
 मसनून दुआएं पाकिट
 नूर नामा
 मियां बीबी के हुक्क
 शहादत नामा
 नूरानी रातें
 मंज़िल कलां
 मंज़िल ख़ुर्द पाकिट
 मुसलमान बांवी
 मुसलमान ख़ाविन्द
 सूरए यासीन व मुल्क चारों कुल
 आयतल कुर्सी
 टी बी अज़ाबे क़ब्र
 चौबीस सूरतें
 हिन्दी उर्दू टीचर 32 सफ़ा
 हिन्दी उर्दू टीचर 64 सफ़ा
 हिन्दी उर्दू टीचर 128 सफ़ा
 क़ब्र की पहली रात
 क़ब्र की एक रात

सच्ची नमाज़ पाकिट
 मेरी नमाज़ वा तस्वीर
 तरकीबे नमाज़ पाकिट
 सच्ची नमाज़ कलां
 आसान नमाज़
 आइनए नमाज़
 मेरी नमाज़ मुजल्लद
 अशरफ़ी नमाज़ कलां
 नीयत नामा बड़ा
 रसूलुल्लाह की नातें व सलाम
 गुल तैबा
 नकहते गुल
 नबी-नबी
 नग़माते हैदर
 नग़माते दिलक़श
 इतिखावे आला हज़रत
 सूरए यासीन व स. मुल्क
 वारिशे रहमत
 छः गुनाहगार औरतें
 तोहफ़तुन्निकाह
 सोलह सूरह कलां मय अरबी
 आमाले क़ुरआनी 4 हिस्से
 मीलादे अकबर
 नीयत नामा
 क़ससुल अंबिया
 ज़रूरतुल मुस्लेमीन
 क़ब्र की एक रात

फ़ानी बुक डिपो 425/3 उर्दू मार्किट, मटिया महल,
 जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
 फ़ोन: 23242427, 55393669, घर 25702399